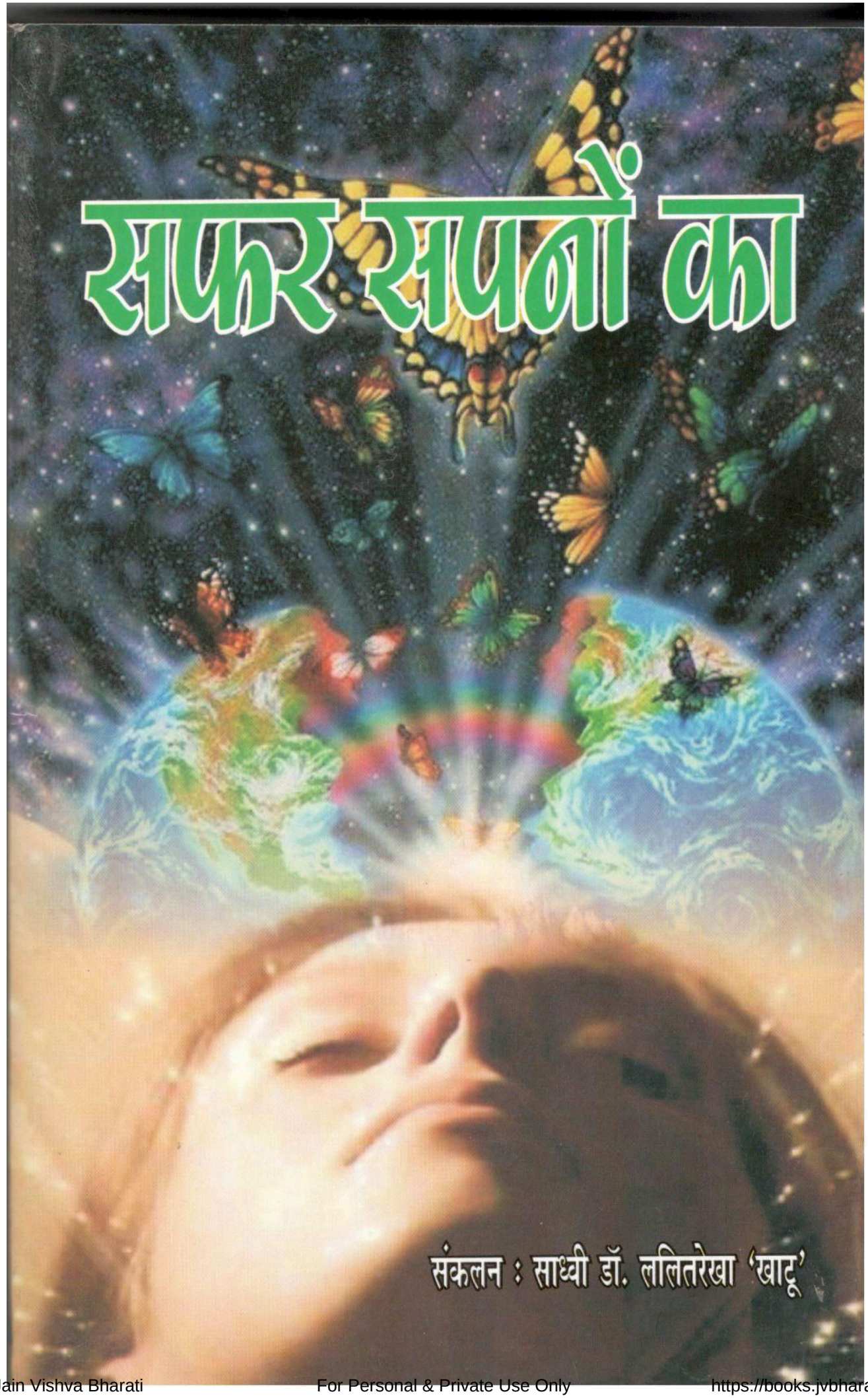

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सफर सपनों का

साध्वी डॉ.ललितरेखा 'खाटू'

जैन विश्व भारती प्रकाशन

प्रकाशक : जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं-341306
जिला : नागौर (राज.)
फोन नं. (01581) 222080/224671
ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

© जैन विश्व भारती, लाडनूं

प्रथम संस्करण : 2014

मूल्य : 100

मुद्रक : श्री वर्धमान प्रेस, नवीन शहादरा, नई दिल्ली

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अर्हम्

हमारी नींद के साथ यदा-कदा स्वप्न भी सम्मिश्रित हो जाता है। अच्छा स्वप्न मन को प्रसन्न करने वाला और बुरा स्वप्न मन को दुखित व मलिन बनाने वाला बन जाता है। महापुरूषों की माताएं शुभ स्वप्न देखकर प्रतिबुद्ध होती है, ऐसा उल्लेख जैन वाङ्मय मे मिलता है।

डा. साध्वी ललित रेखा जी ने सफर सपनों का ग्रन्थ तैयार किया है। पाठक को स्वप्न के बारे में विश्वस्त जानकारी प्राप्त हो तथा लेखिका साध्वीजी अपनी प्रतिमा का अच्छा उपयोग करती रहें।

कैंचिया (राजस्थान)
13 मार्च 2014

आचार्य महाश्रमण

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्राक्कथन

जब से मैंने सपनों को देखा। सपनों के अर्थ एवं भाव को समझा। सार्थक परिणामों को पाया। उनको चित्त समाधि में निमित्त बनते देखा, तब मुझे प्रतीत हुआ कि स्वप्न भी साधना में परम सहायक बन सकते हैं। यह हमारी थाति एवं धरोहर है। क्योंकि स्वप्न हमारे मन के दर्पण हैं। जब हमारा मन, विचार, भाव, आभामंडल, अध्यवसाय एवं लेश्या शुभ होती है, तब शुभ स्वप्न दृष्टिगोचर होते हैं। जब चित्ताकाश पर मलिनता और कलुषता की घटा छा जाती है, तब हमें अशुभ स्वप्न परिलक्षित होते हैं। यह तथ्य जानकर हम अन्तर मन की गहराई में झांक सकते हैं, आत्मावलोकन कर सकते हैं। अतः आत्मकल्याणार्थ स्वप्न का ज्ञान प्रत्येक मुमुक्षु के लिए उपयोगी है। क्योंकि इससे हमारे अवचेतन की गूढ़तम अनुभूतियों की अभिव्यक्ति होती है। यह अन्तर्मन के अध्ययन का चित्ताकर्षक और चमत्कारी चश्मा है। इसको स्मृति रूपी कैमरे में सहेज कर संसार से सिद्धि का सफरनामा सुगमता से तय कर सकते हैं।

समाज में स्वप्न की मान्यता का व्यापक प्रभाव है। कारण के बिना कोई कार्य नहीं होता। स्वप्नों की मान्यता का विशद प्रभाव को देखते हुए मैंनें स्वप्न पर कार्य करने का लक्ष्य बनाया। स्वप्न-फल की अनेक व्याख्यायें हो चुकी हैं। स्वप्न-फल के बारे में जो धारणाएं प्रचलित हैं, उन्हें अगर अनेकान्त और स्याद्वाद की दृष्टि से देखा जाये तो सभी धारणायें सत्य प्रतीत होती हैं। वस्तुतः अनेकान्तवाद से किसी मत का एकान्ततः खण्डन उचित नहीं है।

सभी दृष्टियों में सत्यांश तो छिपा हुआ ही है, किन्तु इन प्रचलित ध ाारणाओं के होने के बावजूद भी सभी दर्शनों में बिखरी सुन्दर स्वप्नों की सौरभ सबको सहज ही आकृष्ट कर लेती है। अतः भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में बिखरे हुए

एक-एक स्वप्न सुमनों को संजोकर स्वप्नमाला गूंथने का यह मेरा लघु प्रयास मात्र है।

कमनीय कलाकार, करूणाकुबेर, कोविदकुलालंकार, श्रमणकुलश्रृंगार आचार्यप्रवर महाश्रमण जी की ऊर्जा एवं आशीर्वाद, कल्याणमयी, करूणामयी साध वीप्रमुखा श्री कनकप्रभाजी की कृपा एवं वात्सल्य भरा दिशा-निर्देशन, स्वनामधन्या श्रमणी नियोजिका साध्वी श्री विश्रुतविभाजी का सहज सुलभ सत्परामर्श सदैव साध ाना एवं समाधि में प्रकाश स्तम्भ साबित हुआ।

जिन्होंने निश्छलता, निर्मलता एवं निर्गर्विता के द्वारा संयम से सिद्धि पायी, जिनका सहज स्नेह पाकर सदैव सहजानन्द का रसास्वादन किया, जिनसे साधना में गति करने का सतत संबोध मिलता रहा, उन साध्वी श्री भीखांजी { श्री डूंगरगढ़ } की ज्ञात-अज्ञात प्रेरणा एवं प्रोत्साहन ने मुझे 'सफर सपनों का' लिखने हेतु प्रेरित किया। साध्वी श्री कमलरेखाजी एवं चन्द्रयशाजी के हार्दिक सौहार्द, सौजन्य एवं अनुकरणीय सहयोग से ही यह कार्य सुगम बन सका ।

साध्वी चन्द्रयशाजी ने पूरे मनोयोग के साथ अपने सार्थक क्षणों का इसमें उपयोग किया है। साध्वीद्वय के प्रति सहयोग के लिए आभार। प्रस्तुत कृति में ग्यारह वरदान है। पहला वरदान ऐतिहासिक एवं विशिष्ट स्वप्नों की आभा से अभिमंडित है। दूसरे वरदान में जैन संस्कृति में स्वप्न एवं स्वप्नफल का वैशिष्ट्य उजागर हुआ है। तीसरे वरदान में बौद्ध - संस्कृति में स्वप्न एवं स्वप्नफल का वर्णन हैं। चौथा वरदान वैदिक - संस्कृति के रोचक स्वप्न एवं स्वप्नफल से सुशोभित है। पांचवां वरदान आयुर्वेद में वर्णित शुभा-शुभ स्वप्नफल से लबालब भरा है। छठा वरदान प्राचीन ज्योतिष-शास्त्र में वर्णित स्वप्नफल दर्शा रहा है। सातवें वरदान में स्वप्नफल का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है। आठवें वरदान में पाश्चात्य - विचारधारा में कविताओं के माध्यम से स्वप्नफल के अंकुर प्रस्फुटित हो रहे है। नौवां वरदान में विविध स्वप्नफलों का समावेश करके विस्तृत जानकारी सार संक्षेप 'sort and sweet' में दी गई है। दसवां वरदान में नई एवं पुरानी बाइबिल से संबंधित इस्लाम के सुप्रसिद्ध ख्वाब और ताबीर को सहेजा गया है। ग्यारहवां वरदान में दुःस्वप्न निवारणार्थ मनोवैज्ञानिक उपायों को सुझाया गया है।

श्री प्रवीण जैन, मारवल ग्रुप उकलाना, श्री अशोक जैन, सुशील जैन, योगेश जैन, विकास, अंकुश, कविता जैन { भीखी } आदेश जैन { लुधियाना }

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रवीण जैन (बरेटा) के सहयोग से ही यह कार्य संभव हो सका । इस कृति में प्राचीन और अर्वाचीन महत्वपूर्ण ग्रंथों के स्वप्न एवं स्वप्नफल है । प्रत्येक स्वप्नदृष्टा सपनों से लाभान्वित हो सके, सपनों का सफर स्वप्नपाठकों के अन्तःकरण को गहराई से छूने में सक्षम हो, सबके लिए दिशासूचक यंत्र का कार्य यह कृति करें । इसी में इस कृति की सार्थकता है । इस कृति की परिक्रमा में जिन विद्वानों, लेखकों, पत्र-पत्रिकाओं, साहित्य समिति आदि का ज्ञात-अज्ञात सहयोग रहा है, उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता।

यह कहना अतिरंजना नहीं होगी कि इस कृति की पूर्णता का श्रेय अदृश्य अलौकिक गुरूकृपा की शक्ति है। मैं तो इसकी प्रस्तुति में मात्र निमित्त बनीं हूँ। सहज, सरल, सरस, सुवाच्य एवं सुपाच्य स्वप्नों को पढ़कर, संसार को स्वप्नवत् मानकर आध्यात्मिक उत्कर्ष वरें। इसी में इस कृति की उपादेयता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनुक्रम

पहला वरदान : ऐतिहासिक एवं विशिष्ट स्वप्न **15-100**

- ❖ महाकवि तुलसीदास का स्वप्न
- ❖ प्रख्यात कवियों के स्वप्न
- ❖ पैराडाइज लोस्ट की रचना का श्रेय
- ❖ स्वप्नों ने बनाया संगीतज्ञ
- ❖ नृत्य एवं चित्र के सृजन की प्रेरणा
- ❖ सुख देते सपने
- ❖ स्वप्न ने बचाये 20 लाख डालर
- ❖ स्वप्न ने दिलाई पैतृक सम्पति
- ❖ छत्रपति शिवाजी को मिला खजाना
- ❖ स्वप्न ने बनाया सम्राट
- ❖ हैटेराइव-फ्रांस के स्वप्न महल का स्वप्न
- ❖ टीपू सुल्तान के विशिष्ट स्वप्न
- ❖ स्वर्ण खदान की प्राप्ति
- ❖ बहरे को मिले कान, लंगड़े को मिली टांग
- ❖ स्वप्न से प्राप्त खजाना
- ❖ स्वप्न से समृद्धि
- ❖ सपने ने दिलायी विजय श्री
- ❖ विवेकानन्द स्वप्न वरदान
- ❖ अजब-गजब के सपने
- ❖ स्वप्न से भाग्योदय
- ❖ सपने ने बनाया लखपति
- ❖ स्वप्न में सिंहासन देखकर 100 किलो सोना दान
- ❖ अलेक्जेण्डर महान् के स्वप्न
- ❖ सीजर का स्वप्न
- ❖ हेन्नीबल का स्वप्न
- ❖ मुकद्दर के सिकन्दर के स्वप्न
- ❖ वीर शिवाजी का स्वप्न
- ❖ टीपू सुल्तान के तैजस स्वप्न
- ❖ दास प्रथा उन्मूलन आन्दोलन
- ❖ राजा विक्रम का स्वप्न
- ❖ तानाशाह हिटलर के स्वप्न
- ❖ महात्मा गांधी के सपने
- ❖ शाकाहार प्रेरक स्वप्न
- ❖ सत्याग्रह प्रेरक स्वप्न
- ❖ स्वप्न-संकेत द्वारा विजयी बिस्मार्क
- ❖ दिव्य-शक्ति से साक्षात्कार
- ❖ शक्ति का करिश्मा
- ❖ अतीन्द्रिय संकेत
- ❖ महाराजा कुश का दिव्य स्वप्न
- ❖ विचित्र स्वप्न और विचित्र पेड़
- ❖ श्री एड सैमसन का स्वप्न
- ❖ स्वप्न मे पूर्वाभास
- ❖ पंडित जवाहर लाल नेहरू मृत्युसूचक स्वप्न
- ❖ स्वप्न ने बनाया आस्तिक
- ❖ पुनर्जन्म का झरोखा
- ❖ आदि पुराण में महाबल के पुनर्जन्म संबंधी स्वप्न
- ❖ स्वप्न से पुनर्जन्म का संकेत
- ❖ शेल्डन का पुनर्जन्म सूचक स्वप्न
- ❖ लेबिब कैकिन का स्वप्न और पुनर्जन्म

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

- ❖ जेनीफर और गेलियन के पुनर्जन्म
- ❖ स्वप्न ने दिखाया पूर्वजन्म
- ❖ टांग की हड्डी
- ❖ एलेक्जैण्ड्रिना सैमोना के पुनर्जन्म सूचक स्वप्न
- ❖ 14वें दलाई लामा के पुनर्जन्म सूचक स्वप्न
- ❖ दादा का पौत्र रूप में पुनर्जन्म
- ❖ सार्जेण्ट थियांग सान क्ला का पुनर्जन्म
- ❖ भाई के घर ललिता बाई का पुनर्जन्म
- ❖ अद्भुत स्वप्न और सत्य
- ❖ देव प्रतिबोध : सर्पों को मत मारो
- ❖ विवेकानन्द का सपना : भाव समाधि
- ❖ देवी तुलसी को स्वप्न में शंखचूड़-दर्शन
- ❖ श्रीपाल जन्म सूचक स्वप्न
- ❖ हरिकेश बल मुनि की माता का स्वप्न
- ❖ वीर विक्रमादित्य के जन्म सूचक स्वप्न
- ❖ महात्मा बसवेश्वर जन्मसूचक स्वप्न
- ❖ संत नामदेव जन्म सूचक स्वप्न
- ❖ पढ़रीनाथ के दर्शन
- ❖ संत तुकाराम का अद्भुत स्वप्न
- ❖ स्वप्न में मां भद्रकाली
- ❖ स्वप्न के पाप का भीषण प्रायश्चित
- ❖ स्वप्न से समृद्धि
- ❖ भक्त माईदास का स्वप्न
- ❖ स्वप्न से सवा लाख
- ❖ जूलिया (अमेरिका के राष्ट्रपति टेलर की पत्नी) के स्वप्न
- ❖ वायसराय लॉर्ड डफरिन का डरावना स्वप्न
- ❖ टाइटैनिक जहाज की जल समाधि का स्वप्न
- ❖ स्वप्न से प्राण रक्षा

- ❖ रूसी नर्तक सर्जे का स्वप्न
- ❖ डूने ड्रीम
- ❖ महात्मा-गांधी की हत्या के सपने
- ❖ श्री लाल बहादुर शास्त्री मृत्युसूचक स्वप्न
- ❖ स्वप्न - संकेत द्वारा बचाव
- ❖ सम्राट् अस्ट्यागेस का स्वप्न
- ❖ क्रोएसस का सपना
- ❖ स्वप्न ने बचाई जानें
- ❖ हेरोडोट्स का स्वप्न वर्णन
- ❖ बहु के स्वप्न ने बचाई जान
- ❖ महान व्यक्तियों के मृत्युसूचक स्वप्न
- ❖ सपनों में दूर बोध
- ❖ तुम मुझे देख नहीं पाओगे
- ❖ चमत्कारी पीपल का चमत्कार
- ❖ राष्ट्रपति बनने का सपना
- ❖ आगेट मणि पर खुदे शब्दों का स्पष्टीकरण
- ❖ स्वप्न से सुलझा हत्याकाण्ड
- ❖ सपने ने दिलवायी हत्यारों को फांसी
- ❖ मृतात्मा ने स्वप्न द्वारा हत्यारा पकड़वाया
- ❖ राजा इन्द्रद्युम्न के स्वप्न
- ❖ नृप नल का स्वप्न
- ❖ वीर विक्रमादित्य का स्वप्न
- ❖ महाराजा रणजीत देव का स्वप्न
- ❖ रोग मुक्ति स्वप्न से
- ❖ मेरे कुछ विशिष्ट स्वप्न
- ❖ जन्माष्टमी को स्वप्न में श्रीकृष्ण दर्शन
- ❖ दिव्य विमान-दर्शन
- ❖ स्वप्न में रोने वाला हंसता है

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

- ❖ शिवरात्रि को शिव दर्शन
- ❖ स्वप्नों पर विश्वास
- ❖ स्वप्न ने बचाया
- ❖ अनशन का आदेश
- ❖ स्वप्न में संथारा
- ❖ अज्ञात शक्ति का उपकार
- ❖ स्वामी जी ने दी श्रवण शक्ति
- ❖ स्वप्न में संथाराः मृत्यु बनी महोत्सव
- ❖ दिव्यात्मा से सम्पर्क
- ❖ स्वप्न में दादाजी की मृत्यु का पूर्वाभास

दूसरा वरदान : जैन संस्कृति में स्वप्न एवं स्वप्न फल 103-136

- ❖ भारतीय स्वप्न-शास्त्रियों द्वारा स्वीकृत स्वप्न
- ❖ गर्भस्थ शिशुः शुभ स्वप्न
- ❖ गर्भस्थ शिशुः अशुभ स्वप्न
- ❖ महापुराण में भरत जन्म सूचक स्वप्न
- ❖ आदिपुराण में श्रेयांस कुमार के स्वप्न
- ❖ महापुराण में श्रेयांस के स्वप्न
- ❖ हरिवंश पुराण के अनुसार श्रेयांस के स्वप्न
- ❖ भगवान् आदिनाथ के मोक्षगमन सूचक स्वप्न
- ❖ पद्म पुराण में श्री लक्ष्मण जन्म सूचक स्वप्न
- ❖ उत्तर पुराण में राम-लक्ष्मण जन्म सूचक
- ❖ राजा दशरथ का स्वप्नः सीता हरण
- ❖ महासती सीता के स्वप्न (पुत्र जन्म)
- ❖ महासती राजीमती का स्वप्न
- ❖ नवांगी टीकाकार अभयदेव सूरि के स्वप्न :
- ❖ विवेकदीप आचार्य श्री भिक्षु जन्मसूचक स्वप्न :
- ❖ प्रज्ञा पुरूष जयाचार्य की माता के स्वप्न
- ❖ प्रज्ञा पुरूष जयाचार्य के स्वप्न

- ❖ जयाचार्य के भविष्यगामी स्वप्न :
- ❖ कोविद कुलालंकार कालूगणी की माता के स्वप्न
- ❖ कमनीय कलाकार कालूगणी के स्वप्न :
- ❖ समाधि स्थल शोध
- ❖ भद्रबाहु संहिता के अनुसार :मृत्यु, रोग, शुभ-अशुभ स्वप्न
- ❖ स्वप्नसार समुच्चय के अनुसार स्वप्न
- ❖ स्वप्न में प्रतिमा के जंघा, कंधा और उदर के नष्ट होने का फल -
- ❖ स्वप्न में छत्र और परिवार भंग दर्शन का फल
- ❖ स्वप्न में विभिन्न वस्तुओं को देखने से दो महीने की आयु का निश्चय
- ❖ स्वप्न दर्शन द्वारा एक मास की आयु निश्चिय
- ❖ स्वप्न में सूर्य और चन्द्रग्रहण द्वारा आयु का निश्चय
- ❖ स्वप्न दर्शन द्वारा एक मास की आयु का ज्ञान
- ❖ स्वप्न द्वारा एक मास आयु का निश्चय
- ❖ स्वप्न दर्शन द्वारा बीस दिन की आयु का निश्चय -
- ❖ शुभा-शुभ सूचक स्वप्न
- ❖ राज्य प्राप्ति सूचक स्वप्न
- ❖ विपत्ति प्राप्ताप्राप्त सूचक स्वप्न
- ❖ सुख समृद्धि सूचक स्वप्न
- ❖ मरण सूचक स्वप्न

तीसरा वरदान : बौद्ध संस्कृति में स्वप्न एवं स्वप्न फल 139-144

- ❖ बोधिसत्त्व को इन्द्र ने दिए दर्शन
- ❖ मिलिन्दपण्हो में स्वप्न
- ❖ माता महामाया के सपने
- ❖ महात्मा बुद्ध की माता के स्वप्न
- ❖ शेष आयु सूचक स्वप्न

चौथा वरदान : वैदिक सस्कृति में स्वप्न एवं स्वप्न फल 147-172

- ❖ कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी के स्वप्न
- ❖ राजा भरत का दुःस्वप्न दर्शन

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

- ❖ महासती सीताजी का स्वप्न
- ❖ वाल्मिकी रामायण में त्रिजटा के दिव्य स्वप्न
- ❖ रावण से सम्बन्धित त्रिजटा के स्वप्न
- ❖ रामचरित मानस में त्रिजटा स्वप्न
- ❖ नन्द बाबा का स्वप्न
- ❖ कंस के दुःस्वप्न
- ❖ अक्रूजी के शुभ स्वप्न
- ❖ परशुराम के शुभ स्वप्न
- ❖ राधा के दुःस्वप्न
- ❖ राजा इन्द्रद्युम्न के स्वप्न
- ❖ कार्तवीर्यार्जुन का स्वप्न
- ❖ ब्रह्मवैवर्त पुराण में स्वप्न
- ❖ सुस्वप्न-दर्शन-फल
- ❖ ब्रह्मवैवर्त में दुःस्वप्न एवं उनके फल
- ❖ भविष्य-पुराण में शुभा-शुभ स्वप्न
- ❖ मत्स्य पुराण में स्वप्न
- ❖ मत्स्य पुराण में शुभ स्वप्न
- ❖ राज्य भ्रष्ट सूचक स्वप्न

पांचवां वरदान : आयुर्वेद में वर्णित स्वप्न **175-182**

- ❖ चरक-संहिता
- ❖ सुश्रुत-संहिता में स्वप्न
- ❖ शुभदायक श्रेष्ठ स्वप्न-दर्शन का वर्णन
- ❖ अष्टांगहृदय में वर्णित स्वप्न
- ❖ अन्यान्य अशुभ स्वप्न
- ❖ स्वप्न में काल रात्रि रूपी स्त्री
- ❖ शुभ सूचक स्वप्न
- ❖ अग्नि-पुराण में वर्णित स्वप्न
- ❖ शुभ स्वप्न

छठां वरदान : ज्योतिष में स्वप्न **185-238**

- ❖ स्वप्नाध्याय में राजयोग कारक स्वप्न
- ❖ स्वप्न कमलाकर में अशुभ स्वप्न
- ❖ स्वप्न विज्ञान में मृत्यु-सूचक स्वप्न
- ❖ स्वप्न प्रदीप में स्वप्न
- ❖ वृहद् यात्रा में स्वप्न
- ❖ रत्नचूड़ कथा में स्वप्न
- ❖ उत्तराध्ययन सूत्र टीका में स्वप्न
- ❖ आचार मयूख में स्वप्न

सातवां वरदान : मनोविज्ञान में स्वप्नों के शुभा-शुभफल **241-246**

- ❖ दांतों का गिरना
- ❖ गिरना
- ❖ बाढ़ का प्रकोप
- ❖ खेत-खलिहान
- ❖ आग देखना :
- ❖ फूल देखना
- ❖ इन्द्रधनुष
- ❖ पक्षी
- ❖ चांद
- ❖ चरागाह
- ❖ बेडरूम
- ❖ उड़ना एवं गिरना
- ❖ दौड़ने का सपना
- ❖ अचानक सफर
- ❖ हाथी के दर्शन
- ❖ धनदौलत देखना
- ❖ कोई वस्तु बार-बार देखना
- ❖ पहाड़ देखना

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

- ❖ उड़न-तश्तरी (यूएफओ)
- ❖ दर्द
- ❖ घंटिया
- ❖ जेब्रा
- ❖ जीरो
- ❖ चिड़ियाघर
- ❖ चेहरा
- ❖ फल
- ❖ पिता
- ❖ उड़ान
- ❖ कैंची
- ❖ डूबने का स्वप्न
- ❖ दुर्घटना का सपना
- ❖ दुल्हन
- ❖ अन्त्येष्टि

आठवां वरदान : पाश्चात्य - विचारधारा **249-276**

- ❖ पश्चिम का स्वप्न विज्ञान
- ❖ धन-समृद्धि
- ❖ दुर्घटना
- ❖ वायुयान
- ❖ कटार
- ❖ कनेर
- ❖ किला
- ❖ केला
- ❖ खल (दुष्ट)
- ❖ खेल
- ❖ गाय
- ❖ घड़ी

- ❖ चाय
- ❖ जन्म
- ❖ झाड़ू
- ❖ मछली
- ❖ कार चलाना
- ❖ बिल्ली
- ❖ जानवर
- ❖ गुड़िया
- ❖ बिस्तर
- ❖ पुस्तकें
- ❖ भोजन बनाना
- ❖ मोमबत्ती
- ❖ कीड़े
- ❖ ताश के पत्ते
- ❖ हीरे जवाहरात
- ❖ बाल
- ❖ हाथ
- ❖ घास
- ❖ द्वीप-दर्शन
- ❖ घोड़ा
- ❖ आग
- ❖ अस्वस्थ
- ❖ आवाज
- ❖ ऊपर
- ❖ मृत्यु
- ❖ युद्ध
- ❖ पाश्चात्य कविताओं में स्वप्न
- ❖ **ड्रिम डिक्शनरी** (Dream's dictionary) **में स्वप्न**

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

- Dream interpretation:Trees
- Dream interpretation:Animals
- The color in your dream
- Body parts in your dreams and what do they mean
- Dream interpretations: Fruit
- Dream interpretation: Vegetables
- Dream interpretation:Counting

नौवां वरदान : स्वप्न में विभिन्न, रंगों, धातुओं, पशु-पक्षियों के दर्शन का फल **279–298**

- स्वप्न में विविध सवारी
- स्वप्न में देखे रंगों का फल
- स्वप्न में विविध प्रकार की धातुओं के दर्शन के फल
- स्वप्न में विभिन्न रत्नों को देखने का फल
- स्वप्न में धार्मिक ग्रंथों को देखने का फल
- स्वप्न में धार्मिक स्थल देखने का फल
- स्वप्न में विभिन्न देवी-देवताओं को देखने का फल
- स्वप्न में विभिन्न पशु एवं पक्षियों के दर्शन के फल
- अजा (Goat)
- कीट पक्षी से सम्बन्धित विशेष स्वप्न
- अजगर और सर्प
- अश्व (Horse)
- उल्लू (Owl)
- ऊँट (Camel)
- कबूतर या कपोत (Pigeon)
- कीड़े और कीटाणु (Insects and Germs)
- काक/कौवा (Crow)
- कुत्ता (Dog)
- कोयल (Cuckoo)
- खच्चर (Mule)

- खरगोश (Rabbit)
- गाय (Cow)
- गरुड़ (Eagle)
- गैंडा (Rhinoceros)
- चक्रवाद (चकवा)
- चिड़ियां (Bird)
- छिपकली (Lizard)
- तोता (Parrot)
- बाज (Eagle) गरुड़
- बिच्छु या वृश्चिक (Scorpion)
- मछली (Fish)
- मुर्गा (Cock)
- मैना
- मोर (Peacock)
- सिंह या शेर (Lion)
- हिरण (Deer)
- व्यापार में सफलता सूचक स्वप्न
- विद्या बुद्धि एवं सम्मान दायक स्वप्न
- विदेश यात्रा सम्बन्धी स्वप्न
- स्वास्थ्य प्राप्ति सूचक स्वप्न
- स्वप्न में विशिष्ट पदाधिकारियों को देखने का फल
- स्वप्न में विभिन्न ताश के पत्तों को देखने का फल

दसवां वरदान : इस्लाम में ख्वाब और ताबीर **301–308**

- ईसामसीह के जन्म सूचक स्वप्न
- यीशु की सुरक्षा स्वप्न
- मिश्र में आश्रय पाना
- इस्राएल में रहने का स्वप्न
- बाईबिल में सपने

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

- ❖ याकूब का स्वप्न
- ❖ पिलानेहारा और पकानेहारा का स्वप्न :
- ❖ फ़िरौन के स्वप्न
- ❖ नृप नबूकदनेस्सर का स्वप्न
- ❖ नबूकदनेस्सर का भविष्य सूचक स्वप्न
- ❖ राजकुमार तुत्मेस का स्वप्न
- ❖ जौन वैसली का स्वप्न

ग्यारहवां वरदान : दुःस्वप्न निवारणार्थ मनोवैज्ञानिक उपाय **310-314**

- ❖ अयथार्थ स्वप्न क्यों आते हैं?
- ❖ बुरे स्वप्नों को निष्प्रभाव कैसे करें?
- ❖ अशुभ स्वप्नों को शांत करने के उपाय
- ❖ दुःस्वप्न निवारणार्थ मनोवैज्ञानिक उपाय
- ❖ स्वप्नों की दिशा का रूपांतरण -

उपसंहार **317-319**

लेखिका का परिचय

लेखिका का नाम	साध्वी श्री डॉ.ललितरेखा'खाटू'
जन्म	02.01.1966,पौष शुक्ला दशमी, विक्रमसम्वत् 2022-23, छोटीखाटू (नागौर) राजस्थान
माता पिता का नाम	श्रीमती मोहनी देवी डूंगरवाल, मूथा श्रीमान् गणपतमलजी डूंगरवाल, मूथा
दीक्षा	11.06.1986 लाडनूं (नागौर) राजस्थान, गणाधिपति गुरूदेव श्री तुलसी के कर कमलों द्वारा
शिक्षा	एम. ए. (जैनदर्शन : तुलनात्मकधर्मदर्शन), पी.एच.डी (जैनदर्शन में स्वप्न-मनोविज्ञान), हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, प्राकृत आदि भाषाओं का ज्ञान, पारमार्थिक शिक्षण संस्था में साढ़े छह वर्ष तक अध्ययन
सान्निध्य	11 माह गुरू कुलवास, 20 वर्षों तक साध्वी श्री भीखांजी (श्रीडूंगरगढ़) की सेवा में, वर्तमान में साध्वी श्री कमलरेखाजी की सहवर्ती
यात्रा	हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, मेवाड़, मारवाड़, थली, राजस्थान आदि
पुस्तकें	जैन दर्शन में स्वप्न-मनोविज्ञान एवंसंयम से सिद्धि : साध्वी श्री भीखांजी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वप्न : एक झलक

स्वप्न क्या है ? स्वप्न कुदरत का करिश्मा एवं प्रकृति का अमूल्य उपहार है। सुप्त एवं शांत मन के गहन समन्दर में उठी उत्ताल तरंगों को स्वप्न की अभिधा से अभिहित कर सकते हैं। निद्रावस्था में मानस जो कल्पनाएं संजोता है, तानाबाना बुनता है, वही वास्तव में स्वप्न कहलाते हैं। स्वप्न हमारे मस्तिष्क के चिन्तन का नवनीत है, मंथन है। जो सोये-सोये लिया जाता है, वह स्वप्न है। स्वप्न शयनावस्था की विचार-क्रिया है। दूसरे शब्दों में - स्वप्नावस्था में व्यक्ति अपनी शारीरिक एवं मानसिक प्रवृत्तियों के अनुरूप निद्रा में जो दृश्य देखता है, उन्हीं को स्वप्न कहते है। स्वप्न को निद्रागत विचारों एवं कल्पनाओं की शृंखला कहा गया हैं। सुषुप्ति अवस्था में किसी अर्थ के विकल्प का अनुभव करना स्वप्न कहलाता है। निद्रावस्था के समय उठने वाली परिकल्पनाओं के अन्तर्गत दिखने वाले दृश्यों को स्वप्न कहते हैं अथवा जागते हुए जो स्वप्न देखे जाते हैं, वे कल्पनाएं कहलाती हैं तथा सोते हुए नींद में जो कल्पनाएं की जाती हैं, उन्हें स्वप्न कहा जाता है।

"One dream as One thinks" व्यक्ति जैसा सोचता वैसे ही स्वप्न देखता है। सपनों का आधार मन की चंचलता हैं। स्वप्नों की जन्मस्थली या प्रमुख कारक आत्मा है। स्वप्न आत्मा द्वारा मस्तिष्क पर डाले गये प्रभाव से उत्पन्न होते हैं। स्वप्नावस्था में मन किसी भी प्रकार से आत्मा की 'फ्रीक्वेंसी' पर पहुंच जाता है। मन ही सब सिद्धियों का भण्डार एवं साधन है। स्वप्न दर्शन का द्वार स्थूल मानव देह है। वह सुषुप्तावस्था में मन में लीन हो जाता है। उसी देह का आश्रय ले मन आत्मा को प्राप्त हो जाता है। स्वप्नावस्था में अवचेतन मन सुषुम्ना शीर्षक में प्रवेश करता है, जिसे 'एक्वेरियन' कहते हैं। जब बाहर के कार्यों से स्थूल शरीर थक जाता है तब तमोगुण रजोगुण को दबाकर स्थूल शरीर को स्थूल जगत में

कार्य करने में असमर्थ कर देता है किन्तु तमोगुण से दबा हुआ सूक्ष्म शरीर जागृतावस्था की स्मृति के कल्पित विषयों में कार्य करना आरम्भ कर देता है। वह स्वप्न कहलाता है। स्वप्न अर्धनिद्रित अवस्था में ही आते हैं। स्वप्न एक कार्य है तो इसका कारण अवश्य है। वह कारण है हमारे संस्कार। कुछ दार्शनिक सर्वोच्च सत्ता का सर्वोत्तम गुप्त संदेश इसे मानते हैं। मनौवैज्ञानिक इसे मन की क्रीड़ा मात्र मानते हैं। लेकिन जैन दर्शन के अनुसार मोहनीय कर्म के प्रांगण में ही स्वप्नलोक की सैर संभव है। जिन्होंने मोह कर्म नष्ट कर दिया वे वीतराग कभी भी स्वप्न नहीं देखते। ऋषभदेव से लेकर आज तक मानव स्वप्न प्रहेलिका सुलझाने में प्रयास रत हैं।

स्वप्न का जन्म कब, कैसे, कहां हुआ ? इसकी जन्म तिथि एवं मिति क्या है ? यह प्रश्न आज भी अनुत्तरित है। लेकिन इतना तो बताना संभव है कि जिस दिन मानव ने सृष्टि पर चरणन्यास किया उसी समय से स्वप्नपरी के सुन्दर दृश्यों एवं नाटक का श्री गणेश हो गया। गर्भस्थ शिशु तो क्या पशु-पक्षी भी स्वप्नलोक में विचरण करते हैं तभी तो कहावत प्रसिद्ध है 'सोयी बिल्ली तो चूहों के ही स्वप्न देखा करती है।' इससे प्रतिध्वनित होता है कि 'तस्य तदेव हि स्वप्नं, यस्य मनो यत्र संलग्नम्' अर्थात जिसके मन में जो बात बसा करती है, वही स्वप्न में बहुधा परिलक्षित होती है। इसलिए महान मनोवैज्ञानिक फ्रायड दमित वासना एवं इच्छाओं को स्वप्नों का कारण मानता है। स्वप्न एक महान् अजूबा है, विराट शगूफा (पहेली) है। एक बार देखने के पश्चात् मन की धरती पर तूफान मचा देता है। स्वप्न क्यों आया ? इसका क्या फल होगा? कितने बजे आया ? किससे जाने इसका अभिप्राय ? इस प्रकार प्रश्नों की बौछारें चित्तभूमि पर गिरती हैं एवं मन रूपी अश्व को चंचल बना देती है। स्वप्न हमारे मन के दर्पण एवं पेरामीटर है। इनका अध्ययन करके हमारे मन को सुगमता से समझा जा सकता है। आत्मा की अमरता का संबंध स्वप्न से जुड़ा हुआ है। पूर्वजन्म के संस्कारों के कारण ही गर्भस्थ शिशु स्वप्न देखते हैं। इसके कारण ही कुछ व्यक्ति स्वप्न में पूर्वजन्म देख लेते हैं अथवा किसी-किसी को जातिस्मृति ज्ञान भी हो जाता है। स्वप्न -संकेत मानव के लिए परम हितकारी है। वे हमेशा हमें प्रेरणा एवं दिशा निर्देशन देते हैं। अतः स्वप्न हमारा सच्चा सखा, पथप्रदर्शक, सहायक, हित चिन्तक एवं सलाहकार है। स्वप्न हमारा प्रिय एवं अप्रिय कार्य कुछ नहीं करता अपितु हमें उनकी सूचना

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मात्र संप्रेषित करता है। शुभ स्वप्न हमारी धरोहर है इसको स्मृति रूपी कैमरे में कैद करके रखना चाहिए। मधुर स्वप्नों का एल्बम भी बनाया जा सकता है या सपनों को लिखकर भी इससे लाभ उठाया जा सकता है। शुभ स्वप्नों का चमकता चांद मन की तमसिल गुहा में भी रोशनी बिखेर देता है। स्वप्न शास्त्र से मानव वही फायदा उठा सकता है जो फायदा स्वास्थ्य विज्ञान से उठाता है। शुभ स्वप्नों का संबंध मन की प्रसन्नता से भी जुड़ा हुआ है। स्वप्नों के रहस्यों की गहराई तक पहुंचने के प्रयास में अनेक मनोवैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुंचे है कि जब मनुष्य का अवचेतन अत्यन्त क्षुब्ध रहने लगता है तो इसकी परिणति स्वप्न में होती है। स्वप्नावस्था में जीव का स्थान कंठ बतलाया गया हैं, क्योंकि जाग्रतावस्था के संस्कार का आकार बाल के हजारवें हिस्से जितना है, जिसका कंठ स्थित 'एक हिता' नामक नाड़ी में रहना बताया गया है। एक प्राचीन ग्रंथ नीलकंठी के अनुसार प्रदेश-विशेष में अवस्थित मन के संयोग को स्वप्न कहा गया है।

प्राचीन ग्रंथ नीलकंठी के अनुसार पुरीतद् नामक नाड़ी और बाहरीभाग के संधि स्थान में जब मन रहता है उस अवस्था में स्वप्न होता है। अन्नम् भट्ट के मतानुसार मेध्या नामक नाड़ी में मन के संयोग होने पर स्वप्न होता है। रूसी मनोवैज्ञानिक डॉ. वासिली कसात्किन के अनुसार हमारे मस्तिष्क के आस-पास करीब 1.6 करोड़ शिराओं से मिलकर एक मोटी पट्टी बनी हुई है, उसे स्वप्न पट्टिका (Dream-band) कहते हैं, उसी से स्वप्न बनते है। यह स्वप्नों का संसार है। इस संसार रूपी स्वप्न का जनक है - मिथ्यात्व, जननी है - मोह निद्रा। जिसके आगोश में स्वप्न फलते-फूलते हैं। यह संसार सनातन है किन्तु इस स्वप्निल संसार का सृजन-संहार, संरक्षण व्यक्ति के खुद के हाथ में है। योगसूत्र कहता है - आवागमन के तथ्य से परिचित योगी स्वप्नवत् अस्थिर जगत् से छुटकारा पाने के लिए प्रयत्नपूर्वक जाग्रत को भी स्वप्नवत् मानकर जीवन के दैहिक और मानसिक भोगों को समाप्त करके चलते हैं। वेदान्त में जीवन को महास्वप्न कहा गया है। मरणोत्तर जीवन में पहुंचकर हम वर्तमान जन्म को एक स्वप्न ही अनुभव करेंगे। केवल अज्ञान तिमिर के कारण संसार रूपी महास्वप्न में परिभ्रमण करना पड़ता है। सम्यग् ज्ञान से संसार रूपी स्वप्न का अन्त होता है, मुक्ति रूपी भास्कर के दर्शन होते हैं। मानव जन्म से ही स्वप्न दृष्टा है। वैज्ञानिक मानते हैं कि जन्म से पहले बच्चा नींद के अन्तिम चरण रेम स्लीप की अवस्था

में रहता है। एक प्रसिद्ध पाश्चात्य लोकोक्ति है -A man who does not dream does not live. जो मानव स्वप्न नहीं देखता वह जीवित नहीं रह सकता। अभिप्राय यह है कि जीवित अथवा सक्रिय वही है, जो स्वप्न देखता है क्योंकि प्रायः स्वप्नरहित निद्रा किसी की भी नहीं होती। सुप्रसिद्ध अंग्रेज नाटककार शेक्सपीयर ने कहा है - 'हमारा निर्माण ही स्वप्नों से हुआ है।' उन्होंने यहां तक लिखा है कि -"Dreams are such stuff as we are made of."

रॉबर्ट स्टीव का मानना है कि जीवित रहने के लिए स्वप्न अनिवार्य है। स्वप्नों के प्रति ग्रहणशीलता हमारे जीवन को सुखद बनाने में बेहतर सहायक सिद्ध हो सकती है। मनुष्य स्वप्नों के संसार में क्रीड़ाएं अधिक करता है। एक जगह बैठने की अपेक्षा भ्रमण ज्यादा करता है। हमारे चौंतीस प्रतिशत स्वप्न भ्रमण एवं सवारी करने से संबंधित होते हैं। ग्यारह प्रतिशत दृश्यों में किसी से बतियाते हैं। सात प्रतिशत स्वप्न दृश्यों में हम बैठे रहते हैं। हमारे छह प्रतिशत स्वप्न सामाजिक समारोह से संबंधित होते हैं। पांच प्रतिशत स्वप्न में हम खेलते-कूदते हैं। तीन प्रतिशत में शिक्षण-प्रशिक्षण का कार्य करते हैं। तीन प्रतिशत स्वप्न में हम लड़ते-झगड़ते हैं। चौबीस प्रतिशत स्वप्नों को भोजन आदि बाकी कार्यों से जोड़ा जा सकता है। मानसिक समस्याओं के समाधान में स्वप्नों का विशेष महत्त्व है। दैनिक जीवन की जो भावनात्मक समस्यायें होती हैं, स्वप्न उनके लिए रात्रिकालीन उपचार का काम करते हैं। इवांस कहते हैं - निद्रा में बाधा पहुंचाने पर उत्पन्न होने वाली विलक्षण कल्पनाओं के उद्देश्यहीन जोड़-तोड़ नहीं होते स्वप्न बल्कि वे ऐसे कार्य संपादित करते हैं जिन पर हमारे मानसिक जीवन का अस्तित्व निर्भर करता है। जब व्यक्ति मनस्ताप से श्रांत-क्लांत हो जाता है तब अवचेतन का विशाल वटवृक्ष अपनी शीतल छांव तले थपकियां देकर सुला देता है। मस्तिष्क पर लगने वाले बौद्धिक संवेदनात्मक आघातों के लिए गहन निद्रा और सुनहरी स्वप्न-श्रृंखलाएं मरहम का कार्य करती हैं क्योंकि स्वप्नों में अवचेतन क्रियाशील होकर चेतन को विश्राम का मौका देता है। अतः स्वप्न ही वह राजपथ है जिस पर चलकर मानव स्वयं को समग्र बना सकता है, मस्तिष्क को चेतना के पोषण द्वारा संजीवनी शक्ति प्रदान कर व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर सकता है। भारतीय दर्शन शास्त्र के अनुसार मनुष्य का भूत, वर्तमान और भविष्य का सूक्ष्माकार हर समय वायुमंडल में विद्यमान रहता है, जब व्यक्ति निद्रावस्था में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

होता है तो उसका व्यक्तित्व भी सूक्ष्माकार होकर अपने भूत, भविष्य से संपर्क स्थापित करता है। यही संपर्क स्वप्न का कारण और स्वप्न का माध्यम बनता है। योग में इस प्रकार बताया है - मानव के पांच ज्ञानेन्द्रियों के अलावा एक ऐसा गुप्त मार्ग भी है, जिससे यह स्वप्न-शक्ति शरीर में प्रवेश करती है तथा मस्तिष्क से जा टकराती हैं, यह शक्ति मूल रूप से भविष्य सूचक है। अतः भविष्य संबंधी घटनाओं का बोध कराती है। हमारे ऋषि-मुनियों के अनुसार स्वप्नों का आना ईश्वरीय शक्ति का वरदान है। ज्योतिष शास्त्रानुसार हरव्यक्ति को उसके कर्मानुसार, संस्कारानुसार उसके मान्य धर्मानुसार उसके पूर्वजन्मानुसार ही स्वप्न दिखाये जाते हैं। प्रभु जिस व्यक्ति से जो करवाना चाहता है, उसी के अनुरूप स्वप्न संकेत देता है। इस प्रक्रिया में परमेश्वर की इच्छा सर्वोपरि है। स्वप्न देखे नहीं जाते, दिखाये जाते हैं।

भविष्य-पुराण के अनुसार स्वप्न प्रतीक रूप में ही आते हैं, प्रत्यक्ष नहीं। जैन दर्शनानुसार स्वप्न मोह कर्म और पूर्व संस्कार के उद्‌बोध के परिणाम है। विशेषावश्यक भाष्य में बताया गया है कि संस्कारों के कारण स्वप्न आते हैं। स्वप्नदर्शन के नौ निमित्त-कारण माने हैं - 1. अनुभूत, 2. दृष्ट, 3. चिन्तित, 4. श्रुत, 5. प्रकृति विकार, 6. देवता, 7. अनूप, 8. पुण्य, 9. पाप। भगवान महावीर ने स्वप्नों के पांच भेद बताएं है - 1. यथातथ्य, 2. चिन्ता-स्वप्न, 3. प्रतान स्वप्न, 4. तद्‌विपरीत, 5. अव्यक्त दर्शन। बौद्ध दर्शन में भी स्वप्न की व्याख्या करने वाले सिद्धान्त पाये जाते हैं। इनमें मुख्य निम्नलिखित हैं- 1. शरीर शास्त्रीय सिद्धान्त, 2. ज्ञानवाहक नाड़ी सिद्धान्त, 3. चैत्य सिद्धान्त, 4. द्रष्टा स्वप्न वैदिक-दर्शनानुसार (महाभारत - शांति पर्व में) स्वप्न आने के कारण जागृतावस्था में निरन्तर शब्दादिक विषयों को ग्रहण करते-करते श्रोत्रादि इन्द्रियां जब थक जाती है तब सभी प्राणियों के अनुभव में आने वाला स्वप्न दिखाई देने लगता है।

न्याय-वैशेषिक दर्शन में चार प्रकार के स्वप्न माने गए हैं - 1. धातुदोष स्वप्न, 2. संस्कार पाठव स्वप्न, 3. अदृष्ट धर्माधर्म स्वप्न, 4. स्वप्नान्तिक ज्ञान। योग सूत्र में स्वप्नों के तीन प्रकार बताये गये हैं - 1. तमोगुणी स्वप्न, 2. रजोगुणी स्वप्न, 3.सात्विक स्वप्न। ज्योतिष के अनुसार स्वप्न चार प्रकार के कहे गये हैं - 1. दैविक स्वप्न, 2. शुभ स्वप्न, 3. अशुभ स्वप्न, 4. मिश्र स्वप्न। आयुर्वेद के अनुसार - मनोवह अर्थात् मन में बहने वाली नाड़ियों के छिद्र जिस समय

अतिवली, तीनों दोषों से पूर्ण हो जाते हैं, उस समय में यह मनुष्य दारूण और अदारूण स्वप्नों को देखता है। इस्लाम कहता है - स्वप्न मस्तिष्क-शक्ति की उपज है।

मनोवैज्ञानिक सिगमण्ड फ्रायड स्वप्न-विश्लेषण के जनक माने जाते हैं। वे मानते हैं कि सभी स्वप्न काम चेतना (Sex) से प्रभावित होकर दिखाई देते हैं। सैक्स भावना का आधार मानकर उन्होंने स्वप्नों के प्रतीकों को प्रस्तुत किया है। हमारा मन तीन भागों में बंटा हुआ है - चेतन मन, अवचेतन मन, अचेतन मन। निद्रा-काल में हमारा चेतन मन सुप्त हो जाता है। अवचेतन मन सक्रिय हो जाता है, उस अवस्था में हम स्वप्न देखते है। निद्रा-काल में भी मानसिक क्रिया निरन्तर चलती रहती है। स्वप्न इन्हीं लगातार चलने वाली मानसिक प्रक्रियाओं की एक अवस्था विशेष है।

हमारे मस्तिष्क में हाइपोथेलेमस एक स्वतः चालित यंत्र है, जो शरीर के तापमान को नियन्त्रित करता है। निद्रा का केन्द्र भी यही है। इसकी रासायनिक प्रक्रिया से नींद आ जाती है। नींद की चार अवस्थाएं होती है। चतुर्थ अवस्था में शरीर 'रेपिड आई मोशन' में होता है, इस अवस्था में ही सपनें आते हैं। याद्‌दाश्त को बेहतर करने के लिए अच्छी नींद आवश्यक है। लिम्बिक सिस्टम में हिप्पोकैम्पस अन्तर्निहित होता है। यह सोने, सपने देखने एवं सुनिश्चित कला सीखने में उपयोगी है। तनावों से मुक्ति दिलाने हेतु अवचेतन मन स्वप्न दिखाता है। मनुष्य के अन्दर एक अविज्ञात चेतना शक्ति काम करती है, जो सुदूर क्षेत्र तक सम्पर्क बनाये हुए है। यही शक्ति अनुभव सम्पर्क बनाये हुए हैं। यही अनुभव और ज्ञान का उचित अवसरों पर रहस्योद्‌घाटन करती है। आदिमानव की धारणा थी कि मनुष्य के दो आत्माएं होती हैं। एक आत्मा मनुष्य के मरने के साथ ही मर जाती है दूसरी मृत्यु के उपरान्त उसे छोड़ कर चली जाती हैं। यह दूसरी आत्मा ही रात्रि में विचरण करती है, स्वप्न सामग्री जुटाती है।

नींद की अवस्था में व्यक्ति को बाहरी उद्‌दीपकों का कुछ भी ज्ञान ही नहीं होता जैसे - सर्दी-गर्मी, रोशनी आदि। अल्कोहल, नींद की गोलियां और शामक द्रव्य स्वप्न क्रिया में बाधा पहुंचाकर इस प्रक्रिया को कुंठित करते हैं। नींद में पशुओं और पक्षियों की पुतलियां भी मनुष्य की तरह ही हरकत करती है और इससे पता चलता है कि वे सभी स्वप्न देखते हैं। संसार में प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वप्न देखता है। यह तथ्य स्वप्नों के शोध से सामने आया है। स्वप्न के लिए शरीर का सबसे उत्तरदायी अंग नेत्र है क्योंकि नेत्र मिलित (बन्द) होने पर भी बन्द पलकों से स्वप्न में हम सारा दृश्य देख रहे होते हैं। उस समय पलकें तेजी से गति कर रही होती है। स्वप्न देखते समय जो शक्ति खर्च होती हैं, वह प्राप्त लाभ की तुलना में न्यून होती है। स्वप्न एवं जागृतावस्था में ज्यादा अन्तर नहीं है। जागृतावस्था में चेतन मस्तिष्क सक्रिय रहता है। दोनों ही अवस्था में मस्तिष्क में 'अल्फा-तरंगें' क्रियाशील रहती है। जागृत के अनुभव स्थिर और स्वप्न के अनुभव अस्थिर प्रतीत होते हैं। स्वप्नों के बीज कभी बाजार में नहीं बिकते बल्कि हमारे अव्यक्त मन में छिपे हैं। स्वप्नों में द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भाव का नियंत्रण नहीं होता। स्वप्नानुभव मानस-चित्रशाला के अनुरूप ही होते हैं। ऋजु आत्मा को गहन निद्रा का अनमोल वरदान प्राप्त है। जिससे वह सुखद स्वप्नों का सिनेमा बे-टिकट देखता है। स्वप्नों में दृष्टिगोचर होने वाली अनुकूलताएं हमें प्रोत्साहित करती हैं। स्वप्न के गूढ़ार्थ को समझे तो वे हमारे अच्छे मार्गदर्शक एवं मददगार हैं। स्वप्न से किसी को परेशान होने की जरूरत नहीं है। यह अचेतन द्वारा अपने दबावों को हल्का करने का एक उपक्रम है। स्वप्नों की विसंगतियां जीवन क्रम के ढ़ंग, तनावयुक्त जीवन-शैली को बदलने की चेतावनी देती है। ये निजी जीवन की जानकारियों को सचित्र प्रस्तुति देकर नये रहस्य उद्घाटित करते हैं। पुनः पुनः दिखने वाले स्वप्न एवं अंकों का बड़ा महत्त्व है। स्वप्न पर्यवेक्षण के आधार पर जीवन-विकास एवं जीवन परिष्कार के सूत्र मिलते हैं। बच्चों में दुःखद स्वप्न का प्रभाव उनके व्यक्तित्व-विकास पर बहुत बुरा पड़ता है। दुःस्वप्नों का लोगों के व्यक्तिगत चरित्र से घनिष्ठ संबंध है। भोजन का भी स्वप्नों पर गहरा प्रभाव परिलिक्षित होता है। दुःस्वप्नों का कारण परिस्थितियां, कोलाहल, शारीरिक कष्ट, मनोविकार एवं मस्तिष्कीय असन्तुलन आदि है। जीवन में तनाव के दौरान दुःस्वप्न प्रायः अधिक आते हैं, इसलिए जीवन यथासंभव शांति के साथ बिताना चाहिए।

जैन मान्यतानुसार स्वप्न का फल होना, न होना व्यक्ति के प्रारब्ध पर निर्भर करता है। भारतीय दर्शन में जैसा कर्म वैसा फल सिद्धान्त की मान्यता है। स्वप्न भी कर्मानुसार ही आते हैं। जब व्यक्ति के पुण्य कर्म का उदय होता है तो उसे शुभ स्वप्न आते हैं और पाप कर्म के उदय से अशुभ स्वप्न आते हैं। श्री भिक्षु

आगम विषय कोश के अनुसार पुण्य कर्म और पाप कर्म इष्ट और अनिष्ट स्वप्न के निमित्त बनते हैं।

मनोवैज्ञानिक सपनों के अन्तर का कारण व्यक्ति की सोच, प्रकृति और उसके विचारों को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों को मानते हैं। हमारी मनोदशा ही सपनों से प्रभावित नहीं होती बल्कि मनोदशा का प्रभाव भी स्वप्नों पर पड़ता है। किसी भी सदमें का हमारे सपनों पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है लेकिन इसके प्रभाव में आयु, लिंग एवं परिस्थितियां महत्वपूर्ण भूमिका के लिए बड़ी उपजाऊ भूमि है। पुण्यबीज के लिए यह उर्वरक प्रमाणित हो सकती है। दुःख, भय तथा पाप के बीज बड़ी तेजी से वृक्ष बन जाते हैं और स्वप्नों के रूप में प्रकट होते हैं। जिसकी जैसी भावना उसके वैसे ही मानस-चित्र और वैसे ही स्वप्न। जिन दृश्यों या पदार्थों को हम जीवन में अति शुभ मानते हैं, वही दृश्य और वस्तु स्वप्न जगत में प्रायः अशुभ समझी गई हैं। जिस वस्तु से हम जीवन में घृणा करते हैं वही अनर्थकारी वस्तु स्वप्न संसार में शुभंकर, अति शुभ फलदायी मानी गई हैं। सुखद और दुःखद स्वप्नों का मन पर गहन प्रभाव पड़ता हैं।

स्वप्न निद्रा के रक्षक (Preserver) होते है। यदि स्वप्न न होंगे तो स्वप्न की कारणभूत-उत्तेजना निद्रा को समाप्त कर देने वाली हो जाएगी। वस्तुतः स्वप्न ही निद्रा को कायम रख पाने में सहायक होते है। स्वप्न न हो तो नींद का बने रहना ही असम्भव हो जाए। इसका परिणाम यह होता है कि व्यक्ति की नींद टूटने की बजाय और लम्बी हो जाती है। स्वप्न को फ्रायड ने नींद का संरक्षक (Guardian) माना है।

स्वप्न विद्या अध्यात्म विद्या का विशिष्ट अंग है। उसका विस्तार करके परोक्ष जगत के रहस्य को जाना जा सकता है। अतीन्द्रिय शक्तियों का विकास स्फुरण एवं स्पन्दन को जाना जा सकता है। इनके माध्यम से सम्भावित खतरों का पूर्वाभास या आकलन भी किया जा सकता है। रूसी स्वप्नशास्त्री डॉक्टर कसात्किन ने विभिन्न शोधों के बाद निष्कर्ष निकाला कि हमारे मस्तिष्क में शरीर में होने वाली सूक्ष्मतम क्रियाओं को भी समझने का सामर्थ्य है। परिवेश और परिस्थितियों की सूक्ष्मता से छानबीन कर वह हमें अनेक दुर्घटनाओं एवं दुःखों के पूर्वाभास भी कराता है। कई स्वप्न हमें परामर्श प्रदान करते हैं तो कई स्वप्न

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

हमारा उपयुक्त मार्गदर्शन भी करते हैं। स्वप्नों के समुचित उपयोग से मानव मन की दुःखद ग्रंथियों और कुण्ठाओं की चिकित्सा भी की जा सकती है। स्वप्न से जटिलतम समस्याओं का समाधान भी संभव है। स्वप्न विज्ञान के आधार पर वही लाभ उठाया जा सकता है जो स्वास्थ्य विज्ञान एवं चिकित्सा विज्ञान के आधार पर उठाया जाता है। बड़े-बड़े सम्राट दुनिया को जीतकर जो आनन्द लेते हैं, वही आनन्द साधारण से साधारण आदमी इष्ट स्वप्न देखकर ले सकता है। अनिष्ट से निजात पा सकता है। स्वप्न अच्छा हो या बुरा यदि सही जानकारी हो तो अनिष्ट से बचा जा सकता है। इष्ट को संपादित कर जीवन में चार चांद लगाये जा सकते है। हमारा अवचेतन मन यदि परिष्कृत हो तो मनुष्य स्वप्नों के परिणाम स्वरूप संभावित घटनाओं का पूर्वाभास कर भविष्यवाणी करने की क्षमता का विकास कर सकता है। पुनर्जन्म का साक्षात्कार भी स्वप्नों के जरिये (माध्यम से) संभव है। हमारे जीवन को बेहतर बनाने में स्वप्न सहायक सिद्ध हो सकते है। मनोविश्लेषक तनाव, अवसाद, चिन्ता जैसे मनोरोगों के उपचार में सपनों की सहायता लेते हैं। सर्दी, ज्वर, नजला-जुकाम, फोड़े-फुंसी जैसे शारीरिक विक्षोभों एवं विकारों की सूचना एक-दो रात्रि पूर्व ही रोगी को स्वप्नों के माध्यम से मिल जाती है। विभिन्न समस्या-समाधान में ये स्वप्न प्रेरक की भूमिका निभाते हैं। सिलाई मशीन की सूई से लेकर परमाणु सरंचना का आविष्कार स्वप्नों की प्रेरणा से ही संभव हो सका। विभिन्न तिथि एवं प्रहर का प्रभाव भी स्वप्नों पर देखा गया है। दुःस्वप्नों का हमारे पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उनके निवारणार्थ यंत्र, तंत्र, मंत्र का उपयोग करके उनसे निजात पा सकते हैं। पूर्वजन्म की घटनाओं और अनुभवों की सत्यता के स्पष्ट प्रमाण वर्तमान और भविष्य में घटने वाली घटनाओं के पूर्वाभास यह बताते है कि स्वप्न निःसन्देह आत्मा के विज्ञान का वह पहलू है जिससे उसके अनेक रहस्यों के अनावृत प्रमाण पाये जा सकते है। स्वप्नों के रेखाचित्र और मनपसन्द स्वप्न देखने के यंत्र वैज्ञानिकों ने बनाये हैं, यदि इस दिशा में और प्रगति हुई और उन स्वप्न-रेखाओं के विस्तृत अध्ययन का कोई विस्तृत सूत्रवैज्ञानिक निकाल पाये तो जीव पूर्वजन्मों में किस योनि में था और उसके साथ कैसी-कैसी घटनाएं घटी, यह सब जानना संभव हो जायेगा।

एक दिन यह भी संभव है कि स्वप्न-विश्लेषण से न केवल पुनर्जन्म प्रमाणित होगा वरन् कर्मफल भी आधुनिक ढ़ंग से अनावृत होगा। विज्ञान के

प्रयास अभी जारी है उसका शीघ्र नतीजा टी.वी. पर भी देखा जा सकेगा। इन स्वप्नों के द्वारा आत्म दर्शन की परिक्रमा लगा सके तो अनागत में आत्म साक्षात्कार का अति दुष्कर मार्ग बहुत सुगम एवं सरल हो जायेगा। आत्म परिष्कार, वृत्ति संशोधन, शुभ भाव, पवित्र अध्यवसाय, शुभ लेश्या, स्वच्छ एवं निर्मल आभामंडल द्वारा सुखद स्वप्नों की सृष्टि कर सकते हैं। पुरूषार्थ की तूलिका द्वारा रात्रि में देखे स्वप्नों को रचनात्मक रूप देकर जीवन में साकार कर सकते हैं।

पुनर्जन्म, पूर्वजन्म के स्वप्नों का विश्लेषण कर उनसे प्रतिबोध प्राप्त करके संल्लेखना संथारा (अनशन) करके जीवन के चरम लक्ष्य को पा सकते हैं, अंतिम मुकाम तक पहुंच सकते हैं, मुक्ति श्री का वरण कर सकते हैं। जब तक स्वप्नों के कारणों का ज्ञान प्राप्त नहीं होता तब तक स्वप्नों से मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। इनसे निजात पाने के लिए मोहनीय कर्म को समझना आवश्यक ही नहीं परम अनिवार्य है। स्वप्न की क्षमता द्वारा वर्तमान स्थिति जानने से परिशोधन द्वारा उन्नयन का द्वार खुल जाता है। कुछ स्वप्न प्रेरक होते है। उनके कारण व्यक्ति के जीवन की दिशा ही परिवर्तित हो जाती है। कभी-कभी स्वप्नों से अनुत्तरित प्रश्न उत्तरित भी हो जाते है। असमाहित मन स्वतः समाहित हो जाता है। जीवन की जटिल समस्याओं का समीकरण अपने-आप हल हो जाता है। भावनात्मक एवं बौद्धिक समस्याएं अपने-आप समाहित हो जाती है।

जो व्यक्ति स्थिरचित्त, जितेन्द्रिय, शान्तमुद्रा, धर्मभाव में रुचि रखने वाला, धर्मानुरागी, प्रामाणिक, सत्यवादी, दयालु, श्रद्धालु और उत्तम गुणों से समृद्ध है, उसे जो स्वप्न आता है वह सार्थक होता है। जिसके मन, वाणी और अध्यवसाय पवित्र हैं, जो संवृत आत्मा हैं, प्रायः उनके द्वारा देखा गया स्वप्न सफल माना गया है। कर्मानुसार अच्छा या बुरा फल यथा समय प्राप्त होता हैं। आधि-व्याधिजन्य, मल-मूत्रादिबाधाजन्य, बीमार, शोक, चिन्ता, कामग्रस्त व्यक्ति द्वारा देखा गया स्वप्न निरर्थक होता है। दुश्चिन्ता, अनिद्रा, मानसिक मलिनता, आसक्ति, अस्वस्थता आदि को स्वप्न की अयथार्थता का हेतु माना गया है। मूढ़तावश रात्रि में किसी को कह देना या स्वप्न के पश्चात् निद्रा लेने से भी स्वप्न निष्फल हो जाता है। पूर्वोत्तर मुख करके किसी विद्वान से ही अपने स्वप्न का कथन करना चाहिए। शराबी, दुर्गतिप्राप्त, नीचव्यक्ति, निंदक, मूर्ख और स्वप्न के

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

शुभाशुभ ज्ञान से अनभिज्ञ व्यक्ति के समक्ष स्वप्न प्रकट नहीं करना चाहिए। ज्योतिषी, ब्राह्मण, पितृस्थान, देवस्थान, आर्य पुरूष, मित्र अथवा पीपल के समक्ष स्वप्न प्रकट करने का विधान है।

देवता, द्विज, गुरु, वृद्ध एवं तपस्वी स्वप्न में जो निर्देश देते हैं, वह सब सत्य होता है। स्वप्न-फल का कालमान भिन्न-भिन्न है। रात्रि के प्रथम प्रहर का देखा हुआ स्वप्न एक वर्ष में फल देता है। दूसरे प्रहर का स्वप्न छह और आठ माह में फल देता है। तृतीय प्रहर का तीन माह में, चतुर्थ प्रहर का एक माह में, दो घटिका दिन शेष रहे तब आये तो उसका फल दस दिन में, सूर्योदय के समय का स्वप्न तत्काल फल देता है। हारीत संहिता के अनुसार दोपहर या दिन के स्वप्न छह माह में फल देते है तथा स्वप्न ज्योतिष और शकुन विचार के अनुसार सायंकाल का स्वप्न एक वर्ष में फल देते है। अशुभ स्वप्न देखकर जो पुनः उसी रात सौम्य और शुभ स्वप्न को देखता है उसका फल उत्तम ही होता है।

भगवान महावीर ने कहा - संवृत जीव जो स्वप्न देखता है वह यथातथ्य (सार्थक) देखता है, असंवृत जीव जो स्वप्न देखता है वह सत्य (तथ्य) भी हो सकता है और असत्य भी हो सकता है। देवता के प्रभाव से उत्पन्न होने वाला स्वप्न, धर्मक्रिया के प्रभाव से उत्पन्न होने वाला स्वप्न, पाप के प्रभाव से उत्पन्न होने वाला स्वप्न सत्य होता है। इसका शुभाशुभफल अवश्य मिलता है।

अशुभ स्वप्न के दिखलायी पड़ने पर णमोकार मंत्र, चार लोगस्स का ध्यान एवं इष्ट का जप करना चाहिए ताकि चेतना पुनः निर्मलता की ओर गतिशील हो जाए। निद्रा से पूर्व शुभ विचारों के चिन्तन, रमण, मनन एवं शुभ संकल्प संजोने से ही शुभ तस्वीरें हमारे अन्तर्मन की चौखट में फिट हो जाती है। यदि उत्तेजनाओं में कमी हो जाएं तो स्वप्नों में भी कमी हो सकती है। यदि इन सबका समुचित उपयोग करें तो हम निम्न स्तर से उच्च स्तर की साधना की भूमिका में प्रवेश पा सकते हैं। स्वप्नों का निरीक्षण, परीक्षण एवं अध्ययन हमारी साधना में बहुत सहायक सिद्ध हो सकता है क्योंकि स्वप्न मानस-प्रदेश की भूमिका से हमें अवगत कराता है। अपने स्वप्नों का अध्ययन एवं विश्लेषण करके हम हमारे जीवन में परिष्कार कर सकते है, हमारी वृत्तियों में संशोधन एवं परिमार्जन कर सकते है। प्रत्येक स्वप्न के अन्दर ऐसी शक्तियां छिपी हुई रहती है जिन्हें न तो कोई देख सकता है और न कोई उसकी कल्पना तक कर सकता है। अगर

किसी ऐसे साधन का आविष्कार हो जाए जिसके माध्यम से स्वप्नों की आंतरिक शक्तियों की तस्वीर ली जा सके तो हम स्वप्नों की शक्तियों को देखकर आश्चर्यचकित हो जायेगे। इनके अध्ययन से यह तथ्य सहज ही निकल आता है कि स्वप्नों में कोई ऐसा रहस्य है जिसे वैज्ञानिक अभी तक समझ नहीं पा रहे हैं। अवचेतन मन से परे भी कोई ऐसी दिव्य शक्ति है, जो हमारी उलझन को सुलझाकर हमें लाभान्वित करती हैं किन्तु वह दिव्यशक्ति कौन है ? कहां रहती है ? यह भी एक शोध का विषय है।

स्वप्न का संबंध आत्मा से ही है। हमारे वर्तमान जीवन का संबंध पूर्वजन्मों से है इसलिए यह बात स्वतः सिद्ध है कि स्वप्न पर पूर्वजन्मों के संस्कार शासन करते हैं। स्वप्न से प्रतिबोध पाकर व्यक्ति बिन्दु से सिन्धु, भक्त से भगवान बन सकता है। रात्रि में हमारी प्राण शक्ति बहुत सक्रिय रहती है। वह हमारी साधना पक्ष में मदद करती है। इसलिए हमें स्वप्नों के प्रति जागरूक रहना चाहिए। हमें स्वप्नों के कल-कल बहते निर्झर की धारा में अपनी साधना को उस ओर प्रवाहित और परिवर्तित करके प्रगति करनी चाहिए।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ऐतिहासिक एवं विशिष्ट स्वप्न

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पहला वरदान : ऐतिहासिक एवं विशिष्ट स्वप्न

कभी-कभी हम जो स्वप्न देखते हैं और तदनुसार करते हैं उससे हमें बेहद खुशी होती है। कुछ स्वप्न अर्थपूर्ण होते हैं। कुछ में यथार्थता होती है। वो बिन्दु को सिंधु, कंगालपति को करोड़पति, शून्य को अनन्त बनाकर जीवन गुलशन को सरसब्ज बना देते हैं। स्वप्नों की बदौलत अनेक व्यक्ति रंक से राजा बन गये। उनकी पतझड़ भरी जिन्दगी में नव मधुमास आ गया। उसकी नजीर प्रस्तुत अध्ययन में हम देख सकते हैं। महापुरूषों के जीवन की पुस्तक का प्रथम पृष्ठ उत्तम स्वप्नों की स्याही से लिखा हुआ है। उनके जीवन की सफलता की कहानी स्वप्नों में छिपी हुई है। व्यक्ति जब स्वप्नों के संसार में सैर करता है तो नव सृजन का दस्तावेज प्राप्त कर लेता है फिर प्रगति का पथ प्रशस्त होता जाता है। हमारा दैनिक जीवन स्वप्नों के तानें-बानें से बुना हुआ है। यह व्यक्ति विशेष पर निर्भर करता है कि वह उस स्वप्न का कितना फायदा उठाता है। क्योंकि जीवन को उत्तम स्वप्नों से सुवासित किया जा सकता है। स्वप्न के वातायन से झांकने से नव-निर्माण के स्वस्तिक स्वतः दृष्टिगोचर होते हैं। जीवन में शुभ स्वप्न देखने के लिए शुभ भाव, स्वस्थ विचार, पवित्र अध्यवसाय शुभ लेश्या एवं पवित्र आभामंडल अपेक्षित है। इनका समुचित उपयोग हमारी जिन्दगी में खुशियों के साथ हौसलें भी बुलन्द कर देता है। इनका गतिमान चक्र हमें कदम-दर-कदम मंजिल की ओर अपनी अदृश्य अंगुली थमाकर आगे बढ़ाता है, नई उमंगे, नये उन्मेष, नये लक्ष्य, नई रोशनी की राह दिखाता है। इसी से जीवन-निर्माण होता है। ये स्वप्निल दृश्य भी अजीब होते हैं। ये मन में चुपके से धंस जाने वाली वो आंखें हैं जहां सत्यं, शिवं सुन्दरम् स्वयं शरण लेते हैं। स्वप्नों से सफल बनने वालों का इतिवृत्त निराला है। इतिहास इसका स्वयंभू साक्षी है कि स्वप्न से अनेक राजा-महाराजाओं ने अनेक युद्ध लड़े और विजय श्री का वरण किया। स्वप्न प्रेरणा से कइयों ने अपने जीवन की डूबती किश्ती को किनारे लगाया। संसार आदम और हव्वा (Adam

and Eve) के समय से बहुत परिवर्तित हो गया है। इसमें स्वप्नों का भी विशेष योगदान है। इलाज के नये नये तरीके, आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कार, विभिन्न भविष्यवाणियां स्वप्नों के आधार पर करके मानव ने आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्र में सफलता के शिखरों पर चढ़कर अद्भुत क्रान्ति मचाई है। स्वप्नों से सफल बनने वालों का इतिहास हाशियों में नहीं सिमट सकता है। वह तो इतिहास के स्वर्णिम-पृष्ठों पर उकेरा गया है और आगे भी उकेरा जायेगा। उसके कुछेक मुख्य नमूने इस अध्याय में देखे जा सकेंगे।

अमेरिका के मनोचिकित्सक डॉ. अर्नेस्ट हार्टमैन कहते हैं कि सपने मात्र रचनात्मकता से नहीं जुड़े हैं, बल्कि ये हमारी भावनाओं का रंगमंच हैं। जहां संवेदनाओं को अभिव्यक्ति के लिए उचित स्थान मिलता है। सपने हमारी जीती जागती जिन्दगी का विस्तार होते हैं। जो हमारी उन परेशानियों को सुलझाने का प्रयास करते हैं, जो हमें सबसे ज्यादा परेशान करती हैं। हार्ट मैन के अनुसार जब ये परेशानियां प्रतीकों के रूप में सामने आती हैं तो दिमाग इनका हल ढूंढने की दिशा में काम करना शुरू करता है। 'ग्रीक के प्रख्यात चिकित्सा शास्त्री क्लौडिअस गेलन सन् 130 से 200 तक सर्जरी के लिए विश्व-विख्यात रहे। उनका कहना था कि सर्जरी का सूक्ष्मतम ज्ञान उन्हें स्वप्न में देवता द्वारा उपलब्ध कराया गया था। सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक लुई एजासिज ने भी स्वप्न के आधार पर एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक खोज की। उन्होंने मछली के जीवाश्मों को पत्थर पर ढालने में सफलता, एक जीवाश्म की अनुकृति को स्वप्न में देखने के बाद ही पायी।'

यूनान के महान दार्शनिक अरस्तू ने अपने ग्रंथों में कई स्वप्नों की सार्थकता पर प्रकाश डाला है । प्लेटो कहते हैं-सदा तो नहीं पर कई बार स्वप्नों के माध्यम से मनुष्य को दिव्य संदेश आते हैं और वे जांच पड़ताल करने पर तथ्यपूर्ण सिद्ध होते हैं। स्वप्न विवेचना के संबंध में प्लेटो ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'रिपब्लिक' में ऐसे अनेक सिद्धांतों पर प्रकाश डाला है जो बहुत ही तथ्यपूर्ण है। इसी में उसने लिखा है कि स्वप्न-विद्या में भी प्रवीणता प्राप्त की जा सकती है। ब्रिटिश संगीतकार पॉल मैक कार्टनी के चर्चित एल्बम 'यर्स्टडे' ने सफलता के रिर्काड तोड़े। पॉल के अनुसार उन्होंने इस गीत की 'मेलोडी' सपने में देखी थी। महाकवि बाणभट्ट की महत्वपूर्ण रचना 'कादम्बरी', सपनों के आधार पर ही लिखी हुई है। उपन्यासकार ग्राहम ग्रीन ने अपनी जीवनी 'वेज ऑफ एस्केप' में लिखा है कि कथानकों के संदर्भ में स्वप्न उनके लिए बहुत मददगार साबित हुए हैं। गेटे,

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्टीवेन्सन, ब्लैक एवं कोलरिज जैसे महान साहित्यकारों ने सपनों की सहायता से अनेक महान रचनाएं की। दार्शनिक रेने देकार्ते ने सन् 1619 में एक सपना देखा और दर्शन को नई दिशा दी।

इंसानों की रचना ही रचनात्मक स्व-सुधार, विकसित होने, अन्तर्ज्ञानी और ताकतवर बनने के लिए हुई है। हमारी याद रखने, कल्पना करने और सपने देखने की क्षमता में ही हमारी शक्ति छिपी होती है। जो छवियां हमें सपनों में दिखाई पड़ती हैं वे बहुत अधिक शक्तिशाली होती हैं। सामान्य व्यक्ति को महान बना देती हैं। अंग्रेजी के कवि कालरिज और उपन्यासकार स्टीवेन्सन भी अपनी कृतियों का प्रेरणा स्रोत स्वप्नों को ही मानते हैं। 16वीं शताब्दी में इटली के जेम्स कार्टिने ने बड़ा ग्रंथ लिखना आरंभ किया। उसमें स्थान-स्थान पर तथ्यों को जोड़ने की आवश्यकता पड़ती थी। समय-समय पर स्वप्न में तथ्य सामने आते रहते थे। वे काल्पनिक और यथार्थवादी होते थे। उनके जुड़ते रहने से पुस्तक सब प्रकार से प्रमाणित बन गई। सुप्रसिद्ध उपन्यासकार शारलोट ब्रोन्टे ने अपने बायोग्राफर को बताया था कि कठिन समस्याओं के लेखन के समय सही ढंग से प्रस्तुत न कर पाने के कारण वे उसे वहीं छोड़ देती थीं। सोते समय स्वप्न में उनके हल बहुधा मिल जाया करते थे। इटली के सोलहवीं सदी के प्रख्यात लेखक जेरोम कार्डन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक को स्वप्नों में मिले ज्ञानाधार पर पूरा किया था। यह स्वप्न लगातार आते रहे, जब तक पुस्तक पूर्ण होकर प्रकाशित नहीं हो गई। 18वीं सदीं के गोथिक रोमांसवादी उपन्यासों की प्रसिद्ध लेखिका रेडक्लिफे ने अपने सभी उपन्यास स्वप्नों के आधार पर लिखे थे। लिखने की पूर्व संध्या को वे अधिक मात्रा में गरिष्ठ भोजन कर सो जाती थी और रात्रि में देखे स्वप्नों को सुबह लिपिबद्ध करती जाती थी।

महाकवि तुलसीदास का स्वप्नःगोस्वामी तुलसीदास जी वि.सं. 1628 में, ध्यान में बैठे थे कि उन्हें मुनि भारद्वाज जी तथा मुनि याज्ञवल्क्य के दर्शन हुए। काशी प्रह्लाद घाट पर उन्होंने एक ब्राह्मण के घर निवास किया। वहां महाकवि के भीतर कवित्व शक्ति का स्फुरण हुआ। उन्होंने संस्कृत भाषा में पद्य रचना शुरू कर दी मगर तभी एक अद्भुत घटना घटित हुई। वे दिन भर पद्य रचते वो रात को लुप्त हो जाते थे। यह क्रम कई दिन तक चलता रहा। पद्य रचना शुरू करने की आठवीं रात को श्री तुलसीदास जी को विलक्षण स्वप्न आया। उस स्वप्न में भगवान शंकर ने उन्हें आदेश दिया कि - 'तुम जन - मानस की भाषा में यहां काव्य-रचना

करो।'स्वप्न टूटते ही श्री तुलसीदास जी की निद्रा खुल गई। भगवान शंकर-पार्वती के साथ उनके सम्मुख प्रकट हुए। श्री तुलसीदास जी ने उन्हें साष्टांग प्रणाम किया। भगवान शिव ने आदेश दिया - ''तुम अयोध्या जाकर रहो तथा जन भाषा में महाकाव्य की रचना करो।'' तुलसीदास जी को आशीर्वाद देकर भगवान श्री शंकर अन्तर्ध्यान हो गए। वि.स. 1631 को श्री राम नवमी के दिन श्री तुलसीदास जी ने अपने महाकाव्य श्री रामचरित मानस की रचना प्रारंभ की। वह दो वर्ष सात महीने छब्बीस दिन में पूर्ण हुआ। संयोग से उस दिन श्री राम विवाह का दिन था। वि.स. 1680 की श्रावण कृष्णा तृतीया के दिन 126 वर्ष की आयु में असीट घाट पर गोस्वामी तुलसीदास जी ने इहलोक से विदा ले ली। एक स्वप्न नें तुलसीदास जी को महाकवि बनाकर विश्व-विख्यात बना दिया। तुलसीदासजी द्वारा लिखी सारी चौपाइयां उन्हें कोई अतीन्द्रिय सत्ता स्वप्न में बताया करती थी। उनकी बुद्धि इतनी निर्मल और आत्मा इतनी पवित्र हो गई थी कि उन्हें स्वप्न की हर बात स्मृति में रहती थी। प्रातः काल वे उन चौपाइयों को भोज-पत्र पर लिख दिया करते थे।

संसार प्रसिद्ध अंग्रेजी साहित्य 'पिल्ग्रिम प्रोग्रेस' को जान बनियन ने स्वप्न के आधार पर लिपिबद्ध किया था। इसी प्रकार शैक्सपीयर ने 'दी टैम्पेस्ट (The Tempest) मैकबेथ, हैमलेट, मिडसमर, नाइट ड्रीम जैसे ग्रंथों की रचना स्वप्न संकेतों के आधार पर की। अमेरिका के पेन्सिलवेनिया के प्रोफेसर लेम्बरटन की एक समस्या का हल मौखिक रूप से करना चाहते थे पर बहुत प्रयत्न करने पर भी वे वैसा नहीं कर सके। एक सप्ताह बाद उन्होंने दीवार पर हल लिखा हुआ पढ़ा। स्वप्न टूटने पर पेंसिल से लिख लिया और बाद में पाया कि समस्या का ठीक हल वही था, जो स्वप्न से दीवार पर लिखा देखा था। स्वप्न वासवदत्ता, स्वप्न चित्रलेखा विक्रम वेताल बत्तीसी भी स्वप्नाधारित रचनायें हैं।

प्रख्यात कवियों के स्वप्न :अंग्रेजी साहित्य के प्रख्यात महान् कवि सैमुअल टेलर कॉलरिज ने उप-शामक के रूप में तृतीय प्रहर में अफीम खा ली। सोने के पूर्व उसने ये अंतिम शब्द कहे थे - यहां कुबलाखान ने एक महल बनवाने का आदेश दिया था। जब वह तीन घण्टे की नींद के बाद जागा, उसके मस्तिष्क में कविता की 300 पंक्तियां अंकित थी। कविता की सारी कल्पना उसे स्वप्न में दिखाई दी थी। उसे न तो उनके लिए कोई प्रयास करना पड़ा और न ही उसमें कोई उत्तेजना थी। जागते ही उसने 'कुबलाखान' शीर्षक से अपनी यह प्रसिद्ध

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कविता लिखनी शुरू की। उसने 54 पंक्तियां ही लिखी थीं कि इसी बीच एक आगन्तुक उससे मिलने आ गया। एक घण्टे बाद ही वह पुनः लिखने बैठ गया पर तब तक उसकी स्वप्न कालीन मौलिक कल्पना लुप्त हो चुकी थी अतः लाख स्मरण करने पर भी स्वप्नों की शेष पंक्तियां वह लिख न सका। रॉबर्ट लुई स्टीवेन्सन ने अपनी अधिकांश श्रेष्ठतम कवितायें सपने के बाद जागकर लिखी थी। उन्होंने दावा किया था कि वे रचनाओं के स्वप्न क्रमशः देख सकते हैं। गत रात स्वप्न जहां से समाप्त हुआ था, आज रात वह कहानी वहीं जुड़ जायेगी। यहां तक की वे आवश्यकतानुसार भी सपने देखने का दावा करते थे। रॉबर्ट लुई स्टीवेन्स ने अनेक ग्रंथ लिखे हैं, जिनमें से कुछ बहुत ही प्रख्यात हुए हैं। इन प्रख्यात ग्रंथों में लिटिल प्यूपील, बडबीज, मिस्टर हाइड आदि विशेष रूप से प्रख्यात हैं। लेखक का कथन है उसे इन पुस्तको के प्रकरण, आधार, कथानक एवं उतार-चढ़ाव स्वप्नों के आधार पर ही हस्तगत होते रहे हैं। उनकी निज की पूर्व तैयारी इनके संबंध में नहीं के बराबर थी और उसने तथ्यों को ढूढ़ने में भी कोई विशेष प्रयास नहीं किया। फिर भी कृतियां असाधारण बन पड़ी। इनका श्रेय उन स्वप्नों को है जो उन्हें क्रम बद्ध रूप से आते हैं। उन्हें किसी समस्या विशेष या विचार विशेष को लेकर कहानी लिखनी है तो उसके सपने उस मांग की पूर्ति करते थे। उनकी महान् रोमांचक रचना 'दि स्ट्रेन्जर केस ऑफ डॉक्टर जैकिल एण्ड हाइड (The Strenger Cash of Doctor, Jakil and Hide) ऐसे ही स्वप्न की उपज थी। अनेक रचनाओं की उत्कृष्टता का श्रेय उन्हें दिया जाता है। उन्होंने स्वयं लिखा था कि वे अरसे मे मानव के दोहरे रूप के संबंध में विचार कर रहे थे। बाण भट्ट की प्रसिद्ध पुस्तक 'कादम्बरी' की रूपरेखा उन्हें स्वप्न में मिली। रवीन्द्रनाथ टैगोर को अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'गीताञ्जलि की कई कविताओं का आभास स्वप्न में मिला। नीत्से, पुश्किल, टालस्टॉय, गेटे, शेक्सपियर, होमर, एडगर, एलन, पो, दान्ते, वैगनर, विलियम ब्लेक, विलियम बटलर, कीट्स, क्यूबिन आदि असंख्य साहित्यकारों एवं कवियों को विभिन्न कृतियों की प्रेरणायें, संकेत, संदेश तथा परामर्श स्वप्नों के माध्यम से मिले। रिचर्ड वैग्नर ने अपने प्रसिद्ध संगीत नाटक, 'ट्रिल्टन और आइसोल्ड' के बारे में लिखा 'यह सब मुझे स्वप्न में दिखा था' फ्रेंच लेखक वाल्टेयर को लॉ आंरियेद का पूरा सर्ग स्वप्न में ही प्राप्त हुआ था।

पैराडाइज लोस्ट की रचना का श्रेय :डिवाइन कॉमेडी (Divine Comedy) के रचयिता प्रख्यात महाकवि दान्ते की मृत्यु हो गई थी। उनके महाकाव्य का

''पैराडाइज लोस्ट'' (Paradise Lost) नामक अंतिम भाग अधूरा ही छूट गया था। दान्तें के मित्रों, सगे-संबंधियों एवं अनुयायियों ने पाण्डुलिपि ढूंढ़ने का बहुत प्रयत्न किया किन्तु सफलता नहीं मिली। दान्तें के दोनों पुत्र जैकेपो और पीरो आधुनिक शैली के कवि थे। उनके साथियों ने दोनों भाइयों को 'डिवाइन कॉमेडी' के शेष भाग को पूर्ण करने हेतु प्रेरित किया। रात्रि के एक स्वप्न में जैकेपो ने देखा कि पिता श्री द्वारा रचित 'डिवाइन कॉमेडी' के अनुपलब्ध अंतिम भाग के 13 सर्ग पितृग्रह की एक अलमारी में बन्द हैं। स्वप्न भंग होते ही जैकेपो उठ खड़ा हुआ। अर्धरात्रि को अपने पिता के पुराने मित्र पीर गिआर्डिनी के घर जा पहुंचा। स्वप्न का जिक्र करते हुए जैकेपो ने बताया कि पिता श्री ने स्वप्न में मेरा हाथ पकड़कर उस मकान एवं स्थान को दिखाया है। जहां वे मृत्यु पूर्व तक रहा करते थे और वहीं पर 'डिवाइन कॉमेडी' को पूरा किया था। उन्होंने एक दीवार को छूकर बताया कि जिस वस्तु को तुम तलाश रहे हो वह यहां छिपी हुई है। गिआर्डिनों जैकेपो के साथ सुबह ही उसे मकान पर जा पहुंचे, जहां दान्ते की मृत्यु हुई थी। मकान मालिक को जगाकर अन्दर प्रविष्ठ हुए और स्वप्न निर्देशित स्थान पर पहुंचकर-दीवार पर लगी चटाई को हटाया। उसके पीछे खिड़की पर आर्द्रता के कारण फँफूद लगे कुछ पन्ने पड़े थे। उन्हें साफ किया गया तो वे 'डिवाइन कॉमेडी' के अन्तिम 13 सर्ग निकले। लड़के (जैकेपो) का स्वप्न सत्य निकला एवं दान्ते की अपूर्ण रचना पूर्ण हो गई।

स्वप्नों ने बनाया संगीतज्ञ :संगीतज्ञों के बारे में अक्सर कहा जाता है कि वे सपने में नई धुनें सुनते हैं। महान संगीतकारों-वीथोवेन और मोजार्ट-के बारे में कहा जाता है कि वे स्वरों के समायोजन को पूरे का पूरा स्वप्न में सुनकर, जागने पर उसे लिख लेते थे। इटली के महान वायलिन वादक जिसेप टारटिन ने एक रात सपने में देखा कि शैतान से उनका समझौता हुआ और उसने उन्हें सारी सुख सुविधाएं देने का वायदा किया है। उनका मन सुनने को हुआ और टारटिनी ने उसे वायलिन देकर कुछ सुनाने को कहा। शैतान ने उन्हें ऐसी धुन सुनायी जैसी उन्होंने पहले कभी नहीं सुनी थी। जागने पर उन्होंने कोशिश
की पर जो कुछ उन्हें याद रहा वह थी कम्पनों की पुनरावृत्ति। फिर भी इस पर आधारित उनकी संगीत रचना-ट्रिलोडेल डायवोलो सर्वश्रेष्ठ मानी जाती हैं। 18वीं सदी में, इटली के संगीतकार टारटिनी ने भी सपने की रचनात्मकता का अनुभव किया था। उसने लिखा था कि -''कुबलाखान'' कविता लिखने का श्रेय कवि

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कॉलरिज को नहीं, उसके स्वप्न को देना चाहिए। स्वयं टारटिनी ने भी एक स्वप्न देखा था। स्वप्न में उसने अपनी वायलिन शैतान को दे दी थी। उस शेतान ने उससे अनोखी धुन निकाली थी। वे उससे अत्यन्त प्रभावित हुए थे। जागने पर उन्होंने धुन के शब्दों को वायलिन से निकालने का प्रयास किया उस ध्वनि का नाम उन्होंने 'दि डैविल्स सोनाटा' (The Devil's Sonata) रखा था।

18वीं शताब्दी में प्रसिद्ध संगीतज्ञ जिड़मेंधी वायलिन बजाने में असाधरण प्रतिभा सम्पन्न हुए हैं। उसे किसी ने भी यह कला नहीं सिखाई। वादक का कहना था कि रात्रि के समय कोई अदृश्य सहायक उसे जगाकर संगीत सिखाता रहा। उस आधार पर उसकी प्रगति साधारण रीति में नहीं वरन् चमत्कारी गति से होती रही। इसका परिणाम उसे अपने समय का सर्वोत्तम संगीतकार बनने के रूप में उपलब्ध हुआ। उसने संगीत शिक्षण पर कुछ पुस्तकें लिखी, जिनमें से 'दि डेविल्स टू ले' का बहुत प्रचार-प्रसार हुआ। लंदन की एक संगीतकार महिला रोजमेरी ब्राउन की घटना है, जिसके संबंध में यह बताया गया है कि उसे बार व बीथोवेन शोपो, देबुसीलिज्ट, शूवर्ट आदि महान संगीतकारों की आत्माएं स्वप्न में प्रशिक्षण देती हैं। ज्ञातव्य है कि इन संगीतकारों का देहावसान हुए कई वर्ष बीत गये हैं। श्रीमती ब्राउन जब सात वर्ष की थी तो उसने रात को स्वप्न में देखा कि काला कोट पहने कोई छाया उसके बिस्तरे की ओर बढ़ रही है। उसके साथ अन्य छायाएं भी हैं। इस दृश्य से वह इतनी भयभीत हो उठी कि मुंह से चीख तक नहीं निकल पाई। उस काली छाया ने ब्राउन को पुचकारा थपथपाया और कहा-''बिटिया। घबराओ नहीं। मैं तुम्हें प्रसिद्ध गायिका बनाऊंगा। काफी समय बीत गया उस छाया से कोई संपर्क नहीं हुआ। ब्राउन की शादी हुई, दुर्भाग्य से थोड़े समय बाद ही उसका सौभाग्य-सिन्दूर लुट गया। आर्थिक-अभाव में उसका और बच्चों का निवर्हन एक प्रश्न-चिन्ह बन गया। बचपन में जो संगीत के प्रति अभिरुचि जागी थी परिस्थिति वश वह पूर्ण नहीं हो पाई। अब तक के संगीत-शाखा के अध्ययन से जिन संगीतकारों के विषय में जान पहचान बढ़ी थी। उन्हें देखकर वह इस निर्णय पर पहुंची कि यह छाया प्रसिद्ध पियोना-वादक फ्रांज लिज्ट की है। इन भूतपूर्व संगीतज्ञों ने उसे अब तक 400 संगीत रचनाएं सिखाई। इनमें शुवर्ट का 40 पृष्टों का सानेट, आदि है। लिज्ट की आत्मा संगीत सिखाने और नई रचनायें तैयार करवाने में मार्गदर्शन करती और उन्हें गाकर भी सिखाती। ब्रिटेन के प्रसिद्ध संगीतकार सर 'डोनाल्डटोष' की आत्मा भी रोजमेरी

के पास आती, जिनका 1940 में ही देहावसान हो चुका था। मृत संगीतकार उसे प्रतिदिन दस से चार बजे संगीत शिक्षा प्रदान करते हैं। सर ओलिवर लॉज ने अपनी पुस्तक 'सरवाइवल ऑफ मैन' में इस सत्य को स्वीकार किया है कि अचेतन मन के माध्यम से हम स्वप्नावस्था में अलौकिक और भविष्य में होने वाली घटनाओं को देखते हैं और जान लेते हैं। उन्होंने लिखा है कि अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राह्म लिंकन को अपने अधिकांश कार्यों की प्रेरणा सपनों के माध्यम से मिला करती थी। जिस समय दास प्रथा के उन्मूलन का उनका आंदोलन तीव्र हो रहा था और उसे बन्द करने का चारों ओर से दबाब डाला जा रहा था। उस समय दास प्रथा उन्मूलन का कार्य जारी रखने की प्रेरणा स्वप्न से लिंकन को होती रहती थी।

नृत्य एवं चित्र के सृजन की प्रेरणा :

नृत्य पारंगतता प्रसिद्ध महिला मेरी विगमैन ने ''पास्तारेल'' नामक एक नृत्य की कल्पना स्वप्न-दृश्य के आधार पर की। हेनरी, मूर, पाब्लो, पिकासो, एण्डयू वेथ, रान गांग, साल्वाडोर डाली आदि शीर्षस्थ चित्रकारों की सृजन चेतना में स्वप्नों का बड़ा हाथ रहा है। स्पेन के चित्रकार साल्वाडोर डाली सपनों की रचनात्मकता से इतने अधिक प्रभावित थे कि वे सोते वक्त हाथ में चम्मच लेकर सोते थे ताकि झपकी के दौरान चम्मच गिरने से उनकी नींद टूटे और उन्हें पेटिंग के लिए ताजा कल्पना चित्र (Images) मिल सके। सपनों के चित्र बनाने में सबसे ज्यादा पहल की है-हेनरी रूसो, फ्रांस लावेल ग्राम, में ईस्वी सन् 1844 में जन्में सल्वाडोर डाली, स्पेन के चित्रकार थे।

सुख देते सपने

स्वप्न ने बचाये 20 लाख डालर :

सन् 1509 में आस्ट्रिया का एक शासक था वॉन मैकाऊ। रोम के दौर पर जाते समय उसकी मृत्यु हो गई। शव प्रजाजनों के दर्शनार्थ रखा गया। इसी बीच पहरेदारों में से एक ने स्वप्न देखा कि मृतक अपने साथ बहुत बड़ी सम्पति लिए जा रहा है। डरते-डरते उसने वह सपना राज्य के मनोनीत उत्तराधिकारी को सुना दिया। पूरी तलाशी के साथ-साथ मृतक के पहने हुए कपड़ों की भी जांच पड़ताल हुई। आस्तीन के कफ में लगी हुई एक रसीद मिली। जिससे पता चला कि उसने जर्मनी की एक बैंक में तीन लाख सोने के सिक्के गुप्त रूप से जमा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कर रखे हैं। वह राशि उन दिनों के हिसाब से 20 लाख डालर की थी। रसीद के आधार पर वह राशि उत्तराधिकारियों को मिली। लड़खड़ाई अर्थव्यवस्था संभल गयी।

स्वप्न ने दिलाई पैतृक सम्पति :

प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता रोमान नोवारों जिस होटल में ठहरे थे, उसका मालिक मर चुका था। उसकी सम्पति की वसीयत नहीं होने की वजह से बड़ा पुत्र सर्व धन हड़प जाना चाहता था, जिससे उसका लघु पुत्र बेहद दुःखी था। उसने अपनी दुःख की दास्तान नोवारों को सुनाई पर वह क्या कर सकता था। उसी दिन स्वप्न में नोवारों ने देखा कि एक व्यक्ति होटल के उसी कक्ष की अलमारी की ओर संकेत कर लकड़ी से उस स्थान को पीट रहा है। नोवारों की निद्राभंग होते ही उसने सोचा कि चूहे गड़बड़ी कर रहे होंगे। पर पुनः सोने पर वही दृश्य दिखाई दिया। नींद खुलने पर इस बार उसने आले के कागज हटाकर देखे तो एक कागज में वसीयत लिपटी रखी मिली। उसने वह वसीयत होटल मालिक के छोटे लड़के को दे दी। तदनुसार वह आधी जायदाद का स्वामी बन गया। बड़े लड़के की कुटिल चाल कामयाब नहीं हो सकी। दुःखी लड़का पैतृक सम्पत्ति पाकर निहाल हो उठा।

छत्रपति शिवाजी को मिला खजाना :छत्रपति शिवाजी ने एक स्वप्न में किसी स्थान पर खजाना गड़ा देखा। अगले दिन उन्होंने चुपके से उस स्थान की खुदाई अपने विश्वस्तजनों से कराई और वैसी ही सम्पदा पाई जैसी कि सपने में देखी थी।

स्वप्न ने बनाया सम्राट् :सन् 1735 में, वाय जैन्टियम के जेलखाने में बन्द एक कैदी ने स्वप्न देखा कि वह उस देश की महारानी का प्रेम-पात्र बन गया है। कैदी ने वह सपना पहरेदार को बता दिया। पहरेदार ने यह रिपोर्ट राजा तक पहुंचा दी। राजा ने उसे मृत्युदण्ड की सजा सुना दी। लेकिन महारानी ने सपने के कारण फांसी देने की बात को अनुचित बताकर राजा से उसे क्षमादान करा दिया। संयोग की बात दो वर्ष पश्चात् राजा कान्स्टेटाइन दशम की मृत्यु हो गई। कुछ सिलसिला ऐसा चला कि जेल से छूटे कैदी सैनिक रोमेनस के साथ रानी का प्रेम-बंधन ही नहीं बना, उसने उससे विवाह भी कर लिया। फलतः 10 वह सम्राट बना और रोमेनस चतुर्थ डायोजानेस के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

हैटोराइव-फ्रांस के स्वप्न महल का स्वप्नः फ्रांस के एक ग्रामीण डाकखाने का पोस्टमैन प्रायः20 मील (32.20 कि.मी.) रोज चलता था। उसी कठोर परिश्रम से उसका परिवार चलता था। एक दिन उसने एक स्वप्न देखा कि उसने पास के पहाड़ की चट्टाने काट कर एक भव्य महल बनाना शुरू किया है। वह बहुत सुन्दर बना और उसका नाम 'पैलाइस आइडियल' रखा गया। सपने से वह इतना प्रभावित हुआ कि उसने बचे समय में वैसा ही भवन अपने हाथों बनाने का निश्चय कर लिया। वह जुट पड़ा और अपनी सारी पूंजी और मेहनत लगाकर लगातार 33 वर्षों के परिश्रम से उस सपने को साकार कर दिया। हैटोराइव-फ्रांस का वह स्वप्न महल अभी भी दर्शकों के लिए कौतुक और आकर्षण का विषय है।

टीपू सुल्तान के विशिष्ट स्वप्न :लन्दन स्थित इण्डिया हाउस की लायब्रेरी में टीपू सुल्तान की एक डायरी सुरक्षित है। जिसमें अंग्रेजों को बुरी तरह परास्त करने वाले इस महान योद्धा के विचार और स्वप्न संकलित हैं। इन्हीं संकेतों के आधार पर उनकी योजनायें बनती और क्रियान्वित होती थीं। इसमें उन्हें हमेशा सफलता भी मिलती रही। अपने स्वप्नों पर टीपू सुल्तान को आश्चर्य हुआ करता था। अतः वह प्रतिदिन अपने स्वप्न डायरी में नोट किया करता था। उसके कुछ स्वप्नों की सत्यता का वर्णन यहां कर रहे हैं - 'शनिवार 24 तारीख की रात को मैंने स्वप्न देखा। एक वृद्ध पुरूष कांच का एक पत्थर लिए मेरे पास आया है और वह पत्थर मेरे हाथ में देकर कहता है- ''सेलन के पास जो पहाड़ी है, उसमें इस काँच की खान है। यह कांच मैं वहीं से लाया हूं। इतना सुनते-सुनते मेरी नींद खुल गई।'' टीपू सुल्तान ने अपने एक विश्वासपात्र को सेलन भेजकर पता लगवाया तो ज्ञात हुआ कि सचमुच उस पहाड़ी पर कांच का विशाल भण्डार है। बुस्साद साल के खुसखी महीने के छठवें दिन गुरूवार की रात मैंने एक सपना देखा कि एक खूबसूरत जवान से मैं मजाक कर रहा हूं। उस समय मुझे भीतर ही भीतर यह आश्चर्य हो रहा था कि मैं किसी मजाक का आदी नहीं हूं फिर ऐसा क्यों कर रहा हूं। तभी उसके जवान ने निर्वस्त्र होकर दिखाया कि वह औरत है। मुझे उस वक्त अहसास हुआ कि मराठे औरत वेष में हैं। मुझे लगा कि मैंने इसी से मजाक किया है। उसी साल के उसी महीने के आठवे रोज मैंने मराठों पर हमला किया तो वे औरतों की तरह भाग निकले और मेरे स्वप्न का अहसास पक्का हो गया। इस प्रकार सैकड़ों स्वप्न टीपू की मूल बोध किताब में हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वर्ण खदान की प्राप्ति :संसार में स्वर्ण की द्वितीय सर्वोत्तम खदान का स्वामी है-विनफील्ड स्काट स्ट्राटन। उसने अपने एक सुनहरे स्वप्न के बारे में लिखा है- 4 जुलाई, 1891 की रात्रि में स्ट्राटन व्यापार में सब कुछ खोकर अपने एक मित्र के साथ कोलरेडो के झरनों के नजदीक सोया हुआ था। सपने में उसे एक देवदूत दिखाई दिया।

उसने उससे कहा कि बैटिल पहाड़ पर जाओ। देवदूत ने उसे सपने में मार्ग भी दिखा दिया। एक जगह दिखाकर देवदूत बोला-यहां से खोदो, तुम्हें स्वर्ण (Gold) मिलेगा। सपना देखकर स्ट्राटन उठकर बैठ गया। उसने अपने मित्र को जगा दिया। उसी वक्त उस पहाड़ की ओर चल पड़े। वहां पहुंचकर उसने स्वप्न में देखी हुई जगह भी खोज निकाली, जो देवदूत ने उसे दिखाई थी। उसने वहां थोड़ा सा खोदा कि उसे चमकता हुआ सोना ही सोना नजर आया। उसके आश्चर्य एवं हर्ष का कोई पार न रहा। वह खुशी के मारे झूम उठा। इस प्रकार एक कंगालपति को सपने ने करोड़पति बनाकर संसार की सबसे बड़ी
स्वर्ण खान का मालिक बना दिया।

बहरे को मिले कान, लंगड़े को मिली टांग :सन् 1919 में, लिवरपूल में जेम्स फौजी के लड़ाई के दौरान तोपों की भयंकर गर्जना से कान के पर्दे फट गए और वह बहरा हो गया था। पैंशन पर आ जाने के बाद एक रात्रि में उसने स्वप्न देखा कि वह लिवरपूल के पवित्र सेंटविनिफ्रेंड कुंए के पास खड़ा होकर उसमें से जल निकाल कर स्नान कर रहा है। जैसे ही पानी शरीर पर पड़ा कि सर्दी जैसी कंपकंपी छूटी और इसी क्षण उसकी नींद टूट गई। वह घबराकर उठ बैठा, पास में सो रहे उसके परिजनों ने पूछा-'कौन' यह शब्द सुनते ही उसके जीवन में नया प्रकाश आ गया। उसने आश्चर्यपूर्वक बताया-मैं हूं जेम्स, पर यह क्या हुआ, कैसे हुआ?'' जिस बहरेपन को डॉक्टर ठीक नहीं कर पाये, वह एक स्वप्न ने ठीक कर दिया। दूसरा स्वप्न रेवरेण्ड फ्रीमैन विल्स की लंगड़ी टांगे भी इसी तरह स्वप्न में ठीक हुई थी। स्वप्न में विल्स ने देखा कि कोई एक फरिश्ते ने आकर उनकी टूटी हुई टांगों पर प्रकाश की किरण इस तरह फैंकी जैसे लाइट वेल्डिंग करते समय किसी धातु पर फेंकी जाती है। स्वप्न टूटते ही उसने अपनी टांगों को पूर्ण स्वस्थ पाया। यह घटना भी चेतना जगत के अविज्ञात पक्ष की झांकी दर्शाती है।

स्वप्न से प्राप्त खजाना : नन्द गांव (छत्तरपुर) निवासी श्री हुकमचन्द एक बार प्रवास में गये और मथुरा में उन्हें सर्प ने डस लिया। वे रामकृष्ण मिशन अस्पताल

वृन्दावन में भर्ती हुए। वहाँ उन्होंने एक स्वप्न देखा जिसमें उन्हें एक स्थान पर भगवान श्री पार्श्वनाथ की बहुमूल्य मूर्ति दबी होने का संकेत था। स्वप्नानुरूप स्थान की खोज में वे बहुत दिनों तक घूमते रहे। आखिर वह स्थान भी मिला और तीन दिनों की खुदाई के बाद वह मूर्ति निकाली गई। उस पर वि.स. 189 लिखा था। इस प्रकार वह 2000 वर्ष पुरानी सिद्ध होती है। उसके प्राचीन होने में किसी को कोई सन्देह नहीं था। मथुरा के पुरातत्व विभाग ने उसे अपने कब्जे में लिया। पीछे राज्य सरकार की अनुमति से जुलाई सन् 62 में जैन समाज को सौंप दिया। यह मूर्ति 'कसौटी' पत्थर की बनी हुई है और जिसका मूल्य एक लाख पच्चीस हजार आंका गया था। स्कॉटलैण्ड के एडेन स्मिथ नामक किशोर ने एक स्वप्न अनेक बार देखा कि उसने मकान के देहर के सामने 17वीं सदी में पहने जाने वाली पोशाक पहने हुए कोई व्यक्ति खुदाई करता है। लड़के ने अपने घर में यह बात बताई। परिवार जनों ने वहां खुदाई कराई तो वहां तांबे के एक कलश में 80 स्वर्ण मुद्रायें निकलीं। जो 17वीं शताब्दी की थी।

स्वप्न से समृद्धि :हालैण्ड की ''डच सोसायटी फॉर साइकीकल रिसर्च'' (Douch Society for Psychical Research)की फाइलों में एक डच व्यक्ति के स्वप्न का विवरण मिलता है। इस व्यक्ति ने सपने में कई बार 3684 का अंक देखा और उसे याद कर लिया। वह उसका अर्थ समझने की कोशिश करने लगा। आखिर कुछ समझ में नहीं आया तो उसने इसी अंक वाला लॉटरी का टिकट खरीद लिया और उसी अंक पर उसे लॉटरी का पहला पुरस्कार प्राप्त हुआ।

सपने ने दिलायी विजय श्री :एक प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित घराने की राजमाता को भी एक बार आश्चर्यजनक स्वप्न के द्वारा अपनी विजय का पूर्वाभास हुआ। राजमाता ने एक बार स्वप्न देखा कि ''मैं कार में तीव्र गति से जा रही हूं, कार मैं स्वयं चला रही हूं। मैंने देखा कि लोग एक मुर्दे के ताबूत को ला रहे थे जिस पर मुर्दा लेटा है, मैं कार को किनारे खड़ी कर कार में से बाहर निकल आई, मुर्दा मेरे पास से जब निकला तो मेरे सामने देख कर मुस्कराया। इसी प्रकार इक्कीस ताबुत निकले, सभी पर मुर्दे लेटे थे और सभी मुस्करा रहे थे। मैं विनय से खड़ी रही और सभी ताबूत निकल गए तो मैं कार में बैठकर चल दी और गन्तव्य स्थान पर पहुंच गई और उसी समय तुरंत आंख भी खुल गई।'' स्वप्न विज्ञान के अनुसार घर के बार मुर्दे को देखना 'शुभ भविष्य' का संकेत है तथा 'मुर्दे की मुस्कान' विजय का चिन्ह माना जाता है। दो माह बाद वह राजमाता 21 हजार मतों से अपनी विरोधियों को परास्त करती हुई विजयी हुई।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

विवेकानन्द स्वप्न वरदान :एक बार एक व्यापारी स्वामी विवेकानन्द के सामने ही अनेक प्रकार के खाद्य पदार्थ खा रहा था। स्वामीजी को खूब भूख लगी थी। परंतु उन्होंने उससे याचना नहीं की। फिर भी वह कहने लगा-''तुम आलसी हो। काम करने से बचने के लिए भगवां वेश धारण कर रखा है। तुम्हें कौन खाना देगा? भूखे मरो।'' इतने में एक हलवाई आकर स्वामीजी के सामने कई प्रकार की मिठाइयां रखकर कहने लगा-सुबह-सुबह मैंने स्वप्न में आपको देखा। भगवान श्रीराम ने ही आपका परिचय कराया।'' हलवाई अत्यन्त भक्तिभाव से भोजनार्थ आग्रह करने लगा। ये सब देखकर वह पहला व्यापारी बेहद शर्मिंदा हुआ। स्वामी विवेकानन्द भूखे थे, उन्हें भोजन वरदान से कम प्रतीत नहीं हुआ। इस प्रकार एक भक्त का स्वप्न स्वामी विवेकानन्द के लिए वरदान साबित हुआ।

स्वामीजी को प्रति सप्ताह कम से कम बारह-चौदह और कभी-कभी इससे भी अधिक भाषण देने पड़ते थे। कभी-कभी स्वामीजी यह सोच नहीं पाते थे कि अब अपने भाषण में कौन-सी नई बात बताये। क्योंकि उन्हें इतनी बार व्याख्यान करना पड़ता था कि सब कथनीय तथ्य कह चुके थे। वे निरन्तर यह अनुभव करते थे कि कोई शक्ति उनका संचालन कर रही है और उन्हें शक्ति भी प्रदान कर रही है। स्वामीजी ने स्वयं कहा था कि कई बार रात्रि में दूसरे दिन दिया जाने वाला भाषण कोई अक्षरशः उन्हें सुना रहा होता।

अजब-गजब के सपने :लंदन की 'मिस मारिया' अपनी गरीब मां के साथ गुजर-बसर कर रही थी। गरीबी के कारण मारिया को दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं होती थी। दर असल उसकी मां अंधी तो थी ही, उसने किसी दुर्घटना में एक पैर भी खो दिया था। वह वैसाखियों के सहारे अपनी युवा बेटी के साथ बाजार जाती, राहगीरों के सामने अपनी लाचारी का रोना रोती। कई दयालु लोग उसकी झोली में कुछ सिक्के डाल दिया करते। इस तरह जिंदगी के दुःख भरे दिन बीत रहे थे। एक बार क्रिसमस के मौके पर मारिया अपनी मां के साथ चर्च के बाहर बैठी थी। लोग एक-दूजे को क्रिसमिस की शुभकामनाएं दे रहे थे। तभी एक बूढ़े की नजर मारिया की अंधी व अपाहिज मां पर पड़ी। उसने एक नजर मारिया को भी निहारा और कहा-'बेटी। तुम भी क्रिसमिस की खुशियां मनाओ। भरपेट भोजन करो और चर्च में जाकर प्रभु से सच्चे मन से प्रार्थना करो। ' बूढें ने जैसा कहा, मारिया ने वैसा ही किया। कई दिनों के बाद मां-बेटी को भरपेट खाना नसीब हुआ था। अब मारिया के पास 13 पौंड बचे थे। राह में मारिया अपनी

मां के साथ सो रही थी। तभी सपने में उसे वो बूढ़ा दिखाई दिया। वह हंसते हुए कह रहा था 'जो प्रभु से सच्ची प्रार्थना करता है, उसकी मैं मदद करता हूं। हां तुमने चर्च में जाकर सच्ची प्रार्थना की थी। इसी कारण में बड़ा प्रसन्न हूं और तुम्हें मालामाल करना चाहता हूं। इतना कहकर वह बूढ़ा गायब हो गया। इसके बाद मारिया को सपने में एक क्रिसमिस ट्री दिखा। उस पर एक तख्ती लटकी थी, जिस पर कुछ अंक इस तरह से लिखे थे D.C. 993345 तभी कुछ धमाका हुआ और मारिया की नींद उचट गई। उसने सपने में जो नंबर देखे थे, एक कोयले से दीवार पर लिख लिए। दोपहर को वह खाना लेने बाजार जा रही थी। तभी एक युवक ने उसे रोककर कहा - 'बहनजी। मेरे पास लॉटरी का अंतिम टिकट बचा है। ' जब मारिया ने वह टिकट देखा तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। रात सपने में जो नंबर उसने देखे थे, हू-ब-हू वही नंबर उस टिकट पर छपे थे। उसने अपने उदास चेहरे पर हल्की सी मुस्कान बिखेरी और तीन पौंड देकर वह टिकट खरीद लिया। जाते-जाते लॉटरी बेचने वाले उस युवक ने कहा-यह लॉटरी आज शाम ही खुलने वाली है। ' अपने पास बचे 10 पौंड में से मारिया ने छह पौंड का खाना खरीदा और घर लौट आई। दोनों मां-बेटी ने खाना खाया। उसके बाद मारिया एक सरकारी नल पर कपड़े धोने चली गई। जब वह कपड़े धोकर लौटी तो शाम के पांच बज चुके थे तभी एक हॉकर ने उसके पड़ौसी के यहां सांध्यकालीन 'लंदन पोस्ट' नामक अखबार डाला। मारिया अपने पड़ौसी से वह अखबार लेकर आई और जब टिकट में छपे नंबर से मिलान किया तो वह खुशी के मारे चिल्ला उठी 'अरे! मुझे तो 35 लाख पौंड की लॉटरी लग गई। इस प्रकार एक गरीब मारिया सपने की बदौलत मालामाल बन गई।

स्वप्न से भाग्योदय :एक मंत्री की पत्नी पंडित राधाकृष्ण से स्वप्न-फल पूछने आई और बोली-पंडितजी! कल रात मैंने अत्यन्त अशुभ स्वप्न देखा। मैं अपनी कार में कहीं जा रही थी कि सड़क किनारे के कब्रिस्तान से एक मुर्दा निकला और मेरी कार के सामने आकर खड़ा हो गया। विवशतावश मुझे कार रोक देनी पड़ी। कार के रूकते ही उसने मुझे झपटकर बाहर खींच लिया और एक बार बुरी तरह से झकझोर दिया, फिर मेरे सिर पर तीन स्वर्ण की ईंटें, दाहिने हाथ पर पांच, बांये हाथ पर चार, पीठ पर सात, कूल्हों पर दो तथा पैरों पर एक ईंट रख दी, साथ ही एक डिब्बा भी दिया और खदेड़कर मेरे घर वापस पहुंचाया। कार मेरे पीछे-पीछे बिना ड्राईवर के ही चल रही थी। ज्योंहि मैं घर में घुसी कि कार स्वतः

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ही गैरेज के अंदर चली गई और मैं चीखकर फाटक के पास ही गिर गई। आँख खुली तो चारों ओर घर के सदस्य खड़े थे। मैं पसीने से तरबतर हांफ रही थी। ईश्वर जाने क्या होगा? अब आप ही बताइये पंडितजी। पंडित राधाकृष्ण श्रीमाली ने कुछ क्षण विचार किया और बोले-मेरी राय में ए सीरीज का 354721 लॉटरी का टिकट खरीद लें, हो सकता है आपका भाग्योदय इसी कारण से हो। वह आश्वस्त होकर चली गई, एवं कुछ दिनों बाद ही मालूम पड़ा कि इन्हीं नंबरों का पुरस्कार मंत्री की पत्नी को मिला था।

सपने ने बनाया लखपति :मलेशिया में मिस्त्री का काम करने वाले टेन टे सैक को अब इस बात पर पूरा यकीन हो चुका है। सैक को सपने में अपनी मृत दादी दिखाई दी जिन्होंने उसे लॉटरी के चार शुभ अंक बताए। अगले दिन सैक ने अपनी सपने पर विश्वास करते हुए इन्हीं नंबरों वाली दो लॉटरी टिकट खरीदी और एक टिकट पर पांच लाख 32 हजार 680 रुपये का इनाम जीत गए। दूसरी टिकट पर भी इनाम था मगर वह गलती से गुम हो गया वरना सैक करोड़पति बन गए होते।

स्वप्न में सिंहासन देखकर 100 किलो सोना दान :श्रद्धा एवं आस्था की कोई सीमा नहीं होती। हैदराबाद के ए.एल. रैडी (कंस्ट्रक्शन बिजनैसमैन) को स्वप्न में शिरड़ी के सांई बाबा स्वर्ण सिंहासन पर विराजमान दिखाई दिए तो उन्होंने सिंहासन निर्माण हेतु 100 किलो सोना दान दे दिया। रैडी ने बतलाया ''चार महीने पहले मुझे एक स्वप्न में सांई बाबा एक स्वर्ण सिंहासन
पर विराजमान दिखाई दिए थे। तभी मैंने निर्णय ले लिया था कि मैं बाबा के लिए वैसा ही स्वर्ण सिंहासन बनवाऊंगा।'' रैडी बताते हैं ''जब सांई बाबा मेरे स्वप्न में आए थे तो मैंने संस्थान में एक डिजाइन उपलब्ध करवा दिया था।'' यह स्वर्ण सिंहासन बेंगलूर के सुनारों ने बनाया है।

अलेक्जेण्डर महान् के स्वप्न :दस वर्ष की आयु में अलेक्जेण्डर महान् ने एक स्वप्न में देखा कि एक पैरदार सांप-ड्रेगेन उसे एक सफेद अंडा खाने के लिए दे रहा है। यह सपना उसकी सफलता और महानता का द्योतक माना गया।

सीजर का स्वप्न :रोम पर चढ़ाई करने से पूर्व सीजर अपने सिपाहियों के रूबीकान् के पास पड़ाव डाले सोया हुआ था। रात्रि स्वप्न में सीजर ने देखा कि वह अपनी माता के साथ सो रहा है। स्वप्न फलवेत्ताओं ने बताया कि सीजर को साहस पूर्वक मातृ शहर रोम पर आक्रमण कर देना चाहिए। सीजर ने रोम पर

चढ़ाई कर दी और बिना किसी अवरोध एवं रक्तपात के रोम पर अधिकार कर लिया।

हेन्नीबल का स्वप्न : रोम के द्वितीय विजेता कार्थेजिनियन जनरल हैन्नीबल ने एक सपना देखा कि देवदूत जैसा सुन्दर नवयुवक उसके सामने प्रकट होकर कह रहा है कि उसे स्वर्ग से इसलिए भेजा गया है कि वह हैन्नीबल को इटली पर आक्रमण करने हेतु प्रेरित करे। हेन्नीबल ने देखा कि एक विशाल सर्प उसके मार्ग में विजय में आने वाले अवरोधों को जबरदस्ती प्रचण्ड वेग से हटाता और नष्ट करता जा रहा है। सर्प के ऊपर आकाश में फैले अंधेरे बादलों को चीरते-फाड़ते हुए प्रकाश चारों ओर फैल गया। इस स्वप्न के आधार पर हैन्नीबल ने इटली पर आक्रमण कर विजय का ताज पहना। इसका वर्णन रोम के प्रख्यात इतिहासकार बालोरियस मैक्सिमस ने किया है।

मुकद्दर के सिकन्दर के स्वप्न :सिकन्दर महान् ने एक दिन एक अद्‌भुत स्वप्न देखा। सिकन्दर ने स्वप्न में अपनी ढाल के ऊपर एक घोड़े के कान और वैसी पूंछ का देवता नाचता हुआ देखा। इस विचित्र स्वप्न का अर्थ तत्कालीन भविष्यदर्शी अरिस्तांदर ने बताया कि अगले युद्ध में तुम्हारी विजय निश्चित है। इसी आशा और उत्साह से उसने तत्काल नये युद्ध की तैयारी की और विजय श्री हासिल की।

वीर शिवाजी का स्वप्न :जिस दिन वीर शिवाजी सायस्ता खां से अस्त्र रहित भेंट करने वाले थे। उस दिन-रात में समर्थ गुरू रामदास ने स्वप्न में ही उन्हें बता दिया था कि सायस्ता खां शिवाजी के साथ छल करेगा। अतः शिवाजी बघनख लेकर गये थे और सायस्ता खां जैसे अपने से अधिक शक्तिशाली व्यक्ति को ढ़ेर कर दिया था।

टीपू सुल्तान के तैजस स्वप्न :लन्दन के इंडिया हाउस की लाईब्रेरी में टीपू सुल्तान की डायरी है। इस डायरी में दो ऐसे स्वप्नों का उल्लेख है। एक स्वप्न में उसने देखा कि उसके बाग की तीन ताजी खजूरें एक चांदी की तश्तरी में उसके सामने रखी हैं। जो लोग खजूरें लेकर आये थे उनमें से एक तो निजाम अली था और दो अन्य दूसरे सरदार थे। यह स्वप्न उसे कई दिनों तक दिखाई देता रहा। उसके कुछ महीने बाद ही टीपू के राज्य में निजाम अली तथा दो अन्य सरदारों ने अपने राज्य विलय कर दिये।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

एक अन्य स्वप्न में टीपू ने देखा कि चीन के बादशाह का दूत उसके पास एक सफेद हाथी लेकर आया है और कह रहा है कि ऐसी भेंट चीनियों ने केवल सिकन्दर को दी है। यह स्वप्न भी टीपू ने कई बार देखा और अर्थ लगाया कि वह भी सिकन्दर जैसा महान् विजेता है। इसके बाद ही उसने अंग्रेजी रियासतों पर हमला करना आरंभ किया और अपने साम्राज्य को काफी बढ़ा लिया। परमहंस परिव्राजकोपनिषद में इन स्वप्नों को ''तैजस स्वप्न'' की संज्ञा दी गई है।

दासप्रथा उन्मूलन आन्दोलन : अब्राह्म लिंकन को बार-बार एक ही स्वप्न दिखाई देता था। जिसमें उन्हें यही संदेश मिलता कि अपने दास-प्रथा उन्मूलन के निश्चय को वे न बदलें। यह कुप्रथा अवश्य समाप्त होकर रहेगी। इसकी पुष्टि लेखक राबर्ट जेम्स लीज ने भी अपनी कृति में की है। जॉन ऑफ आर्क एक साधारण कृषक कन्या थी। उसे कोई चिंता या परेशानी नहीं थी। फिर भी एक रात सपने में उसने देखा कि आसमानसे उतर कर एक देवपुरूष ने उससे कहा, ''बेटी, अपने को पहचान, समय की पुकार सुन और स्वतंत्रता की मशाल जला।'' प्रातः उठकर सपने के विषय में सोचने के बाद वह फ्रांस की स्वतंत्रता के संग्राम में कूद पड़ी और अंततः राजक्रान्ति की सफल संचालिका बन गयी।

राजा विक्रम का स्वप्न : दक्षिण के राजा विक्रम देव ने रात में एक स्वप्न देखा कि काष्ठ रथ को राजा स्वयं खींचे और जिस स्थान पर रथ की कीलें टूट कर गिरें, वहां पर खुदाई करवाई जाए। खुदाई में एक मूर्ति प्राप्त होगी। उसी स्थान पर एक भव्य मंदिर का निर्माण करवाकर उस मूर्ति को प्रतिष्ठित किया जाए। राजा विक्रमदेव ने स्वप्न का अक्षरशः पालन किया। खुदाई के दौरान भगवान केशव की सुन्दर प्रतिमा मिली। उस स्थान पर विक्रमदेव ने भगवान केशव का एक भव्य मंदिर बनवाया जो आज भी वहां पर मौजूद है।

राष्ट्रपति केनैडी की हत्या की पूर्व सूचना भविष्यवक्ता पीटर वीडल प्रकाशित करा चुके थे। एक ज्योतिषी ने अन्य आधार पर प्रेन्सीडेन्ट केनैडी के ठीक उसी समय मरने की बात प्रकाशित कराई थी जिस समय कि वे वस्तुतः मर गये। प्रेसीडेन्ट केनैडी की पूर्व सूचना प्रकाशित कराने वालों में श्रीमती डिक्सन और श्रीमती शर्ल स्पेन्सर नामक दो महिला देवज्ञा भी हैं।

तानाशाह हिटलर के स्वप्न :प्रथम विश्व युद्ध के तृतीय वर्ष में जर्मन सेना में हिटलर सन् 1917 में एक वरिष्ठ अधिकारी था। बाबेरिया प्रदेश और फ्रांस की

सीमा पर उसे तैनात किया गया था। मोर्चे पर खंदक में वह लेटा हुआ था। एक रात्रि को हिटलर महोदय को स्वप्न आया कि 'एक विस्फोट के कारण उसकी छावनी तहस नहस हो जाती है और पिघला हुआ लोहा उसके चारों ओर उड़ रहा है। जगने पर उसने देखा कि कहीं कुछ ऐसी घटना नहीं घटी थी। सब कुछ शांत था। अतः वह अपनी छावनी छोड़ दुश्मन की छावनी की ओर भागने लगा तभी उसके अन्तर्मन में चेतावनी आई कि वहां जाने की मूर्खता क्यों कर रहे हो? शत्रु तुम्हें गोलियों से भून डालेंगे। इसके बावजूद भी वह किसी अदृश्य शक्ति से खींचा हुआ वह अपनी छावनी से बहुत दूर चला गया। ज्योंही उसने पीछे मुड़कर देखा तो मालूम हुआ कि स्वप्न सत्य साबित हो गया है। दुश्मन की गोलीबारी से छावनी तथा उसके आस पास के सभी व्यक्तियों एवं वस्तुओं का नामोनिशां मिट चुका था। केवल अकेला हिटलर ही स्वप्न की बदौलत बच गया। ऐसा ही ऐतिहासिक स्वप्न दूसरा है, जो हिटलर से ही संबंधित एवं आश्चर्यकारी स्वप्न है।

सन् 1916 में हिटलर एक साधारण सिपाही था। मोर्चे पर खंदक में वह लेटा हुआ था। इसी बीच उसे झपकी आ गई। स्वप्न देखा कि एक भयानक अग्नि-पिण्ड सामने से उसकी ओर लपकता आ रहा है। स्थिति मरणासन्न हो गई थी किन्तु किसी दिव्य शक्ति ने उसे हाथ पकड़कर दूसरी ओर उछाल कर फेंक दिया और कहा ''यह विशेष व्यक्ति है। अभी इसे बहुत सारे विशेष काम करने हैं। यह समय इसके मरने का नहीं है।'' स्वप्न खत्म हुआ भी नहीं कि बीच में हिटलर आतंकित होकर हड़बड़ाते हुए उठने लगा। अभी पूरी तरह वह संभल भी नहीं पाया था कि सचमुच ही तोप का गोला सामने से सनसनाता हुआ आया और हिटलर का कंधा छूते हुए निकल गया। यही वह स्वप्न था जिसने हिटलर को अपने बारे में सर्वथा नवीन धारणा एवं चिन्तन करने का महत्त्वपूर्ण संकेत एवं अवसर दिया। उसी दिन से वह कुछ बनने का स्वप्न देखने लगा। इसी मानसिक उधेड़ बुन एवं उथल-पुथल ने उसे कुछ कर गुजरने तथा इतिहास में एक अहम् भूमिका निभाने का सुअवसर प्रदान किया। जिसकी किसी एक साधारण एवं मामूली सिपाही से आशा भी नहीं की जा सकती। बिन्दु से सिंधु, बून्द से समुद्र, शून्य से अनन्त बनने का ऐतिहासिक सफरनामा इस महत्त्वपूर्ण स्वप्न से ही शुरू हुआ।

महात्मा गांधी के सपने :महात्मा गांधी के कुछ मशहूर सपनों को बापू ने अपनी संक्षिप्त आत्म कथा में दर्शाया है-''पोरबन्दर से पिताजी' राजस्थान कोर्ट के सदस्य

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

होकर जब राजकोट गये तब मेरी उम्र 7 साल की रही होगी। राजकोट की देहाती पाठशाला में भर्ती कराया गया। मामूली तौर पर मुझे कोर्स की पुस्तकों के अलावा कुछ भी पढ़ने का शौक न था। पाठ पूरा करना चाहिए, डांट सही नहीं जाती थी, इन कारणों से मैं पाठ पढ़ता। परन्तु पिताजी की खरीदी एक पुस्तक श्रवण-पितृ-भक्ति को बड़े अनुराग और चाव से मैंने पढ़ा। मन में श्रवण के समान होने के विचार उठने लगे। इसी समय कोई नाटक-कम्पनी आई, इसमें हरिश्चन्द्र की कथा थी। यह नाटक देखने से मेरी तृप्ति नहीं होती थी। बार-बार उसे देखने को मन हुआ करता, पर बार-बार जाने कौन देता पर अपने मन में मैंने हरिश्चन्द्र का नाटक सैकड़ों बार खेला होगा। रात्रि में हरिश्चन्द्र के सपने आया करते। यही धारणा मन में होती कि हरिश चन्द्र जैसी विपत्तियां भोगना और सत्य का पालन करना ही सच्चा सत्य है।'' उस स्वप्न को अपने जीवन में गांधी जी ने साकार कर दिखाया।

शाकाहार प्रेरक स्वप्न :13 साल की उम्र में गांधी जी का विवाह हो गया था तब वे हाई स्कूल में पढ़ते थे। उनकी संगत एक बुरे व्यक्ति से हो गई। उनकी माताजी, बड़े भाई एवं पत्नी को यह संगत बुरी लगती थी। उस संगति में जब सर्वप्रथम मांस का सेवन किया तब गांधी जी के साथ क्या बीती। उसका वर्णन आत्मकथा में इस प्रकार है-''मैंने पहले-पहल मांस देखा। साथ भटियारे के यहां की डबल रोटी थी। दो में से एक भी चीज नहीं भायी। मांस चमड़ेसा लग रहा था। खाना असंभव हो गया, मुझे कै आने लगी। खाना बीच में छोड़ देना पड़ा। मेरी वह रात बड़ी कठिनाई से कटी। नींद किसी तरह न आती थी। सपने में ऐसा मालूम होता था, मानो बकरा मेरे शरीर के भीतर जिन्दा है और मैं-मैं करता है। मैं चौंक-चौंक उठता। इस स्वप्न से गांधी जी में शाकाहार के संस्कार पुष्ट हो गये।

सत्याग्रह प्रेरक स्वप्न :''रौलट-बिल अगर कानून बन जाये, तो उसका सविनय भंग कैसे हो? यों सलाह मशविरा हो रहा था। इस बीच खबर आई कि बिल कानूनों के रूप में बजट में प्रकाशित हुआ है। जिस दिन यह खबर मिली, उस रात को मैं विचार करता हुआ सो गया। दूसरे दिन सुबह मैं बहुत सवेरे उठ खड़ा हुआ। अर्द्धनिद्रा होगी और मुझे स्वप्न में विचार सूझा। सवेरे मैंने श्री राजगोपालाचार्य को बुलाया और बात की। मुझे रात को स्वप्न में विचार आया कि इस कानून के जवाब में हमें सारे देश में हड़ताल करने के लिए कहना चाहिए। सत्याग्रह आत्मशुद्धि की लड़ाई है, धार्मिक लड़ाई है। एक रात-दिन सभी

कोई उपवास कर काम धंधा बंद रखें। मुसलमान रोजे के अलावा और उपवास नहीं रखते, इसलिए चौबीस घण्टे का उपवास रखने की सलाह देनी चाहिए। बम्बई, मद्रास, बिहार और सिंध इतनी जगहों में अगर ठीक हड़ताल हो तो हमें सन्तोष मानना चाहिए। यह सूचना श्री राजगोपालाचार्य को पसंद आई। फिर दूसरे मित्रों से कहा। सबने इसे खुशी से स्वीकार कर लिया। पहले सन् 1919 मार्च की 30 तारीख रखी किन्तु बाद में 6 अप्रैल की गई। पर कौन जाने कैसे सारा संगठन हो गया। सारे हिन्दुस्तान के शहरों में और गांवों में हड़ताल हुई। यह दृश्य भव्य था। इस प्रकार सत्यवादिता, शाकाहार के संस्कार एवं सत्याग्रह आन्दोलन की प्रेरणा 'बापू' को स्वप्न से प्राप्त हुई।

स्वप्न-संकेत द्वारा विजयी बिस्मार्क :प्रसिमा का राजनेता विस्मार्क तीन भयंकर युद्ध लड़ने के बाद जर्मनी के बिखरे प्रान्तों को एकत्रीकरण करने और उसका चांसलर बनने में सफल हुआ था। उसका श्रेय उसने एक स्वप्न को दिया। बिस्मार्क ने स्वप्न में देखा कि वह घोड़े पर बैठा आल्पस पहाड़ी के एक ऐसे संकरे रास्ते में फंस गया। जहां एक ओर खड़ी चट्टानें और दूसरी ओर चिकने शिलाखण्ड हैं। इस परिस्थिति में घोड़े ने आगे बढ़ने से इंकार कर दिया है और वह न तो घोड़े पर से उतर सकता

है और न ही घोड़ा मुड़ सकता है। बिस्मार्क पर्वत की ओर चाबुक के सहारे खड़ा होकर ईश्वर से सहायता के लिए प्रार्थना करता है। तत्क्षण ही चाबुक इतना ऊंचा हो गया जिसके सहारे बिस्मार्क को पहाड़ी के पास के रास्ते, दृश्य जंगल और बोहेमिया प्रान्त दिखाई देने लगा। उसने इसी रास्ते से जाकर बोहेमिया पर अधिकार कर लिया है और उसके सैनिक विजयोल्लास से हाथों में बैनर लिए दिखाई दे रहे हैं। स्वप्न के तीन वर्ष बाद बिस्मार्क का युद्ध आस्ट्रिया के विरूद्ध हुआ और उसके सैनिकों ने स्वप्न में निर्देशित रास्ते से बोहेमिया में प्रवेश किया और विजयी रहे।

दिव्य-शक्ति से साक्षात्कार : राजस्थानान्तर्गत चूरू जिले के राजलदेसर कस्बे में सैकड़ों सम्पन्न एवं संभ्रान्त वैश्य परिवार प्रवास करते हैं। ख्यातनामा बैद परिवार उनमें से एक है। जयचन्दलालजी बैद के आठ पुत्रों में चम्पालालजी सबसे छोटे एवं प्रतिभा सम्पन्न थे। लक्ष्मी पुत्र होने से उनका व्यापार बहुत बड़ा था। अनेक मुनीम रहा करते थे। उनमें खंगजी अच्छे जाने माने मुनीमों में से एक थे। इस परिवार के प्रति वे पूर्ण वफादार थे। बाढ़ की चपेट में उनकी अचानक मृत्यु

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

हो गई। एक वर्ष के बाद चम्पालालजी अपनी राजलदेसर स्थित विशाल हवेली की छत पर सोये हुए थे। पूर्णिमा की चांदनी निकली हुई थी। श्रीमती चम्पालालजी पास के कमरे में लेट रही थी। अर्ध रात्रि का समय था। सारा घर निद्राधीन था। स्वप्न में अचानक चम्पालालजी ने अद्‌भुत दृश्य देखा, एक नर-आकृति खड़ी है। पूछा आप कौन हैं? क्या खंगजी? आप यहां कैसे? आपकी तो बारह महीने पूर्व ही मृत्यु हो गई थी न? खंगजी ने कहा-हां, मेरी मृत्यु हो गई थी। बहुत दिनों से मेरा मन आपसे मिलने को उत्सुक भी था। लेकिन इन्द्र की पहरेदारी के कारण मैं आ नहीं सका। आज अपने स्थान पर किसी दूसरे को छोड़कर आया हूँ। चम्पालालजी ने कहा-अच्छा, आप देव बन गये हैं। कृपया अपना मूल रूप तो दिखायें। कोई भी दिव्य शक्ति मनुष्य के सम्मुख प्रकट होती है तो उत्तर वौक्रिय द्वारा अपना पूर्व रूप धारण करके ही प्रकट होती है। खंगजी-नहीं-नहीं, आप मेरा मूलरूप नहीं देख सकेंगे। डर जाएंगे। चम्पालालजी-नहीं-नहीं, मैं नहीं डरूंगा, आप तो मूलरूप ही दिखलाइये। चम्पालालजी के विशेष आग्रह पर खंगजी ने अपना विशाल धूमयौनिक देवरूप प्रकट किया। आंख झपकते ही चम्पालालजी को आकाश छूती हुई आकृति दिखाई दी। वे ध्यान से अपलक देखते रहे। डरे नहीं। कमरे में सोई पत्नी की आंख अचानक खुल गई। सम्मुख विशाल भयावह आकृति, जो पूर्णिमा को चांदनी में स्पष्ट दिखाई दे रही थी उसे देख, वे जोर-जोर से चिल्लाने लगीं। चम्पालालजी अपनी पत्नी को धैर्य बंधाते हुए आश्वासन की भाषा में बोले-मैं पास ही तो हूं तुम क्यों डर रही हो? सो जाओ तत्काल श्रीमती जी बिना कुछ पूछे ही करवट बदल कर सो गई। खंगजी ने कहा-अब मैं जाता हूं। चम्पालालजी ने सुना, दो क्षण सोचकर बोले-देवानुप्रिय! साधु-सन्तों से सुना है कि देव दर्शन व्यर्थ नहीं जाते कुछ देकर या बताकर हीं.। खंगजी सच बताऊं, शेयर बाजार में तेजी आने वाली है। इतना कहकर वे अदृश्य हो गये। चम्पालालजी अतीत की स्मृति और अनागत की परिकल्पना में इस प्रकार खो गये कि फिर नींद न ले सके। कुछ समय के बाद वे उठे। सामायिक की। अपनी पत्नी के पास आए और कहने लगे- मैं तो परदेश (कलकत्ता) जा रहा हूं। पत्नी परदेश जाने की तो कोई बात नहीं थी। ऐसे कैसे रात ही रात में जाने का निर्णय कर लिया? चम्पालालजी निर्णय हो गया, मैं तो अभी ही जा रहा हूं। वे कलकत्ता पहुंच गये। शेयर मार्केट को देखा, बहुत मंदा चल रहा था। फिर भी चम्पालालजी ने हजारों शेयर खरीद लिए। दोस्तों एवं रिश्तोदारों ने काफी कहा सुना। पर चम्पालालजी

बैद ने एक भी नहीं सुनी। जहां जवाब देना जरूरी होता वहां कहते भाग्य को आजमा रहा हूं। देखता हूँ, कि क्या होता है। थोड़े ही दिनों के बाद शेयर बाजार में तेजी आई, भाव चढ़े और चम्पालालजी लाखों रूपये कमाकर
मालामाल हो गये।

शक्ति का करिश्मा : विजयकुमार विश्व यात्रा पर गए थे। एक रात उसके पिताजी ने स्वप्न में देखा। एक जहाज ऊपर उड़ने को है, उसमें विजय कुमार भी है। जहाज जैसे ही उड़ा, उसमें आग लग गई है और वह ध्वंस्त होकर भूमिसात हो गया। यह स्वप्न देखने के पश्चात् पिताजी के मन में घबराहट बढ़ी और नींद टूट गई। उन्होंने स्वप्न बताते हुए कहा-कोई बात अवश्य है। सारी रात प्रार्थना करते रहे-'हे प्रभु! विजय का ध्यान रखना। ' दूसरे दिन समाचार पत्र में एक विमान दुर्घटनाग्रस्त होने की खबर छपी थी पर उसमें विजयकुमार हो ऐसी कोई सूचना नहीं थी। चतुर्थ दिवस विजय का पत्र भी आ गया। उसके पिताजी की हंसी भी उड़ाई, देखों ना, आपका स्वप्न झूठा ही था। विजयकुमार यात्रा से पुनः लौटे। यात्रा की कुशल क्षेम पूछी तो उन्होंने कहा कि एक दिन तो सचमुच मुझे भगवान ने ही बचाया। मुझे टूवाण्डी (कनाडा) से न्यूयार्क जाना था। हवाई जहाज बुक हो चुका था। अपने निवास से वे हवाई अड्डे के लिए निकले तब कुल आधा घण्टा समय शेष था। उसी बीच एक कनाडियन उन्हें जबरदस्ती पकड़ ले गया और उन्हें एक होटल में उनकी अनिच्छा के बावजूद कॉफी पिलाई। लगता था वह जान-बूझकर देर करना चाहता है। किसी तरह जल्दी-जल्दी हवाई-अड्डे उसने पहुंचाया तो तब तक जहाज छूट चुका था। विजय कनाडियन पर क्रुद्ध हो रहा था तभी लोगों ने देखा कि उस जहाज में एकाएक आग लग गई और एक धड़ाके के साथ वह पृथ्वी पर
आ गिरा। उसमें बैठी सभी सवारियां जल कर राख हो गई। यह घटना सुनते ही सभी आश्चर्यचकित सोचते रह गए कि वास्तव
में पिताश्री का स्वप्न शत-प्रतिशत सही था। हमें लगा कि भाई साहब को किसी अदृश्य अज्ञात शक्ति ने ही बचाया।''

अतीन्द्रिय संकेत :बाह्य जगत् की अपेक्षा हमारा अन्तर्जगत् बहुत ज्यादा समृद्ध और सक्रिय है। आध्यात्मिक ऊर्जा और यौगिक शक्ति के सहारे व्यक्ति यथार्थ को स्वप्न में जान लेता है, भविष्य में होने वाली घटनाओं का उसे पहले ही स्वप्न में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आभास हो जाता है। जो व्यक्ति जितना सत्य का पक्षधर, पवित्र और ऋजु होता है, उसके सपने सदैव सच और यथार्थ की कसौटी पर खरे उतरते हैं।

महाराजा कुश का दिव्य स्वप्न :एक दिन आधी रात के समय जब शयन-गृह का दीपक टिमटिमा रहा था और सब लोग सोए हुए थे, तब कुश को एक स्त्री स्वप्न में दिखाई दी, उसे उन्होंने कभी नहीं देखा था पर उसका वेश देखने से मालूम पड़ता था कि उसका पति परदेश चला गया है। अपनी सम्पति से सज्जन और साधारण व्यक्तियों का उपकार करने वाले इन्द्र के समान तेजस्वी और शत्रुओं को जीतने वाले कुश के आगे वह स्त्री जयशब्द का उच्चारण करती हुई हाथ जोड़कर खड़ी हो गई। जिस प्रकार दर्पण में मुख का प्रतिबिम्ब पैठ जाता है। उसी प्रकार द्वार बन्द रहने पर भी वह स्त्री घर के अन्दर आ गई थी उसे देखकर राम के पुत्र कुश को बड़ा आश्चर्य हुआ और वे शय्या से आधे उठकर बोले! तुम हमारे इस बन्द कमरे में घुस तो आई हो किन्तु तुम्हारे मुख से यह नहीं प्रगट हो रहा है कि तुम योगिनी हो? क्योंकि तुम पाले से मारी हुई कमलिनी के समान उदास दिखाई दे रही हो अर्थात् योगियों को कभी दुःख नहीं होता। हे शुभे! तुम कौन हो तुम्हारे पति का क्या नाम है, और मेरे पास किसलिए आई हो? तुम यह समझकर मुंह खोलना कि रघुवंशियों का चित्त पराई स्त्री की ओर नहीं जाता। उस स्त्री ने उत्तर दिया हे राजन्! जब भगवान राम बैकुण्ठ जाने लगे तब जिन निर्दोष अयोध्यावासियों को वे साथ लेते गये उसी अयोध्या पुरी की मैं इस समय अनाथ अधिष्ठात्री देवी हूं।

पहले अच्छे राजा होने के कारण मैं इतनी ऐश्वर्यशालिनी हो गई थी कि मेरे सामने कुबेर की अलकापुरी भी फीकी लगती थी। आजकल आप जैसे प्रतापी राजा के रहते हुए भी मेरी बहुत बुरी दशा हो गई है। स्वामी राम के न रहने के कारण सैकड़ों अट्टालिकाओं के भग्न हो जाने से मेरी निवास भूमि अयोध्या नगरी ऐसी उदास लगती है जैसे सूर्यास्त के समय की वह सन्ध्या जिसमें वायु के वेग से बादल इधर - उधर छितराये हुए दिखाई देते हों। पहले रात के समय जिन सड़कों पर चमकते और मधुर ध्वनि करते हुए नूपुरवाली अभिसारिकाएं चलती थी पर आजकल वहां सियारिनें घूमती हैं, जिनके मुख से चिल्लाते समय चिनगारियां निकलती हैं। नगर की जिन बावड़ियों का जल पहले जल-क्रीड़ा करने वाली सुन्दरियों के हस्तगत मृदंग की ध्वनि का अनुकरण करता था वह आजकल जंगली भैंसों की सीगों के चोटों से कान फोड़े डालता है। पहले मोरों के बैठने के

लिए स्थान-स्थान पर छोटे-छोटे लकड़ियों के टुकड़े टंगे रहते थे किन्तु इस समय उनके टूट जाने से यहां के मोर अब वृक्षों पर जाकर बैठते हैं और मृदंग न बजने के कारण उन्होंने नाचना भी बन्द कर दिया है। अब वे मोर उन जंगली मोरों के समान लगते हैं जिनकी पूछें वन की आग से जल गई हैं। और क्या कहूं, पहले जिन सीढ़ियों पर सुन्दरियां अपने महावर लगे लाल-लाल पैर रखती चलती थी उन्हीं पर अब तत्काल मृग मारने वाले बाघ अपने रक्तरञ्जित पैरों को रखकर चलते हैं। जिन चित्रों में ऐसा दिखाया गया था कि हाथी कमल के ताल में उतर रहे हैं और हथिनियां उन्हें सूंड से मृणालखण्ड तोड़कर दे रही हैं, उन चित्रित हाथियों के मस्तकों को सिंहों ने हाथी का मस्तक समझ कर उन पर पञ्जा मारकर फाड़ दिया है। जिन बहुत से खम्भों में स्त्रियों की मूर्तियां बनी हुई थी आज कल जगह-जगह रंग उड़ गये हैं उन खम्भों को चन्दन का वृक्ष समझकर जो सांप उनसे लिपटे हैं, उनकी केंचुली छूटकर उन मूर्तियों से सट गई हैं और वे ऐसी लगती हैं मानों उन चित्रित स्त्रियों ने तन ढकने के लिए कोई कपड़ा डाल लिया हो।

जिन भवनों पर कभी मोती की माला के समान शुभ्र चांदनी चमका करती थी, उन पर अब चांदनी भी नहीं चमकती क्योंकि बहुत दिनों से मरम्मत न होने के कारण कोठे के चूने का रंग काला पड़ गया है और उन पर जहां तहां घास जम आई है। पहले उद्यान की जिन लताओं के टूटने के भय से धीरे से झुकाकर सुन्दर स्त्रियां फूल उतारा करती थी उन मेरी प्यारी लताओं को जंगली कोलभीलों के समान उत्पाती बन्दर झकझोर डालते हैं। आजकल अटारियों के झरोखों से न तो रात को दीपकों की किरणें निकलती है, न दिन में सुन्दरियों का मुख दिखाई देता है और न कहीं से अगरू का धूंआं ही निकलता है। अब वे झरोखे मकड़ियों के जालों से ढक गये हैं। मुझे यह देखकर बड़ा दुःख होता है कि अब न तो सरयू के घाटों पर देवताओं की बलि दी जाती है और न स्त्रियों के स्नान करने से उसमें से अंग राग आदि की गंध ही निकलती है। सरयू के तट पर बनी हुई बेंत की झोपड़ियां भी सूनी पड़ी रहती हैं इसलिए जिस प्रकार आपके पिता राम ने राक्षसों को मारने के लिए मनुष्य का शरीर धारण किया था, उसे छोड़कर परमात्मा की मूर्ति को प्राप्त कर लिया, उसी प्रकार आप भी इस नई राजधानी कुशावती को छोड़कर अपनी कुल परम्परा की राजधानी में चलकर रहो। कुश ने प्रसन्न होकर उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और कहा कि ऐसा ही करेंगे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

यह सुनकर अयोध्या की अधिष्ठात्री देवी परम प्रसन्न होकर अन्तर्ध्यान हो गई। राजा कुश ने रात की वह आश्चर्यमयी स्वप्न की घटना प्रातः काल सभा में ब्राह्मणों से कही। उन्होंने यह सुनकर उनकी प्रशंसा करते हुए कहा कि आप धन्य हैं, जिन्हें कुल राजधानी ने अपनी इच्छा से अपना पति चुना है। कुश ने कुशावती वेदपाठी ब्राह्मणों को सौंप दी और जैसे वायु के पीछे-पीछे बादल चलते हैं वैसे ही पीछे चलने वाली सेना के साथ शुभ मुहूर्त में वे अयोध्या के लिए चल दिये।

विचित्र स्वप्न और विचित्र पेड़ः एक बौद्ध साधु जंगल में विचरण कर रहे थे। थकान के कारण वे एक पेड़ के नीचे सो गए। सपने में उन्होंने 16 कंवारी कन्याएं देखी। सबकी बनावट एक जैसी थी। फिर आगे की यात्रा के दौरान वे मार्ग से भटक गए और वहीं पहुंच गए जहां स्वप्न में देखी गई लड़कियां उस पेड़ पर मुरझाएं फल के रूप में लटक रही थी। हकीकत में थाईलैंड के पेचाबून शहर में पाए जाने वाले एक पेड़ को देखने से यकीन ही नहीं होता। इस पर जो फल लगता है वह बिल्कुल नारी के आकार का है। पेड़ को नारीपोल-संस्कृत भाषा के दो शब्द नारी (औरत) और पोल (पेड़) - कहते हैं। विश्व में अपनी तरह का यह अनोखा पेड़ बैंकांक से 500 किमी दूर पेचाबून में पाया जाता है। यह शहर थाईलैंड के प्रसिद्ध पर्यटक स्थलों में से एक है। विचित्र फल धारण करने वाला यह पेड़ सैलानियों के लिए भी कौतुहल का विषय बना रहता है। अमेरिका के दो वैज्ञानिकों ने इस पर निकलने वाली कलियों का चीरफाड़ कर अध्ययन भी किया लेकिन किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सके। यह पेड़ न तो आदमखोर है और न ही इससे आग बरसती है। अलबता इन पर नारी की आकृति वाले फल जरूर लटकते देखे जा सकते हैं। हालांकि ये फल न तो कच्चा खाने के काम आते हैं और न ही इसकी सब्जी बनाई जा सकती है। स्थानीय लोग इसे देवीय शक्ति वाला पेड़ मानकर इसकी पूजा-अर्चना करते हैं।

श्री एड सैमसन का स्वप्न :'बोस्टन ग्लोब' के संवाददाता श्री एड सैमसन ने उस दिन काफी देर तक काम किया था। उसे कई दिन की थकावट थी। प्रेस के चपरासी को उसने हिदयत दी ''मुझे तीन बजे से पहले न जगाया जाये और यह कहकर वह अपने बिस्तर पर सो गया। 28 अगस्त 1883 की बात है। उस रात उसने एक स्वप्न देखा महाभयंकर हृदय को कंपा देने वाली मानवीय इतिहास की एक जबरदस्त दुर्घटना जिसने लोगों को यह सोचने के लिए विवश किया कि संसार में स्थूल हलचलें ही सब कुछ नहीं, सूक्ष्म आकाश में भी ऐसी शक्तियां

क्रियाशील हैं। एड सैमसन ने देखा एक भयंकर पहाड़ उससे लाल रंग का लावा फूट पड़ा, जिससे उस द्वीप में महाभयंकर विनाश लीला प्रांरभ हो गई। टापू अग्नि ज्वालाओं में बदल गया 18 है। पृथ्वी कांप रही है और सब कुछ जलता हुआ स्वाहा होता जा रहा है। स्वप्नावस्था में ही उसने किसी से पूछा इस द्वीप का क्या नाम है। किसी ने स्वप्न में ही सन्देश दिया ''प्रालेप'' स्वप्न इतना वीभत्स था कि वह दृश्य सैमसन के मस्तिष्क में ज्यों के त्यों उभरे तब तक आन्दोलन मचाते रहे, जब तक उसने पूरे स्वप्न को एक लेख के रूप में तैयार नहीं कर लिया। उस पर महत्त्वपूर्ण (Important) की चिट लगाई और घर चला गया। उसने सोचा यह था कि यह लेख किसी दिन समाचार पत्र में छापेंगे। प्रातः काल सम्पादक आया, उसने महत्त्वपूर्ण की चिट लगे इस समाचार को पढ़ा, उसे लगा, यह किसी संवाददाता का समाचार है सो 'बोस्टन ग्लोब' में मुख पृष्ठ पर प्रमुख समाचार के रूप में दोहरा शीर्षक देकर छाप दिया। 29 अगस्त के समाचार सारे संसार में फैल गया। जबकि संसार के और किसी भी अखबार में ऐसा कोई समाचार नहीं छपा था। दिन भर 'बोस्टन ग्लोब' कार्यालय में पूछताछ चलती रही। सम्पादक अपनी भूल के लिए स्वयं हैरान था।

मैक्सिको, आस्ट्रेलिया, अमेरिका से आकाश में गड़गड़ाहट समुद्री तूफान, भूकम्पों के संक्षिप्त समाचार तो मिले पर उतने से सम्पादक और पाठकों में से किसी की जिज्ञासाओं का समाधान न हुआ। आखिर सम्पादक को सारी घटना का 'भूल सुधार' छापना पड़ा। सचमुच जिस समय युवक संवाददाता एड सैमसन यह स्वप्न देख रहा था, पृथ्वी के दूसरे छोर पर 'क्राकातोआ' द्वीप पर भयंकर भूकंप और तूफान आया था। इस भयंकर ज्वालामुखी के कारण संपूर्ण द्वीप समुद्र के गर्त में ऐसे

समा गया था जैसे विशाल घड़ियाल की दाढ़ में मानव अस्थि-पिंजर। घटना की पुष्टि कई दिन बाद उधर से लौटने वाले जहाजों ने की। तब फिर ''भूल सुधार की भूल सुधार'' छापा गया। सैमसन के बड़े-बड़े फोटो समाचार पत्रों में छपे। इस स्वप्न की गहरी छानबीन की गई तो सूक्ष्म रहस्यों के दस्तावेजों से यह रहस्य प्रकट हुआ कि डेढ़ सौ वर्ष पूर्व 'क्राकातोआ' का नाम 'प्रालेप' ही था।

स्वप्न मे पूर्वाभास :सिक्सथ सेंस (छठी ज्ञानेन्द्रिय) सभी में मौजूद होती है। किसी में यह शक्ति (Power) ज्यादा एवं किसी में यह कम होती है। लेकिन होती हरेक में है। सिक्सथ सेंस (Sixth Sense) का मतलब होता है पूर्वाभास यानी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

किसी घटना से पहले उसके बारे में अनुमान पहले से ही लग जाना। विश्व विख्यात भविष्यवेत्ता नास्त्रेदमस् की भविष्यवाणियां सभी सच हुई क्योंकि उसकी सिक्सथ सेंस पावरफुल थी। स्वप्न भी पूर्वानुमान एवं पूर्वाभास के माध्यम बनते हैं। ऐसी एक लोकप्रिय घटना है कि एक गार्ड अपने मालिक को विदेश जाने से रोकता है। मालिक एयर टिकट ले चुका है। वह इसे व्यर्थ नहीं गंवाना चाहता। गार्ड के बार-बार मना करने पर वह विदेश जाना रद्द कर देता है। सायंकाल को पता चलता है कि वह प्लेन जिसमें उसे जाना था दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है। अब उस मालिक ने गार्ड को ढाई लाख रुपये दिए और नौकरी से निकाल दिया। बस यह एक इनाम भी था और पहेली भी। गार्ड हैरान कि आखिर इनाम देने के साथ मालिक का नौकरी लेने का तात्पर्य क्या था। असल में मालिक ने बचने पर गार्ड को इनाम तो जरूर दिया लेकिन उसे नौकरी से निकालने के पीछे एक कारण यह था कि गार्ड ने यह सपना अपनी ड्यूटी पर सोते हुए देखा था। अतः सुबह का देखा सपना किसी रहस्य का संकेत समझकर गार्ड ने उसे सच मानकर मालिक को यात्रा पर जाने के लिए रोका। स्वप्न सच हुआ। क्योंकि रात के सपने शैतानी होते हैं, जबकि सुबह का देखा सपना दिव्य संकेत भी हो सकता है। स्वप्न अवचेतन मन की भाषा है। स्वप्नों का संसार जितना जटिल और उलझनों वाला है, उतना ही चमत्कारी एवं विमुग्ध कर देने वाला है। अन्तर्जगत की उलझी गुत्थियों को सुलझाने हेतु स्वप्नों की भाषा को समझना जरूरी है। महान् दार्शनिक प्लेटों ने अपनी कृति ''फीडो (Fedo) में बताया है कि स्वप्न अन्तरात्मा की ध्वनि का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसे गंभीरता से लिया जाना चाहिए। अरस्तू ने अपनी पुस्तक ऑन डिविनेशन (On Divination) में स्वप्नों के आधार पर अपने उच्च सिद्धांतों एवं योजनाओं का भली भांति निरीक्षण कर उन्हें मूर्त रूप देने पर बल दिया है, क्योंकि स्वप्न तर्कसंगत होते हैं। मूर्धन्य मनीषी एरिक फ्राम ने अपनी कृति -दि फोरगॉटन लैंग्वेज (The Forgotten Language) में बताया है कि स्वप्नावस्था में पारस्परिक संबंधों तथा भविष्य की झांकी ही नहीं मिलती वरन् उच्चस्तर की बौद्धिक समस्याओं का भी समाधान मिल जाता है। अंग्रेज महाकवि शैली को अक्सर अपना ही प्रतिबिम्ब सामने दीखता था। प्रत्यक्ष बात तो नही करता था पर अंगुली के इशारे से कुछ संकेत करता था। इन संकेतों पर ध्यान देने से शैली को कई बार कई रहस्य भरी जानकारियां भी मिली थी। एक बार शैली के अपने छाया पुरुष ने समुद्र किनारे का एक विशेष स्थान दिखाया और

वहां गड्ढा खोदने लगा। यह घटना कवि ने अपनी डायरी में नोट कर ली। ठीक एक वर्ष बाद शैली उसी स्थान पर कारणवश पहुंचे और देखते-देखते मर गए। डॉ. बार्नेट द्वारा प्रकाशित एक अतीन्द्रिय पर्यावेक्षण में भारत के एक मिलिट्री मेजर मुलतान के सैनिक शिविर में 9 सितंबर 1842 में घायल पड़ा था। मरते समय उसने अपने एक मित्र अफसर को कहा ''मेरी अंगुली से यह अंगूठी निकाल लो, इसे मेरी पत्नी के पास पहुंचा देना।'' इसके बाद उसकी मृत्यु हो गई। ठीक उसी समय फिरोजपुर में सोती हुई उसकी पत्नी ने ठीक वहीं दृश्य देखा और शब्द सुनाई पड़े। उसने अशुभ स्वप्न सबको सुनाया। तीसरे दिन वह मित्र अफसर जब मृतक की अंगूठी लेकर पहुंचा तो उस पूर्वाभास की वास्तविकता पर सभी दंग रह गये।

पंडित जवहार लाल नेहरू मृत्युसूचक स्वप्न : मेरे पूज्य दादाजी श्री सागरमल जी बैद को स्वप्न में अनेक पूर्वाभास की घटनाएं मैंने (मानसिंह बैद ने) प्रत्यक्ष देखी थी। 29 अप्रैल 1964 की बात है आचार्य श्री तुलसी का प्रवास दिल्ली में था। दादाजी ने बम्बई में सुना कि आचार्य प्रवर प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू की भावना से प्रभावित हैं कि आगामी चातुर्मास दिल्ली में ही कराया जाये। दादाजी को स्वप्न में पूर्वाभास हुआ कि नेहरूजी एक माह के भीतर-भीतर संसार से चल बसेंगे। वे चिन्तित होकर सोचने लगे कि आचार्य प्रवर को किसी न किसी प्रकार से यह सूचना पहुंचा दूं। पत्र लिखकर वे यह बात किसी अन्य को जताना नहीं चाहते थे। तभी मेरा जयपुर जाने का कार्यक्रम बना। उन्होंने मुझे विश्वास में लेकर आदेश दिया कि जयपुर से दिल्ली जाओ, वहां अत्यन्त आवश्यक बात गुरूदेव से अर्ज करनी है। ध्यान रहे, किसी तीसरे व्यक्ति के कान तक यह बात नहीं जानी चाहिए। मैंने पूज्य दादाजी का संदेश अक्षरशः आचार्यश्री से निवेदन किया। साथ ही उनकी भावना के ये शब्द भी अर्ज किये, ''बीकानेर वालों की उत्कृष्ट भावना है एवं आपके भी उन्हें बचन दिये हुए हैं, फिर दिल्ली पर इतना क्या मोह है''? बात ज्यों की त्यों साकार हुई। आचार्यश्री ने आगामी चातुर्मास बीकानेर का फरमा दिया और 27मई 1964 को पं. जवाहरलाल नेहरू का आकस्मिक निधन हो गया।

अपने शरीर छोड़ने के सम्वत की जानकारी भी दादाजी को 20 वर्ष पहले ही हो गई थी। उनके विनोदी स्वभाव के कारण लोग उनसे प्रायः कहा करते ''आपका सौ वर्ष भी कुछ बिगड़ने वालानहीं है, आप तो सदा एक से दिखाई देते

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

हैं। इस पर दादाजी कहते ''तीन दुवा (सं. 2022) तक तो मेरा कुछ बिगड़ेगा नहीं। 'तीता- (तीन) मैं लूंगा नहीं' और ऐसा ही हुआ। चैत्र कृष्णा 3 सं. 2022, यानि सं. 2023 लगने के बारह दिन पहले ही वे इस संसार से विदा हो गये। 17 फरवरी, सन् 1966 की रात्रि में दादाजी को स्वप्न में पूर्वाभास हुआ कि 9 मार्च को मेरा देह-त्यागना निश्चित है। उनकी इच्छा चूरू में ही यह प्रयाण करने की थी अतः उन्होंने सोचा कि यदि कल मैं प्रस्थान करूं तो 15 दिन चूरू में रहना हो जायेगा। 18 फरवरी को प्रातः जल्दी ही उन्होंने मुझे बुलाया तथा कहा ''मुझे परलोक सिधारना है, तुम्हारी क्या राय है, मैं देह-परित्याग कहां करूं? यदि तुम मुझे लेकर कल ही चूरू के लिए प्रस्थान कर सको तो मेरा 15 दिन चूरू में रहना हो जायेगा।''दादाजी के इंगित को मैं समझ गया, साथ ही आश्चर्य में भी पड़ गया कि ये बिलकुल स्वस्थ हैं, कल सायंकाल ही अच्छी तरह खाना खाया है, फिर आज सुबह ही क्या नई बात उभर आई। किन्तु मुझे उनकी बातों पर अटूट आस्था थी। मैंने देश भर में अपने स्वजनों के पास इसकी जानकारी भिजवा दी। आचार्य प्रवर को भी श्री ताराचन्दजी बोथरा के माध्यम से भटिण्डा तार द्वारा सूचना भिजवा दी। आचार्य प्रवर ने दादाजी को अंतिम समय में सहाय मिले, इस दृष्टि से फरमाया कि आसपास के सिंघाड़े चूरू चले जायें। चूरू में विराजित साध्वी श्री झमकूजी को विहार का आदेश था, उन्हें चूरू ही रोका गया। हम लोग दादाजी के साथ 22 फरवरी को सायं 4 बजे चूरू पहुंच गये। 9 मार्च को प्रातः दादाजी ने कहा कि अब मेरा अंतिम समय निकट है। दोपहर के बाद मेरे जाड़े जुड़ जायेंगे-मैं बोल नहीं सकूंगा, मुझे अपार वेदना होगी। चार-चार घंटा के बाद हम उन्हें सागारी चौविहार संथारा कराते रहे। 11 बजे पानी पिलाया तब उन्होंने कहा अब दो बजे और 6 बजे पानी पिला देना (उसमें एक चम्मच दूध भी हम मिला देते थे।) 7 बजे मेरा प्रयाण है। यही हुआ। उसके बाद वे बोल नहीं सके। 6 बजे पानी पिला कर उन्हें चौविहार संथारा करा दिया गया। उन्होंने एक सैकिण्ड के लिए आंख खोली और फिर शांत मुद्रा में ठीक 7 बजे उन्हें तीन हिचकियां आयीं और प्रयाण कर दिया।

एक बार, संवत् 2010, जोधपुर में दादाजी एक मास की सेवा करने के उपरांत आचार्यश्री से मंगलपाठ सुन रहे थे। आचार्य प्रवर ने फरमाया, ''अब कब दर्शन करोगे?'' दादाजी ने अर्ज की ''अभी बम्बई जा रहा हूं, वहां से अहमदाबाद, आकर मार्ग की सेवा करके आपको चातुर्मास हेतु बम्बई ले जाऊंगा।''उस समय बम्बई पधारने संबंधी चिंतन न तो आचार्य प्रवर के ध्यान में था और न किसी

की कोई धारणा ही थी। दादाजी से अकस्मात् ऐसी बात सुनकर आचार्यश्री असमंजस में पड़ गये। उस समय ऐसा संभव नहीं लगता था, किन्तु वही हुआ। दादाजी का स्वप्न में पूर्वाभास अक्षरशः सही निकला। इस प्रकार अनेक घटनाएं प्रमाण हैं जिनसे प्रत्यक्ष सिद्ध होता है कि दादाजी को स्वप्न में पूर्वाभास होता था।

स्वप्न ने बनाया आस्तिक :सन् 1937 में, जेना विश्वविद्यालय में सुबह-सुबह एक लड़का प्रोफेसर फ्रांजमेयर के पास आया। फ्रांजमेयर नास्तिक थे और यह विद्यार्थी आस्तिक था। आस्तिकतावाद पर इन दोनों के प्रायः वाद-विवाद चलता रहता। प्रोफेसर किसी अतीन्द्रिय सत्ता को मानने के लिए तैयार नहीं थे। उस दिन प्रातः काल आते ही लड़के ने प्रोफेसर साहब को बताया

20सर! आज मैं आपसे बहस करने नहीं आया बल्कि प्रमाण देने आया हूं कि आज मैंने एक स्वप्न देखा है, स्वप्न आपको बताऊंगा नहीं पर इतना ही बताता हूं कि मेरी मृत्यु शीघ्र ही हो जाएगी। अन्त्येष्टि क्रिया सम्पन्न हो जाने के पश्चात् आप मेरा बॉक्स खोलना और उसमें एक कागज रखा है, उसे खोल के पड़ लेना। बात उस समय वहीं समाप्त हो गई। एक सप्ताह के पश्चात् वह विद्यार्थी बीमार पड़ गया और ठीक तीसरे दिन उसकी मृत्यु हो गई। अन्त्येष्टि क्रिया में सम्पूर्ण विश्व विद्यालय ने भाग लिया। प्रोफेसर फ्रांजमेयर श्मशान से लौटकर सीधे युवके के कमरे में गये और उसका सन्दूक खोलकर देखा उसमें उस दिन के स्वप्न का जिक्र था, लिखा था '17 तारीख बृहस्पतिवार को प्रातः काल पांच बजे मेरी मृत्यु हो जायेगी। मुझे अमुक स्थान पर दफनाया जायेगा। जब मुझे दफनाया जा रहा होगा तब मेरे माता-पिता आयेंगे और मुझे एक बार फिर बाहर रखकर देखेंगे। इसके बाद मुझे दफना दिया जायेगा।'' प्रोफेसर फ्रांजमेयर स्वप्न बीती पढ़कर आश्चर्य चकित रहे। सब कुछ अक्षरशः सत्य हुआ। उनके मुंह से इतना ही निकला ''कोई ऐसी शक्ति है अवश्य लेकिन हम हठवश जिनकी उपेक्षा करते रहतेहैं। आज जब मेरा शिष्य मेरे सामने नहीं है तब मैं उससे हार मानता हूं और स्वीकार करता हूं कि संसार में बहुत कुछ ऐसा है जिसके बारे में वैज्ञानिक भी कुछ नहीं जानते हैं।

पुनर्जन्म का झरोखा :महात्मा गांधी ने पुनर्जन्म को पुष्ट करते हुए कहा था- मैं मनुष्य और मनुष्य के बीच सदा रहने वाली शत्रुता की बात नहीं सोच सकता क्योंकि मैं पुनर्जन्म के वाद में विश्वास रखता हूं, मैं इस आशा को लेकर जीवित हूं कि यदि इस जन्म में नहीं तो किसी दूसरे जन्म में मैं समूची मानवता को मैत्री

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

के आलिंगन में बांध सकूंगा। 'जैन दर्शन पुनर्जन्म की सत्ता को स्वीकार करता है। 'एगो में सासओ अप्पा अर्थात् आत्मा ही एक शाश्वत है। आत्मा ही सतत रक्षणीय है आदि बताकर पुनर्जन्म के महत्त्व का प्रतिपादन किया गया। डॉ. स्टीवेंसन ने पुनर्जन्म की महत्ता उजागर करने हेतु वैज्ञानिक शोध करके पुनर्जन्म के अस्तित्व रूपी नवनीत को निखिल विश्व में बांटा है। प्रो. मैक्समूलर ने 'सिक्स सिस्टम ऑफ इंडियन फिलॉसफी में इसका वर्णन किया है। डा. इयान स्टीवेंसन ने पुनर्जन्म के सिद्धांत का निष्कर्ष निकालने से पूर्व 1600 लोगों के पूर्वजन्म का अध्ययन करके कुछ ठोस अवधारणाएं वैज्ञानिक जगत् के समक्ष प्रस्तुत की। ब्राउन यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर सी.जे हुकास ने एक शोधपत्र प्रकाशित किया है, जिसका शीर्षक है 'दि डाक्ट्रिन ऑफ दी रिइंकार्नेशन इन दी हिस्ट्री ऑफ थॉट' इसमें पुनर्जन्म संबंधी अनेक घटनाओं का वर्णन है। दार्शनिक एफ. एच. विलिस की भी मान्यता है कि पुनर्जन्म एवं आत्मा के विकास का सिद्धांत सत्य है। उत्कृष्ट आत्माएं अपूर्ण कार्य की पूर्ति हेतु पुनर्जन्म लेती हैं। विलिस ने कई ऐसे जोड़े ढूंढ़े हैं, जिनके चिन्तन एवं कर्म में अपूर्व साम्य था। श्री विलिस इन्हें पुनर्जन्म की ही घटनाएं मानते हैं। उनके मतानुसार इसामसीह ने दुबारा अपोलो निक्स आफ टिमाना के रूप में जन्म लिया। शौपेनहावर बुद्ध के अवतार कहे जा सकते हैं। फिश्टे, हीगल, कान्ट को भी भारतीय आत्माएं कहा जा सकता है। श्रीमती बेसेंट पहले ब्रूनो थीं। सिसरों ने ग्लैडस्टोव के रूप में पुनर्जन्म लिया। अमरीका के पादरी जिमबिशप के मतानुसार राष्ट्रपति अब्राह्म लिंकन ने ही राष्ट्रपति जान एफ.केनेडी के रूप में पुनर्जन्म ग्रहण किया था। सन् 1215 में जन्में फ्रांस के सन्त लुईस एवं 539 वर्ष बाद सन् 1954 में जन्में सम्राट लुइस के जीवन की घटनाओं में साम्य होने के कारण उसका पुनर्जन्म मानते हैं। ब्रिटेन के साहित्यकार ''डिक्सन स्मिथ'' ने अपनी पुस्तक 'दि अदर साईड ऑफ रियलिटी' में, श्री जी.एल. फ्लेअर ने 'अनिश्चितसीमा' नामक पुस्तक में दार्शनिक थोरियो ने Transmigration of the seven Brahmans में, फ्रांस उपन्यासकार ने Seraphita में, कवि जेम्स जॉयस ने कृति यूलीसिस में लेकलंडन ने The Star Roverमें, कवि विलियम वर्डसवर्थ की कविता Intimations of Immortality में एवं श्रीमद् भागवत आदि में पुनर्जन्म का विशद् वर्णन किया गया है।

स्वप्नों में हम कभी-कभी ऐसी वस्तुएं देखते हैं जिनका हमने अपने वर्तमान शरीर में अनुभव नहीं किया था। कभी-कभी हम स्वप्न में सोचते हैं कि

हम आकाश में उड़ रहे हैं, यद्यपि हमें उड़ने का अनुभव नहीं है। इसका अर्थ है कि किसी पूर्व जीवन में या तो देवता के रूप में अथवा अन्तरिक्ष में उड़ाकू पंछी के रूप में हम आकाश में उड़े थे। यह संस्कार मन के संचय में है और अकस्मात् प्रकट हो जाता है। इसे पानी की गहराई में तपन क्रिया ही समझिये, जो कभी-कभी पानी की सतह पर बुलबुले के रूप में प्रकट हो जाती है। कभी-कभी हम ऐसे स्थान को स्वप्न में देखते हैं जिसका अपने जीवन-काल में हमने अनुभव बीते हुए जन्म में किया। यह संस्कार मन में संचित रहा और कभी तो विचार में, कभी स्वप्न में प्रकट हो गया।

मन एक भंडार है जिसमें अतीत जीवनों के विचार और अनुभव संचित रहते हैं। इस प्रकार एक जीवन से दूसरे जीवन तक, पूर्व जीवनों से इस जीवन तक और इस जीवन से भावी जीवनों तक निरन्तरता रहती है।

आदि पुराण में महाबल के पुनर्जन्म संबंधी स्वप्न :पूर्व विदेह क्षेत्र संबंधी महाकच्छ देश के अरिष्ट नामक नगर से आये हुए, आकाश में चलने वाले आदित्यगति और अरिंजय नाम के दो मुनि अकस्मात देखे। अतिशय बुद्धिमान स्वयम्बुद्धमंत्री ने

सम्मुख जाकर उनकी पूजा की, बार-बार प्रणाम किया। जब वे सुखपूर्वक बैठ गये तब उनसे नीचे लिखे अनुसार अपने मनोरथ पूछे। हे स्वामिन इस लोक में अत्यन्त प्रसिद्ध विद्याधरों का अधिपति राजा महाबल हमारा स्वामी है, भव्य है अथवा अभव्य? इस विषय में मुझे संशय है। जिनेन्द्रदेव के कहे हुए सन्मार्ग का स्वरूप दिखाने वाले हमारे वचनों को जैसे वह प्रमाण भूत मानता है वैसे श्रद्धान् भी करेगा या नहीं? यह बात मैं आप दोनों के अनुग्रह से जानना चाहता हूं। इस प्रकार प्रश्न कर जब स्वयंबुद्ध मंत्री चुप हो गया तक उनमें से आदित्यगति नाम के अवधिज्ञानी मुनि कहने लगे हे भव्य! तुम्हारा स्वामी भव्य ही है, वह तुम्हारे वचनों पर विश्वास करेगा और दसवें भव में तीर्थंकर पद भी प्राप्त करेगा। वह (महाबल) इसी जम्बूद्वीप के भरत नामक क्षेत्र में आने वाले युग के प्रारंभ में ऐश्वर्यवान् प्रथम तीर्थंकर होगा। पूर्व भव के संस्कार से ही वह चिरकाल तक योगों में अनुरक्त रहा है किन्तु आपके वचन सुनकर शीघ्र ही इनसे विरक्त होगा। आज रात को उसने (महाबल ने) स्वप्न में देखा है कि तुम्हारे सिवाय अन्य तीन दुष्ट मन्त्रियों ने उसे बलात्कार किसी भारी कीचड़ में फंसा दिया है और तुमने उन दुष्ट मन्त्रियों की भर्त्सना कर उसे कीचड़ से निकाला है और सिंहासन पर बैठाकर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उसका अभिषेक किया है। इसके सिवाय दूसरे स्वप्न में देखा है कि अग्नि की एक प्रदीप्त ज्वाला बिजली के समान चंचल और प्रतिक्षण क्षीण होती जा रही है। उसने ये दोनों स्वप्न आज ही रात्रि के अंतिम समय में देखे हैं। अत्यन्त स्पष्ट रूप से दोनों स्वप्नों को देख वह तुम्हारी प्रतीक्षा में ही बैठा है, इसलिए तुम शीघ्र ही जाकर उसे समझाओ। वह पूछने के पहले ही आपसे इन दोनों स्वप्नों को सुनकर अत्यन्त विस्मित और प्रसन्न होकर आपके वचनों को मानेगा।

राजा महाबल ने जो पहला स्वप्न देखा है उसे तुम उसके आगामी भव में प्राप्त होने वाली विभूति का सूचक समझो। द्वितीय स्वप्न को उसकी आयु के अतिशय ह्रास को सूचित करने वाला जानो। यह निश्चित है कि अब उसकी आयु भी एक मास ही शेष रह गयी है। इसलिए हे भद्र इसके कल्याणार्थ शीघ्र ही प्रयत्नकरो, प्रमादी न होओ, यह कहकर और स्वयंबुद्ध मंत्री को आशीर्वाद देकर गगनगामी आदित्यगति नाम के मुनिराज अपने साथी अरिंजय के साथ अन्तर्निहित हो गये। मुनिराज के वचन सुनने से कुछ व्याकुल हुआ स्वयंबुद्ध भी महाबल को समझाने के लिए शीघ्र ही वहां से लौट आया। तत्काल ही महाबल के पास जाकर उसे प्रतीक्षा में बैठा हुआ देखा प्रारंभ से लेकर स्वप्नों के फल पर्यन्त विषय को सूचित करने वाले ऋषिराज के वचन सुनाने लगा। तदनन्तर उसने यह उपदेश भी दिया कि हे बुद्धिमन! जिनेन्द्र भगवान का कहा हुआ यह धर्म ही समस्त दुःखों की परम्परा का नाश करने वाला है, इसलिए उसी में बुद्धि लगाइए, उसी का पालन कीजिए। बुद्धिमान महाबल ने गुरू की साक्षी पूर्वक जीवन पर्यन्त के लिए आहार पानी तथा शरीर से ममत्व छोड़ने की प्रतिज्ञा की और वीर शय्या (आसन) धारण की। वह महाबल आराधना रूपी नाव पर आरूढ़ होकर संसार रूपी सागर को तैरना चाहता था इसलिए उसने स्वयंबुद्ध मंत्री को निर्यापकाचार्य (संल्लेखना की विधि कराने वाला आचार्य नाव चलाने वाला खेवटिया) बनाकर उसका बहुत ही सम्मान किया। राजा महाबल ने प्रायोपगमन नामक तीसरा अनशन धारण किया था। इस प्रकार महाराज महाबल निरंतर बाईस दिन तक संल्लेखना की विधि करते रहे। जब आयु का अंतिम समय आया तब उन्होंने मन ही मन निश्चल रूप से नमस्कार मंत्र का जाप करते हुए शुद्ध आत्मस्वरूप की भावना करते हुए, स्वयंबुद्ध मंत्री के समक्ष सुखपूर्वक प्राण छोड़े। तदनन्तर वह महाबल का जीव शरीर रूपी भार छोड़ देने के कारण मानो हल्का होकर विशाल सुख सामग्री से भरे हुए ईशान देवलोक (स्वर्ग) को प्राप्त हुआ। वहां पर वह श्रीप्रभ नाम

के अतिशय सुन्दर विमान में उपपात शय्या पर बड़ी ऋद्धि का धारक ललितांग नाम का उत्तम देव हुआ।

स्वप्न से पुनर्जन्म का संकेत :हमारी अग्रगण्य (ग्रुप लीडर) साध्वी श्री भीखांजी (श्री डूंगरगढ़) ईस्वी सन् 2001, सींथल (बीकानेर) पावस प्रवास में अत्यधिक बीमार हो गई थी। उन्होंने तीन माह से अन्न, जल त्याग दिया था, केवल पानी की बर्फ के सहारे टिकी हुई थी। उनके बचने की उम्मीद की ऑक्सीजन मात्र दो प्रतिशत थी। उन नाजुक क्षणों में एक रात्रि में साध्वी श्री ने एक दिव्य स्वप्न देखा। उन्होंने बताया-मैं स्वप्न में बारहवें देवलोक में गई थी। वहां शासन गौरव साध्वी श्री कमलूजी (जयपुर) साध्वी श्री सज्जनां (बीकानेर) सुन्दर जी (मोमासर) आदि अनेक साधु-साध्वियां थी। साध्वी श्री कमलूजी ने मुझसे कहा 'भीखांजी! तुम अभी इतनी जल्दी यहां क्यों आई हो? तुम्हारे लिए यहां अभी जगह खाली नहीं हुई है। अभी कुछ वर्षों की देरी है अतः शीघ्र ही तुम यहां से चली जाओ। ' यह शब्द सुनते ही साध्वी श्री ने प्रत्युत्तर की भाषा में कहा 'महाराज! आप ठीक फरमा रहे हो। मैं अपनी सहवर्ती साध्वियों को भी कुछ बताकर नहीं आई अतः तुरन्त वापिस जा रही हूं। फिर कभी वापिस आऊंगी। कुछ समय बाद साध्वी श्री की निद्रा भंग हो गई और आंखें खुल गई। साध्वी श्री ने सुबह स्वप्न एवं दिव्य देवलोक के दृश्य का विस्तृत वर्णन जब हमको बताया, हम सुनकर दंग रह गए। कुछ दिनों बाद साध्वी श्री पूर्ण स्वस्थ हो गई। खाना-पीना सामान्य व्यक्ति की तरह करने लगी। पांच वर्ष के पश्चात्, मृत्यु पूर्व (5 घंटे पहले) साध्वी श्री ने हमको बताया कि वे बारहवे देवलोक में जायेंगी। वहां ''सीतेन्द्र'' नामक इन्द्र है। इस प्रकार स्वप्न से पुनर्जन्म का संकेत साध्वी श्री को दो तीन बार पहले भी मिल चुका था।

शेल्डन का पुनर्जन्म सूचक स्वप्न :पुनर्जन्म होने और पूर्वजन्म की स्मृति बनी रहने वाली घटनाओं की श्रृंखला में एक घटना माइकेल शेल्डन की इटली यात्रा की है। कोई अज्ञात प्रेरणा उसे इटली यात्रा के लिए एक प्रकार से विवश ही कर रही थी। माइकेल शेल्डन ने यात्रा के कुछ दिन पूर्व एक स्वप्न देखा कि वह इटली के किसी पुराने नगर में पहुंचा है। किसी जानी पहचानी गली में घुसकर एक पुराने मकान में जा पहुंचा है। सीढ़ी पर चढ़ते हुए वह चिर परिचित दुमंजिले कमरे में सहज रूप से घुस गया और देखा कि एक लड़की पड़ी है उसके गले पर छुरे के गहरे घाव हैं और रक्त बह रहा है। अनायास ही उसके मुंह से निकला मारिया! मारिया! घबराना मत, मैं आ गया हूं। स्वप्न टूटा, शेल्डन इस विचित्र स्वप्न का अर्थ समझ न सका फिर भी उसने यात्रा जारी रखी।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जब वह जिनोवा की सड़क पर घूम रहा था तो उसे वही स्वप्न वाली गली दिखाई दी। अनायास ही पैर उधर मुड़े और लगा कि वह किसी पूर्व परिचित घर की ओर चला जा रहा था। स्वप्न में देखी कोठरी यथावत् थी, वह सहसा चिल्लाया। मारिया! मारिया! तुम कहां हो? बुढ़िया ने शेल्डन की आवाज सुनी और कहा-मारिया तो कभी की मर चुकी है। अब वह कहां है? पर तुम कौन हो? बुढ़िया ने शेल्डन को घूर-घूर कर देखा और पहचानने के बारे में आश्वस्त होकर बोली-लुइगीब्रेन्दोनो! तुम तो इतने अर्से बाद लौटे अब तक कहां रह रहे थे? बुढ़िया हवा में गायब हो गई तो शेल्डन और भी अधिक हतप्रभ रह गया। उसे ऐसा लगा माना किसी जादू की नगरी में घूम रहा है। अपरिचित जगह में ऐसे परिचय मानो सब कुछ उसका जाना पहचाना ही हो। बुढ़िया भी उसकी जानी पहचानी हो घर भी गली भी ऐसी है-मानो वह वहां वर्षों रहा हो। मारिया मानो उसकी कोई अत्यन्त घनिष्ठ परिचित हो। हतप्रभ शेल्डन को एक बात सूझी वह सीधा पुलिस ऑफिस गया और आग्रह पूर्वक यह पता लगाने लगा कि क्या कभी कोई मारिया नामक लड़की वहां रहती थी-क्या वह कत्ल में मरी? तलाश तो कौतूहल एवं जिज्ञासा समाधान के लिए की गई थी, पर आश्चर्य यह कि 122 वर्ष पुरानी एक फाइल ने उस घटना की पुष्टि कर दी। पुलिस रिकॉर्ड के कागजों ने बताया कि उसी मकान में मारिया बुइसाकारानेबो नामक एक 19 वर्षीय लड़की रहती थी। उसकी घनिष्ठता एक 25 वर्षीय युवक लुइगी ब्रेन्दोनो से थी। दोनों में अनबन हो गई तो युवक ने छुरे से उस लड़की पर हमला कर दिया और कत्ल करने के बाद इटली छोड़कर किसी अन्य देश को भाग गया। अब तक उसका कोई पता नहीं चला। शेल्डन को यह विश्वास पूरी तरह जम गया कि वही पिछले जन्म में मारिया का प्रेमी और हत्यारा रहा है। इस घटना को परामनोविज्ञानवेत्ताओं ने अपनी शोध का विषय बनाया और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि अतीन्द्रिय चेतना की प्रस्फुरणा से ऐसे स्वप्न एवं घटनाओं की स्मृति भी सामने आ सकती है। ये स्मृतियां पूवर्जन्म की ही हो सकती हैं।

लेबिब कैकिन का स्वप्न और पुनर्जन्म :लेबिब कैकिन (Lebbibkakin) नामक एक युवती को अपने शयन कक्ष में हर सायंकाल को एकदृश्य (vision) दिखाई देता था,

जिसमें वह एक बहता हुआ झरना देखा करती थी और एक व्यक्ति, जो अपने आपको जामा दादोरा जेकोस (Jama Dadora Jacose) कहा करता था

उसके सामने प्रकट हो जाता था। वह उससे एक अपरिचित भाषा में बोलना प्रारंभ कर देता था। जिसे वह युवती बिना समझे दोहरा दिया करती थी। यद्यपि वह व्यक्ति सदा अपना मुंह ढ़के रखता था तो भी उन दोनों में एक संबंध की भावना क्रमशः बढ़ती गई और वे आपस में प्रेम करने लगे। यह क्रम दो-तीन महीने तक चलता रहा और एकाएक बंद हो गया। कुछ वर्षों के अन्तर के बाद वह व्यक्ति स्वप्न में उस बहिन के सामने प्रकट हुआ। उस बहिन ने स्वप्न में देखा कि उसकी उस व्यक्ति से समुद्र के किनारे भेंट हुई है और उसने एक बार पुनः उसकी भाषा सीखना आरंभ कर दिया है। उसने उस परस्पर के वार्तालाप को लिपिबद्ध करने का अभ्यास कर लिया परन्तु जाग्रतावस्था में वह उस भाषाको कभी भी सीख नहीं सकी। उस महिला का विश्वास था कि यद्यपि उसने वर्तमान जीवन में वस्तुतः यह भाषा नहीं सीखी और न इस जीवन में ही उसके संपर्क में आई है किन्तु वह पूर्व जन्म में इससे संबंधित थी और यह उसके गत जीवन की अवशिष्ट स्मृतियां हैं। जो उसके समक्ष इस रूप में आया करती है। ऐसा लेबिब कैकिन का कहना है।

जेनीफर और गेलियन के पुनर्जन्म :जेनीफर और गेलियन को उनके माता-पिता अपनी दिवंगत बेटियों का पुनर्जन्म मानते हैं। जोआना (11 वर्ष की) और जैकेलीन (6 वर्ष) नार्थवरलैंड के अपने गांव हैक्सन में, जहां यह परिवार उस समय रहता था, एक दूसरे का हाथ थामें चर्च की ओर जा रही थी कि वे एक मोटरकार के नीचे आ गई। लड़कियों की मौत के बाद जब श्रीमती पोलक दुबारा गर्भवती हुई तो श्री पोलक को स्वप्न में विचित्र आभास होने लगा कि उनकी बेटियां उनके पास वापस आ रही हैं। वे नहीं चाहते थे कि इस पर विश्वास करें और उनकी पत्नी तो यह सुनना भी नहीं चाहती थी। लेकिन गर्भावस्था के दिन पूरे होते-होते यह भावना बहुत ही प्रखर हो गई और उन्होंने अपनी पत्नी की डॉक्टरी परीक्षा कराई। डॉक्टर ने कहा कि 'इस बात की बिल्कुल कोई संभावना नहीं है कि वह एक से ज्यादा बच्चे को जन्म दे, क्योंकि उसे एक ही हृदय की धड़कन और एक ही शिशु के हाथ-पैर का पता चला है।' एक सप्ताह बाद जुड़वां शिशुओं का जन्म हुआ। श्री और श्रीमती पोलक का ध्यान आकर्षित करने वाली पहली चीज थी कि जेनीफर के माथे पर दायीं आंख की तरफ ऊपर से नाक तक एक सवा इंच लंबा असामान्य सफेद निशान था, जो तीन साल पहले गिर पड़ने का परिणाम था। जैनीफर के निशान साधारणतया कठिनाई

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

से दिखाई पड़ते थे, किन्तु सर्दियों में वे स्पष्ट दिखाई देने लगते थे। यह बात जैकेलीन के विषय में भी थी।

गैलियन को जैनीफर का चेहरा प्यार से दोनों हाथों में लिए यह बताते देखा गया कि जैकेलीन को गिरने पर कैसे-कैसे चोट आई थी। वह जो कुछ बता रही थी, वह सब सही था। एक मौके पर जब श्री पोलक ने संयोग से पुराने खिलौने के एक पार्सल को, जो उन्होंने जोआना और जैकेलीन की मौत के बाद अलग रख दिया था, निकाला तो गेलियन ने गुड़ियों के धुले कपड़े निचोड़ने वाला रिंगर छीन लिया और बड़े आवेश में बोली 'डैडी, देखो, यह मेरा रिंगर है।' असल में यह जोआना को दिया गया था। इसी तरह जब जेनीफर ने जैकेलीन की गुड़िया देखी तो वह चिल्ला पड़ी 'वह मेरी है।' जैकेलीन इस गुड़ियां को ठीक 'मेरी'(Merry)के नाम से ही पुकारती थी, हालांकि जेनीफर ने यह गुड़िया इससे पहले कभी नहीं देखी थी। एक अवसर पर श्री पोलक कुछ रंगाई कर रहे थे। उन्होंने अपने कपड़ों को रंग से बचाने के लिए ऊपर से अपनी पत्नी का एक पुराना कोट पहन लिया। श्रीमती पोलक ने यह कोट उस दिन प्रातः काल के बाद जिस दिन दोनों लड़कियां दुर्घटनाग्रस्त हुई थी फिर कभी नहीं पहना। श्री पोलक कहते हैं 'जब जैनीफर ने मुझे यह कोट पहनते देखा तो उसने कहा तुम मम्मी का यह कोट क्यों पहन रहे हो, जो वह स्कूल पहनकर जाती थी। श्री पोलक आश्चर्य से भर गये, क्योंकि यह वही कोट था, जिसे पहनकर श्रीमती

पोलक जैकेलीन को स्कूल से लेने जाती थी। श्री पोलक के स्वप्न से भी इन दोनों के पुनर्जन्म की पुष्टि हो गई।

स्वप्न ने दिखाया पूर्वजन्म :प्रसिद्ध विचारक डेनियल बेवर चीन के प्रसिद्ध तांत्रिक लामा से एक बौद्ध मंदिर में मिले। उन्होंने भूतकालीन घटनाओं को स्वप्न में देखने की इच्छा लामा के समक्ष जाहिर की। लामा ने एक नवयुवक पर प्रयोग कर दिखाया। योगनिद्रा द्वारा स्वप्नानुभूति करने के बाद लामा ने पाल नामक युवक से पूछा कि तुमने स्वप्न में क्या देखा?उसने कहा ''मैंने देखा कि मैं रूस के सेंटपीटर्सबर्ग नगर में हूं। मेरी एक प्रेमिका एक बड़े शीशे के सामने खड़ी श्रृंगार कर रही है। उसे उसकी दासियां 'क्रास ऑफ अलेक्जेंडर' हीरे की अंगूठियां पहना रही हैं। मैंने मना किया कि अरे! तुम यह अंगूठी मत पहनो। मैंने सारी बातचीत रूसी भाषा में ही की। अपनी प्रेमिका से मिलन का यह स्वप्न बड़ा ही मधुर रहा। 'तभी एक दूसरा स्वप्न भी दिखाई दिया। मैंने अपने आपको एक

परिवर्तित दृश्य में निर्जन रेगिस्तान में पाया। मेरे दो बच्चे भूख से तड़फ रहे हैं पर मैं उनके लिए भोजन नहीं जुटा पाया। मुझे एक ऊंट ने हाथ में काट लिया। मेरा अन्त बड़ी दुःखद स्थिति में हुआ।''यह घटना देखने के बाद डॉ. बेवर रूस लौटे। दैवयोग से एक बार सेंटपीटर्सबर्ग में उनकी भेंट एक स्त्री से हुई उससे इस बात का क्रम चल पड़ा तो वह एकाएक चौंकी और बोली आप जिस महल की बातें बता रहे हो वह मेरा ही मकान है। मेरे पास ''क्रास ऑफ अलेक्जेंडर' हीरे की अंगूठी भी थी। मैं उसे कई बार पहनना चाहा करती थी किन्तु मेरा प्रेमी राम्पुटिन इसे पसन्द नहीं करता था ठीक जिस तरह आपने पाल की घटना सुनाई। वह मुझे यह अंगूठी पहनने से रोकता था। डॉ. बेवर उस स्त्री के साथ उसके घर गये। हूबहू वही दृश्य था। जो स्वप्न में देखकर पाल ने बताये थे। डॉ. बेवर आश्चर्य चकित रह गये और माना कि स्वप्न सत्य था और यह भी कि जीवात्मा के पुनर्जन्म का सिद्धांत सत्य था।

टांग की हड्डी : पूर्व जन्म की अमेरिकन सोसायटी फॉर साइकिकल रिसर्च के वरिष्ठ अनुसंधानकर्त्ता डॉ. कार्लेरिग्स ने 'आउट ऑफ बॉडी एक्सपीरियन्सेंस' नामक अपनी पुस्तक में मरणोत्तर संपर्क के अपने निजी अनुभव के संबंध में एक सत्य घटना का वर्णन किया है। उनके अनुसार सियान्स नगर अमेरिका में एक ट्रक ड्राईवर था। रात को गाड़ी चलाकर ला रहा था कि आइसलैंड की नदी के किनारे सर्दी से बचने के लिए ट्रक रोक लिया था। जहां अतिशीत के कारण उसकी मृत्यु हो गई। ड्राइवर की लाश लावारिस पड़ी रही। जहां पशु-पक्षियों ने खा डाली। उसको विधिवत दफनाया नहीं जा सका। उसकी टांग की बची हड्डी को पास में रहने वाले बढ़ई ने अपने घर की दीवार में सुरक्षित रख लिया। मृतक ड्राइवर की आत्मा बरसों भटकती रही। उसे सद्गति न मिल सकी। एक दिन स्वप्न में प्रकट होकर अपने भाई से उसने प्रार्थना की कि यदि आप मेरी टांग की हड्डी को बढ़ई की दीवार से निकाल कर पास के कब्रगाह में दफना दें, तो आपका बड़ा उपकार होगा। स्वप्न में बताये गए ठौर ठिकाने का अता पता भी भाई को बता दिया। सत्यता की जांच करने उसका भाई बताये गये स्थान पर पहुंचा। वास्तव में वहां बढ़ई रहता था और उसने दीवार में हड्डी लगा रखी थी। सारा वृत्तान्त बताने पर वह हड्डी उसके भाई को सौंप दी गई, जहां पास के कब्रगाह में उसे विधिवत् दफना दिया गया तथा प्रार्थना की गई। उस रात मृतक ड्राइवर की आत्मा पुनः अपने भाई के समक्ष प्रकट हुई और कहा कि अब वह पूर्ण सन्तुष्ट है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

एलेक्जैण्ड्रिना सैमोना के पुनर्जन्म सूचक स्वप्न :डॉ. कारमेलो सैमोना और उनकी पत्नी एडेला (आस्ट्रिया) के एक पुत्री थी। उसका नाम था एलेक्जैण्ड्रिना सैमोना। पांच वर्ष की उम्र में 15 मार्च सन् 1910 को पैलेरमो सिटी सिसिली में उसकी मृत्यु हो गई। मृत्यु के तीन दिन बाद मां एडेला ने एक स्वप्न देखा कि 'उसकी मृत पुत्री का पुनर्जन्म होगा। ' मां को इस स्वप्न पर विश्वास नहीं हुआ। क्योंकि एक शल्यक्रिया के परिणामस्वरूप उसे अब यह आशा नहीं रह गई थी कि वह अब और संतानों को भी जन्म देगी। परंतु 22 नवंबर सन् 1910 को मां एडेला ने जुड़वा बालिकाओं को जन्म दिया। एक बालिका की आकृति मृत बालिका की आकृति से बिल्कुल मिलती-जुलती थी, इसलिए उसका भी नाम एलेक्जैण्ड्रिना रखा गया। मृत पुत्री का नाम एलेक्जैण्ड्रिना 'प्रथम' तथा नवजात पुत्री का नाम एलेक्जैण्ड्रिना 'द्वितीय' था। दोनों में बहुत समानताएं भी थी। दोनों ही शांतिप्रिय, स्वच्छ और अकेले में रहकर स्वयं से ही खेलना पसंद करतीथी। दोनों के चेहरे तो मिलते ही थे, दोनों की बायीं आंखों में अधिरक्तता का लक्षण था और दाहिने कानों से स्राव हुआ करता था। दोनों ही बायें हाथ से सारा काम करती थी और दोनों को ही छालटीन के कपड़े को तह करके संभालकर रखने में बहुत आनन्द मिलता था। इसी प्रकार दोनों ही बालिकाओं को पनीर से चिढ़ थी तथा अपने हाथों को साफ रखने का शौक था। जब एलेक्जैण्ड्रिना 'द्वितीय' दस वर्ष की हुई तो उसे इस बात का ज्ञान हुआ कि वह मानरियल (Monreale) नामक स्थान पर कभी गयी थी। उस स्थान पर एलेक्जैण्ड्रिना 'द्वितीय' पहले कभी नहीं गई थी। फिर भी, उसने कहा कि 'वह सींगवाली एक महिला के साथ मानरियल गई थी और वहां उसे लाल कपड़े पहने हुए पुजारी मिले थे। मां को स्मरण हो आया कि 'एलेक्जैण्ड्रिना प्रथम की मृत्यु के कुछ मास पूर्व उसे लेकर मानरियल गई थी। साथ में एक महिला भी थी जिसके माथे पर भद्दे सींग थे। वहां उनकी भेंट यूनानी पुजारियों से हुई थी, जिनके नीले कपड़ों को लाल रंग की वस्तुओं से अलंकृत किया गया था। ' शारीरिक समानता, आदतों की अभिन्नता तथा एलेक्जैण्ड्रिना प्रथम के जीवन-काल की घटनाओं की स्मृति के कारणों से डॉ. सैमोना तथा उनके मित्रों को विश्वास हो गया कि एलेक्जैण्ड्रिना प्रथम ने ही द्वितीय के रूप में पुनः जन्म लिया है।

14वें दलाई लामा के पुनर्जन्म सूचक स्वप्न :दलाई लामा एक उपाधि है, जो किसी विशेष व्यक्ति को प्रदान की जाती है। यह विशेष व्यक्तित्व बौद्धधर्म के

गिलूग संप्रदाय का आध्यात्मिक नेता होता है। दलाई लामा के संबंध में यह विश्वास किया जाता है कि यह तुल्कुओं की लंबी परंपरा का वर्तमान अवतार है। बौद्धधर्म के अनुसार तुल्कु, वह आत्मा होती है, जिसे बुद्धत्व की प्राप्ति हो चुकी है और वह जन्म मरण के चक्र से भी मुक्त हो चुका है।

लामा का अर्थ शिक्षक होता है। 17वीं शताब्दी के मध्य से लेकर 1959 तक दलाई लामा ही तिब्बत का सर्वोच्च पद होता था। 1959 के बाद से दलाईलामा भारत से तिब्बत के प्रशासन को संभाल रहे हैं। दलाईलामा को बौद्ध विश्वास के गिलूग स्कूल का सर्वोच्च अधिकारी और चिंतक भी माना जाता है। तिब्बती लोग आमतौर पर दलाईलामा को परम्परानुसार ग्यालवा रिनपोचे या 'येशे नोरबू' के नाम से पुकारते हैं। इस संबोधन का अर्थ मूल्यवान विजेता या इच्छापूरी करने वाला रत्न होता है। वैश्विक स्तर पर उन्हें 'हिज होलीनेस दलाईलामा (HisHoliness the Dalai Lama)के नाम से जाना जाता है, संबोधित किया जाता है। वर्तमान में दलाई लामा चौदहवें हैं।

हिमालय की परंपराओं के अनुसार 'फोआ' एक परंपरा है, जिसके तहत कोई अपने दिमाग के प्रवाह को निश्चित शरीर में प्रवाहित करता है। इसी प्रक्रिया से नए दलाई लामा का जन्म होता है। दलाई लामा की मृत्यु के पश्चात् देववाणी से विचार विमर्श किया जाता है। देववाणी ईश्वर से मिलने वाले इशारे होते हैं, जो भावी दलाई लामा को खोजने में मदद करते हैं। इसके बाद दलाईलामा के नए अवतार को खोजने की मुहिम शुरू होती है। यह खोज 'येंग्सी या येंग्स सीड' कहलाती है। पूर्व दलाई लामा ही नए तुल्कु या आत्मा को खोजने का मुख्य संकेत देते हैं। इस खोज को पूरा होने में कई वर्ष लग जाते हैं। तेरहवें दलाई लामा के प्रयाण के बाद एक दल को दलाई लामा के नए अवतार को खोजने का कार्यभार सौंपा गया। खोज के दौरान एक नया लक्षण उभर कर आया। जिसने नए लामा को खोजने में अहम भूमिका अदा की। तेरहवें लामा के पवित्र शव का सिर जो दक्षिण दिशा की ओर देखते हुए रखा गया था, उसकी दिशा रहस्यमयी रूप से बदल कर उत्तर-पूर्व हो गई थी। इसी आधार पर निष्कर्ष निकाला गया कि अगले दलाई लामा ने इसी दिशा में जन्म लिया है। खोजी दल के मुखिया को सपने में पवित्र तालाब ल्हामो लात्सो दिखा, जिसे दलाई लामा के पवित्र स्थल एम्डो के रूप में चिह्नित किया गया। साथ ही उन्हें एक मंजिल का मकान भी दिखा जिसमें खास तरह की पानी निकासी व्यवस्था थी और विशेष प्रकार की खपरैल

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

से ढका गया था। सघन खोजबीन के बाद दल को एक घर मिला जो स्वप्न के घर से मिलता जुलता था। इस घर में थोनडप नाम का दो वर्षीय बालक था। थोनडप चौदहवें दलाई लामा के बचपन का नाम था। खोजी दल ने थोनडप को बहुत सारे स्मृति चिन्ह और खिलौने दिए। उनमें से कुछ पूर्व दलाई लामा से संबंधित थे और कुछ साधारण थे। इस बात को प्रमाणित किया गया कि थोनडप ने पूर्व दलाईलामा के खिलौनों को एकदम ठीक से पहचाना और चिल्लाने लगे-ये मेरे हैं। ये मेरे हैं। आखिर में दल की खोज थोनडप पर आकर समाप्त हो गई। खोजीदल को अपनी मंजिल मिल गई थी। यह थोनडप दलाई लामा के रूप में स्वीकार किया गया। इस नए अवतार का नाम बदल कर 'जेटशन जेमफेल गवांग लोबसेंग येशी तेनजित ग्यात्सो' रखा गया। इसका मतलब होता है-पवित्र ईश्वर, सौम्य ज्योति, करूणा के अवतार, आस्था के संरक्षक, विद्वत्ता के समुद्र। इनका जन्म 6 जुलाई 1935 को तिब्बत के 'चिंग हई में हुआ। इनकी प्रसिद्धि नोबेल पुरस्कार विजेता के रूप में हुई।

दादा का पौत्र रूप में पुनर्जन्म :मार्च 1960, मुजफ्फरनगर में स्वामी मदनानन्द जी सरस्वती ने अपना पूर्वजन्म इस प्रकार बताया - मेरा जन्म कानपुर जिला की तहसील देरापुर में वि.सं. 1942 को श्री मथुराप्रसाद दुबे के घर हुआ मेरे दादाजी का नाम परमसुख दुबे था। मेरी माताजी के 4 लड़कियां होने के कारण, पुत्र प्राप्ति के लिए आशुतोष शंकर भगवान की पूजा-स्तुति बहुत करती थी। मेरे पूज्य दादाजी परमसुख दुबेजी का 90 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। घरवालों ने अज्ञानता वश, शास्त्र विरूद्ध सूर्यास्त के समय ही उनका दाह-संस्कार कर दिया। एक रात्रि में मेरी माताजी को दादाजी ने स्वप्न में दर्शन देकर कहा कि तुम लोगों ने हमारा दाह कर्म सूर्यास्त के समय कर दिया अतः हमारा क्रिया-कर्म भ्रष्ट हो गया। शंकर पूजन से तुम्हारे पुत्र उत्पन्न होगा। हम ही तुम्हारी कोख से पुत्र बनकर जन्म लेंगे; परन्तु सूर्यास्त के समय हमारा दाह कर्म करने के कारण हमारा एक नेत्र विनष्ट हो गया। अतः हम तुम्हारे एक नेत्र वाले (काने) पुत्र होंगे। माताजी ने यह स्वप्न देखा और उन्हें इससे बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने स्वप्न की भविष्यवाणी सबको सुना दी। स्वप्न की बातें वास्तव में सत्य निकली और कुछ दिनों पश्चात् ही मेरी माता को गर्भ रहा और दादाजी की स्वप्न की भविष्यवाणी के अनुसार मैं एकाक्षी (काना) पुत्र उत्पन्न हुआ। मैं जब कुछ बड़ा हुआ और बोलने लगा, तब मैं सबके सामने स्वतः ही दादा होने का प्रत्यक्ष प्रमाण

देने लगा। मैं सबको बताने लगा कि यह मेरी लाठी है, यह मेरा अंगरखा है, अमुक व्यक्ति हमारे रिश्तेदार हैं, उन्हें बुलाओ। ये सब बाते बताने पर मेरी माता ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। मैंने स्वयं पूर्व जन्म में जब मैं दादा था, उस समय के अपने गाड़े हुए रुपये बताये और सबके सामने उखाड़कर दिखाये। यह देखकर सब आश्चर्य चकित रह गये और बरबस सबको एक स्वर से यह स्वीकार करना पड़ा कि वास्तव में दादा ही पौत्र रूप में जन्म लेकर आयें हैं। बहुत दिनों तक मैंने इसी प्रकार अपने पूर्वजन्म की सभी बातें बता-बता कर और प्रमाण दे-देकर सबको चमत्कृत कर दिया किन्तु बाद में माताजी ने मेरे कान बिंधवा दिये, जिससे मैं सब कुछ भूल गया।

सार्जेण्ट थियांग सान क्ला का पुनर्जन्म :अमरीका के प्रख्यात पुनर्जन्म विशेषज्ञ फ्रांसिस स्टोरी 1962 में स्याम गए थे। मध्य थाईदेश में सूरिन में स्थित एक सैनिक शिविर के कंपनी कमाण्डर कैप्टेन नित वाला सिरी ने उनके पास एक संदेश भेजा। 'क्या' आप हमारे शिविर के सार्जेण्ट थियांग सान क्ला से, जिसे अपने पूर्वजन्म की बहुत सारी घटनाएं याद हैं, मिलना पसंद करेंगे?स्टोरी ने कैप्टेन को कहला भेजा कि उन्हें सार्जेण्ट क्ला से मिलकर बड़ी खुशी होगी और वह इस भेंट की व्यवस्था कराने के लिए उनके बहुत-बहुत कृतज्ञ हैं। 'स्टोरी' पिछले बीस वर्षों से एशियाई देशों में इस शोधकार्य में व्यस्त हैं। पुनर्जन्म-विशेषज्ञ फ्रांसिस स्टोरी ने भारत, बर्मा, थाईदेश और श्रीलंका आदि देशों में जाकर पुनर्जन्म की अनेक घटनाओं की जांच की है। इस शोध कार्य का संपूर्ण खर्च अमरीका के वर्जीनियां विश्व विद्यालय के परा मनोविज्ञान का शोध विभाग करता है। सार्जेण्ट क्ला ने स्टोरी को बताया कि उसका वर्तमान जन्म सूरिन प्रांत के रूसाई ग्राम में हुआ था। उसे अपने पिछले जन्म की स्मृति बचपन से ही थी, पर बोल न सकने के कारण वह किसी को यह बतला नहीं पाता था। चार वर्ष की उम्र में जब वह कुछ बोलने के काबिल हुआ, तो उसने अपने पिता से कहा ''मुझे अपने पिछले जन्म की याद है, और यह भी याद है कि मेरी मृत्यु किस प्रकार हुई थी। इसके अलावा मुझे यह भी मालूम है कि पूर्व जन्म में मैं आपका भाई 'होह' था और जुलाई 1924 में मेरी मृत्यु हुई थी। सार्जेण्ट क्ला ने फिर कहा 'मुझे मालूम था कि मेरी हत्या मेरे गांव में रहने वाले 'चांग' नामक व्यक्ति के चाकू मारने के कारण हुई थी। नया जन्म लेने के बाद, मैं चांग से बदला लेने का इच्छुक था, पर ऐसा नहीं कर पाया, कारण, चांग तभी मर गया, जब वह एकदम नन्हा बच्चा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

था।'' थियांग क्ला ने आश्चर्यकारी बात बताते हुए कहा ''जैसे ही मेरे प्राण निकले, मैंने अपने मृत शरीर को जमीन पर पड़े हुए देखा। मुझ पर हमला करने वाले मेरी हत्या करके कभी के भाग गए थे। उस वक्त मैं तमाशा देखने वालों से घिरा था।

मेरी इच्छा बहुत हो रही थी कि मैं पुनः इस मृत् शरीर में प्रवेश कर इस शरीर को फिर जिंदा कर दूं, पर तमाशबीन दर्शकों से बड़ा डर लगता था। मेरे मृत शरीर के घावों से काफी खून बह रहा था, फिर भी मुझे कोई कष्ट नहीं हो रहा था। ''मैं'' एक-एक करके अपने सभी मित्रों, परिचितों और रिश्तेदारों के पास गया। ''मैं'' उन्हें देख सकता था, पर वे 'मुझे' नहीं देख सकते थे। फिर 'मुझे' अपने भाई की याद आई जो मुझे बहुत चाहते थे। जैसे ही मैंने उनके बारे में सोचा, 'मैंने' अपने आपको उनके घर में पाया। भाई तो उस समय घर में नहीं था, पर भाभी थी। वह उस वक्त अल्पाहार कर रही थी। वह गर्भवती थी और उसका पेट बहुत फूला हुआ था। मैंने सोचा कि ''अगर भाभी मुझे अपने गर्भ में धारण कर लें तो कितना अच्छा रहे। मैं इस जन्म में भी अपने प्यारे भाई और अपनी प्यारी भाभी के पास रहूंगा।'' जैसे ही यह कामना 'मेरे' मन में आई ''मैं' भाभी के गर्भ में जाकर स्थित हो गया।''''मैं'' सिर्फ आत्मा था, शरीर नहीं। इसलिए दुःख या सुख की अनुभूति 'मुझे' बिल्कुल नहीं होती थी। जितने दिनों 'मैं' गर्भ में रहा, उतने दिनों की पूरी याद है 'मुझे' यह भी याद है कि इस अवधि में 'मैं' कभी-कभी अपनी भावी माता के शरीर से बाहर निकलकर इधर-उधर घूमा करता था। ''अपने जन्म के बाद, मैंने अपनी मां से कहा था कि मैं अपनी इच्छा से उनके गर्भ में आया था। उन्हें यह सुनकर जरा भी आश्चर्य नहीं हुआ। उन्होंने कहा-तेरे जन्म से पहले मैंने सपने में अपने पति के मृत भाई (देवर) 'होह' को देखा था। वह मुझसे कह रहा था कि वह मेरे पुत्र के रूप में जन्म लेना चाहता है।''सार्जेण्ट थियांग क्ला ने स्टोरी से कहा ''मेरे वर्तमान पिता और पूर्वजन्म के भाई को पूरा विश्वास हो गया था कि मैं ही 'होह' हूं, जो अपने पिछले जन्म में उनका भाई था। पर दुर्भाग्यवश, मेरा भाई (वर्तमान पिता) दो महीने बाद मर गया और मेरी मां (पूर्व जन्म की भाभी) की मृत्यु जब मैं पन्द्रह वर्ष का था तब हो गई। मैं अनाथ हो गया।''

भाई के घर ललिता बाई का पुनर्जन्म :मुम्बई निवासी डॉ. श्री आजगांवकर की धर्मपत्नी श्रीमती ललिता बाई सनातन धर्मावलम्बी थी। वे प्रतिमास पूर्णिमा का

व्रत रखकर उपवास किया करती थी। यह क्रम वर्षों से चला आ रहा था। कैंसर रोग होने पर भी व्रत का क्रम चलता रहा, अन्त में उनकी मृत्यु भी पूर्णिमा के दिन हुई। ललिताबाई के भ्राता श्री सामन्त जी भी बम्बई में रहते थे। मृत्यु तथा दाह-संस्कार के दूसरे दिन, ललिताबाई ने स्वप्न में कहा 'कल मेरा पूर्णिमा का उपवास था। मृत्यु हो जाने के कारण मैं पारणा नहीं कर पाई। ' उसको पता नहीं था कि दूध कहां रखा है। ललिता बाई ने भाई को बता दिया। कॉफी तैयार करके जब कप ललिता बाई को भाई देने लगा तो ललिता बाई ने सशरीर प्रकट हो कर कहा 'इसको तुम पीलो। ' तुम्हारे पीने से ही पारणा हो जायेगा। ' भाई के कॉफी पीने के पश्चात् बहिन अन्तर्धान हो गई। भाभी श्री सामन्तजी की पत्नी के कोई संतान नहीं थी। डॉक्टर करनाडे ने परीक्षण करके निर्णय किया था कि इस बहिन की बच्चेदानी इतनी संकुचित है कि उसमें गर्भ रह ही नहीं सकता। मृत्यु के पश्चात् उसने स्वप्न में आकर अपने भाई से कहा कि ''मैं प्रभु से भाभी को संतान योग्य बना देने के लिए प्रार्थना किया करती हूं।'' एक मास बाद ललिताबाई ने स्वप्न में भाई से अनुरोध किया 'वह भाभी की एक बार फिर डॉक्टर से परीक्षा कराये। ' इस बार डॉक्टर महोदय यह देखकर आश्चर्य में पड़ गये कि केवल यही नहीं हुआ कि अत्यन्त संकुचित बच्चेदानी का परिमाण साधारण हो गया है, अपितु उसमें गर्भ भी स्थापित हो चुका है। यह विज्ञान की दृष्टि से चमत्कारी घटना थी। ललिताबाई ने फिर अपने भाई को स्वप्न में सूचना दी कि 'वे स्वयं ही भाभी के गर्भ से जन्म लेंगी। उचित समय पर कन्या का जन्म हुआ, जिसका नाम ललिताबाई ही रखा गया।

अद्भुत स्वप्न और सत्य :नेकाती उनलकास्किरोन जब उत्पन्न हुआ तब उसके मां-बाप ने उसका नाम 'मलिक' रखा था; किन्तु केवल दो ही दिन बाद उसकी मां सेलिले को सपना आया कि नवजात शिशु अपना नाम 'मलिक' के बदले 'नेसिप' रखने के लिए हठ कर रहा है। उनके निकट संबंधियों में नेसिप नामक एक बालक पहले ही मौजूद था और इस अंधविश्वास के
कारण कि दो बच्चों का नाम एक रख देना परिवार के लिए अशुभ हो सकता है। उन्होंने 'मलिक' का नाम 'नेकाती' रख दिया। जब नेकाती बोलने लगा तो वह अपने पिछले जन्म की घटनाएं बताने की चेष्टा करने लगा। उसने बताया कि 'उसका नाम नेसिप बुदक था। वह मेरसिन में रहता था और उसकी हत्या कर दी गई थी। उसकी शादी हो चुकी थी और बाल बच्चे थे। वह अपने सबसे चहेते

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बेटे नेजात को अपने कंधों पर बिठाकर ले जाया करता। अपनी सुन्दर पत्नी जेहरा की चर्चा वह बहुत प्यार भरे शब्दों में किया करता था। बातचीत के दौरान में उसने अपने हत्यारे का भी नाम बता दिया कि वह अहमद रेंक्लीं था और उसने किस तरह मेरी हत्या की। ''एक बार मैंने (नेसिप ने) रेंक्ली के लिए अपने घर से चाय लाने से इंकार कर दिया था। इस पर दोनों में झगड़ा तगड़ा हुआ। उसमें अहमद रेंक्ली ने एक करौती से नेसिप के सिर के पीछे, छाति और पेट पर कई वार करके उसकी हत्या कर दी। उसके शरीर पर पिछले जन्म के निशानों का रंग आसपास की खाल से एकदम अलग है और वे ऐसे लगते हैं मानो हाल ही में भरे हुए घावों के निशान हों। जब नेकाती को नेसिप के घर ले जाया गया तो उसने अपनी बीबी जेहरा और एक के अलावा सभी बच्चों को फौरन पहचान लिया और उनके नाम बताये। एक बच्चा उसकी मौत के बाद पैदा हुआ था अतः उसे नहीं पहचान सका। जेहरा को नेकाती की यह बात सुनकर अचम्भा हुआ कि 'एक बार नेसिप ने गुस्से में उसकी टांग पर चाकू से वार किया था। अतः जेहरा की जांघ पर उसी जगह पुराने घाव का एक लम्बा निशान इस कथन के सबूत के तौर पर मौजूद था। नेकाती ने यह भी बताया कि जिस दिन नेसिप को दफनाया गया था, उस दिन बड़ी तेज वर्षा हो रही थी।' जेहरा और दूसरे लोगों ने इस बयान की सचाई की पुष्टि की। पिछले जन्म में नेसिप नाम होने के कारण ही शिशु ने अपना नाम इस जन्म में नेसिप रखने की इच्छा स्वप्न में अपनी माता के समक्ष जाहिर की थी।

देव प्रतिबोध : सर्पों को मत मारो

एक क्षपक अपने शिष्य के साथ भिक्षाचर्या में गया। मार्ग में उसके द्वारा मेढ़की मर गई। मेढ़की की आलोचना नहीं की। मर कर वह ज्योतिष्क देव बना। वहां से च्युत होकर जिस सर्पकुल में जन्मा था, वह जातिस्मृति ज्ञान से संपन्न था। उसने जाति स्मृति से अपना पूर्वभव देखा। ''मेरे देखने मात्र से व्यक्ति भस्मसात् हो जाता है।'' यह सोचकर वह दिन भर बिल में रहता और रात को बाहर घूमता। एक बार कुछ सपेरे सांपों की खोज में रात को निकले। उन्होंने बिल द्वार पर बैठकर औषधि का प्रयोग किया और सर्प को आह्वान किया। सर्प सोचने लगा मैंने क्रोध का कटु परिणाम देख लिया है। मैं मुंह की ओर बाहर निकलूंगा तो किसी को जला डालूंगा, अतः पूंछ से निकलना ही उचित है। उसके शरीर का जितना भाग बाहर निकलता वे सपेरे उसको काट डालते। सपेरे उसके टुकड़े करते

गये। शिरच्छेद होते ही वह मर गया। वह सर्प देवता परिग्रहीत था। देवता ने राजा को स्वप्न में दर्शन देकर कहा राजन्! सर्पों को मत मारो। नागकुल से निकलकर वह सर्प तुम्हारा पुत्र होगा। उसका नाम नागदत्त रख देना। वह क्षपक सर्प प्राण परित्याग कर उसी राजा का पुत्र हुआ। बालक का नाम नागदत्त रखा गया। वह छोटी अवस्था में ही प्रव्रजित हो गया। जिस गच्छ में वह था, वे चारों क्षपक चातुर्मासिक, त्रैमासिक, द्विमासिक एवं मासिक तप क्रमशः करते थे। नागदत्त क्षपक नित्य भोजी, उपशांत एवं आस्थावान था। एक बार रात्रि में वहां एक देव वंदन करने आया। देवता ने सभी तपस्वी क्षपकों को छोड़ कर नित्यभोजी क्षुल्लक को वंदना की। दूसरे दिन तीनों तपस्वियों ने क्रमशः उसके आहार में थूका। उस समय भी वह मुनि प्रसन्न रहा, उसे केवल ज्ञान की प्राप्ति हो गई। तत्काल देवता ने प्रकट होकर तपस्वियों से कहा-तुम क्रोधाविष्ट रहते हो, तुम वन्दनीय कैसे हो सकते हो?

विवेकानन्द का सपना : भाव समाधि :स्वामी विवेकानन्द यूरोप से स्वदेश लौटते हुए समुद्र यात्रा के दौरान 30 दिसंबर 1896 की रात एक सपना देखकर जाग गए थे। वे जहाज के डेक पर घूम रहे थे तभी उनके दो सहयात्री व अनुयायी ई डब्लू गुडविन एवं सुश्री बर्नार्ड लेविस ने उनके पास पहुंच कर उनके अचानक जाग जाने की वजह पूछी। इस पर विवेकानन्द ने उन्हें अपना सपना सुनाया जिसका विवरण 1915 में छपी गुडविन की पुस्तक (The life of Vivekanand) द लाइफ ऑफ विवेकानन्द में इस प्रकार है। ''एक ऋषि आकृति ने अचानक प्रकट होकर कहा ध्यान से देख! यह ईसाइयत की मातृभूमि है। मैं थेरापुत हूं। हमारी दी हुई शिक्षा ईसाइयों ने ईसा की शिक्षा कहकर प्रचारित किया है। सच तो यह है कि जीसस नामक कोई व्यक्ति कभी हुआ ही नहीं था।'' विवेकानन्द ने जहाज के कप्तान से पूछा कि इस वक्त जहाज कहां है? उन्हें बताया गया कि जहाज क्रीट से 50 मील दूर है। स्थानीयता के इस तत्त्व की जानकारी पाते ही स्वामी जी भाव समाधि में चले गए। थेरा एक ख्यात बौद्धभिक्षु थे। उनके अनुयायी थेरापुत कहलाते थे। बाद में स्वामीजी ने अनेक शिष्यों को यह सपना सुनाया तो अनेक यूरोपीय इतिहासकारों ने उन्हें लिखा कि सिकंदरिया में हुए भारत और मिश्र की आध्यात्मिक प्रतिभाओं के महामिलन का ईसाइयत पर बहुत असर पड़ा था। हालांकि यह सपना देखने के बाद भी क्राइस्ट के प्रति विवेकानंद की श्रद्धा में कोई कमी नहीं आई। उनके लिए ईसा-मसीह, भगवान राम, कृष्ण या पैगम्बर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मोहम्मद की भांति एक व्यक्ति न होकर विचार थे। वे कहते भी थे, बाल कृष्ण और बाल जीसस को देखकर मैं समान रूप से भाव विह्वल हो जाता हूं। मेरे लिए सभी धर्म स्वदेशी हैं। ' विवेकानन्द एक ऐसे भारत की कल्पना करते थे जिसका शरीर इस्लामी और आत्मा वैदिक हो।

देवी तुलसी को स्वप्न में शंखचूड़-दर्शन :वृषध्वज की कन्या तुलसी अत्यन्त प्रसन्न होकर शयन कर रही थी। उसने स्वप्न में एक सुन्दर वेषवाले पुरूष को देखा, वह पुरूष अभी पूर्ण नवयुवक था। उसके मुख पर कान्ति थी। उसके गले में सुन्दर माला एवं रत्नमय आभूषण उसे सुशोभित कर रहे थे। स्वप्न में ही तुलसी का उसके साथ हास-विलास हुआ। स्वप्न देखने के पश्चात तुलसी जगकर विलाप करने लगी। उसी समय महान् योगी शंखचूड़ का बदरीवन में आगमन हो गया। वह आ रहा था, तभी तुलसी की दृष्टि उस पर पड़ गई। मन को मुग्ध कर देने वाला, वह शंखचूड़ अमूल्य रत्नों से बने हुए विमान पर विराजमान था। इस शंखचूड़ को देखकर तुलसी ने वस्त्र से अपना मुख ढ़ंक लिया। लज्जा वश उसका मुख नीचे की ओर झुक गया था। भव्य शरीर से शोभा पाने वाली उस सुन्दरी तुलसी को देखकर शंखचूड़ उसके पास आकर बैठ गया और बोला - देवी! तुम कौन हो, तुम्हारे पिता कौन है? तुम अवश्य ही सम्पूर्ण स्त्रियों में धन्यवाद की पात्र हो। तुम अपना परिचय देने की कृपा करो। तुलसी ने कहा - महाशय! मैं राजा धर्मध्वज की कन्या हूँ। तपस्या करने के विचार, चिन्तन से इस तपोवन में ठहरी हूँ। तुम कौन हो? तुम्हें आनन्दपूर्वक यहां से चले जाना चाहिए। उच्च कुल की किसी भी अकेली कन्या के साथ एकान्त में कोई भी कुलीन पुरूष बात नहीं करता-ऐसा नियम मैंने श्रुति में सुना है। शंखचूड़ ने कहा - विधाता ने दो प्रकार की स्त्रियों का निर्माण किया है - वास्तव-स्वरूपा और अवास्तव स्वरूपा। लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा, सावित्री और राधिका - ये पांच देवियां सृष्टि-सूत्र है। इनके अंश से प्रकट गंगा आदि देवियां वास्तवरूपा हैं। जगदम्बा की कला की कला से उत्पन्न अंश जो दिव्य अप्सराएँ हैं, उन्हें अप्रशस्त कहा जाता है। हे शोभने! मैं इस समय ब्रह्मा की आज्ञा पाकर ही तुम्हारे कार्य के लिए तुम्हारे पास आया हूँ और गांधर्व-विवाहकी विधि के अनुसार तुम्हें अपनी सहधर्मिणी बनाऊंगा। मैं श्री हरि के साथ रहने वाला उन्हीं का अंश सुदामा नामक गोप था। जो प्रसिद्ध आठ गोप भगवान् के स्वयं पार्षद थे, उनमें एक मैं ही था। देवी राधिका के शाप से इस

समय में दानवेन्द्र बना हूँ। तुम भी पूर्वजन्म में श्री कृष्ण के पास रहने वाली तुलसी थी। तुम भी जो भारत वर्ष में उत्पन्न हुई हो, इसमें मुख्य कारण थी राधिका जी का रोष ही है। तुलसी ने कहा - कान्त! आप जैसे सद्विचारक पुरूष से इस समय मैं परास्त हो गयी हूँ। इस प्रकार कहकर देवी तुलसी चुप हो गई। इतने में ब्रह्माजी ने आकर कहा - शंखचूड़। अब गांधर्व-विवाह के अनुसार इसे पत्नी रूप में स्वीकार कर लेना तुम्हारे लिए परमावश्यक है, क्योंकि तुम पुरूषों में रत्न हो और यह साध्वी देवी भी कन्याओं में रत्न समझी जाती है। पतिव्रते! तुम भी ऐसे गुणी पति की क्या परीक्षा करती हो? शंखचूड़ की सौभाग्यवती प्रिया बन जाओ। इसके बाद तुम पुनः गोलोक में भगवान श्रीकृष्ण के पास चली जाओगी और यह शंखचूड़ भी इस शरीर का त्याग करने के पश्चात् बैकुण्ठ में जाकर चतुर्भुज भगवान विष्णु में लीन हो जायेगा। स्वप्न द्वारा सुयोग्य जोड़ी प्राप्त कर दोनों का जीवन खुशहाल हो गया।

श्रीपाल जन्म सूचक स्वप्न :जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में अंगदेश के अन्तर्गत चम्पापुर नामक नगर में अरिदमन नामक राजा राज्य करते थे। इनकी रानी का नाम कुन्दप्रभा था। एक दिन कुंदप्रभा अपने शयनागार में कोमल शय्या पर सुखपूर्वक सोई हुई थी। उसने रात्रि के पश्चिम प्रहर में पुत्र रत्न के सूचक सुवर्णमय विशाल पर्वत और कल्पवृक्ष देखे। तत्समय ही स्वर्ग से एक देव च्यवकर रानी के गर्भ में आया। स्वप्न देखकर कुन्दप्रभा जाग्रत हो गई। वह कोमल तन्वी सुशीला रानी राजा के समीप गई। कुन्दप्रभा पति को विनयपूर्वक नमस्कार करके बैठी। रात्रि में आएं हुए स्वप्नों का मधुरालाप से कहने लगी। राजा ने उनके फल संबंध में कहा - प्रिये! ये सब स्वप्न तुमने बहुत ही उत्तम और आनन्ददायक देखे हैं। इनके देखने से सूचित होता है कि तुम्हारे महातेजस्वी, धीर, वीर, सकल उत्तमोत्तम गुणनिधान और चर्म शरीर पुत्र रत्न प्राप्त होगा। सुवर्णमय विशाल पर्वत का देखना सूचित करता है कि वह बड़ा पराक्रमी, साहसी, गम्भीर प्रतापी, सबसे प्रधान क्षत्रियवीर तथा सुवर्णमास वर्ण धारक होगा। वह बहुत ही उदार चित्त, दीन जन प्रतिपालक, महादानी और धर्म का धारी होगा, ऐसा कल्पवृक्ष देखने से सूचित होता है। तेरे गर्भ से सम्पूर्ण गुण सम्पन्न और तद्भव मोक्षगामी पुत्र रत्न का प्रसव होगा। इस प्रकार अपने पति द्वारा स्वप्न-फल सुनकर कुन्दप्रभा को अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

हरिकेश बल मुनि की माता का स्वप्न :मृत गंगा नदी के तट पर हरिकेश का राजा बलकोट्ट नामक चांडाल रहता था। उसके दो पत्नियां थीं - गौरी और गांधारी। देव आयुष्य को पूरा कर सोमदेव के जीव जातिमद के परिपाक के कारण उस चांडाल के घर गौरी के गर्भ से उत्पन्न हुआ। गर्भकाल में गौरी ने स्वप्न में बसन्त मास की छटा देखी तथा अनेक पुष्पित एवं फलित आम्रवृक्ष देखे। स्वप्न पाठकों ने स्वप्न का फल बताते हुए कहा - तुम्हारा पुत्र विशिष्ट और महान् बनेगा। समयान्तर में पुत्र का जन्म हुआ। बलकोट्ट के यहां जन्म लेने के कारण उसका नाम बल रखा गया। यही बालक हरिकेश बल के नाम प्रसिद्ध हुआ।

वीर विक्रमादित्य के जन्म सूचक स्वप्न :उज्जयिनी नामक नगरी के राजा महेन्द्रादित्य थे। उनका लोकप्रिय नाम गंधर्वसेन (गर्दभिल्ल) था। उनके कोई संतान नहीं होने के कारण वे पुत्र-प्राप्ति हेतु प्रायः यज्ञ एवं दान करते रहते थे। एक बार देवराज इन्द्र के नेतृत्व में भगवान शिव से देवताओं ने निवेदन किया - "देवाधिदेव! आपने एवं विष्णु भगवान ने जिन असुरों को मार डाला था, वे म्लेच्छों के रूप में पुनः पृथ्वी पर उत्पन्न हो गए हैं। वे ब्राह्मणों को मार डालते हैं। साधुओं की कन्याओं को उठा ले जाते हैं, यज्ञादि कार्यों में बाधा पहुंचाने से देवतागण भी भयभीत हैं।" आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप किसी वीर-पुरूष को पृथ्वी पर अवतरित करें ताकि म्लेच्छों का सर्वनाश हो सकें।" भगवान शिव बोले - "आप लोगों को चिन्तित होने की जरा भी आवश्यकता नहीं है। आप निश्चिंत होकर जाएं, मैं शीघ्र ही कोई समाधान ढूंढ निकालूंगा।" भगवान शिव का आश्वासन पाकर सभी देवता लौट आए। भगवान शिव ने माल्यवन्त नामक गण को बुलाया और उसे आज्ञा दी - "वत्स! तुम मनुष्य का रूप धारण करो और म्लेच्छों का सर्व नाश करो। उज्जयिनी नरेश महेन्द्रादित्य (गंधर्वसेन) की महारानी के गर्भ में जन्म लोगे।" उसी रात्रि भगवान शिव ने नृप गंधर्वसेन को दर्शन दिए और कहा - मैं तुम्हारी भक्ति से बहुत प्रसन्न हूँ। तुम्हें शीघ्र ही एक तेजस्वी पुत्र की प्राप्ति होगी। वह म्लेच्छों का सर्वनाश करेगा। तुम उसका नाम विक्रमादित्य रखना, कठिन पराक्रम के कारण उसका नाम विषमशील भी होगा।" कालान्तर में रानी गर्भवती हो गई। एक दिन स्वप्न में उन्होंने यक्ष एवं बेतालादि से पूजित होकर सात समुद्रों को पार किया। दसवें मास में रानी ने एक सुन्दर एवं तेजस्वी पुत्र को जन्म दिया। देवताओं ने प्रसन्न होकर स्वर्ग से पुष्प-वृष्टि की तथा दुंदुभी बजाई। बालक का नाम विक्रमादित्य तथा उपनाम विषमशील रख दिया।

महात्मा बसवेश्वर जन्मसूचक स्वप्न :कर्नाटक प्रदेश के बीजापुर जिले में बागेवाड़ी ग्राम में मादरसा और मादलाम्बिके नामक एक दम्पती रहा करते थे। दोनों ही नंदीश्वर के भक्त थे। मादलाम्बिके को बड़ी चाह थी कि उसके एक पुत्र हो। भगवान शिव की पूजा वह रोज करती। पूजन के पश्चात् पुत्र प्राप्ति की कामना करती। एक दिन पूजा के बाद वह ध्यान कर रही थी कि शिवलिंग पर चढ़ाया हुआ चमेली-पुष्प उसकी गोद (अंक) में आ गिरा। अत्यन्त भक्तिभाव से उसने यह प्रसाद ग्रहण किया। अपने नेत्रों से उसे चूमा और केशों में धारण कर लिया। दिनभर वह अत्यन्त प्रसन्न थी। रात्रि में जब उसे निद्रा आई, तब उसने एक स्वप्न देखा। शिव-पार्वती ने अपने नंदी को भेजा है। नंदी मादरसा के घर पहुंचा और फिर सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश फैल गया। प्रातः उठते ही मादलाम्बिके ने अपना स्वप्न अपने पति को बताया। मादरसा ने अपने गुरू को भी जा सुनाया। गुरू ने कहा - 'यह एक शुभचिह्न है, शकुन है। तुम्हें गुणवान पुत्र प्राप्त होगा। वह पूरे वंश का नाम चमकायेगा। सम्पूर्ण विश्व को ज्ञान-मार्ग दिखाएगा।" यह सुनकर दोनों पति-पत्नी बहुत प्रसन्न हुए। कुछ समय पश्चात् ई. सन् 1131 को माता मादलाम्बिके ने एक सुन्दर, अलौकिक बालक को जन्म दिया किन्तु जन्म लेते ही बच्चा न रोया और न अपनी आंखे खोली। बालक तपस्यालीन मुनि के समान शांत था। माता घबरा गई। पिता मादरसा कूडलसंगम (कृष्णा एवं मलापहारी नदियों का संगम) पहुंचे और अपने कुलगुरू को शिशु-जन्म की घटना से अवगत कराया। कुलगुरू ने आकर संगम से लाई हुई भस्म शिशु के सिर पर लगाई। तत्काल शिशु ने आंखें खोली और हंसने लगा। गुरू ने उन्हें समझाया - 'भगवान शिव - कृपा से नंदी ने तुम्हारे घर पुत्र रूप में जन्म लिया। यह बालक महान बनेगा, धर्म ध्वज जगत् में फहरायेगा। इसका नाम 'बसव' रखो। ' कन्नड़ के बसव शब्द का संस्कृत रूप वृषभ है। बसव से बसवेश्वर नाम से प्रसिद्धि प्राप्त की। इस स्वप्न ने महान पुत्र जन्मोत्सव की सूचना पहले ही प्रसारित कर दी थी।

संत नामदेव जन्म सूचक स्वप्न :महाराष्ट्र में पंढरपुर नगर में दामासेठ 'विट्ठल' के भक्त थे। संतान वियोग में पति-पत्नी दोनों उदास रहा करते थे। एक दिन पत्नी गोनाई ने अपने पति से कहा - स्वामी! मंदिर जाओ और भगवान विट्ठल से प्रार्थना करो कि वह हमें कृपा करके एक पुत्र प्रदान करें।" दामासेठ ने अपनी पत्नी की बात मान ली। वे मंदिर गए और भगवान विट्ठल के सामने

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

नतमस्तक हो प्रार्थना की - 'हे प्रभो! हमें एक पुत्र देकर हमारा दुःख निवारण करो।" सन् 1270 में, उसी रात्रि में दामासेठ ने एक स्वप्न देखा। स्वप्न में पांडुरंग (भगवान विट्ठल का अपर नाम) ने दामासेठ से कहा- "कल सबेरे स्नान के लिए भीमा नदी पर जाओ, भूलना नहीं। नदी में तुम्हें तैरता हुआ एक पिटारा दिखाई देगा। उस बंद पिटारे में एक नन्हा सा शिशु होगा। वह शिशु तुम अपने घर ले आना।" दामा सेठ सवेरे सोकर उठे तो बड़े प्रसन्न थे। उन्होंने गोनाई को स्वप्न का संपूर्ण वृतान्त सुनाया। गोनाई भी प्रसन्न हो उठी। दामा सेठ भीमा नदी पर स्नान के लिए गए तो सचमुच एक बंद पिटारा तैरता हुआ उनकी ओर आता दिखाई दिया। दामा सेठ ने पिटारा हाथ में लिया तो भीतर से 'विट्ठल-विट्ठल' की ध्वनि हो रही थी। पिटारा खोला तो एक तेजस्वी, हंसमुख शिशु उसमें हाथ-पैर मार रहा था, किलकारियां भर रहा था। दामा सेठ शिशु को घर ले आए और उसे गोनाई की गोदी में देते हुए बोले - "संभालो! परमात्मा ने हमें यह प्रसाद दिया है।" गोनाई ने बड़े दुलार से उसे अपनी बांहों में ले लिया। पति-पत्नी को असीम प्रसन्नता हुई। उन्होंने शिशु का नाम रखा 'नामा'। जो बाद में संत नामदेव के रूप में विख्यात हुआ।

पढ़रीनाथ के दर्शन :संत तुकाराम का जन्म ई. सन् 1608 में पूना महाराष्ट्र के पास देहू ग्राम में हुआ था। जब वे 13 वर्ष के हुए तो उनका विवाह रखुमाई से कर दिया गया। कुछ दिनों बाद उनके माता-पिता का अकस्मात् देहावसान हो गया। उसी समय उनके बड़े भाई साधु हो गये। भाभी की भी मृत्यु हो गई। उसी वर्ष जबरदस्तअकाल पड़ने से बहुत से जानवर मर गये। उसी समय उनकी प्रथम पत्नी रखुमाई और बेटा भी मर गया। उनका दूसरा विवाह जीजाबाई के साथ हुआ। परिस्थितियों के कारण मन परिवार से उचट गया। उन्होंने अपने आपको भगवान विट्ठल के चरणों में सौंप दिया। संत तुकाराम ने अब यह अनुभव किया कि उन्हें जनता के बीच नहीं रहना चाहिए। वे भण्डारी पहाड़ी के पश्चिम में एक गुफा में जाकर रहने और ध्यान करने लगे। इसके अतिरिक्त उन्होंने ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ आदि महान संतों द्वारा रचित भजनों का अध्ययन किया। उससे उनकी अंतरात्मा को शांति मिली। उनका मस्तिष्क किसी फूल की तरह खिल उठा। फिर भी उनको एक दुःख बना हुआ था। उन पर गुरू की कृपा नहीं हुई थी। इसी कारण उनका हृदय तड़प रहा था। एक दिन बहुत अधिक व्यथित होकर

और बड़बड़ाते हुए वे सोने चले गए। स्वप्न में उनके सम्मुख साक्षात् पंढरीनाथ प्रकट हुए। उनके सिर पर हाथ फेर कर कहा - 'तुकाराम चिन्ता न करो बाबा चैतन्य तुम्हें दीक्षा देंगे।' स्वप्न सत्य साबित हुआ। चिरपालित स्वप्न साकार बना। तदनुसार बाबा चैतन्य ने संत तुकाराम को माघ माह के दसवें दिन गुरूवार को शुभ मुहूर्त्त में दीक्षा दी। उसी दिन तुकाराम की अंतरात्मा से भक्तिगीतों का प्रवाह फूट पड़ा। इस तरह मराठी भाषा एवं उसके साहित्य की श्रीवृद्धि हुई।

संत तुकाराम का अद्भुत स्वप्न :संत तुकाराम जन्मजात शूद्र थे। उनका ईश्वर भक्ति करना तथा भक्ति-गीत लिखना तात्कालिक पंडितों की दृष्टि में अनुचित ही नहीं - एक अपराध था। एक निकटवर्ती पंडित श्री रामेश्वर भट्ट ने उन्हें बुलाया और कहा कि तुम्हें शुद्र होने के नाते यह सब नहीं करना चाहिए। न ईश्वर भक्ति, न भजन, न कीर्तन, न अभंगों की रचना। संत तुकाराम अत्यन्त ही सरल स्वभाव के एवं आवश्यकता से अधिक नरम तथा बहुत ही सीधे-सादे व्यक्ति थे। उन्होंने रामेश्वर भट्ट की बात स्वीकार कर ली और पूछा -पंडित जी! जो अभंग रचे जा चुके हैं उनका क्या होगा? तब उस हृदयहीन पंडित वर ने कहा उन्हें तुम नदी में शीघ्र बहा दो। अनासक्त योगी संत तुकाराम ने सचमुच ही अपने अभंगों की पुस्तक इन्द्रायणी नदी में प्रवाहित कर दी। पंडित के दबाव में वे ऐसा कर तो गये, पर मन मर्माहत हो गया। वे विट्ठल मन्दिर के सामने तेरह दिन तक बिना अन्न-जल ग्रहण किए पड़े रहे और मन में सोचते रहे 'मेरी भक्ति में कहीं न कहीं त्रुटि अवश्य है, जो भगवान मुझसे प्रतिकूल हो गये हैं। 'दुःखी मन की पुकार-जो मन सत्य के प्रकाश से उद्भाषित हो - कभी खाली नहीं जाती। 13वें दिन तुकाराम जी को स्वप्न आया कि 'पोथियां (पुस्तकें) नदी किनारे पड़ी हैं - जाकर उठा ला। तब उनके स्वप्न का हाल सुनकर उनके भक्तगण जयघोष करते हुए गये और पुस्तकें नदी किनारे पर से उठा लाये। दुःखी तुकाराम प्रसन्नता से झूम उठे।

स्वप्न में मां भद्रकाली : देहरादून के श्री कालिका माता मंदिर में मां भद्रकाली के जिस स्वरूप की प्रतिष्ठा की गई है, उसके संबंध में एक विचित्र कथा है। जब सर्वदास जी महाराज की आयु 15 वर्ष की थी तो उन्हें स्वप्न में मां काली के इस स्वरूप का दर्शन हुआ। जब उन्हें पता चला कि मां का यह स्वरूप जयपुर में विद्यमान है। इस पर भक्तों का एक समूह जयपुर पहुंचा। काफी प्रयासों के बाद

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भी मां के स्वरूप की यह प्रतिमा प्राप्त न हो सकी तो भक्तजन निराश हो गये। महाराज श्री ने कहा कि माँ भद्रकाली का यह स्वरूप अवश्य प्राप्त होगा और देखते ही देखते एक दस-बारह वर्षीया कन्या महाराज श्री के पास आई और उंगली पकड़कर उन्हें अपने साथ ले गई। काफी गलियों से गुजरने के बाद उस कन्या ने महाराज श्री को एक दुकान के आगे लाकर छोड़ दिया एवं कुछ क्षणों के बाद वह अदृश्य हो गई। महाराज श्री ने जब दुकान में उस प्रतिमा को देखा तो आश्चर्यचकित हो गए और भक्तों को बताया कि यह माँ का ही स्वरूप है, जिसको स्वप्न में देखा था। महाराज श्री की प्रेरणा से यह मूर्ति खरीद ली गई। विचित्र बात यह है कि उस मूर्तिकार ने बताया कि आज से कुछ वर्ष पूर्व यह मूर्ति एक संत ने बनवाई थी। इस प्रतिमा-निर्माण हेतु धन-राशि भी दे गये थे। लेकिन तब से अब तक वह संत इसे लेने नहीं आएं जब मूर्तिकार को महाराज श्री के स्वप्न की बात बताई तो उसने केवल मात्र अपनी लागत मूल्य के रूप में लेकर मूर्ति महाराज श्री को अर्पण कर दी और बताया कि यह विग्रह केवल एक शिला से बना है एवं ऐसी शिला अब उपलब्ध नहीं होती। इस प्रकार स्वप्न में माता के स्वरूप की प्राप्ति हो गई।

स्वप्न के पाप का भीषण प्रायश्चित :परम संत श्री बाबा वैष्णवदास जी महाराज मन, वचन एवं कर्म से किसी को कभी न सताते, न दुःख पहुंचाते। वे बड़े ही उच्चकोटि के श्रीरामभक्त-संत थे। एक दिन नित्य की भांति जब भक्तगण आपके पास आये तो सबने देखा कि आज महात्माजी का चेहरा अप्रसन्न नजर आ रहा था। एक भक्त ने उन्हें उदास देखकर पूछा - आज आप कुछ उदास से प्रतीत होते हैं। तब महात्मा जी ने कहा 'हमसे आज एक घोर पाप हो गया। भक्त ने फिर पूछा - 'महाराज! क्या पाप हो गया? तब महात्मा जी बोले 'अरे भैया! हुआ क्या, स्वप्न में हमसे घोर पाप बन गया जोकि महात्माओं से नहीं होना चाहिए। स्वप्न में हमने अपने हाथों से किसी बंदर को मार डाला है। यही पाप अब हमें चैन से नहीं बैठने दे रहा है। हाय! मुझसे स्वप्न में बंदर मारा गया। मुझे मालूम होता है कि मुझसे श्री हनुमान जी महाराज अप्रसन्न हैं। तभी तो मुझसे ऐसा घोर पाप हुआ।

भक्त - महाराज! आप चिन्ता न करें। यह तो स्वप्न हैं, स्वप्न तो दीखते ही रहते हैं।

महात्मा जी - क्या मुझे ऐसे ही स्वप्न दीखने चाहिये थे? क्या अच्छे स्वप्न मेरे भाग्य में नहीं लिखे थे? बंदर मारना तो घोर पाप है। इससे बढ़कर और घोर पाप क्या होगा? शास्त्रों में लिखा है कि यदि भूल से भी बंदर मर जाये तो मारने वाले का नरक जाना तय हो जाता है और जब तक पैदल चारों धामों की यात्रा न कर ले, पाप दूर नहीं होता। भक्तों ने महात्मा जी को बहुत समझाया पर उनका दुःख दूर नहीं हुआ। एक दिन भक्तों ने देखा कि महात्मा जी के मुख से श्रीराम-राम का जाप हो रहा है तथा उनका शरीर जल रहा है। भक्तों ने बुझाने का प्रयत्न किया किन्तु महात्मा जी ने कहा - 'मुझे न छुओ। मैं पापी हूँ, स्वप्न के पापों का प्रायश्चित कर रहा हूँ। संत वही है जो स्वप्न में भी पाप न करें। मन, वचन एवं काया से किसी का अनिष्ट नहीं करने वाला ही सच्चा धार्मिक होता है। कृत पापों का प्रायश्चित करने वाला ही आराधक एवं मोक्षगामी होता है।

स्वप्न से समृद्धि :स्वप्न में दाह-संस्कार देखना अत्यन्त शुभ है। एक व्यक्ति ने स्वप्न देखा कि उसके पुत्र मर गए हैं तथा उसने स्वयं स्वप्न में उनका दाह-संस्कार कर दिया। पत्नी भी दाह संस्कार में सम्मिलित थी। दाह-संस्कार श्मशान घाट पर न करके पूना में किया था। दोनों रेस के मैदान में घोड़े दौड़ा रहे थे। अचानक घोड़े उलट गए और मारे गए थे स्वप्न में। पत्नी एवं पति स्वप्न को बुरा मानकर रोते-रोते पंडित डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली से स्वप्न का फल पूछने लगे। पंडितजी ने कहा - यह स्वप्न अत्यन्त शुभ है। कल रेस में तुम इनाम जीतोगे। पंडित जी ने पांच घोड़ों पर नम्बर लगाने की सलाह दी। वे पांचों ही घोड़े जीत गए। आखिरकार स्वप्नों ने विजय श्री एवं समृद्धि दिलाकर मुम्बई के फिल्म से संबंधित व्यक्ति को ऊँचाईयां प्रदान की। मुम्बई के एक व्यक्ति ने स्वप्न में नोटों से लदे ऊँट देखे, जो अत्यन्त नजदीक थे। जिनकी संख्या छह थी। सबके गले में उनकी गिनती के अंक लगे तख्ते लटक रहे थे। सारे नम्बर उस व्यक्ति को याद थे। सुबह सारे नंबर उसने पंडित जी को बताते हुए स्वप्न का फल पूछा। पंडित ने कहा - हो सकता है, तुम्हारे भाग्य में राजस्थान लॉटरी का कोई पुरस्कार हो, यह नम्बर उपलब्ध हो तो खरीद लो। उस व्यक्ति ने सोचा मेरे भाग्य में कहां धन लिखा है। ऐसा सोचकर लॉटरी नहीं खरीदी। उसी दिन जो राजस्थान लॉटरी का ड्रा निकला, उसके प्रथम पुरस्कार के वही नम्बर थे, जो उन्होंने स्वप्न में देखे थे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भक्त माईदास का स्वप्न :भक्त माईदास के पिता अठूर नामी गांव रियासत पटियाला के निवासी थे। उनके तीन पुत्र थे। देवीदास, दुर्गादास, एवं सबसे छोटे माईदास एक बार अपने सुसराल जाते समय माईदास जी मार्ग में घने जंगल में वट-वृक्ष के नीचे आराम करने बैठ गए। (इस स्थान का प्राचीन नाम छपरोह था और आजकल उसी वट-वृक्ष के नीचे चिन्तपूर्णी मन्दिर बना हुआ है) संयोगवश माईदास जी की आंख लग गई तथा स्वप्न में उन्हें दिव्य तेज से युक्त एक कन्या दिखाई दी, जिसने उन्हें आदेश दिया कि तुम इसी स्थान पर रहकर मेरी सेवा करो, इसी में तुम्हारा भला है। ससुराल से वापिस आते समय माईदास के कदम फिर यहां ठिठक गए। घबराहट में वह फिर उसी वट वृक्ष की छाया में बैठ गए और भगवती की स्तुति करने लगे। उन्होंने मन ही मन प्रार्थना की - हे माता! यदि मैंने शुद्ध हृदय से आपकी उपासना की है तो प्रत्यक्ष दर्शन देकर मुझे आदेश दें, जिससे मेरा संशय दूर हो। बार-बार स्तुति करने पर उन्हें सिंहवाहिनी दुर्गा के चतुर्भुजा के रूप में साक्षात् दर्शन हुए। देवी ने कहा कि - मैं इस वृक्ष के नीचे चिरकाल से विराजमान हूँ। यवनों के आक्रमण तथा अत्याचारों के कारण लोग मुझे भूल गए हैं। मैं इस वृक्ष के नीचे पिण्डी रूप में स्थित हूँ। तुम मेरे परम भक्त हो अतः यहां रहकर मेरी आराधना और सेवा करो। मैं छिन्नमस्तिका के नाम से पुकारी जाती हूँ। तुम्हारी चिन्ता दूर करने के कारण अब मैं यहां चिन्तपूर्णी नाम से प्रसिद्ध हो जाऊंगी। माईदास ने नतमस्तक होकर निवेदन किया - हे जगजननी! भगवती! मैं अल्पबुद्धि बेअशक्त जीव हूँ। इस भयानक जंगल में अकेला किस प्रकार रहूंगा? न यहां रोटी, न पानी, नहीं कोई स्थान बना है। यहां तो दिन में ही डर लगता है, रात्रि कैसे कटेगी? माता ने कहा मैं तुमको अभयदान देती हूँ, इस मंत्र का जाप करो जिससे तुम्हारा भय दूर होगा। नमस्कार मंत्र - "ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं भयनाशिनी हूं हूं फट स्वाहा।"

मूल मंत्र - "ॐ ऐं क्लीं ह्रीं चामुण्डायै विच्चे"

नीचे जाकर तुम किसी बड़े पत्थर को उखाड़ों, वहां जल मिलेगा, उसी से तुम मेरी पूजा करना। जिन भक्तों की मैं चिन्ता दूर करूंगी, वह स्वयं ही मेरा मन्दिर बनवा देगें। जो चढ़ावा चढ़ेगा उससे तुम्हारा गुजारा हो जायेगा। सूतक-पातक का विचार न करना मेरी पूजा का अधिकार तुम्हारे वंश को ही होगा। ऐसा कहकर माता पिण्डी के रूप में लोप हो गई। भक्त माईदास प्रफुल्लित

चित्त पहाड़ी से थोड़ा नीचे उतरे और एक बड़ा पत्थर हटाया तो काफी मात्रा में जल निकल आया। माईदास की खुशी की सीमा न रही। उन्होंने वहीं अपनी झोपड़ी बना ली और उसी जल से नित्य-नियम पूर्वक पिण्डी की पूजा करनी प्रारम्भ कर दी। आज भी वह बड़ा पत्थर जिसे माईदास जी ने उखाड़ा था, चिन्तपूर्णी-मन्दिर में रखा हुआ है। जिस स्थान से जल निकला था वहां अब सुन्दर तालाब बनवा दिया गया है। इससे जल लाकर माता का अभिषेक किया जाता है।

स्वप्न से सवा लाख :ओहियो की जूलियस डिटमैन के माल-गोदाम के पास 'क्लेवलैण्ड पार्केमेटिक कॉरपोरेशन' ने कुछ निर्माण कार्य प्रारम्भ किया। डिटमैन ने एक स्वप्न देखा कि निगम द्वारा निर्मित पार्किंग गेरेज अचानक ही ढह गया। डिटमैन ने स्वप्न संकेतों को समझकर बीमा कम्पनी से 1 लाख 20 हजार रूपये की पॉलिसी 6 अप्रैल 1956 को करा ली। दूसरे ही दिन 7 अप्रैल को 7 बजे पार्किंग इमारत धंसने लगी और डिटमैन के स्टोर के ऊपर आ गिरी, जिससे वह विनष्ट हो गया। बीमा कम्पनी ने उसकी सुरक्षित धनराशि का भुगतान भी किया, साथ ही उसके इस स्वप्न की दूरदर्शन क्षमता पर आश्चर्य व्यक्त किया।

जूलिया (अमेरिका के राष्ट्रपति टेलर की पत्नी) के स्वप्न :श्री मेयर्स ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "दि ह्युमन परसनेलिटी एण्ड इट्स सरवाइवल ऑफ्टर बॉडीली डेथ" में 13 उदाहरण दिये हैं। इनमें दो घटनाएं अमेरिकन इतिहास से संग्रह की गई हैं। 28 फरवरी, 1844, 'यू.एस.एस.प्रिन्सटन' नाम के एक नये, सुन्दर युद्धपोत के उद्घाटन के अवसर पर उसके कप्तान रॉबर्ट स्टाक्टन ने अनेक गणमान्य व्यक्तियों को समारोह में निमंत्रित किया। इसमें कर्नल डेविड गार्डिनर, उनकी पुत्री जूलिया, जल सेना के सेक्रेटरी थॉमस गलेमर एवं उसकी पत्नी ऐनी भी सम्मिलित थी।

इन दोनों महिलाओं ने 27 फरवरी की रात्रि को ऐसे स्वप्न देखे जिनमें जूलिया के पिता और एनी के पति की मृत्यु का स्पष्ट संकेत था। इससे भयभीत होकर जूलिया ने अपने पिता से इस समारोह में सम्मिलित न होने का अनुरोध किया। इसी प्रकार एनी ने अपने पति को बहुत रोका, पर उन दोनों ने स्वप्न की बातों को अधिक महत्व देना ठीक नहीं समझा। वे दोनों जहाज पर चले गये। वहां जब एक तोप को समुद्र की ओर चलाया गया तो वह अकस्मात् फट

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गई और कर्नल गार्डिनर तथा थॉमस गलेमर जो पास खड़े थे, तुरन्त मर गये। एनी भी वहीं थी, पर वह बच गई। शोकाभिभूत होकर एनी ने कहा - "मेरी बात किसी ने क्यों नहीं मानी?" दुर्घटना के समय जूलिया डेक के नीचे थी और जब उसने अपने पिता की मृत्यु के बारे में सुना तो वह चिल्ला उठी - 'मेरा सपना आखिर सच हो ही गया।

वायसराय लॉर्ड डफरिन का डरावना स्वप्न :भारत के वायसराय लॉर्ड डफरिन ने एक रात डरावना स्वप्न देखा कि कुछ कातिल किसी की हत्या कर उसका शव लेकर भाग रहे थे। डफरिन उनका पीछा करते हैं और उसमें से एक व्यक्ति को पकड़ लेते हैं किन्तु जैसे ही वह पकड़ा गया व्यक्ति मुड़कर देखता है और डफरिन उसकी बीभत्स और भयानक मुखाकृति से बुरी तरह भयाक्रांत हो उठते हैं और उसी समय उनकी नींद खुल गई। डफरिन ने उस स्वप्न को विस्तृत रूप से अपनी डायरी में दर्ज कर लिया। काफी समय बीत गया, बात आई गई हो गई। बाद में द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान ब्रिटिश सरकार ने लॉर्ड डफरिन को फ्रांस का राजदूत नियुक्त किया। एक मर्तबा वह किसी महत्त्वपूर्ण कांफ्रेंस में फ्रांस के उच्चाधिकारियों से मिलने पहुंचे। कांफ्रेस का स्थान पांचवीं मंजिल पर था। लिफ्ट से जाना था। डफरिन अभी लिफ्ट पर पैर भी नहीं रख पाये थे कि लिफ्ट मैन की मुखाकृति देखकर वह घबरा कर दस कदम पीछे हट गये। यह वही मुखाकृति थी, जो भारत में वायसराय रहते उन्होंने सपने में देखी थी। डफरिन सन्न खड़े रह गए। लिफ्ट ऊपर चली गई किन्तु कुछ ही पल गुजरे होंगे कि लिफ्ट दुर्घटनाग्रस्त हो गई और सवार सभी व्यक्ति मारे गए। इस प्रकार स्वप्न से उनका बहुत बड़ा अनिष्ट टल गया। सर ओलिवर लाज ने अपनी पुस्तक 'सरवाइवल ऑफ मैन' में यह स्वीकार किया है कि कोई माध्यम है, जो हमें अलौकिक ज्ञान कराता है। इस संबंध में एक घटना है - 'पादरी ई के इलिमद अटलांटिक समुद्र में यात्रा कर रहे थे। 14 जनवरी 1887 को रात उन्हें स्वप्न में चाचा का पत्र मिला, जिसमें छोटे भाई की मृत्यु की सूचना थी। उन्होंने अपनी डायरी में लिखा है कि स्विट्जरलैण्ड छोड़ते समय भाई को सामान्य बुखार था। उसकी मृत्यु की तो कल्पना तक नहीं थी पर इंग्लैण्ड पहुंचने पर बात सच निकली। यह परोक्ष-दर्शन के अतिरिक्त और क्या हो सकता है? स्वप्न उन असीम संभावनाओं का द्वार खोलते हैं जो प्रसुप्त मस्तिष्क को जगाने पर सहज ही उपलब्ध हो सकती हैं।

स्वप्नों के माध्यम से संभावित खतरों का आभास भी हो जाता है। यदि उन्हें समझने की क्षमता हो तो सचमुच यह संयोग एक वरदान बन सकता है। यूनानी दार्शनिक अरस्तू ने तो उसी मनुष्य को उत्तम कोटि का माना है। जिसके सपनों के क्रिया-कलाप दूसरे लोगों की जागृतावस्था से पूरी तरह संगति खाते हैं।

टाइटैनिक जहाज की जल समाधि का स्वप्न :एक अंग्रेज व्यापारी जे. कैनन मिडिलटन ने 23 मार्च 1912 को टाइटैनिक से यात्रा करने के लिए टिकट खरीदा लेकिन यात्रा के दस दिन पूर्व ही कैनिन ने एक स्वप्न देखा। स्वप्न में उसे एक बड़ा जहाज समुद्र में उल्टा तैरता दिखाई दिया। उसकी तली टूटी हुई दिखाई दे रही थी और बहुत से यात्री चीखते-चिल्लाते पानी में हाथ-पैर मार रहे थे। स्वप्न इतना भयावह था कि घबराकर कैनन की आंख खुल गई। उसने सोचाऐसे ही कोई स्वप्न होगा और वह उस बात को भूल गया। अगली रात जब वह फिर सोने लगा तो सोते ही फिर वही स्वप्न देखने लगा। इस बार उसने अपने आपको जहाज के ऊपर हवा में तैरते हुए देखा। दो दिन तक लगातार यही स्वप्न देखने के कारण कैनन इतना सन्देहग्रस्त हो गया कि उसने अपनी यात्रा ही स्थगित कर दी। दुर्घटना के बाद उसने लन्दन की 'सोसायटी फॉर साइकोलॉजिकल रिसर्च' को पत्र लिखकर स्वप्न की जानकारी दी।

'जी न्यूयार्क टाइम्स' ने 16 अप्रैल 1912 के अंक में 'टाईटैनिक' नामक विशाल जलपोत के हिमशैल से टकराकर डूब जाने के समाचार प्रकाशित हुए। 66000 टन वजनी 882.5 फीट लम्बे जलयान में 2207 व्यक्ति बीस लाइफ बोटों के साथ यात्रा कर रहे थे। अटलांटिक महासागर में 23 नॉट की रफ्तार से जा रहा टाइटैनिक एक आइसबर्ग से टकरा कर डूब गया। इस दुर्घटना में 1250 व्यक्ति डूब मरे और 886 यात्रियों को बचा लिया गया। सुप्रसिद्ध उपन्यासकार मार्गन राबर्टसन ने 14 वर्ष पूर्व ही अपने उपन्यास टाइटन की बर्बादी अथवा अनुपयोगिता (दा रेक ऑफ दी टाइटन, ऑर फ्युटिलिटी) में पूर्वकथन के रूप में वर्णन किया था। टाइटैनिक के दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद उपन्यास में वर्णित आंकड़ों, से जलयान, जलयान की लम्बाई, वजन, डूबने का कारण, स्थान, समय, तिथि, उसकी नॉटिकल स्पीड पैसेन्जरों की संख्या आदि में बहुत समानता थी। जिस दिन टाइटैनिक जहाज अपनी प्रथम यात्रा आरम्भ कर रहा था। जहाज का भौंपू बज चुका था और इंजिन भी स्टार्ट हो चुका था तब उसके पिता जेक मार्शल और उसकी मां आइल ऑफ ह्वाइट दूसरी ओर मकान की छत पर जहाज को

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

रवाना होते देख रहे थे। एकाएक न जाने क्या हुआ कि श्रीमति मार्शल अपने पति की बांह पकड़ कर जोर से चीखी "अरेरे! वह जहाज तो अमेरिका पहुंचने से पहले ही डूब जायेगा। कुछ करो, रोको उसे।" जैक मार्शल ने अपनी पत्नी को सहलाया और कहा -'चिन्ता मत करो टाईटैनिक कभी भी डूब नहीं सकता।' लेकिन श्रीमती मार्शल अपने पति को इस प्रकार कहते देखकर गुस्सा हो गई और कहने लगी - 'तुम कैसी बातें कर रहे हो। मैं सैंकड़ों लोगों को अपनी आंखों से पानी में डूबते हुए देख रही हूँ। क्या तुम उन्हें मरने दोगे। '

इस सन्दर्भ में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के मूर्धन्य भौतिक विद् एड्रियन डाब्स का कहना है कि भविष्य में घटने वाली इस तरह की हलचलें मनुष्य के वर्तमान में एक प्रकार की सूक्ष्म तरंगें उत्पन्न करती हैं, उन्हें "साईट्रोनिक वेव फ्रण्ट" कहा जा सकता है। मानवी मस्तिष्क प्रायः स्वप्नावस्था या ध्यान की 'अल्फा स्टेट' में इन स्फुरणाओं या तरंगों को पकड़ लेता है। अतः मन-मस्तिष्क को सचेतन बनाये रखकर संभावित घटनाओं की जानकारी प्राप्त कर सकना हर किसी के लिए संभव है सुप्रसिद्ध मनीषी विल्हेम वान लिबनीज इस सन्दर्भ में अन्तः प्रज्ञा के जागरण पर बल देते हैं और कहते हैं कि प्राचीन काल के ऋषि मनीषी इसी क्षमता को जाग्रत कर भविष्य की झाँकी, प्राप्त कर लेते थे। उसी आधार पर वर्तमान ढ़ाँचे को बदलने, परिष्कृत परिमार्जित करने का उपाय सुझाते थे।

स्वप्न से प्राण रक्षा :प्रथम महायुद्ध, सन् 1914 की एक घटना है। पोलैण्ड का एक सैनिक स्टेनफोर्ड युद्ध के दौरान लापता हो गया। सभी स्टेनफोर्ड को भूल गये पर उसकी प्रेमिका उसे भूल नहीं सकी। मेरिना को स्वप्न में बार-बार आभास होता था कि उसका प्रेमी अभी जीवित है। वह प्रतिदिन पुलिस स्टेशन जाती तथा पुलिस अधिकारी को उसे खोजने के लिए प्रोत्साहित करती। वे मेरिना को पागल एवं सनकी समझकर चुप हो जाते। मेरिना का सपने में भी उसका प्रेमी मिलता। उसे अपने स्वप्नों पर पूरा विश्वास था कि उसका प्रेमी जीवित है। 15 अक्तूबर 1915 को मेरिना ने एक अनोखा रोमांचकारी स्वप्न देखा कि उसका प्रेमी किसी अंधेरी सुरंग में कैद है और उस सुंरग से बाहर निकलने का वह रास्ता खोज रहा है। मोमबती जल रही है और वह दरवाजे के पत्थरों को हटाने को जी जान से प्रयत्नशील है। मेरिना ने इस स्वप्न को लगातार कई बार देखा। लगभग 8 या 10 महीने के बाद स्वप्न में कुछ अन्तर आया। उसके स्वप्नों में उसका प्रेमी किसी

पहाड़ी पर बीमार पड़ा है। मेरिना वहां पहुंचती है तो सुरंग के भीतर उसके प्रेमी स्टैनफोर्ड की आवाज सुनाई दी। वह सहायता के लिए उसे पुकार रहा था। मेरिना पत्थर हटाने की जी तोड़ कोशिश करती है किन्तु पत्थर भारी है जिससे उसे सफलता नहीं मिलती। वह परेशान सी हो जाती है। यहां आकर स्वप्न टूट जाता है। वह स्वप्न उसे बार-बार आया। अब मेरिना को पूर्ण विश्वास हो गया था कि उसका प्रेमी अवश्य जीवित है और उसी गुफा में कैद है जिसे वह स्वप्न में देखती है। मेरिना पुलिस स्टेशन जाती, भूगोल वेत्ताओं के पास जाती, तब उन सबसे, स्वप्न में दिखाई देने वाले किले की आकृति बताती किन्तु उसकी मदद करने में सभी अपने को असमर्थ पाते हैं। कारण पोलैण्ड में उस तरह के अनेक किले थे। जो महायुद्ध के बीच खण्डहरों के रूप में परिवर्तित हो चुके थे। लोग मेरिना से सहानुभूति प्रकट करते, पर कोई ठोस मदद नहीं कर पाते। अन्त में सब ओर से निराश मेरिना स्वयं इस स्थान की खोज करने निकल पड़ी। वह किसी अज्ञात शक्ति से प्रभावित होकर एक ही दिशा में चलती रही। उसे दृढ़ विश्वास था कि उसका प्रेमी उसे अवश्य मिलेगा। प्रेमी को पाने की प्रबल इच्छाशक्ति लिए मेरिना 25 मई 1916 को दक्षिणपूर्वी पोलैण्ड के ओर्याना गांव की एक पहाड़ी पर पहुंची। उसने वहां ठीक स्वप्नों में दिखने वाले दृश्य देखे तो वह खुशी से चिल्ला उठी, खोज लिया, मैंने अपने प्रेमी को खोज लिया। यही वह स्थान है जहां स्टेनफोर्ड जीवित मौजूद है। उसकी आवाज सुनकर वहां भीड़ एकत्रित हो गई। स्थानीय पुलिस भी आ गई। मेरिना के कथनानुसार लोगों ने पहाड़ी की एक गुफा के पत्थर हटाने शुरू किये। कुछ पत्थर हटाने से एक छेद में से एक मुनष्य की हल्की सी आवाज आई। जल्दी-जल्दी मलबा एवं पत्थर हटाए गए। पत्थर हटाने पर प्रवेश द्वार मिला जिसमें होकर एक खण्डहरनुमा भवन में जाया जा सकता है। मेरिना व उसके साथी अन्दर गए। कमरे में स्टैनफोर्ड पड़ा मिला। इसका शरीर हड्डियों का ढ़ांचा मात्र रह गया था। उसे बाहर निकाला गया। उसकी चिकित्सा के बाद वह ठीक हो गया। उसने बताया कि जब शत्रु की गोलीबारी हो रही थी तो उससे बचने के लिए इस सुरंगनुमा भवन में आकर छिप गया। इस बन्द खण्डहर में उसके पास कुछ मोमबत्तियां, पनीर, बीयर व बिस्कुट थे। उसी के बल पर उसने डेढ़ वर्ष काटा। गुफा के बाहर लोगों ने पत्थर लगा दिये थे। उसे बाहर निकलने का रास्ता नहीं मिला। वह सदैव मेरिना को याद करता रहा। कभी वह ईश्वर से प्रार्थना करता तो कभी मौत की आशंका से भयभीत हो उठता। टैलीपैथी एवं स्वप्न से प्रेरणा लेकर ही मेरिना ने अपने प्रेमी को जीवित अवस्था में ढूंढ लिया।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

रूसी नर्तक सर्जे का स्वप्न :शिकागो (अमरीका) के 'ग्रैण्ड आपेरा' में आस्कर वाइल्ड की पुस्तक 'इन्फान्टा का जन्म दिवस (दि बर्थ डे ऑफ दी इन्फान्टा) का संगीत रूपक प्रस्तुत होने जा रहा था। इस ड्रामे में रूसी बैले नर्तक श्री सर्जे डक्रेंसकी प्रमुख कलाकार थे। सन् 1919 में, सर्जे रिहर्सल के बाद एक दिन घर लौटे। भोजन के पश्चात् सो गये। रात्रि के प्रथम चरण में ही उन्होंने एक स्वप्न देखा। सर्जे ने देखा जिस वृक्ष के नीचे क्रिसमस त्यौहार मनाया जाता है। , वहां एक नाटक मंच सजा हैं, उसमें 'इन्फान्टा' संगीत नाटिका प्रदर्शित होने जा रही है। एकाएक वृक्ष के ऊपर उसे जलती हुई मोमबती दिखाई दी। एक क्षण में मोमबत्ती पके आम की तरह टूटी और नाट्यमंच पर जा गिरी। इसके साथ ही संगीत नाटिका के प्रोड्यूसर एडाल्फ बाम को वहाँ से भागते हुए मंच के पीछे जाते देखा और फिर देखा कि उस स्थान पर सुन्दर सफेद फूलों का ढ़ेर लगा हुआ है। स्वप्न का आखिरी दृश्य समाप्त होते ही सर्जे की नींद टूट गई। उसके मन में आया कि वह खेल क्रिसमस के आस-पास प्रदर्शित होगा किन्तु आकस्मिक दुर्घटना के कारण वह उस समय पूरा नहीं हो सकेगा।

सचमुच वह स्वप्न सच होकर रहा। क्रिसमस से दो दिन पूर्व ही प्रदर्शन होना था, प्रदर्शन की तैयारियां चल रही थी कि एकाएक सूचना आई कि सिनेमा घर के संचालक की मृत्यु हो गई है। जिस समय खेल प्रदर्शित होने को था सर्जे उस स्थान पर पहुंचे और देखकर आश्चर्य चकित रह गये कि मृतक को श्रद्धांजलि में चढ़ाये गये सफेद फूलों का ठीक वैसा ही ढ़ेर वहां जमा है जैसा कि उन्होंने उसे स्वप्न में देखा था। यदि सर्जे सिनेमाघर के संचालक को स्वप्न की घटना से अवगत करने का साहस कर लेता तो संभावित खतरा टल सकता था।

डूने ड्रीम :'अण्डर स्टेण्डिंग ह्यूमन बिहेवियर'के 11वें खण्ड के 'टुमॉरो टुडे' शीर्षक के अन्तर्गत अनेकों मूर्धन्य मनीषियों के लेख छपे हैं, जिनमें निष्णात इंजीनियर जे. डब्ल्यू. डुने प्रख्यात है, जिन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'एन एक्सपेरीमेन्ट विद टाईम' में ऐसे अनेक घटनाक्रमों का उल्लेख किया हैं। एक बार जब वे बोअर युद्ध के दौरान दक्षिणी अफ्रीका में तैनात थे, तो रात को एक नाटकीय स्वप्न देखा। वे एक पहाड़ी पर खड़े है। वे आतंक से एक ऐसे ज्वालामुखी को देख रहे हैं जो भभकने ही वाला है। धरती से भाप की तरंगें उनकेचारों ओर उठ रही हैं फिर उसने अपने को पास के एक द्वीप पर देखा। वहां एक निराशा जनक स्थिति में करूणा एवं दयार्द्र हो मुसीबत में फंसे लोगों को

बचाने के लिए फ्रांसीसी अफसरों से सहायता हेतु जहाज भेजने का अनुरोध कर रहा था।

ऐसे संकटग्रस्त लोगों की संख्या 4 हजार दिख रही थी। वह अनुरोध ही कर रहा था कि इसी बीच उनकी आंखें खुल गई। जब जहाज से उनके पास तक अखबार आया तो उसमें चौंका देने वाले विपत्ति के समाचार थे। वे खबरें उनके स्वप्नों से मिल रही थी। 'डेली टेलीग्राम' नामक समाचारपत्र ने मार्तिनीक द्वीप में ज्वालामुखी के विस्फोट की खबर सुर्खियों में छापी थी। समाचार पत्रानुसार वहां 40, 000 मौतें फ्रांस अधिकृत क्षेत्र में ही हुई थी। जबकि डुने ने अपने सपने में मृतकों की संख्या 4.000 देखी थी। वास्तविक जगत में अंकों के आगे एक शून्य और जुड़ गया था। जो बचे उन्हें जहाज से ही अन्यत्र पहुंचाया गया था। यदि डूने के स्वप्न में फ्रांस का नाम होता तो डुने स्वप्न - सूचना के आधार पर बड़े खतरे को टालने में सफल हो जाते।

महात्मा-गांधी की हत्या के सपने :एक अवकाश प्राप्त प्राध्यापक ने सूचना दी कि उन्हें महात्मा-गांधी की हत्या से दो दिन पूर्व स्वप्न आया था कि उनके शहर के एक बहुत बड़े आदमी की हत्या कर दी गई। ब्यावर (राजस्थान) की एम.ए. की एक छात्रा ने अपने एक स्वप्न का विवरण दिया। उन्होंने देखा कि किसी बड़े नेता की मृत्यु हो गई। दूसरे दिन ही राजस्थान के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री बरकतुल्ला खां की मृत्यु का समाचार मिल गया। मनोवैज्ञानिक ने अपने लेख में पूर्वाभास के सपनों का उल्लेख करते हुए कुछ और जानकारियां दी है। लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर मजूमदार की पुत्री कलकत्ता में प्राध्यापिका थी। उन्हें स्वप्न आया कि उनके पिता का देहान्त हो गया। जागने पर उन्होंने लखनऊ टेलीफोन मिलाया? उनके पिता श्री मजूमदार ने स्वयं टेलीफोन पर अपनी राजी-खुशी की खबर दी। लेकिन अगले ही दिन तार द्वारा उन्हें सूचना मिली कि उनके पिता का हृदय-गति बंद हो जाने के कारण लखनऊ में देहान्त हो गया।

श्री लाल बहादुर शास्त्री मृत्युसूचक स्वप्न :प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जिन दिनों ताशकन्द आये थे तब वहॉ के एक 'दोम अस्पोरान्तीर' नामक स्नातकोत्तर छात्रा उन्हें देखने को बहुत उत्सुक थी। भारत के प्रति ही नहीं उसके प्रधानमंत्री के प्रति भी उसको बहुत दिलचस्पी थी। उसने सपना देखा कि वह श्मशान में खड़ी है और वहां शास्त्रीजी का मृत् शरीर रखा है। इस स्वप्न को वह

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सत्य मानती थी और सबको कहती थी कि यदि इस बार शास्त्री जी को उसने न देखा तो फिर कभी भी वह देख न पायेगी।

9 जनवरी 1966 को ताशकन्द प्राच्य भाषा संस्थान में शास्त्रीजी का भाषण हुआ और वह उन्हें देखकर, सुनकर बड़ी सन्तुष्ट भी हुई। 9 जनवरी 1966 की रात्रि को मैंने (उदय कुमार वर्मा) स्वप्न देखा कि हम लोग शास्त्रीजी को हवाई अड्डे पर विदा करने जाते हैं। इतने में वह छात्रा (दोम अस्पोरान्तीर) आ जाती है और कहती है कि शास्त्रीजी तो मर चुके। अब मरी देह को विदा करने जाकर क्या करोगे। 10 जनवरी को सवेरे वह छात्रा मुझे फिर मिली। मैंने उससे कहा कि उसकी बात का मेरे अचेतन मन पर बुरा असर पड़ा और मैंने भी रात को तुम्हारे आगमन और लाल बहादुर शास्त्रीजी की मृत्यु का सपना देखा। 11 जनवरी 1966 को शास्त्रीजी काबुल जाने वाले थे। हम ताशकन्दवासी भारतीय उन्हें विदा करने हवाई-अड्डे पर जाने की तैयारी कर रहे थे कि डॉक्टर, पाण्डेय ने आकर शास्त्रीजी की मृत्यु का समाचार सुना दिया। स्वप्न के द्वारा इस अप्रत्याशित पूर्वाभास ने सबको आश्चर्यचकित कर दिया।

स्वप्न - संकेत द्वारा बचाव :सन् 1966 की रात्रि में डॉ. बार्कर ने एक लोमहर्षक विभीषिका का रोमांचक दृश्य देखा। वेल्स क्षेत्र की गगनचुम्बी पर्वत मालाओं की उपत्ययका में बसा एक गांव काई लगे वृहद् शैलखण्डों के यकायक स्खलन होकर लुढ़क पड़ने की चपेट में आ गया है। खण्डहर हुए मकानों के छतों-छप्परों के नीचे दबकर अगणित लोगों की जानें चली गई। तराई क्षेत्र में विद्यालय के सभी छोटे-बड़े बच्चे इस प्राकृतिक आपदा में धराशायी हो गये। बच्चों की करूण चीत्कार से यकायक वे जग पड़े। वे सोचने लगे "आज इस स्वर्ण अवसर को हाथ से जाने न दूंगा। बचाव का जितना प्रयत्न संभव हो सकेगा करूंगा। इससे जहां एक ओर जान-माल की क्षति को रोका जा सकेगा, वहीं दूसरी ओर ऐसी महत्त्वपूर्ण सूचनाओं का लाभ व्यक्ति और समाज को मिलते रहने से वे स्वप्न की सार्थकता को समझ सकेगें और भविष्य में इन्हें झुठलाने, उनकी उपेक्षा करने की बजाय समय रहते चेत कर इनका फायदा हस्तगत कर सकेंगे।" इसी उधेड़बुन में प्रभात हो गया। सूर्य निकलते ही लंदन के प्रतिष्ठित राष्ट्रीय दैनिक पत्र "ईवनिगं स्टैण्डर्ड" के प्रातः संस्करण के मुख्य-पृष्ठ पर सुर्खियों में "वार्निंग इम्मीडियेट क्लीयरिंग हाउस, एवटिंग कैलोमिटी" शीर्षक के अन्तर्गत सनसनीखेज सूचना प्रकाशित कराई। पर होनी को टाला नहीं जा सका। दुर्भाग्य

से समाचार पत्र उस दिन उस क्षेत्र में समय पर नहीं पहुंच सका, देरी से सूचना मिलते ही लोग माल असबाब के साथ सुरक्षित क्षेत्र की ओर भागने लगे। घटना ठीक समय पर घटी। जिससे काफी प्रयासों के बाद भी बहुतों की जानें गई। डॉ. बार्कर स्वयं भी इस घटना के दौरान ग्रामीणों की सुरक्षा व्यवस्था करने में अपनी जान गंवा बैठे। इस प्रकार एक स्वप्न ने प्राकृतिक आपदा के संकेत दे दिए थे। यदि अखबार समय पर पहुंच जाता तो काफी नुक्सान नहीं होता।

सम्राट् अस्ट्यागेस का स्वप्न :मेडिया के राजा अस्ट्यागेस ने स्वप्न में देखा कि उनकी लाडली राजकुमारी मैण्डेन का विवाह किसी विजातीय लड़के से हो गया है, जिसने राजा को पदच्युत करके मेडिया का राज्य छीन लिया। स्वप्न से राजा इतना भयभीत हो गया कि वयस्क होते ही राजकुमार की शादी निम्नवर्गीय एक पारसी व्यक्ति से सम्पन्न कर दी ताकि भविष्य में राजा को कोई खतरा न रहे। मैण्डेन के गर्भवती होते ही राजा अस्ट्यागेस ने एक दूसरा स्वप्न देखा कि लड़की से एक बेल निकलकर सम्पूर्ण एशिया में फैल गई है। राज्यसत्ता के उद्देश्य से राजा ने अपने दोहिते (नाति) का जन्म होते ही हत्या करा देने का निश्चय कर लिया। लेकिन दैवयोग से राजा के सभी प्रयत्न कंस की भांति विफल रहे। राजकुमारी मैण्डेन का सुत आगे-चलकर विजयी साइरस महान कहलाया।

क्रोएसस का सपना :ग्रीस के सुप्रसिद्ध इतिहास वेत्ता हीरोडाट्स ने लीबिया के राजा क्रोएसस के एक चिन्ताजनक स्वप्न का वर्णन किया है। राजा ने एक स्वप्न में देखा कि अट्यस को किसी ने तीखे नोक वाले लौह अस्त्र से मार डाला है। स्वप्न ने राजा को विचलित एवं भयभीत कर दिया। क्योंकि राजा क्रोएसस के दो लड़के थे। जिनमें से एक गूंगा एवं मंदबुद्धि वाला था। दूसरा लड़का अट्यस कुशाग्र बुद्धि वाला था। अट्यस के भावी खतरे को देखते हुए उसे मिलेट्री के कड़े सुरक्षा घेरे में रखा जाने लगा। अट्यस कैदियों जैसी जीवनचर्या से तंग आ गया। एक दिन जंगली सूअर के शिकार करने के लिए उसने अपने पिता से अनुमति मांगी। विश्वासपात्र एवं अनुभवी सुरक्षा सैनिक अस्ट्राडस के साथ शिकार खेलने की अनुमति मिल गई। जंगल में सूअर को चारों तरफ से घेर लिया गया और गोलियों की बौछार करने लगे। अस्ट्राडस का निशाना चूक गया और गोली अट्यस के सीने में जा घुसी और वह मर गया। क्रोएसस का सपना सच साबित हुआ। क्रोएसस को यदि राजा शिकार करने जाने से रोक लेता तो संभावित मृत्यु टल जाती।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वप्न ने बचाई जानें : स्पेन का एक व्यापारी हर्बर्ट यात्रा पर जा रहा था। उसकी पत्नी लिली ने उसे बहुत समझाया कि बहुत बड़े खतरे की संभावना हैं अतः वर्तमान में यात्रा न करे। हर्बर्ट का जलपोत दमिश्क जाने ही वाला था किन्तु नौकरी करने के कारण मालिक का आदेश पालन भी जरूरी था। कप्तान हर्बर्ट अपनी पत्नी लिली को आश्वस्त कर जहाज से दमिश्क के लिए चल पड़े। अर्द्ध रात्रि में अचानक तूफानी हवाओं ने जहाज को घेरा। तूफान की तीव्र गति से जहाज चरमराने लगा। जान बचाने के लिए जहाज के पाल खोलने जरूरी थे किन्तु पाल खोलने जाना मृत्यु को साक्षात् बुलाना था। कप्तान होने के नाते अपना कर्त्तव्य समझ हर्बर्ट ने सोचा कि मरना यों भी है ही। अतः खतरा उठाना ही चाहिए। वह साहस बटोर कर डेक पर चला गया, पाल की तरफ बढ़ ही रहा था कि कोई छाया रास्ता रोकर बोली - "ठहरो हर्बर्ट! ऊपर गये तो प्राणों से हाथ धोना पड़ेगा।" यह कहकर उसने पाल खोल दिये। जहाज की दिशा बदल गई। आकृति हर्बर्ट के पास से गुजरती हुई कहने लगी - "मैं तुम्हारी लिली हूँ" और अदृश्य हो गई। जहाज के सभी अफसर और यात्री हैरान थे कि इस भयंकर तूफान में हर्बर्ट ने शीघ्रता से पाल कैसे खोल डाले। किन्तु हर्बर्ट ने यह रहस्य किसी को नहीं बताया। पुनः घर पहुंचने पर उसने अपनी पत्नी लिली को कहा - तुम्हारे रोकने पर मैं नहीं रूका लेकिन तुमने तूफान में अनेक लोगों की जान बचा ली।" लिली ने कहा - "तुम्हारे जाने के बाद मेरा अन्तःकरण तुम्हारें ही साथ लगा रहा था। मैंने ऐसा स्वप्न भी देखा था कि मैं तुम्हारी रक्षार्थ तुम्हारे साथ हूँ।"

हेरोडोट्स का स्वप्न वर्णन :हेरोडोट्स ने अपनी पुस्तक में ग्रीस विजेता पर्शियन नवयुवक जेरक्सेस के स्वप्नों का वर्णन किया है। स्वप्न के आधार पर जेरक्सेस ने ग्रीस पर धावा बोल दिया और भयंकर रक्तपात किया था। एक दूसरे स्वप्न के आधार पर उसका शासन-काल अल्पकालीन ही रहा। ओलिवर क्रोम्बेर को स्वप्न में एक दैत्याकार महिला का दर्शन हुआ। जिसने बताया कि ओलिवर इंग्लैण्ड का एक महान् पुरूष बनेगा। स्वप्न में देखे दृश्य के अनुसार ही ओलिवर ने इंग्लैण्ड में अपनी प्रतिद्वन्द्वी को हराकर एक दिन महानता अर्जित की। रिवाद (जार्डन) के भविष्यवक्ता अब्दुल रजाक ने एक बार स्वप्नदर्शी भविष्यवाणी की कि बादशाह अब्दुल्ला का कत्ल होगा। स्वप्नदर्शी कथन सत्य निकला। इसके बाद उसने 13 वर्ष तक मौन रहने की प्रतिज्ञा कर ली।

बहु के स्वप्न ने बचाई जान :दिल्ली के रमेश उपाध्याय अपने व्यक्तिगत कार्य से विदेश यात्रा पर जाने वाले थे। ठीक एक दिन पहले उनकी पत्नी को भयंकर स्वप्न आया, देखा कि जिस वायुयान में उसके पति सफर करने वाले हैं, वह वायुयान उड़ने के कुछ समय बाद ही टकराकर गिर गया है उसमें जितने यात्री हैं, लगभग सभी का देहान्त हो गया है। उपाध्याय की पत्नी रोती-बिलखती घटनास्थल पर पहुंचती है और लाश पहचान ने का प्रयत्न होता है पर उसे अपने पति का शव कहीं नहीं मिलता और उसकी नींद खुल जाती है। प्रातः काल उसने स्वप्न की घटना रमेश उपाध्याय को सुनाई। रमेश ने इसे अन्धविश्वास कहकर बात हंसी में उड़ा दी। दोनों की शादी नई-नई हुई थी। मुश्किल से आठ-नौ महीने हुए होगें। पत्नी ने रो-रोकर घर ऊँचा उठा लिया। अन्त में हारकर रमेश ने यात्रा एक सप्ताह के लिए स्थगित कर ली। पर परम आश्चर्य कि उसी दिन वह वायुयान क्रैश हो गया और उसमें से एक भी सवार बच न सका। उपाध्याय परिवार की प्रसन्नता का पार नहीं रहा। एक बहु के स्वप्न ने रमेश की जिन्दगी बचा ली।

महान व्यक्तियों के मृत्युसूचक स्वप्न :अमेरिका के एक नागरिक एलन बेथन ने एक रात स्वप्न देखा कि तत्कालीन राष्ट्रपति रॉबर्ट कैनेडी एक भीड़ के साथ किसी पार्टी में जा रहे हैं। रास्ते में विरोधी दल का एक सदस्य उन्हें गोली मार देता है और राष्ट्रपति कैनेडी की मृत्यु हो जाती है। इंग्लैण्ड के तत्कालीन वित्तमंत्री पर्सीवल की मृत्यु का स्वप्न जौन विलियम्स नामक सामान्य नागरिक ने देखा। जौन विलियम्स की वित्तमंत्री पर्सीवल के राष्ट्रपति से घनिष्ठ आत्मीय संबंध थे। एक बार जौन ने स्वप्न में देखा कि पार्लियामेण्ट में कुछ लोग पर्सीवल की हत्या कर रहे हैं। यह भी कि पर्सीवल सफेद ड्रेस में है और उनका हुलिया भी अच्छी तरह दिखाई देता है। सुरक्षा अधिकारियों को भी इस बारे में बताया पर किसी ने ध्यान नहीं दिया लेकिन कुछ ही दिनों बाद पार्लियामेंट भवन में ही पर्सीवल की हत्या कर दी गई। पर्सीवल के उस समय श्वेत रंग के कपड़े ही पहन रखे थे। जब हत्यारों को गिरफ्तार किया गया तो जौन ने बताया कि इन्हीं लोगों को स्वप्न में वह हत्या करते देखता रहा है। बाद में जौन को स्वप्न के आधार पर हत्या का गवाह भी बनाया गया। यदि सुरक्षाकर्मी इस स्वप्न पर ध्यान देते तो बहुत बड़ा अनर्थ टल सकता था।

सपनों में दूर बोध :मनुष्य की छठी इन्द्रिय आवश्यकता पड़ने पर अवचेतन-मन के क्षेत्र में क्रियाशील हो जाती है और तब, उसे कभी भविष्य की

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जानकारी देने वाले सपने आते हैं, कभी किसी समस्या-समाधान के सपने आते हैं। बहुत बार ऐसे सपने आते हैं। जिन पर सहसा यकीन ही नहीं होता है। ऐसे विचित्र स्वप्नों पर वैज्ञानिक भी उलझन में पड़ जाते हैं और तब अवचेतन मस्तिष्क के विशाल क्षेत्र से परा मनोविज्ञान के ब्रह्माण्ड तक उन पर चिन्तन किया जाता है। कई बार ऐसे सपनों के बारे में जानकारी मिली हैं, जो मीलों दूर हुई किसी घटना का बोध करा देती हैं। ऐसे ही एक सपने का जिक्र अमरीकी मनोचिकित्सक -एंडरीना पुइरिच- ने अपनी पुस्तक 'बियोण्ड टेलीपैथी'(Beyond Telepathy) में किया है -अचानक सुबह साढ़े पांच बजे श्रीमती हायेस की नींद टूट गई। वह घबराकर उठ बैठी। उन्होंने एक भयानक स्वप्न देखा था - उनका पुत्र जॉन (John)कार में घूमने के लिए गया और दुर्घटना का शिकार हो गया। अधिक रक्त निकल जाने से उसका शरीर पीला पड़ गया। उसके शरीर को कपड़े से ढका गया। श्रीमती हायेस उन दिनों कैलिफोर्निया में निवास करती थी। उन्होंने उस कॉलेज को टेलीफोन किया, जहां जॉन पढ़ता था। परन्तु कॉलेज में किसी को भी ऐसी दुर्घटना की जानकारी नहीं थी। किसी को यह भी पता नहीं था कि जॉन इस समय कहाँ है? अचानक बारह घंटे बाद श्रीमती जॉन को टेलिफोन से संदेश मिला कि कार-दुर्घटना में जॉन को चोटें आई हैं। गत रात जॉन मित्रों सहित कार से पहाड़ पर जा रहा था तभी कार 75 फुट की ऊँचाई से गिर पड़ी। जिस समय दुर्घटना हुई, वह ठीक साढ़े पांच बजे का समय था। श्रीमती हायेस को भी ठीक उसी समय पुत्र के बारे में सपना आया था। मनोचिकित्सक ने इस सपने को दूर-बोध (Telepathy)का स्वप्न माना है। अवचेतन मन के विशाल क्षेत्र को देखते हुए यदि यह सोचा जाएं कि श्रीमती हायेस अपने पुत्र जॉन की हर वक्त चिन्ता करती थी। इसलिए उनके अवचेतन मन ने छठी इन्द्रिय की सहायता से अथवा अपनी असीम क्षमताओं के द्वारा जॉन की निगरानी रखनी शुरू कर दी थी। परिणामस्वरूप साढ़े पांच बजे जब वह सोयी हुई थी और उनसे 180 किलोमीटर दूर पहाड़ पर जॉन की कार दुर्घटनाग्रस्त हुई थी तभी स्वप्न की अवस्था में अवचेतन मन ने उन्हें उसकी जानकारी सपने द्वारा करा दी। इसी प्रकार दूसरी घटना है।

तुम मुझे देख नहीं पाओगे :स्पेन के एक होटल मालिक जेम कास्टेल की धर्मपत्नी छह माह से गर्भवती थी। एक स्वप्न में जेम ने सुना कि गर्भस्थ शिशु उससे कह रहा है कि तुम मुझे देख नहीं पाओगे। जेम्स कास्टेल को विश्वास हो

गया कि शीघ्र ही उसकी मृत्यु होने वाली है। अतः जल्दी में उसने दस लाख डालर का अपना बीमा करवा लिया। कुछ सप्ताह बाद जेम होटल से वापस घर की ओर अपनी कार में बैठा 50 एम.पी.एच. की रफ्तार से आ रहा था कि सामने से आती कार कास्टेल की कार से टकरा गई। इस दुर्घटना में कास्टेल और उनके कार चालक की मृत्यु हो गई। कम्पनी ने श्रीमती कास्टेल को बीमे की राशि का तुरन्त भुगतान कर दिया। इस प्रकार स्वप्न द्वारा भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं का पूर्वाभास अन्तः स्फुरणा के आधार पर स्वप्नावस्था में हो जाता है।

चमत्कारी पीपल का चमत्कार :एक मुसलमान बढ़ई, मियां सईद खां, जो पिलखुवा का रहने वाला है। उसने बताया कि हमारा साथी दलवीर खां था। उसने एक राजपूत से एक बिल्कुल हरा पीपल खरीदा और उसकी कीमत के सौ रूपये राजपूत को दे दिये। दलवीर खां और इसाक खां ने आपस में यह तय किया कि दोनों मिलकर पीपल के वृक्ष को काट लेंगे और जो नफा होगा दोनों मिलकर बांट लेगें। काटने से ठीक पहले दिन की रात को दलवीर खां को स्वप्न में वही पीपल दिखलाई दिया और उसने दलवीर खां से कहा - तूं मुझे काट मत! सता मत! तू मुझे अपना समझ कर छोड़ दें। तूने जो सौ रूपये उस राजपूत को दिये हैं, वे सब रूपये एवं मुनाफे के रूपये भी तुझे मिल जायेंगे। मेरी जड़ में अमुक जगह सोना रखा है, तू जाकर खोदकर उसे निकाल ले और मुझे जीवनदान दे दे। बढ़ई दलवीर खां जागा और स्वप्न की बात से आश्चर्य में डूब गया। पीपल के बताये स्थान पर खोदकर देखा तो सचमुच स्वप्न सत्य निकला और उसे मिट्टी में दबी सोने की सलाख प्राप्त हुई। स्वप्न से चमत्कार घटित हुआ। उसने घर आकर अपनी बीबी को सब बातें बता दी। दूसरे दिन लालची दलवीर खां इसाक खां के साथ पीपल काटने चला गया। ज्योंही पीपल के कुल्हाड़ी लगाई पीपल के अंदर से खून के फव्वारें छूटने लगे और आस-पास खड़े लोगों के कपड़े खून से भीग गये। यह बहुत ही अजीब घटना थी। इन्होंने अपने जीवन में सैकड़ों हरे वृक्ष काटे पर खून की धारा बहती कभी नहीं देखी। पीपल के द्वारा इस प्रकार प्रत्यक्ष चमत्कार दिखाने पर भी दलवीरखां नहीं माना। उसके एक लड़का था। वह बिल्कुल स्वस्थ था। ज्यों-ज्यों पीपल काटा जा रहा था, त्यों-त्यों दलवीर खां के बेटे के शरीर में अकस्मात् बीमारी बढ़ती जा रही थी। शाम तक पीपल पूरा काटा गया, त्यों ही वह लड़का मर गया। दलवीर खां की पत्नी ने सोचा कि मेरे पति ने पीपल के साथ विश्वासघात किया है। स्वप्न में अपने प्राणों की भीख मांगने पर, सोने की

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सलाख देने पर भी इसने पीपल को नहीं छोड़ा उसका ही यह अति भयंकर दुष्परिणाम है कि हमारा इकलौता लड़का बिना किसी बीमारी के मर गया। जब दलवीर खां को आते देखा, तब वह जोर-जोर से रोने चिल्लाने लगी। सारी सत्य घटना लोगों को बताने लगी। अब रोते-रोते दलवीर खां ने लोगों से कहा - 'सचमुच मैं ही अपने बेटे का हत्यारा हूँ। यदि मैं लोभ के वश न होकर स्वप्न की बात मान लेता, पीपल के साथ विश्वासघात नहीं करता तो मेरा इकलौता बेटा मेरे हाथ से छीना नहीं जाता। मेरे पाप का नतीजा मुझे खुदा ने दिया है। ' इस प्रकार एक चमत्कारी स्वप्न ने पीपल वृक्ष की भावना दलवीर खां तक पहुंचाई थी। लेकिन लोभी दलवीर ने किसी की नहीं सुनी।

राष्ट्रपति बनने का सपना :भारत के पूर्व राष्ट्रपति वी. वी. गिरी की पत्नी को भी अपने पति के राष्ट्रपति बनने का पूर्वाभास सपने में बहुत पहले ही हो गया था। इसी प्रकार जून 1980 में तत्कालीन राष्ट्रपति वी.वी.गिरी को भी एक सपने के माध्यम से संजय गांधी की मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था, जिसकी सूचना उन्होंने संजय गांधी को भी दे दी थी।

आगेट मणि पर खुदे शब्दों का स्पष्टीकरण :इंग्लैंड की 'साइकिक रिसर्च सोसायटी' के वैज्ञानिक संस्थापकों में श्री मेयर प्रधान कार्यकर्ताओं में थे। इनकी लिखी पुस्तक 'Human-Personality' (मानव-व्यक्तित्व) में एक घटना का उल्लेख है -तीन चार हजार वर्ष पूर्व पश्चिमी एशिया में असीरिया साम्राज्य स्थापित था, जिसकी राजधानी बाबल थी, जिसको बेबीलोनिया (Babylonia) कहते थे। इस इतिहास के प्रसिद्ध साम्राज्य तथा सभ्यता को लोप हुए सहस्रों वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। आधुनिक समय के पुरातत्त्ववेत्ताओं ने इस प्राचीन सभ्यता के इतिहास का पता लगाया और बावल नगर के भग्नावशेषों को खोद निकाला। इस सभ्यता के एक विशेषज्ञ प्रोफेसर 'हिल प्रेचट' थे, जो अमेरिका की पेन्सिलवानिया यूनिवर्सिटी में असीरियन सभ्यता के प्रोफेसर थे। इन प्रोफेसर महोदय का वक्तव्य है ''मैं आगेट (A gate) नामक बहुमूल्य मणि के दो छोटे खण्डों पर खुदे अक्षरों तथा रेखाओं के स्पष्टीकरण के प्रयत्न में प्राणार्पण से लगा था। ऐसा विश्वास किया जाता था कि बाबल राज्य के किसी अधिपति की अंगूठी के ये नग हैं, जिनका समय ईसा के जन्म से पूर्व 1000 से 1140 वर्ष था। एक खण्ड को मैंने महाराजा कुरिगालजू से सम्बन्धित किया और दूसरे खण्ड को उन वस्तुओं में डाल दिया, जिनका पता नहीं चलता था। अर्द्धरात्रि को मैंने विचित्र स्वप्न देखा -

उस समय के एक पतले लम्बे निपपुर के पुजारी के दर्शन हुए, जो मुझे मंदिर के कोषकक्ष में ले गया और कहा कि ''ये दोनों खण्ड पृथक-पृथक् नहीं हैं, एक ही वस्तु के खण्ड हैं। महाराज कुरिगालजू ने एक बार एक बेलनाकार आगेट मणि को बेल देवता के मंदिर में 'अपनी भक्ति की भेंट के रूप में' भेजा था। जिस पर खुदा हुआ था। पीछे हम पुजारियों को आज्ञा हुई कि निलिंब देवता के लिए आगेट मणि के कुण्डल बनाये जाएं और आगेट मणि सुलभ नहीं थी। तब हमने उसी मणि के तीन खण्ड करके तीन कुण्डल बना लिये, जिन पर पहले ही अक्षर खुदे हुए थे। यदि तुम दोनों खण्डों को साथ मिलाओगे तो मेरे वचन की सत्यता प्रकट हो जायेगी।''दूसरी प्रति प्रातः जब वैसा करके देखा तो रात्रि के स्वप्न की सारी बातें सत्य प्रमाणित हुई। पूर्व की खुदाई के शब्द स्पष्ट हो गये 'कुरिगालजू ने बेलपुत्र भगवान निलिंब के लिए अर्पण किया। ' ''डॉक्टर हिल प्रेचट ने इस्तम्बोल की, जो उस समय टर्की राज्य की राजधानी थी और वहां के राजकीय संग्रहालय में निपपुर की खुदाई में निकली वस्तुएं सुरक्षित थीं, यात्रा की और वहां संग्रहालय में तीसरे खण्ड को जोड़ा तो स्वप्न की सारी बातों की सत्यता प्रत्यक्ष हो गई।

स्वप्न से सुलझा हत्याकाण्ड :सन् 1827 में, रेड बॉर्न हत्याकाण्ड का संगीन मामला स्वप्न के माध्यम से ही सुलझ सका। इंग्लैण्ड के साफोक गांव की मारिया मार्टिन नामक लड़की विलियम कार्डर नामक युवा किसान के साथ घर छोड़कर भाग गई थी। कुछ दिनों साथ रहे। कार्डर का संबंध एक अन्य महिला से हो जाने के कारण उसने मारिया की हत्या करके उसे पशुशाला के आंगन में दफना दिया और मारिया के अभिभावकों को सूचना भेज दी कि हम दोनों प्रसन्न है और विवाह कर लिया है। एक रात्रि में मारिया की माँ को एक स्वप्न दिखा कि उसकी बिटिया मारिया को कार्डर ने हत्या करके बार्न-बखेर की फर्श के नीचे दफना दिया है। स्वप्न का दृश्य इतना सुस्पष्ट जीवन्त, अप्रत्याशित और भयप्रद था जिसे देखकर मारिया के माता-पिता उसे खोजने कार्डर के घर जा पहुँचे। स्वप्न में देखे दृश्यानुसार फर्श तोड़ने पर मारिया का सड़ा गला शव निकाला गया। अन्ततः कार्डर को हत्या के अपराध में मृत्यु दण्ड मिला। इस प्रकार इस विलक्षण स्वप्न से हत्याकाण्ड की उलझी गुत्थी भी सरलता से सुलझ गई।

सपने ने दिलवायी हत्यारों को फांसी :मैग्रूडर एक घुमंतु सौदागर था। वह वर्जीनिया शहर में व्यापार करने के लिए नियमित आता। अगस्त 1863 में उसने

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

लिडस्टोन से अपनी 300 मील की यात्रा आरंभ की। तीन चालबाज लुटेरों - लॉवरी, हावर्ड तथा रोमेडन की उस पर पहले से नजर थी। वे उसके पीछे लग गये। उन्होंने ऐसा षड्यंत्र किया कि जैसे वे अचानक मिले हैं फिर तीनों ने मैग्रूडर से दोस्ती कर ली और उसके साथ वर्जीनिया तक गए। वहां पहुंचने पर मैग्रूडर ने अपना माल तीस हजार डॉलर में बेचा और वे सब वापिस लिडस्टोन की ओर रवाना हो गये। रास्ते में तीनों लुटेरों ने मैग्रूडर और उसके सभी अनुचरों को कुल्हाड़ी से मार कर तमाम माल लूट लिया और मृतकों के शवों को समीपवर्ती पहाड़ पर फेंक दिये। मैग्रूडर की हत्या का रहस्य शायद कभी न खुलता लेकिन वर्जीनिया के जिस होटल में मैग्रूडर ठहरा था उसके मालिक को मैग्रूडर की हत्या के बाद एक स्वप्न दिखाई दिया। स्वप्न में उसने देखा कि मैग्रूडर की हत्या कुल्हाड़ी से की जा रही है। होटल मालिक ने स्वप्न में एक हत्यारे का चेहरा भी साफ-साफ देखा। जाने क्यों उसे यह विचित्र सपना और सपने में देखा गया व्यक्ति बिल्कुल याद रहा। मैग्रूडर की हत्या के कुछ समय बाद होटल मालिक ने लॉवरी नामक हत्यारे को गाड़ी की टिकट खरीदते देख लिया सहसा उसे याद आया कि यह तो सपने में देखा हत्यारा ही है। उसने सपने की सत्यता परखने का निश्चय किया। उसने पता लगाया कि लाशें ढूंढ ही निकाली। बाद में हत्यारे भी पकड़ लिए गए और अतंतः उन्हें मैग्रूडर और उसके साथियों की हत्या के अपराध में फांसी दे दी गई। स्वप्नपरी जिसे हम 'आन्तरिक-अजनबी' भी कहते हैं। वह समस्याओं के सफर में समाधान देकर हमारे जीवन को और भी बेहतर बनाने में अच्छी सहायक सिद्ध हुई है और आगे भी हो सकती है।

मृतात्मा ने स्वप्न द्वारा हत्यारा पकड़वाया :एक बार मरडांक ग्रांट नामक एक ट्रैवलिंग कनवेंसर की लाश एक झील में मिली। यह व्यक्ति एक बड़ी रकम लेकर किसी दूसरे स्थान को जा रहा था। मार्ग में उसे मार कर उसका सारा धन छीन लिया बाद में जांच होने पर ह्यू मैकलाड पर संदेह हुआ। इस संबंध में उससे प्रश्न पूछे गए किन्तु कोई ठोस प्रमाण नहीं मिला। कुछ दिनों के पश्चात् वहीं के एक दर्जी को मृतात्मा ने स्वप्न में बताया कि हत्या मैकलाड ने ही की है तथा उसके पास सब रूपये मैकलाड के घर में कुछ पत्थरों के नीचे दबे पड़े हैं। जांच के अनन्तर स्वप्न के दृश्य के अनुसार सारा धन पत्थर के नीचे मिल गया। बाद में मैकलाड ने स्वयं अपना अपराध मान लिया। इस प्रकार एक मृतात्मा ने अपना हत्यारा पकड़वा दिया।

राजा इन्द्रद्युम्न के स्वप्न :मालवा देश की अवन्ती नगरी के राजा इन्द्रद्युम्न के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि मैं किस प्रकार भोग मोक्षदाता योगेश्वर श्री हरि की आराधना करूं? बहुत काल तक विचारकर राजा इन्द्रधुम्न ने सर्वोत्तम तीर्थ पुरूषोत्तम क्षेत्र में जाने का निश्चय किया। उस तीर्थ क्षेत्र में पहले इन्द्रनील मणि से निर्मित प्रतिमा विराजित थी, जिसे स्वयं भगवान ने छिपा दिया था। भगवान् ने उस प्रतिमा को इसलिए तिरोहित कर दिया था कि उस प्रतिमा का दर्शन कर पृथ्वी के सब मनुष्य भगवद्धाम में चले जाते थे। राजा इन्द्रद्युम्न ने दृढ़ संकल्प किया कि मैं ऐसा प्रयत्न करूंगा, जिससे सत्यपराक्रमी विष्णु मुझे साक्षात् दर्शन देंगे। अश्वमेधयज्ञ तथा दान-पुण्यादि कर्म कर लिए गये। पुरूषोत्तम प्रासाद निर्माण कार्य विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ। अब राजा को अहर्निश भगवत् प्रतिमा के लिए चिन्ता सताने लगी। पाञ्चरात्र की विधि से उन्होंने पुरूषोत्तमावतार-पूजन-कथा कीर्तन करके अनेक भावमयी प्रार्थनाएं की। स्तुति प्रार्थना के उपरांत राजा ने वासुदेव को प्रणाम किया एवं वहां धरती पर कुश और वस्त्र बिछाकर चिन्तामग्न हो सो गये। भगवान् ने राजा को स्वप्न में अपने शंख, चक्र और गदा धारण करने वाले स्वरूप का दर्शन कराया। राजा इन्द्रद्युम्न ने बड़े प्रेम से भगवान का दर्शन किया। वे शंख और चक्र धारण किये हुए थे। उन्होंने शांर्ग नामक ध नुष और बाण भी धारण कर रखे थे। उनका स्वरूप प्रलयकालीन सूर्य के समान देदीप्यमान हो रहा था। वे प्रज्वलित तेज के विशाल मण्डल प्रतीत होते थे। उनका अंग नीले पुखराज के समान श्याम था। वे गरूड़ के कंधे पर विराजमान थे। उनके आठ भुजाएं शोभा पा रही थी। स्वप्न में दर्शन देकर भगवान ने कहा-राजन्! तुम्हें साधुवाद! तुम्हारे इस दिव्य यज्ञ से, भक्ति से तथा श्रद्धा से मैं बहुत संतुष्ट हूँ। तुम चिन्तित न होओ, यहां जो सनातनी प्रतिमा छिपी है उसकी प्राप्ति का उपाय बताता हूं। आज की रात बीतने पर निर्मल प्रभात में जब सूर्योदय हो, समुद्र तट पर जाना। वहां समुद्र प्रांत में एक विशाल वृक्ष सुशोभित है, जिसका कुछ अंश तो जल में और कुछ अंश स्थल पर है। समुद्र की लहरों से आहत होने पर भी वह वृक्ष कम्पित नहीं होता। तुम हाथ में तीक्ष्ण अस्त्र लेकर अकेले ही वहां जाना और उस वृक्ष को काट डालना। वहां तुम्हें कुछ अद्भुत वस्तु दिखाई देगी। विचार-विमर्श कर उसी से दिव्य प्रतिमा का निर्माण करना। अब मोहप्रद चिन्ता त्याग दो। तत्पश्चाद् श्री हरि अदृश्य हो गये। राजा विस्मित हुए। प्रातः उठकर वे समुद्र तट पर पहुंचे एवं स्वप्नानुसार तेजस्वी वृक्षराज को देखकर अत्यन्त प्रसन्न

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

हुए। उन्होंने उस वृक्ष को काट गिराया और दो टुकड़े करने का विचार किया। फिर उन्होंने जब काष्ठ का भलीभांति निरीक्षण किया तो उन्हें एक अद्‌भुत बात दिखाई दी। उन्हें सहसा दो ब्राह्मणवेशधारी दिव्य पुरूष दिखाई दिये। ब्राह्मणों ने राजा के पास आकर पूछा-आपने किस लिए वनस्पति को काट गिराया है? राजा ने कहा 'आदि-अन्तहीन अवतार की आराधना के लिए मैं विष्णु की प्रतिमा का निर्माण करना चाहता हूं। तदर्थ स्वप्न में भगवान् ने मुझे प्रेरित किया है। ' यह सुनते ही विप्ररूपधारी भगवान् ने सहर्ष कहा-राजन्! आपका विचार अत्युत्तम है तथा मेरे ये साथी श्रेष्ठ शिल्पी विश्वकर्मा हैं, जो मेरे निर्देशानुसार प्रतिमा निर्माण करेंगे। तब विश्वकर्मा ने भगवदीय आज्ञा के अनुसार प्रतिमाओं का निर्माण कर दिया। जिनमें पहली मूर्ति बलराम की, दूसरी श्री जगन्नाथ की एवं तीसरी भगवान् वासुदेव की बहन सुभद्रा जी की थी। यह देखकर आश्चर्य चकित हो इन्द्रद्युम्न ने पूछा-गुप्तरूप से आप कौन हैं? तब भगवान् ने कहा- वेदों में जिसका उल्लेख हुआ है, वही मैं हूं। भगवान् की वाणी सुनकर राजा इन्द्रद्युम्न के शरीर में रोमाञ्च हो आया। वे स्तुतिपूर्वक प्रणाम करते हुए बोले-जो निर्गुण-निर्मल शांत एवं परमपद है, उसे मैं आपके प्रसाद से पाना चाहता हूं। तब भगवान् राजा को 'तथास्तु' कहकर वर देते हुए विश्वकर्मा सहित अन्तर्धान हो गये। इस प्रकार स्वप्नपरी कभी-कभी हमें दिव्य और अलौकिक शक्तियों से साक्षात्कार करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

नृप नल का स्वप्न :नृप नल की पत्नी का नाम दमयन्ती था। एक बुढ़िया से सम्पदा देवी का धागा लेकर दमयन्ती रानी ने बांध लिया। राजा नल ने धागे के विषय में रानी से पूछा। रानी ने बुढ़िया द्वारा बताई गई सारी बातें बताई। रानी के मना करने पर भी राजा नल ने सम्पदा देवी के धागे को तोड़कर फेंक दिया। रात्रि में राजा नल को स्वप्न में एक स्त्री दिखाई दी और वह बोली ''मैं जा रही हूं' तथा दूसरी स्त्री बोली ''मैं आ रही हूं।'' इस प्रकार दस-बारह दिन तक निरन्तर यही स्वप्न आता। राजा उदास हो गया। रानी ने जब पूछा तो राजा ने स्वप्न की सारी बात बता दी। रानी ने राजा से दोनों स्त्रियों का नाम पूछने को कहा। राजा द्वारा उनसे पूछने पर पहली स्त्री बोली मैं लक्ष्मी हूं और दूसरी स्त्री ने कहा मैं दरिद्रता (आपदा) हूं। दूसरे दिन राजा-रानी निर्धन हो गए। जंगल में कन्द-मूल खाकर अपने दिन बिताने लगे। रास्ते में पंच वर्षीय राजकुमार को भूख लगी। राजा ने मालिन से तक्रं (छाछ) मांगी तो मालिन ने कहा समाप्त हो गई।

फिर विषधर ने राजकुमार को डस लिया। भूख से व्याकुल राजा ने दो तीतरों का शिकार किया। रानी तीतर भूनने लगी तो तीतर उड़ गए। राजा स्नान कर धोती हवा में सूखा रहा था तो धोती को हवा उड़ा कर ले गई। रानी ने अपनी धोती फाड़कर राजा को दी। वे भूखे-प्यासे राजा के मित्र के घर गये तो मित्र ने उनको अपने कमरे में ठहराया। वहां लोहे के औजार रखे थे तो वे धरती में समा गए। चोरी के भय से नल दमयन्ती रात्रि में ही भाग गये। राजा की बहिन का घर रास्ते में आया। राजा की बहिन ने सोने के थाल में भोजन परोसा तो थाल मिट्टी के बन गए। राजा लज्जित हुआ। थाल को जमीं में गाढ़कर राजा-रानी एक साहूकार के घर भाग गये। साहूकार की खूंटी पर एक हीरों का हार टंगा था, दीवार पर मोर का चित्र बना हुआ था। वह मोर हार निगलने लगा। यह देखकर वे वहां से चोरी के भय से भाग गये। अब नल-दमयन्ती वन में कुटिया बनाकर रहने लगे। सूखे बगीचे में जाकर ठहरे। वह बगीचा हरा-भर हो गया। बाग का स्वामी यह देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ। बाग के स्वामी ने उन्हें बाग में नौकर रख लिया। एक दिन बाग की स्वामिनी चैत्र मास की कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को सम्पदा देवी की कथा एवं धागा बांधने हेतु दमयन्ती को प्रेरित किया। दमयन्ती ने फिर सम्पदा माता का धागा गले में डाल लिया। राजा ने धागे के बारे में जब पूछा तो रानी दमयन्ती ने कहा-सम्पदा देवी के धागे को आपने पहले तोड़ा था इसलिए माता हम पर नाराज है। राजा बोला- ''यदि सम्पदा माता सच्ची है तो हमारे दिन फिर से लौट आएंगे।'' उसी रात में राजा को स्वप्न आया। लक्ष्मी देवी स्वप्न में कह रही है मैं आ रही हूं। दरिद्रता कह रही है कि वह जा रही है। बाग की मालकिन नगर की रानी के महल में हार देने जाती थी। उस हार को दमयन्ती बनाती थी। बाग की मालकिन से महारानी ने हार बनाने वालों का नाम पूछा तो पता चला कि वे नल-दमयन्ती हैं। माली उनसे क्षमा मांगने लगा। अब वे दोनों (नल-दमयन्ती) महलों की तरफ चले। रास्ते में साहूकार के घर ठहरे। वहां दीवार पर बना मयूर हार उगल रहा था। साहूकार ने नल दमयन्ती के पैर पकड़ लिए। आगे राजा बहिन के महल में ठहरा, जगह खोदी तो हीरों जड़ित थाल निकल आया। मित्र के घर गया तो जमीं फट कर औजार निकल आए। आगे बढ़े तो पेड़ पर अटकी धोती मिल गई। राजकुमार को सर्प डसा था, वह खेलता हुआ मिल गया। महलों में पहुंचे तो अपार सम्पत्ति के साथ सखियों ने स्वागत किया। बुरे दिन बदल गये। स्वप्न से आपदा सम्पदा में परिवर्तित हो गई। स्वप्न से हमें शुभ-अशुभ भविष्य की पूर्व सूचना भी प्रायः मिल ही जाती है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वीर विक्रमादित्य का स्वप्न : एक बार नौ ग्रहों में परस्पर झगड़ा हो गया कि इनमें सबसे बड़ा कौन है। वे इस विवाद को परस्पर सुलझा न सके और सब मिलकर देवराज इन्द्र के पास जा पहुंचे और कहा कि आप हमारा न्याय करके यह बताएं कि हम नवग्रहों में सबसे बड़ा कौन है? इन्द्र भी इनका प्रश्न सुनकर घबरा गये और कहने लगे कि मुझमें यह सामर्थ्य नहीं है कि मैं किसी को छोटा या बड़ा बतलाऊं। इस समय भूलोक पर वीर विक्रमादित्य राजा निष्पक्ष निर्णय करने वाले हैं। इसलिए आप लोग उन्हीं के पास जाएं।

राजा विक्रमादित्य भी उनकी बात को सुनकर चिन्ता में पड़ गये। परन्तु उनका झगड़ा निपटाने के लिए राजा ने एक उपाय सोचा। नौ धातुओं के नौ आसन बनवाये और सभी उन आसनों को क्रम से जैसे-सर्वप्रथम स्वर्ण सिंहासन और अन्त में लोहे का आसन लगाया गया। इसके पश्चात् राजा ने सब ग्रहों से कहा कि आप सब अपने-अपने आसनों पर विराजमान हो जाइये। जिसका आसन सबसे आगे वह सबसे बड़ा और जिसका आसन सबसे पीछे वह सबसे छोटा जानिये। इस पर शनि को अत्यन्त क्रोध आया और कहने लगा-राजन्! तुम मेरे पराक्रम को नहीं जानते। हमें नीचा दिखाकर तुमने बहुत बड़ी गलती की है। अतः अब तुझे मेरे प्रकोप से इस सृष्टि में कोई नहीं बचा सकेगा। कुछ समय बाद राजा पर शनि की साढ़ेसाती आई। शनिदेव घोड़ों के सौदागर का रूप धारण कर घोड़ों सहित उज्जैन नगरी में आए। विक्रमादित्य एक श्रेष्ठ घोड़े की पीठ पर सवारी के लिए चढ़े। राजा के चढ़ते ही घोड़ा बहुत दूर घने जंगल में राजा को गिराकर अन्तर्ध्यान हो गया। राजा जंगल में भटकता रहा। ग्वाले ने राजा को पानी पिलाया, शहर का सीधा रास्ता बताया। राजा शहर में पहुंचकर एक सेठ की दुकान पर जाकर बैठ गया। सेठ ने उसे कुलीन व्यक्ति समझकर जल आदि पिलाया। भाग्यवश उस दिन सेठ की दुकान पर बिक्री बहुत अधिक हुई। तब सेठ उसे भोजन कराने के लिए अपने घर ले गया। खूंटी पर एक हार लटक रहा था और खूंटी उस हार को निगल गई। भोजन के बाद सेठ को घर में हार नहीं मिला तो वह राजा को चोर समझकर राजा के पास ले गया। तब राजा ने आज्ञा दी कि विक्रमादित्य के हाथ-पैर काटकर चौरंगा किया जाये। विक्रमादित्य के हाथ-पैर काटने से ऐसी दशा हो गयी कि किसी ने पानी मुंह में डाल दिया तो पी लिया और रोटी मुंह में डाल दी तो खा ली अन्यथा यों ही पड़ा रहा। कुछ समय बाद एक तेली उसे अपने घर ले आया और उसे कोल्हू पर बैठा दिया। राजा (वीका)

कोल्हू पर बैठा हुआ अपनी जुबान से बैल हांकता रहा। जब राजा की शनि की दशा ठीक हो गई, वह एक रात के समय मेघ-मल्हार राग गाने लगा। उसका गाना सुनकर उस नगर की राज कन्या उस राग पर मोहित हो गयी और दासी को खबर लेने के लिए भेजा। दासी ने शहर भ्रमण करके जाना कि तेली के घर में एक चौरंगा गा रहा है। दासी ने महल में आकर राजकुमारी से सारा वृतान्त कह सुनाया। राजकुमारी ने यह प्रण कर लिया कि चाहे कुछ भी हो किन्तु मुझे उसी से विवाह करना है। राजकुमारी राजा रानी के समझाने पर भी अपनी जिद्द पर अड़ी रही तो राजा ने क्रोध में आकर कहा-यदि तेरे भाग्य में ऐसा ही लिखा है तो जैसी तेरी इच्छा हो, वैसा कर। राजा ने उसी समय राजकुमारी का विवाह चौरंगा (विक्रमादित्य) के साथ कर दिया। रात्रि में शनिदेव नृप विक्रमादित्य को स्वप्न में दिखाई दिए। शनि ने कहा-राजा मुझे छोटा बताकर तुमने कितने कष्ट उठाए हैं। तब राजा ने शनिदेव से क्षमा मांगी। शनिदेव ने प्रसन्न होकर विक्रमादित्य को पुनः हाथ पैर दे दिए। तब विक्रमादित्य ने कहा-महाराज! एक मेरी प्रार्थना अवश्य स्वीकार करें कि जैसा दुःख आपने मुझे दिया है, ऐसा दुःख किसी मनुष्य को न दें। जब राजकुमारी ने विक्रमादित्य के हाथ-पैर देखे तो उसे आश्चर्य हुआ। राजा ने सारा वृतांत कह सुनाया। जब उस सेठ ने यह बात सुनी तो वह सेठ वीर विक्रमादित्य के पास गया, क्षमा याचना की और अपनी कन्या की शादी वीर विक्रमादित्य के साथ कर दी। दूसरे दिन राजा ने सारे शहर में यह घोषणा कराई कि शनि देवता सर्वग्रहों में सर्वोपरि हैं। इन्हें मैंने छोटा बतलाया, इसी से मुझे यह दुःख प्राप्त हुआ। इससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि दैवीय विचार सम्प्रेषण में सपनें सन्देशवाहक की भूमिका निभाते हैं।

महाराजा रणजीतदेव का स्वप्न :लगभग 300 वर्ष पूर्व, जब भारत में मुगलों का राज्य था, उस समय जम्मू में महाराजा रणजीतदेव राज्य करते थे। दिल्ली के बादशाह की प्रबल इच्छा थी कि किसी प्रकार जम्मू के शासक को अपने आधीन कर लें और इसके लिए लाहौर के प्रतिनिधि को कई बार आदेश दिया। परन्तु उस समय जम्मू जैसे पहाड़ी-राज्य पर चढ़ाई करना आसान बात न थी, इसलिए लाहौर के प्रतिनिधि मीर मन्नू की, महाराजा रणजीतदेव को धोखे से बुलाकर कैद कर लेने की योजना बनी। इधर महाराज इनके इरादे को समझ गए और उनके बार-बार बुलाने पर भी लाहौर न गए। कुछ समय पश्चात्, एक बार महाराजा रणजीत देव शिकार के लिए गए। जब वे त्रिकुट पर्वत पर पहुंचे तो वहां चट्टान

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पर बैठी दिव्य कन्या के दर्शन किए। उस दिव्य-कन्या से उन्होंने उसका नाम और अपने नगर का रास्ता पूछा तो देवी ने कहा-राजन्! मेरा नाम वैष्णवी है और इस पर्वत की गुफा में मेरा निवास है।" यह कहकर उसने राजा को नगर का मार्ग बता दिया। राजा ने पुनः पूछा-हे देवी, लाहौर का राज्यपाल मुझे छल से पकड़ने के लिए बार-बार बुलाता है, मैं क्या करूं? देवी ने कहा-तुम बिना संकोच उसके यहां जाओ, वह तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। यह कहकर देवी एकदम लोप हो गई। कुछ दिनों के बाद, जब राज्यपाल ने महाराजा रणजीतदेव को फिर लाहौर बुलाया तो महाराज देवी के आश्वासन पर चले गए। महाराज के लाहौर पहुंचते ही मीर-मन्नू ने उन्हें कैद कर लिया। तब रात्रि को देवी ने महाराज को स्वप्न में कहा कि 'तुम चिंता न करो, कल तक राज्यपाल तुम्हें अपने आप ही छोड़ देगा। ' दूसरे दिन अचानक महाराज को कैद मुक्त कर दिया गया और राज्यपाल ने महाराजा रणजीतदेव से संधि कर ली। इस प्रकार सपनें हमें आधि, व्याधि एवं उपाधि से निजात दिलाने में हमारे मददगार बनते हैं। हमें जीवन में समाधि प्रदान करते हैं।

रोग मुक्ति स्वप्न से :वि. सं. 2019 गंगाशहर में राजा बाबू तोलाराम जी चौपड़ा बीमार था। स्वप्न में उसके पिता ईश्वर चन्द जी ने कहा 'लल्लूजी! ल्यों वो नुस्खो लिखाऊ। ' उन्होंने सूंठ, मिर्च, पीपल आदि कई चीजें कही। आंखें खुली और राजा बाबू ने सूंठ आदि का चूर्ण खाया एवं बीमारी मिट गई। जयचंदलाल छाजेड़ (सरदारशहर) रात को सो रहा था। स्वप्न में आवाज आई - उठ! तेरी माँ गिर गई। उठकर देखा तो माताजी सीढ़ियों में गिरी हुई मिली। एक बार स्वप्न में आवाज आई - सावधानी से उठना। तेरी खाट के नीचे सांप है। उठकर देखा तो सांप था। एक दिन स्वप्न में सुनाई दिया - उठ! खड़ा हो जा!। जयचंदलाल ने कहा - घुटने में दर्द है कैसे उठूं? फिरस्वप्न में सुनाई दिया - अरे! दर्द की चिन्ता मत कर उठ जा शीघ्र। जब वह खड़ा हुआ तो दर्द बिल्कुल नहीं था। इस प्रकार स्वप्न के दिव्य संकेतों से रोग मुक्ति हो गई।

मेरे कुछ विशिष्ट स्वप्न :मैं बचपन से ही स्वप्न देखती आ रही हूं। बचपन में मुझे जो स्वप्न आते थे वे प्रायः हूबहू सत्य होते थे किन्तु कुछेक स्वप्न जो मुझे याद हैं और सत्य भी साबित हुए वे निम्नलिखित हैं - बचपन से ही मैं प्रायः धार्मिक पुस्तकों एवं देव प्रतिमाओं को स्वप्न में देखती आ रही हूं। बाल्यावस्था में तो मुझे स्वप्न साहित्य का विशेष ज्ञान नहीं था। इस कारण इन

स्वप्नों के बारे में सैद्धांतिक ज्ञान न होने के कारण उस समय मुझे उन स्वप्नों का फल क्या मिला यह ज्ञात नहीं हुआ परन्तु भविष्य में अध्ययन करने से ज्ञात हुआ कि उन स्वप्नों का फल ज्ञान-जिज्ञासा एवं पिपासा का सूचक है। बचपन से ही मेरी अध्यात्म एवं साहित्य के प्रति अत्यधिक अभिरूचि थी। विद्यार्थी जीवन में मेरा परीक्षा परिणाम सदैव सन्तोषजनक रहा।

स्वप्न में मिला चोरी का संकेतःबचपन में जब मैं 5-7 वर्ष की थी तब एक स्वप्न मैंने देखा- तीन नकाबपोश चोर घर में घुस रहे हैं। एक चोर बाहर खड़ा पहरेदारी कर रहा है। दो चोरों ने बैठे-बैठे धीरे-धीरे सीढ़ियां उतर कर कमरें की अलमारियां, सन्दूकें गोदरेज आदि के ताले तोड़ डाले हैं। सोने, चांदी के आभूषण एवं नकद रूपये वे सारे ले जा रहे हैं। स्वप्न की वार्ता सुनकर सब पारिवारिक जनों ने मेरा खूब उपहास किया। उन्होंने कहा-अपने घर कभी भी चोर घुस नहीं सकते। अपनी गली में सदैव पहरेदार पहरा लगाता है। सब परिजनों को स्वप्न की सत्यता पर यकीन नहीं हुआ। दो दिवस के पश्चात रात्रि में जब हम सो रहे थे तो ज्येष्ठ भगिनी रतनी बाई बिस्तर के पास बड़ी सी लाठियां ले कर मुझको डराती हुई बोली-'यदि आज रात को हमारी नींद खराब करेगी तो तुम्हें इस लाठी से मारूंगी, यदि चोर घर में घुसने की कोशिश करेंगे तो उन्हें इससे मारूंगी। ' इस प्रकार चोरों की बात करते हुए रात्रि में हम सब सो गये। शीतल समीर चल रही थी भयंकर गर्मी का मौसम था। थोड़ी ही देर में निद्रा देवी ने हम सबको अपने आगोश में जकड़ लिया। इधर अवसर पाकर रात्रि में चोर घर में घुसे। कमरे के, अलमारियों के, सन्दूकों के एवं अटैचियों के सारे ताले तोड़ दिये। स्वर्णाभूषण, रजताभूषण, नगद रूपये एवं कीमती सामान ले कर चोर भाग गये। चोरों को भागते हुए हमारे पड़ौसियों ने देखा। हम सबको जगाया। चोरी का समाचार सुनकर बहुत दुःख हुआ। सारा सामान गायब देखकर सब रोने लगे। फिर स्वप्न की सच्चाई का भान हुआ और साथ-साथ पश्चाताप भी हुआ कि अगर स्वप्न की बात मान लेते तो नुकसान होने से बच जाता।

जन्माष्टमी को स्वप्न में श्रीकृष्ण दर्शनः तारानगर (राज.) पावस प्रवास के दौरान साध्वी श्री भीखांजी के नेत्रों में काला मोतियां बहुत ज्यादा हो गया। स्थिति चिन्तनीय बन गई। आंखों के ईलाज की कोई सुविधा नहीं। आंखों में टेंशन ज्यादा होने से रोशनी बहुत कम हो रही थी। आंखों की ज्योति को लेकर सब चिन्तित थे। श्री कृष्ण जन्माष्टमी की सुबह मैंने स्वप्न में आशीर्वादमुद्रा में श्री कृष्णजी को

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

देखा। सुबह शुभ स्वप्न देखकर मेरा मन पुलकन से भर गया। मन में आशा की एक नई रश्मि का अवतरण हुआ। मन में दृढ़ विश्वास हो गया कि कुछ शुभ समाचार मिलेंगे। उस दिन बीकानेर के सुप्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक डॉ. एस.पी. व्यास का शार्दूलपुर कैम्प में आना हुआ। वहां से तारानगर आकर उन्होंने साध्वी श्री का ईलाज किया। नेत्र ज्योति आ गई। स्वप्न से कार्य सिद्धि का संकेत सही साबित हुआ।

दिव्य विमान-दर्शन :वि.स. 2048, चैत्र मास में, राजस्थान के पाली जिलान्तर्गत मांढ़ा (सिरियारी) में साध्वी श्री भीखांजी ''श्री डूंगरगढ़' अपनी पांच सहवर्ती साध्वियों के साथ विराजित थी। मैं भी उनके साथ थी। रात्रि के समय करीब 4 बजे स्वप्न में मुझे एक बहुत ही देदीप्यमान विमान दिखाई दिया। वह दिव्य विमान बहुत ही आकर्षक लग रहा था। वह विमान दूर से आकर नीचे उतर कर मेरे सिर पर मंडराने लगा तत्पश्चात् उसने तीन बार प्रदक्षिणा दी। उसके पश्चात् मेरे संसार पक्षीय पिता श्री (श्रीमान गणपतमलजी डूंगरवाल) मेरे समक्ष उपस्थित हो गये। मैंने स्वप्न में ही प्रश्न किया- आप कहां से आ रहे हो? उन्होंने प्रत्युत्तर में कहा 'मैं पंचम देवलोक से आया हूं' तब मैंने स्वप्न में ही प्रति प्रश्न करते हुए पूछा-हे देवानुप्रिय क्या देवलोक में पुस्तकें एवं पुस्तकालय होते हैं? दिव्यात्मा ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह दिव्य विमान एवं दिव्यात्मा त्वरित तीन प्रदक्षिणा देकर बहुत दूर उड़ गया। मैं उस विमान को देखती ही रह गई। अचानक मेरी निद्रा भंग हो गई और आंखें खुल गई। कुछ दिन पश्चात् रात्रि में साक्षात देव विमान देखा। इस स्वप्न का फल कुछ दिन पश्चात् मुझे ज्ञात हुआ कि मेरे संसार पक्षीय पिता श्री पंचम देवलोक में देव बने हैं, उनका आयुष्य सम्पन्न हो गया है। स्वप्न में मैं बहुधा गणाधिपति गुरूदेव श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञजी, आचार्य श्री महाश्रमणजी, साध्वी प्रमुखा श्री कनकप्रभाजी आदि बहुत सी साध्वियों को स्वप्न में देखती रहती हूं। उनसे वार्तालाप भी स्वप्न में करती हूं। जिज्ञासा समाधान भी करती हूं। जिसका फल सदैव शुभ एवं समाधानपरक होता है।

स्वप्न में रोने वाला हंसता है :पश्चिम विहार, नई दिल्ली, अर्चना अपार्टमेंट में हमारा चातुर्मास था। दिनांक 10-10-2006 को सुबह 2 से 4 बजे मैंने स्वप्न में रोना शुरू किया। करीब दो घंटे तक मैं रोती रही। मेरे रोने से पास में सोने वाली मंजू बैंगाणी (अरिहन्त नगर) जग गई। उसने मुझे जगाते हुए

कहा-महाराज! आप बहुत देर से क्यों रो रहे हो। सुबह बहिन ने साध्वी श्री भीखांजी से स्वप्न में रोने की बात बताई। साध्वी श्री ने स्वप्न फल बताते हुए फरमाया 'स्वप्न में रोना बहुत अच्छा होता है। रोने वाला ही हंसता है। '

संयोगवश उसी करवा चौथ की शाम 7:51 बजे साध्वी श्री भीखांजी (श्री डूंगरगढ़) का अचानक देवलोक गमन हो गया। जिन्दगी के 19 वर्ष मैंने उनके सानिध्य में बिताए ही नहीं बल्कि शिक्षा, स्नेह एवं सौहार्द की अनगिनत फुलझड़ियों से जीवन को संवारने का प्रयत्न किया। अतः दुःख होना तो स्वाभाविक ही था। स्वप्न अक्षरशः सत्य हो गया। दूसरा फलितार्थ जो साध्वी श्री ने बताया कि रोने वाला ही हंसता है। वह भी सत्य साबित हुआ। बहुत वर्षों से मुझे शोध कार्य करने की अनुमति मिल नहीं रही थी। इस स्वप्न के पन्द्रह दिन पश्चात् ही मुझे पूज्यवरों की लिखित आज्ञा शोधकार्य के लिए मिल गई। चिर संजोया स्वप्न साकार होने की उम्मीद जग गई।

शिवरात्रि को शिव दर्शन :शोधकार्य करने की पूज्यवरों द्वारा लिखित स्वीकृति तो मुझे मिल गई किन्तु 'शोध निर्देशक' के चयन की कठिनाई रास्तें में बाधक बन रही थी। शिवरात्रि की सुबह मैंने स्वप्न में आशीर्वाद मुद्रा में शिवजी को देखा, सुबह उठते ही मुझे अपार प्रसन्नता हुई। मुझे मन में पूरा विश्वास था कि अब मेरा स्वप्न अवश्य ही साकार होगा। हकीकत में दस दिवस पश्चात् मुझे निर्देशक के रूप में समणी डॉ. सत्यप्रज्ञाजी का मार्गदर्शन मिलने का संकेत मिल गया। जिससे मुझे बेहद खुशी हुई।

स्वप्नों पर विश्वास : चैत्र कृष्णा पंचमी वि.स. 2017, दिनांक 8-3-1961 ई. में भंवरलालजी दूगड़ (पुत्र सेठ सुमेरमलजी) सरदारशहर की पत्नी ने उनके जयपुर गमन से पहले रात्रि को एक दुर्घटना सूचक अशुभ स्वप्न देखा। अतः उन्होंने भंवरलालजी को रोकने का काफी प्रयास किया परन्तु वे नहीं माने। उनका कथन था कि स्वप्न के विश्वास पर आवश्यक कार्य कैसे रोके जा सकते हैं? पत्नी ने साथ चलने का भी बहुत-बहुत आग्रह किया परन्तु उन्होंने उसे भी यह कहकर टाल दिया कि दूसरे अनेक साथी साथ में होंगे अतः तुम्हें साथ ले जाने में दुविधा रहेगा। पत्नी को आखिर विवश होकर घर पर ही रहना पड़ा। भंवरलालजी चले गये। वे ऐसे चले गये कि लौट कर कभी आये ही नहीं। कार दुर्घटना ने भंवरलालजी को तो लील लिया मगर उनकी पत्नी को सदा सर्वदा के लिए स्वप्नों की सत्यता पर विश्वास हो गया। उनकी शुभता अशुभता के आधार परवह जीवन भर कार्य करती रही।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वप्न ने बचाया : लाडनूं निवासी शोभाचंदजी जोगड़ जहां रहते थे वहीं एक सुनार भी नौकरी किया करता था। एक बार उसने जोगड़जी से कुछ रूपये उधार लिए। वापस चुकाने न पड़े, इस दृष्टि से उनके मन में पाप समा गया। उसने स्नान के निमित्त नदी पर ले जाकर उन्हें डूबो देने का मन ही मन निश्चय किया। परन्तु कोई चमत्कार ही हुआ कि रात के समय शोभाचंदजी को स्वप्न में दिखाई दिया कि सुनार उन्हें डूबो देने के लिए नदी में स्नानार्थ चलने का आग्रह कर रहा है। प्रातः जब सुनार ने सचमुच ही उन्हें नदी पर चलने के लिए कहा तो उन्हें लगा कि रात का स्वप्न सच होने जा रहा है। उन्होंने सुनार को दृढ़तापूर्वक इंकार कर दिया। उन्होंने सोचा इस बार तो स्वप्न ने मुझे बचा लिया परन्तु सभी षड्यंत्रों के तो स्वप्न आने से रहे। अब मुझे यहां नहीं रहना चाहिए। वे गाड़ी चढ़े बंगाल से तुरन्त लाडनूं आ गए।

अनशन का आदेश :विक्रम संवत् 2025, फाल्गुन मास, साध्वी श्री पन्नाजी मेवाड़ (राजस्थान) में विचरण कर रही थी। साध्वी विजयश्री की संसार पक्षीया मातुश्री गणेशीदेवी (धर्मपत्नी सोहनलालजी बच्छावत) ने सरदारशहर में अर्द्धरात्रि में एक स्वप्न देखा। तत्काल अपने पति को जगाया और बताया 'मुझे अभी-अभी एक स्वप्न आया है और वह मेरी मृत्यु की सूचना देकर विलीन हो गया है। इस स्वप्न से मेरी नींद उचट गई और आपको असमय जगाने के लिए विवश हो गई।

पति सोहनलालजी ने कहा 'तुम सारी बात स्पष्ट बताओ। ' गणेशीदेवी ने कहा 'तपसण (साध्वी पन्नाजी) ने कहा है 'तुम्हारा तीन दिन का आयुष्य शेष रहा है। तीसरे दिन अर्द्धरात्रि में बारह बजे के लगभग। अब तुम संथारा कर लो। पत्नी की बात सुनकर वे स्तब्ध रह गये। गणेशीदेवी ने फिर कहा 'तपसण ने कहा है इसलिए मैं संथारा करूंगी। आप हुलासी (मंझली पुत्री) को बुलाएं। हुलासी आती, उससे पूर्व ही गणेशीदेवी बच्छावत ने चौविहार अनशन व्रत स्वीकार कर लिया। अनशन के तीसरे दिन भावों की प्रवर्द्धमान स्थिति में वह जप ध्यान में लीन थी। रात्रि के बारह बजे का समय गणेशीदेवी ने बेटी से पूछा-'हुलासी! क्या बारह बज गये? हुलासी ने उत्तर दिया-'हां मां'। उसी क्षण गणेशीदेवी ने इस संसार को अलविदा कह दिया। इस घटना ने अनेक अनुत्तरित प्रश्न पैदा कर दिये। कहां मेवाड़ और कहां सरदारशहर। लगभग 300 कि.मी. की दूरी। क्या वस्तुतः इतनी दूर बैठे साध्वी पन्नाजी को गणेशीदेवी की मृत्यु का पूर्वाभास हुआ? यदि आभास

नहीं होता तो कैसे आते? क्या स्वप्न में इस तरह की भविष्यवाणी की जा सकती है? गणेशीबाई को पन्नाजी ने स्वप्न में ये बातें कैसे बताई? संथारे का निर्देश क्यों दिया? मृतात्माएं स्वप्न में आती हैं। यह सर्वविदित है, किन्तु क्या जीवित व्यक्ति भी इस प्रकार स्वप्न में किसी की मृत्यु का संकेत दे सकते हैं? किन्तु ज्ञात जगत् में इनका समाधान मिलना मुश्किल है।

स्वप्न में संथारा :लाडनूं निवासी श्रीमान् पूनमचंदजी बैद को स्वप्न में पूर्वाभास हुआ। उन्होंने अपनी पुत्रवधु (श्रीमती हंसराज) से कहा-इस वर्ष कई नई रचनाएं होने वाली हैं। मुझे तिविहार संथारा आएगा, चौविहार संथारा भी आएगा, संत बनूंगा, मुनि नवरत्नमलजी मुझे दीक्षा देंगे, दो साधु मेरी सेवा में रहेंगे। यह सारी बात निर्मला देवी ने मुनि जम्बू कुमारजी को बता दी थी। वि.संवत 2061 जेठ कृष्णा-8 को उन्होंने साढ़े सात बजे सवेरे मौसमी का जूस लिया, एक मुनक्का दाख खाई। जैसे ही उन्हें आठ बजे दवा देने के लिए जगाया गया तब उन्होंने कहा-'मुझे संथारा पचखा दिया गया है। ' आपको संथारा किसने पचखाया है? तब वे बोले नवरत्नमल जी स्वामी ने मुझे स्वप्न में संथारा करवा दिया है। वास्तव में संतों के अर्ज करने पर नवरत्नमलजी स्वामी पधारे और उस दिन के लिए तीनों आहार का प्रत्याख्यान करा दिया। ज्येष्ठ कृष्णा दसमी को करीब आठ बजे संतों ने यावज्जीवन के लिए संथारा करवा दिया। उनकी भावना देखते हुए आचार्य श्री ने दीक्षा की अनुमति प्रदान की। दो साधुओं को छापर से आने का आदेश भी दे दिया गया। ज्येष्ठ कृष्णा 12 को सायं चौविहार संथारा पचखा दिया गया। कल सवेरे दीक्षा दी जाने वाली थी किन्तु रात्रि 8.30 बजे ही उनका संथारा सिद्ध हो गया। उस समय उनकी उम्र एक सौ साढ़े तीन वर्ष (103 वर्ष, 6 माह) थी। ' एक स्वप्न ने उनको सिद्धि के द्वार तक पहुंचा दिया।

अज्ञात शक्ति का उपकार :वि.सं. 2007 में, साध्वी गौरांजी के चामत्कारिक अनशन समाप्ति के पश्चात् दीर्घ तपस्विनी साध्वी श्री पन्नांजी भगवतगढ़ पावस प्रवास संपन्न कर गुरू दर्शनार्थ सिसाय प्रस्थान करना चाहती थी। उसके लिए हरियाणा और राजस्थान के मानचित्र में सड़क मार्ग देखा। वह बहुत लंबा होने के कारण सिसाय पहुंचना अशक्य था। शीघ्र दर्शन करने की लालसा ने पगडंडी का मार्ग चुन लिया। पगडंडी के मार्ग से छह मील की पदयात्रा (विहार) करके साध्वी पन्नाजी गोलकावास पहुंची, ग्राम बाहर श्मशान भूमि के पास बने एक कक्ष में ठहरी। यह समाचार एक ब्राह्मण पत्नी को ज्ञात हुआ। वह दर्शनार्थ श्मशान भूमि

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

में आई, भाव भरे स्वरों में ग्राम के अन्दर चलने का आग्रह किया। उसी समय, संयोगवश दो अज्ञात राहगीर गुजरे। साध्वी श्री पन्नाजी ने उनसे पूछा- क्या आप नाहरगढ़ की ओर जा रहे हैं? उनके स्वीकृति सूचक उत्तर को सुनकर आपने भी बिहार करने का निश्चय किया और सामान कंधे पर रखकर चलने को तैयार हो गई किन्तु साध्वियों को अपरिचित ब्राह्मणी के आग्रह के आगे विहार स्थगित करना पड़ा। ब्राह्मणी के अनुनय से विस्मित साध्वियों ने पूछा-'क्या तुम हमें जानती हो? ब्राह्मणी ने कहा- 'नहीं'।

क्या तुमने कभी जैन साधुओं को देखा है?

उत्तर मिला - 'नहीं'

इस उत्तर से विस्मयाभिभूत साध्वियों ने फिर प्रश्न किया- 'हमसे कभी परिचित नहीं, फिर हमें गांव में क्यों ले जाना चाहती हो? तुम्हे कैसे पता लगा कि साध्वियां इस ग्राम में आ रही है और श्मशान भूमि के परिपार्श्व में विश्राम कर रही हैं? ब्राह्मणी ने रहस्य की परत खोलते हुए कहा- 'महाराज! आज रात्रि को स्वप्न में ही आपके आगमन का पता चल गया। रात स्वप्न में मैंने एक श्वेत वस्त्रधारी पुरुष (आचार्य भिक्षु) को देखा। उन्होंने मुझसे कहा आज तुम्हारे गांव में चार साध्वियां आएंगी, उन्हें तुम रोक लेना, आगे मत जाने देना। इसलिए मैं आज आपको आगे जाने नहीं दूंगी। आपको आज मेरे घर रूकना ही होगा। 'साधि वयों ने ब्राह्मणी के इस अनुरोध को स्वीकार किया। दो घंटे पश्चात् सूचना मिली उन अज्ञात पथिकों ने जंगल में शेर को मारा है और वे मांस खा रहे हैं। ब्राह्मणी ने कहा- 'महाराज! यदि आप उनके साथ चले जाते तो अवश्य ही वे आपको भी अपना शिकार बना लेते। जैन साध्वियों को न बचा पाने की पीड़ा मुझे जीवन भर सताती रहती। उस अज्ञात शक्ति ने अवश्य ही हमारा महान उपकार किया है। साध्वियों की हत्या से हमारा गांव कलंकित हो जाता और न जाने संतों की हत्या कैसे दुष्परिणाम लाती। यदि मुझे स्वप्न में यह आभास नहीं होता तो आज अनर्थ अवश्यंभावी था। उस अज्ञातशक्ति ने इस गांव पर कलंक नहीं लगने दिया, जो कभी मिट नहीं पाता। उस शक्ति के प्रति हम हृदय से आभारी है। '

स्वामीजी ने दी श्रवण शक्ति : साध्वी सुगनांजी की आंखों में कई वर्षों से ज्योति नहीं थी। एक दिन रात्रि में अचानक उन्हें सुनना बन्द हो गया। इससे उनके मन में चिन्तन आया-आंखों से मुझे दिखाई नहीं दे रहा है और कानों से सुनना भी बंद हो गया है, अतः अब मुझे शीघ्रातिशीघ्र संलेखना तप एवं अनशन

करके अपना कल्याण कर लेना चाहिए। कुछ समय बीता कि उन्हें स्वप्न में ऐसा आभास हुआ सामने स्वामीजी आकर खड़े हो गए और कहने लगे 'अभी अनशन मत करना, सफल नहीं होगा। ' साध्वी श्री बोली-तो मैं फिर क्या करूं? या तो आंखें खुल जाएं या सुनाई देने लग जाए। ' स्वप्न में स्वामी जी ने कहा-आंखों में तो ज्योति नहीं आ सकेगी क्योंकि निकाचित कर्म बंधे हुए हैं। फिर कहा-क्या मेरी आवाज सुनाई देती है? उसी क्षण उन्हें सुनाई देने लग गया। फिर सामने कोई भी दिखाई नहीं दिया। ' यह चामत्कारिक घटना वि.सं. 2038 लाडनूं में घटित हुई। इस प्रकार दिव्यात्माओं ने स्वप्न में साध्वी श्री को संकेत देकर उन पर बड़ा उपकार किया।

स्वप्न में संथाराः मृत्यु बनी महोत्सव :प्रातः कालीन ब्रह्ममुहूर्त का समय, गहरी निद्रा में सुप्त श्रीमती सुन्दरदेवी बागरेचा को स्वप्न में एक तेजस्वी साधु सामने खड़े दिखाई दिए। उनके साथ एक शिशु मुनि भी दिखाई दिए। वे उन्हें प्रतिबोध दे रहे हैं। उठो जागो, आयुष्य केवल सात दिन का शेष है? सुन्दरदेवी शांत भाव से बोली-मैं क्या करूं? मेरे लिए क्या करणीय है? उन्हें इस समय स्पष्ट महसूस हो रहा था कि सामने खड़ी दिव्यात्मा आचार्य भिक्षु हैं।

तत्काल उस दिव्य शक्ति का तेजस्वी किन्तु आत्मीय स्वर सुनाई दिया 'हाथ जोड़ों मैं तुम्हें संथारा पचखा रहा हूं। ' सुन्दरदेवी ने हाथ जोड़े और यावज्जीवन चारों आहार का त्याग कर दिया। ज्यों ही नींद खुली, नब्बे वर्षीया सुन्दर देवी अतिरिक्त प्रसन्न एवं आत्मस्थ दिखाई दी। एक ओर अपने इष्ट आचार्य भिक्षु के दर्शन कर वे पुलकित थी, दूसरी ओर श्रावक जीवन के अंतिम मनोरथ की सम्पूर्ति होती देख कृतार्थता का अनुभव कर रही थी। पुत्री गहरीदेवी ने आवाज दी मां उठो! चाय का समय हो गया है। सुन्दर देवी ने सहजता से कहा- ''मैं अब चाय पानी नहीं पीऊंगी और न ही कुछ खाऊंगी। मैंने आज प्रातः भिक्षुस्वामी से संथारा पचख लिया है।'' बेटी की मनुहार ने जब आग्रह का रूप धारण कर लिया तब सुन्दरदेवी ने स्वप्न की सारी बात स्पष्ट रूप से बता दी। बेटी ने भी उस दिन उपवास कर लिया। दूसरे दिन वह पारणा करने के लिए पुनः मां से आग्रह करने लगी 'मां ऐसे स्वप्न में कभी अनशन नहीं हो सकता आप चाय ले लीजिए। ' मां अपने स्वप्न में स्वीकृत संथारे (अनशन) पर अडिग रही। अनशन के चतुर्थ दिवस भिक्षु स्वामी ने साक्षात् उन्हें दर्शन दिए। उन्होंने बताया-'स्वामीजी ने मुझे दर्शन दिए।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मैंने उनको निवेदन किया था कि आप साध्वियों को भी दर्शन दीजिए इस पर वे मौन ही रहे। स्वामीजी के साथ-साथ एक प्रकाशपुञ्ज भी मुझे दिखाई दे रहा था।' अठारह मार्च की पश्चिमरात्रि में जिस समय स्वप्न आया लगभग उसी समय 25 मार्च को संथारा सानन्द सम्पन्न हो गया। (श्रीमती सुन्दर देवी बागरेचा कांकरोली (उदयपुर) के हीरालालजी सोनी की पुत्री एवं कन्हैयालालजी बागरेचा 'एडवोकेट' नमाणा की धर्मपत्नी थी।)

स्वप्न में दादाजी की मृत्यु का पूर्वाभास :वि.सं. 2048, चैत्रशुक्ला रामनवमी को रविवार की छुट्टी होने के कारण देर तक मैं (उषा धारीवाल) सोयी हुई थी। स्वप्न में मुझे सिंह पर सवार माता दुर्गा देवी के दर्शन हुए। मैया दुर्गा देवी उदास होकर मेरे दादाजी से कह रही थी 'गणपत! तुमने जिन्दगी के बहुत बसन्त देख लिए हैं। अब तुम मेरे साथ चलो। तुम्हारे लिए देवलोक में सीट खाली हो गई है। उसी वक्त मेरी निद्रा भंग हो गई। भयभीत होकर मैं रोने लगी। मेरी मां ने रोने का कारण पूछा। मैंने स्वप्न की सारी बात मम्मी को बताते हुए कहा ''मम्मी! दादाजी को दुर्गा अम्बे अपने साथ ले जायेगी। आज के बाद वे हमारे बीच नहीं रहेंगे। देवयोनि में जाकर देवता बनेंगे। ' यों कहते-कहते मेरा गला अवरूद्ध हो गया। मेरे नयनों में निरन्तर निर्झर बहने लगा। मम्मी ने मुझे धैर्य बंधाते हुए कहा 'बेटी! ऐसा कभी नहीं होगा। स्वप्न की बात पर यकीन नहीं किया करते, स्वप्न तो यूं ही आ जाया करते हैं। ऐसे बुरे स्वप्न की बात किसी को मत बताना। बात आई गई हो गई। दोपहर के ठीक 1:45 बजे दादाजी चलकर दुकान से घर आये। पलंग पर बैठकर 5-6 लोटे पानी के पीये। पानी-पीते प्यारे पितामह के प्राण पंखेरू उड़ गये।

आकस्मिक निधन सबके दिलों पर आघात करने वाला साबित हुआ। परिजनों के नयनों में गंगा-यमुना प्रवाहित होने लगी। कुछ देर के बाद मम्मी ने मेरे स्वप्न के बारे में जिक्र करते हुए स्वप्न की सारी घटना बताई तो हकीकत सुनकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। सबने सुनकर कहा-स्वप्न एक वैज्ञानिक सत्य है। ये भूत, भविष्य की खबरें हमको पूर्व सूचना के रूप में देते रहते हैं। हम उस सत्य को स्वीकार करें या अस्वीकार यह हमारी अपनी इच्छा पर निर्भर है किन्तु स्वप्न सर्वथा निरर्थक नहीं होते है। इस बात पर मुझे पूरा विश्वास हो गया।

'आई हैव नो वाईस' नामक मनोविज्ञान के ग्रंथ में श्रीमती नाडिन डोरिस का स्वप्न है। उसने विवाह से पहले स्वप्न देखा कि वह कमरे में बहुत

व्यक्तियों के साथ खड़ी है, अचानक एक फोन से विवाह का प्रस्ताव आया। उसने स्वीकार कर लिया, खड़े लोगों को शादी के लिए आमन्त्रित भी कर दिया। नींद खुलने पर वह स्वप्न पर हंसने लगी। कुछ दिनों बाद उसका स्वप्न सच में बदल गया। किंग हैनरी चतुर्थ को किसी प्रेतात्मा ने स्वप्न में बताया कि उसकी शीघ्र हत्या कर दी जाएगी। इसी भांति स्कॉटलैण्ड के राजा जेम्स को स्वप्न में चेतावनी मिली कि वह इंगलैण्ड पर हमला करेगा तो स्वयं ही मारा जाएगा। जेम्स ने चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया, उसकी मृत्यु युद्ध में हो गई । नेपोलियन, जब सेण्टहेलेना में कैद था तो उसको स्वप्न आया कि उसकी मृत्यु अमुक तारीख को हो जाएगी और ठीक वैसा ही घटित हुआ।

स्वप्नों पर विश्वास भारतीय संस्कृति में अति प्राचीनकाल से ही जनमानस रखता आया है। प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की माता मरूदेवा, महारानी यशस्वती एवं प्रपौत्र राजा श्रेयांस ने स्वप्न देखे। सम्राट और साम्राज्ञियों ने, शिखर पुरूषों ने, बुद्धिजीवियों ने, दार्शनिकों ने, लेखकों ने, शरीरविज्ञानियों ने, मनोवैज्ञानिकों ने, ज्योतिषियों ने इसके स्वरूप को समझने की कोशिश की है।

स्वप्नों का बहुत बड़ा विज्ञान है। स्वप्न-शास्त्र एक गूढ एवं रहस्यमयी विद्या है। यह जीवन-दिशा को बदलने वाला, नीरस को सरस और सरस को नीरस बना देता है। यदि स्वप्न प्रतीकों को समझकर उसकी सांकेतिक भाषा को कोई जान ले तो उससे बहुत फायदा उठाया जा सकता है। स्वप्न का सत्यांश जीवन की दिशा बदल सकता है। स्वप्न अच्छा हो या बुरा यदि सही जानकारी हो तो अनिष्ट से बचा जा सकता है। इष्ट को संपादित कर जीवन में चार चांद लगाये जा सकते हैं। हमारा अवचेतन मन यदि परिष्कृत हो तो मनुष्य स्वप्नों के परिणामस्वरूप संभावित घटनाओं का पूर्वाभास कर भविष्यवाणी करने की क्षमता का विकास कर सकता है। पुनर्जन्म का साक्षात्कार भी स्वप्नों के जरिये (माध्यम से) संभव है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

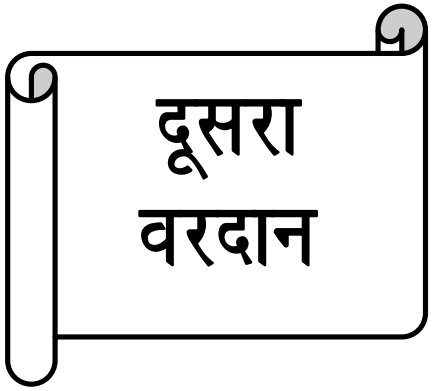

जैन संस्कृति में स्वप्न एवं स्वप्नफल

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दूसरावरदान : जैनसंस्कृति में स्वप्न एवं स्वप्न फल

स्वप्न से घटित अलौकिक चमत्कारों से संबंधित अनेक आगम-सूक्तियां, जातक कथाएं, वैदिक ऋचाएं पौराणिक कथाएं एवं दिव्य अनुभूतियां विश्वभर में प्रचलित है। अधिकांश स्वप्न शुभाशुभ घटनाओं के प्रतीक होते हैं। जीवन के उत्थान-पतन के साथ स्वप्नों का गहरा संबंध है। प्राचीन ऋषि-महर्षियों ने स्वप्नफल की जो रेखाएं निश्चित की है, उनके पीछे सुदृढ़ आधार है। इसलिए जनमानस स्वप्न विज्ञान पर विश्वास करता हैं, उनके हृदयग्राही फलितार्थ को मानती हैं। स्वप्न-विज्ञान सार्वभौम एवं सम्प्रदायातीत है। हमारा आज का स्वप्न भविष्य का भाग्य बन जाता है। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर स्वप्नों की बढ़ती लोकप्रियता ही इनकी विश्वसनीयता का प्रमाण हैं। स्वप्न की शुभता मन में नया उजास और उल्लास भरती है। हर दिशा को आलोक से आलोकित कर रोशनी से जीवन को सराबोर करती हैं।

शुभ स्वप्नों से आबाद जीवन स्वर्ग है। इनके दीखने से प्रगति के नित-नये आयाम खुलते हैं, अनगढ़ प्रस्तर में ये प्राण फूंकते हैं। ये सुख-समृद्धि के पर्याय हैं। हमारे सम्पूर्ण जीवन-चक्र को ये प्रभावित करते हैं। ये हमारे जीवन-विकास की ब्रह्म नाड़ी है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष एवं न्याय नीति पर इनका प्रत्यक्ष प्रभाव देखा जा सकता है। सुखद स्वप्न उत्कर्ष का सखा, अन्याय का अरि, वैभव का जनक, प्रसन्नता का पारावार, प्रगति का सहोदर है। जहां 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' के कल्पवृक्ष खिलते रहते हैं। मधुर स्वप्नों की मखमली सेज पर ही मन को बड़ा सुकून मिलता है। जो चित्त समाधि के निमित्त बनते हैं। अशुभ स्वप्न एक शूलों भरी सेज है। इस पर लेटकर आराम की अभिलाषा करना अंगारों से शीतलता की आशा करना है, जिन्दगी के साथ धोखा है। अशुभ स्वप्न त्रास है, संताप है, अभिशाप है। जिस प्रकार गहन समन्दर की असीम गहराई में छिपे मुक्ताओं को पाने के लिए गहरी डुबकियां लगाना जरूरी है, उसी भांति फलितार्थ जानने हेतु शास्त्र मंथन अपेक्षित है।

सपने मनुष्य के अतीत, अनागत एवं वर्तमान में घटित घटनाक्रमों के पूर्व संदेशवाहक सिद्ध होते हैं। यजुर्वेद में भी कहा गया है -'येनेदंभूतंभुवनंभविष्यत्परि-ग्रहीतममृतेनसर्वम्' जब व्यक्ति कठिनाई के दौर से गुजर रहा हो, उस समय उसे किसी संबल की जरूरत होती है। उस समय कोई शुभ स्वप्न दीख पड़े तो उसका साहस और शौर्य सक्रिय हो उठता है। वह पूरे उत्साह और जोश के साथ समस्याओं के महासागर से पार पा सकता है। स्वप्न नीड़ में श्रांत-क्लांत मन पंछी को गहरा विश्राम मिल जाता है। स्वप्न दीखने में जितने छोटे लगते है किन्तु इनका अर्थ, समझना उतना ही कठिन, कठिनतर एवं कठिनतम होता है। स्वप्नों के परिणाम अथवा फलितार्थ जानने की भी जिज्ञासा एवं उत्सुकता सभी में रहती है। प्राचीन ग्रंथों की चाबी हाथ लगते ही इनका शुभाशुभ विज्ञान मुखर हो उठता है। जिन्हें जीवन-व्यवहार में व्यवहृत करने से समस्त आशंकायें समाहित हो सकती है। प्राचीन जैन शास्त्रों के प्रशान्त महासागर में गोते लगाने पर स्वप्न स्वयं अपने रहस्य उजागर करते हैं।

स्वप्न एक के पश्चात् एक आने वाले मानसिक चित्रों की माला है। उनकी समानता मानस-पटल पर अंकित सूक्ष्म दृश्यों से हो सकती है। फल-भेद के अनुसार स्वप्न दो श्रेणियों में विभक्त किये जा सकते हैं -

1. मधुर, प्रिय या शुभस्वप्न 2. अप्रिय अशुभस्वप्न

भारतीय स्वप्न-शास्त्रियों द्वारा स्वीकृत स्वप्न :

शुभ सूचक स्वप्न : कार्य-सिद्धि, शत्रु-नाश, मनोकामना-सिद्धि, सन्तान-सुख, यश-लाभ, विजय-लाभ, स्त्री-सुख, यात्रा-सफलता सूचक।

1. सरस्वती	8. गंगा नदी	15. लक्ष्मी
2. विष्णु	9. सूर्य	16. राम-लक्ष्मण
3. शंकर	10. वणिक्	17. हनुमान
4. चन्द्रमा (हिरण)	11. गरूड	18. कोकिला
5. मित्र	12. पूर्णघट	19. मयूर
6. तोता	13.धर्मराज	20. मछली
7. फलदार वृक्ष	14. रावण	

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अशुभ फलदायी स्वप्न :

1. शूकर	8. मल्ल-युद्ध	15. चंचल स्त्री
2. कुत्ता	9. ढेला	16. चोर
3. लाल लालव पक्षी	10. अंधा-व्यक्ति	17. सियार
4. सुखा-वृक्ष	11. कलह	18. बिल्ली
5. मृत्यु	12. दासी	19. शुक्राचार्य
6. यमदूत	13. मुर्गा	20. दुर्वासा रूप साधु
7. गधा	14. निर्जन मन्दिर	

गर्भस्थ शिशुः शुभ स्वप्न : भरा हुआ कलश, चांदी या रूपये पैसे का घर में आना किसी का रूदन करते दिखाई देना, भगवान की मूर्ति का दिखाई देना, तीर्थ यात्रा करना, ऊपर को चढ़ना, सम्पूर्ण (अखंड) फल का पाना, फूलों का गुच्छा, चावल, सूर्य, चन्द्रमा, मछली, निर्धूम-अग्नि, साधु, मुर्दा जाता हुआ दिखाई देना शुभ-सूचक हैं। किसी को दरिया में से निकालना भी शुभ होता है। गर्भवती स्त्री को शुभ स्वप्न दिखाई दे तो समझो गर्भस्थ जीव अच्छी गति से आया है, पुण्यवान हैं, दीर्घजीवी है।

गर्भस्थ शिशु : अशुभ स्वप्न : बिखरे बालों वाली स्त्री, चारपाई, मकान, पर्वत से गिरते हुए दिखना, खाली बर्तन, चांदी-स्वर्ण आदि का घर से बाहर जाना, भगवद् प्रतिमा का हंसते हुए या टेढ़ा-मेढ़ा दिखाई देना, छत्र टूटते दीखना, सर्प या हाथी का रास्ता रोकना, काला वस्त्रधारी दीखना, दूध का बिखर जाना, कुत्ते, बिल्ली, गीदड़, कौवों की आवाज, उल्लू, लकड़ी का ढ़ेर, फल काटते हुए देखना, फल का घर से बाहर जाना, समुद्र में डूबना, हंसना, दबना, महल का गिरना, सिंहासन डोलते दिखाई देना, नाचते गाते, श्रृंगार किए हुए स्त्री का दिखाई देना, खाना खाते हुए दिखाई देना अशुभ फलप्रद स्वप्न हैं। गर्भस्थ स्त्री को बुरे स्वप्न दिखाई दें तो गर्भस्थ जीव अल्पायु होगा तथा माता-पिता का अनिष्ट करने वाला होगा।

जैन संस्कृति में स्वप्न एवं स्वप्न फल

उत्तम स्वप्न शीघ्र ही मन-मस्तिष्क को अभिभूत कर लेता है। दृष्टा की आंखों में नहीं समाने वाला स्वप्न अपने अद्वितीय तेज के कारण शतगुणित प्रभाव

छोड़े बिना नहीं रहता। उसका आकर्षक दृश्य हर दर्शक पर चुम्बकीय प्रभाव छोड़े बिना नहीं रहता। एक बार जो उन्हें देख लेता है, वह अपने आपको धन्य अनुभव करता है। गुणवत्ता की दृष्टि से उत्तम स्वप्न अपनी अलग पहचान और वैशिष्ट्य रखता है। उसका परिणाम सार्थक, यथार्थ एवं सत्य होने के कारण जीवन पर उसकी अस्मिता प्रमुखता से उभरती है। अतः उत्तम स्वप्नों की अपनी अलग ही पहचान है। उत्तम स्वप्नों से ज्ञात एक नहीं सैंकड़ों स्वप्नों के विवरण मिलते हैं किन्तु यहां उनकी झलक मात्र है।

जैन मान्यतानुसार स्वप्न का फल होना और न होना व्यक्ति के प्रारब्ध पर निर्भर करता है। सपनों का फल लोगों ने अपनी बुद्धि के अनुसार ही निश्चित किया है। लोग जैसा शुभाशुभ भाव निश्चित करके फल कायम करते हैं उनके धारणा के अनुसार फल भी वैसा ही हो सकता है। प्रस्तुत सन्दर्भ में उत्तराध्ययन निर्युक्ति की एक घटना बहुत मार्मिक है। मूलदेव राजकुमार संकट के समय धर्मशाला में एक भिखारी के साथ सो रहा था। दोनों को एक समान स्वप्न आया। पूर्णिमा का चन्द्रमा आकाश में चक्कर काटता हुआ नीचे उतरा और मुंह में प्रवेश कर गया। भिखारी ने एक बाबा से और मूलदेव ने एक स्वप्न-पाठक से इसका फल पूछा। वास्तव में फल वैसा ही हुआ - एक को रोटी मिली ओर दूसरे को राज्य। दोनों के स्वप्न एक ही समान थे किन्तु फल दोनों को भिन्न-भिन्न क्यों मिला? मस्तिष्क में यह प्रश्न अनेक बार दस्तक देता है। जिज्ञासा बुद्धि का पर्याय है। बुद्धि को थोड़ा पैना किया तो चिन्तन उभरा कि शुभाशुभ स्वप्न और शुभाशुभ फल कृत कर्मों पर निर्भर करता है। इससे यह सिद्ध होता है कि लोग जैसा निश्चित करके फल कायम करते हैं उनकी धारणा के अनुसार फल भी वैसा ही हो सकता है। शुभाशुभ कर्मों के कारण वैसे ही निमित्त मिल जाते हैं जो उपादान को प्रभावित करते हैं।

महापुराण में भरत जन्म सूचक स्वप्न : पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान शीतल शयनतल में, अपने यश से अत्यधिक शोभित यशोवती इस प्रकार सो रही थी मानों नवकमलों पर हंसिनी सो रही हो। स्वप्न में उसने एक शैलराज देखा। जिसके तटदेव बालाओं के पैरों के आलक्त से आरक्त थे, जिसकी घाटियों के रन्ध्रों से गम्भीर रूप से जल गिर रहा था। जिसके शिखर सिंहों और श्वापदों की गर्जनाओं से निनादित थे, अपने चन्द्रकान्त मणियों की आभा से जिसने सूर्यबिम्ब को जीत लिया था। जिसने हाथी दांतों स्वर्णराग को निस्तेज कर दिया था। निशा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

के अलंकार भूत चन्द्रमा को पूर्व दिशा से निकलते हुए सूर्य को, भ्रमरों से गूजंते हुए कमलों से युक्त और अद्वितीय पराग से पीले सरोवर को, जो अत्यन्त वेगशील लहरों से दशों दिशाओं में चंचल है, जो जलों के स्खलन से गिरिशिखरों का प्रक्षालन करने वाला है, जिसमें अमर्ष से भरे हुए मत्स्यों और मगरमच्छों से भयंकर समुद्र को देखा। समस्त धरती तल को अपने मुख में प्रवेश करते देखा।

वह बोली-हे पुरूष श्रेष्ठ, सुनिये। मैनें रात्रि में स्वप्न में सुमेरू पर्वत, चन्द्रमा, सूर्य, सरोवर, समुद्र और निगली जाती हुई धरती को देखा है। यह सुनकर राजा घोषणा करते हैं कि तुम्हारा पुत्र चक्रवर्ती होगा। इन स्वप्नों का निम्न फल होगाः-

1. मंदराचल - महाराजाधिराज होगा।
2. चन्द्रमा - सौम्य मुखवाला, कान्ता का सुख पाने वाला होगा।
3. सूर्य - शूरवीर होगा।
4. सरोवर - लक्ष्मीपुञ्ज होगा।
5. समुद्र - अपने वंश का सूर्य होगा।
6. पृथ्वी का आहार - छह खण्ड का अधिपति बनेगा।

भगवती सूत्र में चक्रवर्ती जन्मसूचक 14 महास्वप्नों का वर्णन आता है। किन्तु यहां छह-सात महास्वप्नों का विवेचन देखकर सहज ही जिज्ञासा के ज्वार उठने लगते हैं कि यहां सात स्वप्नों का ही वर्णन क्यों? इसका सटीक समाधान स्वप्नसार समुच्चय में इस प्रकार में किया गया है कि तीर्थंकरों की माताओं को 14 महास्वप्न स्पष्ट दिखाई देते है जबकि चक्रवर्ती की माताओं को 14 महास्वप्न अस्पष्ट दिखाई देते है। इस विवक्षा से यहां स्पष्ट दिखाई देने वाले स्वप्नों का ही जिक्र है।

आदिपुराण में श्रेयांस कुमार के स्वप्न : भगवान ऋषभनाथ, नीलांजना की मृत्यु को देखकर विरक्त हुए एवं मुनि दीक्षा 4000 राजाओं के साथ ली। दीक्षा का एक वर्ष पूर्ण होने पर भगवान विहार करते-करते हस्तिनापुर नगर के समीप पहुंचे तब श्रेयांसकुमार ने रात्रि के पिछले प्रहर में निम्नांकित स्वप्न देखे।

1. स्वर्णमय महा शरीर को धारण करने वाला और अतिशय ऊंचा सुमेरू पर्वत देखा।

2. शाखाओं के अग्रभाग पर लटकते हुए आभूषणों से सुशोभित कल्पवृक्ष देखा।

3. प्रलय काल सम्बन्धी सन्ध्या काल के मेघों के समान पीली-पीली अयाल से जिसकी ग्रीवा ऊंची हो रही है, ऐसा सिंह देखा।

4. जिसके सींग के अग्रभाग पर मिट्टी लगी हुई है, ऐसा किनारा उखाड़ता हुआ बैल देखा।

5. जिनकी कान्ति अतिशय देदीप्यमान हो रही है और जो जगत् के नेत्रों के समान हैं, ऐसे सूर्य और चन्द्र देखे।

6. जिसका जल बहुत ऊंची उठती हुई लहरों और रत्नों से सुशोभित हो रहा है, ऐसा समुद्र देखा।

7. अष्ट मंगल द्रव्यधारण कर सामने खड़ी हुई भूत जाति के व्यन्तरों की मूर्तियां देखी। तदनन्तर श्रेयांसकुमार ने प्रातःकाल के समय विनय-सहित राजा सोमप्रभ के पास जाकर उनसे रात्रि के समय देख हुए वे सब स्वप्न ज्यों के त्यों कहे।

पुरोहित ने उन स्वप्नों का कल्याण करने वाला फल कहा। वह कहने लगा है कि हे राजकुमार, स्वप्नों में मेरूपर्वत के देखने से यह प्रकट होता है कि जो मेरूपर्वत के समान अतिशय उन्नत है और मेरू पर्वत पर जिसका अभिषेक हुआ है ऐसा कोई देव आज अवश्य ही अपने घर आएगा। अन्य ये स्वप्न भी उन्हीं के गुणों की उन्नति को सूचित करते हैं। आज उन भगवान के योग्य की हुई विनय के द्वारा हम लोगों के पुण्य का बड़ा भारी उदय होगा। आज हम लोग जगत् में बड़ी भारी प्रशंसा प्रसिद्धि और लाभ सम्पदा को प्राप्त होंगे। इस विषय में कुछ भी सन्देह नहीं है। कुमार श्रेयांस भी स्वयं स्वप्नों के रहस्य जानने वाले हैं। पुरोहित के वचनों से प्रसन्न हुए वे दोनों भाई स्वप्न चर्चा कर ही रहे थे इतने में ही सिद्धार्थ नामक द्वारपाल ने शीघ्र आकर भगवान के हस्तिनापुर पदार्पण की सूचना दी। सुनते ही राजा सोमप्रभ और श्रेयांस कुमार अन्तः पुर, सेनापति व मंत्रियों सहित राजमहल के प्रांगण तक बाहर आये। भगवान को देखकर उन्होंने भक्तिपूर्वक भगवान के चरण कमलों में वंदन किया। उस समय वे हर्ष से सराबोर और भक्ति के भार से प्रणत थे। भगवान का रूप देखकर श्रेयान्स कुमार को जातिस्मरण ज्ञान हो गया। उसने अपने पूर्वजन्म(पर्याय) सम्बंधी संस्कारों से भगवान को आहार देने की सोची। उसे श्रीमती और वज्रजंघ आदि का समग्र वृतान्त याद आ गया। उस भव में उन्होनें चारण ऋद्धिधारी मुनियों को आहार दान दिया, उसका भी उसे स्मरण हो गया। भगवान ऋषभदेव को श्रेयान्स कुमार

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ने राजा सोमप्रभ एवं महारानी लक्ष्मीमती के साथ-साथ आदरपूर्वक प्रासुक इक्षु रस का आहारदान दिया था।

महापुराण में श्रेयांस के स्वप्न : चर्यामार्ग में प्रवृत्त जब वह भगवान ऋषभ आहारार्थ घूमते हैं, तभी राजा श्रेयांस ने हस्तिनापुर में स्वप्न देखा। पलंग पर सोते हुए, अपने नेत्र मिले हुए, रात्रि के अन्तिम प्रहर में सोमप्रभ के अनुज श्रेयांस ने स्वप्न देखा- चन्द्र-सूर्य-महागज-सरोवर-समुद्र-कल्पवृक्ष, बल से उत्कट सिंह अपने बाहुओं से युद्ध को जीतने वाला, शत्रुओं का छेदन करने वाला भार उठाने में समर्थ कंधोवाला, धनुर्धारी महासुभट, पूंछ का पिछला भाग हिलाते हुआ सीगों से उज्ज्वल वृषभ और घर में प्रवेश करते हुए गुफा सहित मन्दराचल को देखा। इस प्रकार दृष्टि के आकर्षण को समाप्त करने वाले स्वप्न-समूह को उसने रात्रि के अन्त में देखा, उसने अपने मन में विचार किया। प्रभात के समय उसने महाआयु वाले अपने भाई सोमप्रभ से संक्षेप में कहा। यह सुनकर कुरूनाथ स्वप्नफल का कथन करता है- कोई विश्व का उत्तम देव तुम्हारे घर आयेगा।

हरिवंश पुराण के अनुसार श्रेयांस के स्वप्न : राजा सोमप्रभ और श्रेयान्स ने उसी रात में चन्द्रमा, इन्द्र की ध्वजा, मेरू पर्वत, बिजली, कल्पवृक्ष, रत्नद्वीप, विमान और पुरूषोत्तम भगवान ऋषभदेव ये आठ स्वप्न देखे। विद्वानों ने उक्त स्वप्नों का फल इस प्रकार बताया कि कुमुदबन्धु-चन्द्रमा के समान पृथ्वी पर आनन्द को बढ़ाने वाला तथा उत्कृष्ट कान्ति को धारण करने वाला हमारा कोई बन्धु आज ही यहां आयेगा। वह उत्तम यशरूपी ध्वजा का धारक होगा, बिजली के समान क्षण-भर ही अपना शरीर दिखलाने वाला होगा, धर्मरूपी रत्नों का महाद्वीप होगा और वैमानिक जगत् स्वर्ग-लोक से च्युत होगा। भगवान ऋषभदेव ने जिस प्रकार स्वप्न में दर्शन दिया है क्या आज वे स्वयं ही दर्शन देंगे।

भगवान् आदिनाथ के मोक्षगमन सूचक स्वप्न : सज्जनों को मोक्षरूपी उत्तम-फल की प्राप्ति कराने के लिये भगवान् ने अपने गणधरों के साथ-साथ एक हजार वर्ष और चौदह दिन कम एक लाख पूर्व बिहार किया। जब आयु के 14 दिन बाकी रह गये तब योगों का निरोध कर पौष मास की पूर्णिमा के दिन '' श्री शिखर'' और ''सिद्ध शिखर'' के बीच में कैलास पर्वत पर जाकर वे विराजमान हुए।

1. चक्रवर्ती भरत के स्वप्न : उसी दिन महाराज भरत ने स्वप्न में देखा कि महामेरू पर्वत अपनी लम्बाई से सिद्ध क्षेत्र तक पहुंच गया है।

2. युवराज अर्ककीर्ति का स्वप्न : उसी दिन युवराज अर्ककीर्ति ने स्वप्न में देखा कि एक महौषधि का वृक्ष मनुष्यों के जन्म रूपी रोग को नष्ट कर फिर स्वर्ग को जा रहा है।

3. गृहपति के स्वप्न : उसी दिन गृहपति ने देखा कि एक कल्पवृक्ष निरन्तर लोगों के लिए उनकी इच्छानुसार अभीष्ट फल देकर अब स्वर्ग जाने के लिए तैयार हुआ है।

4. प्रधानमन्त्री के स्वप्न : प्रधानमन्त्री ने देखा कि एक रत्नदीप, ग्रहण करने की इच्छा करने वाले लोगों को अनेक रत्नों का समूह देकर, अब आकाश में जाने के लिए उद्यत हुआ है।

5. सेनापति के स्वप्न : सेनापति ने देखा कि एक सिंह वज्र के पिंजरे को तोड़ कर कैलाश पर्वत को उल्लंघन करने के लिए तैयार हुआ है।

6. अनन्त वीर्य के स्वप्न: जयकुमार के विद्वान पुत्र श्रीमान अनन्त वीर्य ने देखा कि चन्द्रमा तीनों लोकों को प्रकाशित कर ताराओं सहित जा रहा है।

7. सुभद्रा के स्वप्न : सोती हुई सुभद्रा ने देखा कि यशस्वती और सुनन्दा के साथ बैठी हुई इन्द्राणी बहुत देर तक शोक कर रही है।

8. चित्रांगद के स्वप्न :बनारस के राजा चित्रांगद ने घबराहट के साथ यह स्वप्न देखा कि सूर्य पृथ्वी तल को प्रकाशित कर आकाश की ओर उड़ा जा रहा है।

स्वप्न फल पृच्छा : इस प्रकार भरत आदि सब लोगों ने स्वप्न देखे। सूर्योदय होते ही पुरोहित से सबने उनका फल पूछा। पुरोहित ने कहा कि ये सभी स्वप्न कर्मों को बिल्कुल नष्ट कर भगवान ऋषभदेव का अनेक मुनियों के साथ-साथ मोक्ष जाना सूचित कर रहे हैं। पुरोहित सबको स्वप्न-फल बता रहा था कि इतने में ही आनन्द नामक व्यक्ति भगवान के समाचार सुनाने लगा। उसने बताया कि भगवान ने अपनी दिव्यध्वनि का संकोच कर लिया है, इसलिए सम्पूर्ण सभा हाथ जोड़कर बैठी है। यह सुनते ही भरत चक्रवर्ती बहुत ही शीघ्र सब लोगों के साथ-साथ कैलास पर्वत पहुंचें। भगवान को तीन प्रदक्षिणाएं दी। स्तुति की और भक्तिपूर्वक भरत चक्रवर्ती 14 दिन तक भगवान की पूजा करते ही रहे। माघ कृष्णा चतुर्दशी के दिन सूर्योदय के शुभ मुहूर्त्त में और अभिजित नक्षत्र में भगवान ऋषभदेव पूर्व दिशा की ओर मुंहकर अनेक मुनियों के साथ-साथ पर्यंकासन में विराजमान हुए। उन्होंने तीसरे-सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाति नामक शुक्ल ध्यान से तीनों

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

योगों का निरोध किया और फिर अन्तिम गुणस्थान में ठहरकर पांच ह्रस्वाक्षरों के उच्चारण प्रमाण काल में शुक्लध्यान से अघाति कर्मों का नाश किया। औदारिक, तैजस और कार्मण इन तीनों शरीरों के नाश होने से वे सिद्ध, बुद्ध मुक्त हो गये।

पद्म पुराण में श्री लक्ष्मण जन्म सूचक स्वप्न : अतिशय सुन्दरी सुमित्रा रानी ने स्वप्न देखे। उसने देखा कि लक्ष्मी और कीर्ति आदरपूर्वक, जिनके मुख पर कलश रखे हुए थे तथा जिनमें सुन्दर जल भरा हुआ था ऐसे कलशों से सिंह का अभिषेक कर रही है। फिर देखा कि मैं स्वयं किसी ऊंचे पर्वत के शिखर पर चढ़कर समुद्र रूपी मेखला से सुशोभित विस्तृत पृथ्वी को देख रही हूँ। इसके बाद उसने देदीप्यमान किरणों से युक्त सूर्य के समान सुशोभित, नाना रत्नों से खचित तथा घूमता हुआ सुन्दर चक्र देखा। इन सब स्वप्नों को देखकर वह मंगलमय वादित्रों के शब्द से जाग उठी। तदनन्तर उसने बड़ी विनय से जाकर अत्यंत मधुर, शब्दों द्वारा पति के लिए स्वप्न-दर्शन का समाचार सुनाया। इसके उत्तर में राजा दशरथ ने बताया कि हे उत्तम सुख को धारण करने वाली प्रिये! तुम्हारे ऐसा पुत्र होगा कि जो युग का प्रधान होगा। शत्रुओं के समूह का क्षय करने वाला होगा, महातेजस्वी तथा अद्भुत चेष्टाओं का धारक होगा। पति के इस प्रकार कहने पर जिसका चित्त आनन्द से व्याप्त हो रहा था ऐसी सुमित्रा रानी अपने स्थान पर चली गयी। उस समय वह समस्त लोक को ऐसा देख रही थी मानों नीचे ही स्थित हो।

उत्तर पुराण में राम-लक्ष्मण जन्म सूचक स्वप्न : भरतक्षेत्र के बनारस नगर में राजा दशरथ राज्य करते थे। उनकी सुबाला नाम की रानी थी। उसने शुभ स्वप्न देखे और उसी के गर्भ से फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी के दिन मघा नक्षत्र में सुवर्णचूल नाम का देव जो कि मन्त्री के पुत्र का जीव था, होनहार बलभद्र हुआ। उसकी तेरह हजार वर्ष की आयु थी, राम नाम था। उन्हीं राजा दशरथ की एक दूसरी रानी थी। उसने सरोवर, सूर्य, चन्द्रमा, धान का खेत और सिंह - ये पांच महाफल देने वाले स्वप्न देखे और उसके गर्भ से माघ शुक्ला प्रतिपदा के दिन विशाखा नक्षत्र में मणिचूल नाम का देव जो कि मन्त्री के पुत्र का जीव था उत्पन्न हुआ। उसके शरीर पर चक्र का चिह्न था, बारह हजार वर्ष की उसकी आयु थी और लक्ष्मण उसका नाम था।

राजा दशरथ का स्वप्नः सीता हरण : महाराज दशरथ ने स्वप्न देखा है कि राहु रोहिणी को हरकर दूसरे आकाश में चला गया है और उसके विरह में चन्द्रमा

अकेला ही वन में इधर-उधर भ्रमण कर रहा है। स्वप्न देखने के बाद ही महाराजा ने पुरोहित से पूछा कि इस स्वप्न का क्या फल है? पुरोहित ने उत्तर दिया कि आज मायावी रावण सीता को हरकर ले गया है और स्वामी रामचन्द्र उसे खोजने के लिए शोक से आकुल हो वन में स्वयं भ्रमण कर रहे हैं।

महासती सीता के स्वप्न (पुत्र जन्म) : किसी दिन सीता विमान तुल्य भवन में शरद् ऋतु की मेघमाला के समान कोमल शय्या पर सुख से सो रही थी कि उस कमल लोचना ने रात्रि के पिछले प्रहर में स्वप्न देखा और दिव्य वादित्रों के मंगलमय शब्द से वह जागृत हो गई। तदनन्तर अत्यन्त निर्मल प्रभात के होने पर संशय को प्राप्त सीता शरीर संबंधी क्रियाएं करके सखियों सहित पति के पास गई। तब सीता राम से पूछने लगी कि हे नाथ! आज मैंने जो स्वप्न देखा है, हे विद्वन्! आप उसका फल कहने के लिए योग्य हैं। मुझे ऐसा जान पड़ता है कि शरद् ऋतु के चन्द्रमा के समान जिनकी कान्ति थी, क्षोभ को प्राप्त हुए सागर के समान जिनका शब्द था, कैलाश के शिखर के समान जिनका आकार था, जो सब प्रकार के अलंकारों से अलंकृत थे, जिनकी उत्तम दाढ़े कान्तिमान एवं सफेद थी और जिनकी गर्दन की उत्तम जटाएं सुशोभित हो रही थी। ऐसे अत्यंत श्रेष्ठ दो अष्टापद मेरे मुख में प्रविष्ट हुए हैं। दूसरे स्वप्न में मैंने देखा है कि मैं वायु से प्रेरित पताका के समान अत्यधिक सम्भ्रम से युक्त हो पुष्पक-विमान के शिखर से गिरकर नीचे पृथिवी पर आ पड़ी हूं। तदनन्तर राम ने कहा कि वरोरू! अष्टापदों का युगल देखने से तू शीघ्र ही दो पुत्र प्राप्त करेगी। हे प्रिये! यद्यपि पुष्पक विमान के अग्रभाग से गिरना अच्छा नहीं है तथापि चिन्ता की बात नहीं है, क्योंकि शान्तिकर्म तथा दान करने से पाप ग्रह शान्ति को प्राप्त हो जायेंगे।

महासती राजीमती का स्वप्न : भोजकुल के राजन्य उग्रसेन की पुत्री राजीमती को अरिष्टनेमि के योग्य समझ विवाह का प्रस्ताव रखा। मूल धनवती का जीव अपराजित विमान से च्युत होकर राजीमती के रूप में उत्पन्न हुआ। वरयात्रा विवाह मंडप के पास आई, करूण शब्द सुने।

अरिष्टनेमि ने कहा – जहां हजारों मूक और दीन निरपराध प्राणियों का वध किया जाता है। ऐसे विवाह से क्या जो संसार परिभ्रमण का हेतु बनता है? सारथी ने नेमिकुमार के अभिप्राय को जानकर प्राणियों को मुक्त कर दिया। नेमिकुमार को विरक्त और मुड़ते हुए देखकर राजीमती मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पड़ी। चेतना आने पर राजीमती बोली – सखियो! आज स्वप्न में देव, दानवों

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

से घिरा हुआ एक दिव्य पुरुष द्वार पर खड़ा दिखाई दिया जो ऐरावत हाथी पर आरुढ़ था। तत्क्षण वह सुमेरु पर्वत पर चढ़ गया और सिंहासन पर बैठ गया। अनेक लोग वहां आए, मैं भी वहां गयी। वह शारीरिक और मानसिक दुःखों को दूर करने वाले कल्पवृक्ष के चार-चार फल सबको दे रहा था। मैंने कहा – 'भगवन्! मुझे भी ये फल दें। मुझे भी उन्होंने ये फल दिए। इसके बाद मेरी आँख खुल गई। ' सखियों ने कहा – 'प्रिय सखी! वर्तमान में कटु लगने पर भी यह स्वप्न परिणाम में सुन्दर फल देने वाला है। '

कालान्तर में, दीक्षा के 54 दिन बाद अन्यत्र विचरण करके रेवन्तगिरी के सहस्राम्र वन के उद्यान में आए। आसोज की अमावस्या को शुभ अध्यवसायों द्वारा तेले की तपस्या में भगवान् को कैवल्य उत्पन्न हो गया। राजीमती ने स्वप्न में जिस दिव्य पुरुष को चार फल देते हुए देखा, वह स्वप्न साकार हो गया क्योंकि उसे कल्पवृक्ष के चार फलों की भांति चार महाव्रत (चातुर्याम) मिल गए। भगवान अरिष्टनेमि रेवत पर्वत पर सिद्ध, बुद्ध मुक्त हो गए। रथनेमि और राजीमती भी सिद्ध हो गए।

नवांगी टीकाकार अभयदेव सूरि के स्वप्न :वि. सं. 1120-1128 से नवांगी टीकाकार अभयदेव सूरि का शरीर एक बार कुष्ट रोग से ग्रसित हो गया। रुग्णावस्था में लेटे थे तब उन्हें स्वप्न आया – "सामने नौ सूत की गट्टियां उलझी हुई पड़ी हैं और मैं इन्हें सुलझा रहा हूँ।" आराधना से आकृष्ट शासन देवी ने स्वप्न का भेद खोलते हुए कहा – आप नव अंगों की टीका करने का संकल्प कर लीजिए रोग अपने आप शान्त हो जाएगा। उन्होंने वैसा ही किया। स्वस्थ हो गये। नव अंगों की टीका की। वि.सं. 1088, अभयदेव सूरि को नैरन्तरिक आचाम्ल तप व रात्रि जागरण से कुष्ट रोग हो गया। विरोधीजनों में अपवाद प्रसारित हुआ – कुष्ट रोग उत्सूत्र की प्ररुपणा का प्रतिफल है। शासन देवी रुष्ट होकर उन्हें दण्ड दे रही है। रात्रि के समय उन्होंने धरणेन्द्र का स्मरण किया। शासन हितैषी धरणेन्द्र ने निद्रालीन उनके शरीर को चाटकर स्वस्थ कर दिया। स्वप्नावस्था में आचार्य अभयदेव को प्रतीत हुआ – विकराल काल महादेव ने मेरे शरीर को आक्रान्त कर लिया है। इस स्वप्न के आधार पर आचार्य अभयदेव ने सोचा–"मेरा आयुष्य क्षीणप्रायः है, अतः अनशन कर लेना उचित है।" स्वप्नावस्था में आचार्य अभयदेव के सामने धरणेन्द्र पुनः प्रकट होकर बोले – मैंने ही आपके शरीर को चाट कर कुष्ट रोग को शान्त कर दिया है।"

विवेकदीप आचार्य श्री भिक्षु जन्मसूचक स्वप्न :जब आचार्य श्री भिक्षु गर्भस्थ हुए, माता दीपांजी ने सिंह का स्वप्न देखा। जैन परम्परा में इस स्वप्न को बहुत महत्त्वपूर्ण माना गया है और 14 महास्वप्नों में गिना गया है। दीपांबाई जब भीखणजी को दीक्षा की अनुमति देने से इन्कार करने लगी तब आचार्य रुघनाथ जी ने समझाते हुए कहा – 'बहिन! तुम्हारा स्वप्न मिथ्या नहीं होगा। दीक्षा लेकर तुम्हारा पुत्र भीखण सिंह की तरह गूंजेगा। अवश्य ही वह भावितात्मा अणगार होगा। ' आचार्य रुघनाथ जी की वह स्वप्न भविष्यवाणी शतशः सत्य निकली। वे चारित्रात्माओं के प्रकाश-स्तम्भ, तत्त्वज्ञों के सम्राट् एवं तेरापंथ के भाग्य विधाता एवं संस्थापक बने।

प्रज्ञा पुरूष जयाचार्य की माता के स्वप्न : जयाचार्य की माता कल्लूजी ने स्वप्न देखा- एक कलकल करती सुनहरी सरिता का प्रवाह उसके मुंह में आ रहा है। माता कल्लू जी उसे गटक-गटक कर पी रही है, एक देवविमान से शिशु कह रहा है - मां मैं तुम्हारी गोद में आना चाहता हूं। मैं आठवें देवलोक से आ रहा हूं। मेरा ध्यान रखना, सावधान रहना। मां- आओ शिशु शीघ्र आओ, आनंद से आओ, विलंब मत करो उसके बाद माता कल्लू जी की नींद खुल गई सवा नौ माह के पश्चात् जयाचार्य का जन्म हो गया।

प्रज्ञा पुरूष जयाचार्य के स्वप्न : जयाचार्य ने अनेक स्वप्न देखे। उन्हें भाषा का परिधान देकर कागज की धरती पर उतारा। वे उनके चेतन मन के द्वन्द्वों के अवचेतन द्वारा प्रदत्त समाधान भी हो सकते हैं तथा दिव्य आत्माओं द्वारा प्रदत्त संकेत भी हो सकते हैं या मानसिक प्रतिबिम्ब भी। जयाचार्य सूक्ष्म जगत की यात्रा में निकले हुए यात्री थे अतः उनको अनेक स्वप्नों में देवकृत आभास हुए थे। स्वयं जयाचार्य ने भी स्वप्न के बारे में लिखा है– निश्चयार्थ सर्वज्ञो जानाति। वि. सं. 1904 मार्गशीर्ष शुक्ला पंचमी, दूदू (राज.) ग्राम में पश्चिम रात्रि के समय जयाचार्य ने एक स्वप्न देखा। उन्हें स्वामी भीखणजी सामने खड़े दिखाई दिए। उनसे जयाचार्य ने पूछा– इस समय संघ में सम्यक्त्व, देवव्रत और चारित्र है या नहीं ?स्वामी ने कहा–तीनों ही हैं, परन्तु यत्र-तत्र विराधना भी होती है। प्रायश्चित कर लेने पर शुद्धि होती है।

जयाचार्य – आगामी पीढ़ी के साधु 'श्रद्धा और आचार की जोड़' तथा भ्रमविध्वंसन' आदि ग्रंथों को पढ़कर क्या ऐसा सोचेंगे कि हमारे पूर्वज महान हुए हैं ?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वामीजी – 'सचमुच वे ऐसा सोचेंगे। '

जयाचार्य – 'भावी आचार्यों के विषय में कुछ बतलाइये। '

स्वामीजी – 'तेरहवां आचार्य प्रभावशाली होगा। '

जयाचार्य – क्या पूर्वज आचार्यों जैसा ही?

स्वामीजी – 'नहीं, वह तो अत्यन्त प्रभावशाली होगा। ' इस स्वप्न के पश्चात् जयाचार्य जाग उठे।

जयाचार्य के भविष्यगामी स्वप्न :

आचार्य श्री भिक्षु ने स्वप्न में जयाचार्य को लिखाया – पश्चिम महाविदेह में अमरकंका नगरी में सूर्यकरण आचार्य केवली 21 हजार साधु एवं 31 हजार साध्वियां जिनकी आज्ञा में हैं। 3100 साधु और 6100 साध्वियां उस स्थानक (भवन) में विराजित थे। श्रावक-श्राविका, देव-देवियों के समूह में एक अमृतघोष शिष्य ने 3 ज्ञान, 14 पूर्वों सहित आचार्य के सन्मुख प्रश्न पूछा – अभी भरत क्षेत्र में आचार्य कौन है? जब केवली ने कहा – जयाचार्य है।

तब उन्होंने पूछा – भरत क्षेत्र में संपदा अच्छी है। साधु-साध्वियां की नीति आचार पालन करने की अच्छी है। साधु-साध्वियों को आचार्य का आधार है। संयम पालन करने में अच्छी सहायता करते हैं। यह बात पहले सुनी थी या देवों ने तब कही। साधु-साध्वियों, श्रावक-श्राविकाओं ने सुनाने के लिए कही।

केवली से पूछा – पुण्य का उदय तीव्र है, अतिशय भी जबरदस्त है, वह अन्त तक ऐसा ही रहेगा या बढ़ेगा या कुछ फर्क पड़ेगा। तब सूर्यकरण केवली ने कहा – चतुःस्पर्शी पुण्य का उदय तीव्र है। क्षय नहीं करेंगे तो अतिशय बढ़ने का स्थान है तब अमृतघोष शिष्य ने पूछा – पुण्य क्षय कैसे होता है और कैसे नहीं होता ?

तब केवली बोले –प्रथम न्याय नीति अच्छी रखें। इनमें राग के वशीभूत होकर पक्षपात न करें तो पुण्य क्षय नहीं होता है। जब मैंने (आचार्य भिक्षु ने) पूछा – पुण्य क्षय न हो और दिन-रात अतिशय कैसे बढ़े? यह बात आप बताइये। तब केवली ने कहा– आचार्य का पद बड़ा है। आचार्य की पदवी के गुण भी बड़े हैं, जो तीव्र पुण्य का स्वामी है वह नीच संगति न करे जिससे अतिशय घटता है जब मैंने (आचार्य श्री भिक्षु ने) पूछा – नीच संगति कैसे? केवली ने कहा–स्त्रियों तथा साध्वियों को सेवा कराना तथा मर्जी रखनी पड़े तो उनका गुण देखना, संघ, संघपति के प्रति दृढ़ आस्था, दूसरों का परिचय मन से न करे ये दो गुण तो अवश्य चाहिए। तीसरा - आज्ञा के ऊपर दृष्टि रहे, यह तो आवश्यक गुण है।

अमृतघोष शिष्य ने पूछा – आपने जो बातें बतलाईं हैं वे क्रियान्वित कर लेगा क्या? तब बोले–पुण्य जबरदस्त है अतः शिक्षा का अमल करने से ही जबरदस्त रहेगा। पात्रता के बिना रुचि नहीं रखनी, पात्र देखकर ही आगे बढ़ना चाहिए। यह शिक्षा भिक्षु स्वामी ने लिखा कर कहा – वि. सं. 1917 माघ शुक्ला सप्तमी को मैंने यह सब बातें केवली के पास जैसी सुनी वैसे कही हैं, यह बातें उन्होंने जैसे ही कही, वैसे ही लिखी, संवत् 1917 फाल्गुन शुक्ला 13 को ब्रह्मेन्द्र ने लिखाई। निश्चय तो केवली जानते हैं, उनके कहने से लिखी है इसलिए केवली कहें वह सत्य है। ब्रह्मेन्द्र है या अन्य कोई है, यह तो वे ही जान सकते हैं। इसमें मेरा दोष नहीं है। जय गणपति ने लिखा है। वि. सं. 1917 आसोज द्वि. को लिखाया कि श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय आदि सभी जीवन पर्यन्त ठीक रहेंगी। अगले मनुष्य के भव में जीवन पर्यन्त सम्पूर्ण इन्द्रियां निर्मल रहेंगी। इहभव तथा अगले भव में बड़े रोग, दीर्घकाल तक नहीं होंगे।

'जय–जय–जयमहाराज' पुस्तक में जयाचार्य के दिव्य स्वप्नों का सांगोपांग चित्रण किया हुआ है। तेरापंथ के नवमाचार्य आचार्य श्री तुलसी की माता वदनांजी ने देवविमान, देववाणी एवं कुमकुम से बने पदचिह्न देखे, सुनें तो तेरापंथ धर्मसंघ की षष्टम् साध्वी प्रमुखा श्री झमकूजी की माता ने लक्ष्मी का अवतरण देखा। साध्वी प्रमुखा श्री झमकूजी ने दीक्षा पूर्व स्वप्न में फलों से लदे आम्रवृक्ष को देखा कालान्तर में दीक्षा हुई और संघ की प्रमुखा बनी।

कोविद कुलालंकार कालूगणी की माता के स्वप्न : वि. सं. 1932, ज्येष्ठ शुक्ला में एक दिन रात्रि के समय माता छोगांजी अर्द्धनिद्रित सी अवस्था में सोयी हुई थी। उन्हें स्वप्न में लगा कि पलंग के पास एक शिशु खड़ा है। वह कह रहा है – मां! मैं तुम्हारी गोद में आना चाहता हूँ मुझे अन्य लोग भी निमन्त्रित कर रहे हैं पर मैं तुम्हारी ही गोद में आना चाहता हूँ। माता छोगांजी अपनी आकांक्षा पूर्ति होती हुई देखकर तत्काल स्नेहिल स्वर में बोल उठी – वत्स! आओ आनन्द से आओ। तुम्हें अपनी गोद में पाकर मैं अपने आपको धन्य मानूंगी और मेरे सब सपने साकार होंगे। शिशु – मां मुझे बुलाने में खतरा भी है, तुम्हारी कसौटी भी है मुझे विश्वास है कि तुम्हारा साहस खतरे का मुकाबला कर सकेगा। माता छोगांजी– तुम निश्चिंत रहो! मैं तुम्हारे लिए हर खतरे को झेल सकती हूँ। जल्दी आओ, विलम्ब मत करो। बातचीत समाप्त हुई, शिशु अदृश्य हो गया। नौ माह पश्चात् कालूगणी का जन्म हुआ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कालूगणी के जन्म के समय जयाचार्य बीदासर में विराज रहे थे। युवाचार्य मधवा उनके साथ थे। वहां नगराजजी बैंगाणी प्रमुख श्रावक थे। जिनके एक देव (भैरुंजी) का इष्ट था। उसके द्वारा दरसाव होने पर उन्होंने जयाचार्य के सम्मुख उपस्थित होकर कहा – आज पूर्व दिशा में चार कोश (आठ मील) की सीमा में एक शिशु का जन्म हुआ है, वह बहुत भाग्यशाली है, वह तेरापंथ का भावी आचार्य होगा। बालक तीन दिन का हो गया। तीसरी रात्रि में एक खतरा उत्पन्न हुआ। माता छोगांजी सो रही थी। आधी रात बीत चुकी थी। उन्होंने स्वप्न में देखा – एक भीमकाय दानव खड़ा है, वह शिशु को ले जाने की चेष्टा में हाथ आगे बढ़ा रहा है। छोगांजी ने शिशु को अपनी गोद में चिपका लिया। रोम-रोम में शौर्य फूट पड़ा। उन्होंने हाथ से एक झटका दिया कि दानव उनके तेज से अदृश्य हो गया।

कमनीय कलाकार कालूगणी के स्वप्न : आचार्य श्री कालूगणी ने एक बार स्वप्न में सूखे वृक्ष को प्रफुल्लित होते देखा। जिसके परिणामस्वरुप संस्कृत वनिका हरी-भरी और प्रफुल्लित बन गई। कालूगणी का स्वप्न उनके जीवन में ही साकार हो गया। आचार्य श्री मघवा द्वारा धर्मसंघ में लगाया गया संस्कृत का वृक्ष, जो सूखा ठूंठ हो गया था, पुनः सिंचन पा हरा-भरा हो गया।

अष्टमाचार्य कालूगणी कहते, जब कभी किसी समस्या का समाधान नहीं मिलता तो मैं उस समय उसको छोड़ देता। रात को स्वप्न में समाधान मिल जाता। ऐसा लगता है कि मानों कोई समाधान प्रस्तुत कर रहा है। आ. श्री कालूगणी ने स्वप्न में छोटे-छोटे सफेद बछड़े देखे और बछड़ियों को भी स्वप्न में देखा। जिस समय गुरुदेव ने ये स्वप्न देखे, उस समय इन्हें बहुत गहराई से नहीं लिया गया किन्तु कालान्तर में उनका फलित आया, तब अनुभव हुआ कि महापुरुषों द्वारा देखे गए सपने किसी न किसी रूप में सत्य हो जाते हैं। उसका फलित यह हुआ कि शासन में अच्छी संख्या में छोटी उम्र के साधु-साध्वियों की वृद्धि हुई। कालूगणी के 27 साल के शासनकाल में श्रमण-श्रमणी सम्पदा का विस्तार हुआ। संघ का पुस्तक-भंडार भी बहुत समृद्ध हुआ। सत्ताइस वर्षों में 410 दीक्षाएं हुई।

समाधि स्थल शोध : विक्रम संवत् 2017, तेरापंथ द्विशताब्दी वर्ष को मनाने के साथ तेरापंथ के प्रवर्तक स्वामी भीखणजी के स्मारक का नवीनीकरण कराने का निश्चय हुआ। चबूतरे (स्मारक) का निश्चित स्थान कौन सा है? यह किसी को भी ज्ञात नहीं था, अतः स्मारक की खोज प्रारंभ हुई। पुराने व्यक्तियों को पूछा

गया, पुरानी बहियां देखी गई, सरकारी कागजों की छानबीन की गई, यहां तक कि कुलगुरु की बहियों को भी निकलवाकर उल्टा-पुल्टा किया गया। उन सबसे चबूतरे का विवरण तो उपलब्ध हुआ परन्तु स्थान का निश्चित निर्धारण नहीं किया जा सका। उक्त खोज में मुख्यतः स्थानीय श्रावक बस्तीमलजी छाजेड़, सम्पतमलजी गधैया (सरदारशहर) मन्नालालजी बरड़िया तथा सोजत रोड़ निवासी रामचन्द्रजी सोनी आदि कई युवक भी अनिश्चय के उस वातावरण को निश्चय में बदल डालने का संकल्प लेकर कार्यरत थे।

एक दिन पश्चिम रात्रि के समय सम्पतमल जी गधैया को स्वप्न में पहाड़ी का एक स्थान दिखाई दिया। उसी के साथ किसी के ये शब्द सुनाई दिये कि चबूतरे को इस स्थान से खोजो। प्रातः तीनों युवक स्वप्न-संकेतित स्थान की खोज मे लग गये। थोड़ी ही देर में उन्होंने वह स्थान खोज निकाला। समस्या फिर भी हल नहीं हुई। चबूतरे का वहां कोई भी अवशेष दिखाई नहीं दिया। वे इधर-उधर देखने का प्रयास कर रहे थे कि एक वृद्ध पुरुष उधर उनके पास आ गया। वह पूछने लगा – यहां जंगल में क्या खोज रहे हो?

युवक बोले–'हम स्वामीजी के चबूतरे की खोज कर रहे हैं। '

वृद्ध–कौन स्वामीजी ?

युवक–'वे स्वामी भीखणजी के नाम से प्रसिद्ध थे। '

वृद्ध–'क्या वे यहीं के थे ?'

युवक–नहीं, वे यहीं पास के गांव कंटालिया के थे। यहां लगभग 157 वर्ष पूर्व दिवंगत हुए थे। उनके शरीर का अग्नि संस्कार इसी स्थान पर कहीं किया गया था। वहां चबूतरा भी बनाया गया था। हम यहां उसी को खोज रहे हैं। '

वृद्ध–मैं बाल्यावस्था में अपने दादा के साथ बहुधा इस पहाड़ी पर आया करता था। उस समय यहां एक टूटा-फूटा सा चबूतरा था। मेरे दादा बतलाया करते थे कि यह एक बहुत बड़े संत का चबूतरा है। उन्होंने नया पंथ चलाया था आदि।'

युवक–'तब तो आपको उसके ठीक स्थान का अवश्य पता होगा। आप हमें बतला सकें तो बड़ी कृपा होगी। '

वृद्ध ने अंगुली - निर्देश करते हुए कहा – 'यह जो थोड़ा सा ऊँचा मिट्टी का टीला (ढूह) दिखाई दे रहा है, यही स्थान होना चाहिए। ' तीनों युवक एक साथ वहां की मिट्टी हटाने में जुट गये। पहले कुछ ईंटें निकलीं, फिर चबूतरे

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

की भींत दिखाई देने लगी। उन्होंने तब वृद्ध को धन्यवाद देने के लिए दृष्टि उठाई तो पता लगा कि वह जा चुका है। पर वह खोजने पर भी नहीं पाया। वहां की सारी मिट्टी हटाई गई तो पूरा चबूतरा निकल आया। वह एक ओर से ढहा हुआ तथा तीन ओर से ठीक था। उस मूल चबूतरे की नींव पर ही सब योजनापूर्वक संगमरमर का दूसरा चबूतरा बना दिया गया। वहां प्रतिवर्ष भाद्रशुक्ला त्रयोदशी को स्वामीजी (आचार्य श्री भिक्षु) का निर्वाण-दिवस बड़े हर्षोल्लास एवं धम्म जागरणा के साथ मनाया जाता है।

भद्रबाहु संहिता के अनुसार :

मृत्यु, रोग, शुभ-अशुभ स्वप्नः आयु के विचार क्रम में रात्रि के विभिन्न प्रहरों में देखे गये स्वप्नों का फल क्रमशः दस वर्ष, पांच वर्ष, पांच दिन तथा दस दिन में प्राप्त होता है। आयु के अतिरिक्त शेष प्रकार के प्रश्नों का फल रात्रि के विभिन्न प्रहरों के अनुसार क्रमशः बारह, छह, तीन और एक महीने में प्राप्त होता है। हाथ, पैर, घुटने, मस्तक, जंघा, कन्धा तथा उदर के स्वप्न में भंगित होने का फल तथा स्वप्न में जिन बिम्ब के दर्शन का फल क्रमशः वर्णन करेंगे। स्वप्न में कर भंग (हाथ का टूटना) देखने से चार महीने में मृत्यु, पदभंग देखने से तीन महीने में, जानुभंग देखने से एक वर्ष में और मस्तक भंग देखने से पांच दिन में मृत्यु होती है। स्वप्न में समस्त जंघा का टूटना देखने से दो वर्ष में मृत्यु और कंधे का भंग होना देखने से दो पक्ष में मृत्यु एवं उदर भंग देखने से एक पक्ष में मृत्यु होती है। स्वप्नदर्शक मन्त्र का प्रयोग कर तथा स्वच्छ और शुद्धतापूर्वक जब रात्रि में शयन करता है तभी स्वप्न का उक्त फल घटित होता है। स्वप्न में राजा के छत्र का भंग देखने से राजा के परिवार के किसी व्यक्ति की मृत्यु होती है। जो व्यक्ति स्वप्न में अपना विलयन तथा गृद्ध और कौओं द्वारा अपना मांस भक्षण देखता है एवं चर्बी का वमन करते हुए देखता है उसकी दो महीने में मृत्यु होती है। स्वप्न में घृत और तेल से स्नात व्यक्ति महिष (भैंसा) ऊँट और गधे के ऊपर सवार हो दक्षिण दिशा की ओर जाता हुआ दिखलाई पड़े तो एक महीने की आयु समझनी चाहिए। यदि रात्रि के समय स्वप्न में सूर्य, चन्द्र आदि ग्रहों का विनाश अथवा पृथ्वी का पतन दिखलाई पड़े तो तीन पक्ष की आयु समझनी चाहिए। यदि स्वप्न में कृष्णवर्ण के भयंकर व्यक्ति घर से खींचकर दक्षिण दिशा की ओर ले जाते हुए दिखलाई पड़े तो शीघ्र ही मरण होता है। जो स्वप्न में अपने को किसी शस्त्र से कटा हुआ देखता है अथवा अस्त्र द्वारा अपनी मृत्यु के दर्शन करता है

अथवा अस्त्रों को ही तोड़ देता है, उसकी मृत्यु बीस दिन में होती है। जो स्वप्न में मृतक के समान लाल फूलों से सजाया हुआ, नृत्य करते हुए दक्षिण दिशा की ओर अपने को बांधकर ले जाते हुए देखता है, वह एक मास से कुछ अधिक जीवित रहता है। जो स्वप्न में रुधिर, चर्बी, पीप (पीब) चमड़ा, घी और तेल से भरे गड्ढ़े में गिरकर डूबता हुआ देखता है, उसकी निश्चित 15 दिनों में मृत्यु होती है। स्वप्न में श्वेत गाय बंधी हुई तथा खूंटे से खुली हुई एवं चलती हुई दिखलाई पड़े तो हमेशा यश प्राप्ति होती है। स्वप्न में नदी, वृक्ष, तालाब, पर्वत, घर तथा मनोहर कलश दिखलाई पड़े तो दुःखी व्यक्ति भी दुःख से मुक्त हो जाता है। स्वप्न में सोफा (शयनासन), भोजन-पान, घर, वस्त्र-भूषण, अलंकार, हाथी तथा अन्य वाहन आदि का दर्शन करता है, उसे सभी प्रकार के सुख उपलब्ध होते हैं। यदि स्वप्न में पताका, तलवार, लाठी, पुष्पमाला आदि को स्वर्ण दीपक के द्वारा देखता हुआ दिखलाई पड़े तो धन की प्राप्ति होती है। जो स्वप्न में बिच्छु, सांप तथा अन्य भयकारक जन्तुओं से निर्भय अवस्था को प्राप्त होते हुए देखे उसे धनलाभ होता है। जो स्वप्न में टट्टी, वमन, मूत्र, रक्त, वीर्य, चर्बी इत्यादि घृणित वस्तुओं को घृणा रहित भक्षण करते हुए देखे उसका शोक नष्ट होता है। जो स्वप्न में बैल, हाथी, महल, पीपल, बड़, पर्वत एवं घोड़े के ऊपर चढ़ते हुए देखे उसकी उन्नति होती है। जो स्वप्न में राजा, हाथी, गाय, सवारी, धन, लक्ष्मी, कामदेव तथा अलंकार और आभूषणों से युक्त पुरुष का दर्शन करता है, उसकी भाग्य वृद्धि होती है। जो स्वप्न में अपने को समुद्र पार करते हुए देखे, महल के ऊपर भोजन करते हुए तथा किसी अभीष्ट देवता को मन्त्र प्राप्त करते हुए देखता है, उसे अद्भुत ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। जिसके स्वप्न में स्वच्छ वस्त्रों और अलंकारों से युक्त सुन्दर स्त्री आलिंगन करती हुई दिखाई पड़े, उसे सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जो स्वप्न में उदयाचल पर सूर्य और चन्द्रमा को उदित हुए देखे उस मनुष्य को धन की प्राप्ति होती है तथा दुःख नष्ट हो जाता है। जो स्वप्न में अपने हाथ और पांव को बंधा हुआ देखता है, उसे पुत्र की प्राप्ति होती है। जो व्यक्ति स्वप्न में अपनी दाहिनी ओर श्वेत सांप को देखता है और स्वप्न दर्शन के पश्चात् तत्काल उठ जाता है, उसे अत्यन्त लाभ होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में अगम्या स्त्री के साथ समागम करते हुए देखता है तथा अपेय, वस्तुओं को पीते हुए देखता है, उसे विद्या, विषय सुख और अर्थ लाभ होता है। जो व्यक्ति चांदी के बर्तन में स्थित फेन सहित दूध पीते हुए देखता है, उसे विद्या, विषयसुख और अर्थ-लाभ

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में स्वर्ण अथवा उसके आभूषण तथा पीत पुष्प या फल को अन्य किसी व्यक्ति द्वारा ग्रहण करते हुए देखता है, उसे स्वर्ण की, स्वर्णाभूषण की प्राप्ति होती है। स्वप्न में कृष्ण वर्ण के बैल, हाथी आदि वाहनों का दर्शन शुभ कारक होता है तथा अन्य कृष्ण वर्ण की वस्तुओं का दर्शन विद्वानों द्वारा निन्दित कहा गया है। स्वप्न में दही के दर्शन से सज्जन-प्रेम की प्राप्ति, गेहूँ के दर्शन से सुख की प्राप्ति, जौ के दर्शन से जिन-पूजा की प्राप्ति एवं पीली सरसों के दर्शन से शुभ फल की प्राप्ति होती है। स्वप्न में शयन, आसन, सवारी, वाहन और मकान का जलना देखने के पश्चात् शीघ्र जग जाने से अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति होती है।

जो स्वप्न में अपने शरीर की नसों से गांव को वेष्टित करते हुए देखे, वह मण्डलाधिप तथा जो नगर को वेष्टित करते हुए देखे तो वह पृथ्वीपति राजा होता है। जो स्वप्न में तालाब में स्थित हो, बर्तन में रखी हुई खीर को निश्चिन्त होकर खाते हुए देखता है, वह चक्रवर्ती राजा होता है। स्वप्न में देवपूजिका, पितर-व्यंतर आदि की भक्ति, या देव का आलिंगन करने वाली नारियां जिस प्रकार का वरदान देती हुई दिखलाई पड़ें, उसी प्रकार का फल समझना चाहिए। जो स्वप्न में श्वेत छत्र, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन एवं कपूर आदि वस्तुओं को प्राप्त करते हुए देखता है, उसे सभी प्रकार के अभ्युदय प्राप्त होते हैं। जो स्वप्न में अपने दांतों को गिरते हुए तथा अपने सिर से बालों को गिरते या झड़ते हुए देखता है, उसके धन और बांधव नाश को प्राप्त होते हैं और शारीरिक कष्ट भी उसे होता है। जो स्वप्न में अपने पीछे दांत वाले और सींग वाले शूकर, बन्दर एवं सिंह आदि प्राणियों को दौड़ते हुए देखता है, उसे महान् भय प्राप्त होता है। जो स्वप्न में अपने शरीर में घी या तेल की मालिश करते हुए देखता है तथा स्वप्न-दर्शन के पश्चात् उसकी निद्रा खुल जाती है, उसे रोगोत्पत्ति होती है। जो स्वप्न में रात्रि के समय लाल रंग के वस्त्रालंकारों से युक्त नारी का सस्नेह आलिंगन करते हुए देखता है, उसे महत्ती विपत्ति का सामना करना पड़ता है। जो स्वप्न में पीत वर्ण के पुष्पों द्वारा अलंकृत तथा पीत वर्ण से वस्त्रों से सज्जित नारी द्वारा अपने को छिपाया हुआ देखे वह शीघ्र ही रोगी होता है। जो स्वप्न में लालवर्ण का मल करते हुए या लालवर्ण का मूत्र करते हुए देखे तथा स्वप्न दर्शन के पश्चात् जाग जाये तो उसका धन नाश होता है। जिसे स्वप्न में विष्टा-मल, रोम, अग्नि, कुंकुम-रोली एवं लाल चन्दन दिखलाई पड़े और स्वप्न-दर्शन के बाद निद्रा टूट जाये उसके धन का

विनाश होता है। स्वप्न में कृष्ण सवारी पर आरूढ़, कृष्ण वस्त्रों से विभूषित एवं उद्विग्न होता हुआ दक्षिण दिशा की ओर जाते हुए देखे तो मृत्यु समझनी चाहिए। यदि स्वप्न में लाल-लाल तलवार धारण किये हुए वीर पुरुषों के जूते का दर्शन या लाभ हो तो यात्रा की सफलता समझनी चाहिए। स्वप्न में जिस व्यक्ति को काली कलूटी विकृत सी भयानक नारी दक्षिण दिशा की ओर खींचती हुई दिखलाई पड़े उसकी निश्चित रूप से मृत्यु समझनी चाहिए। जो स्वप्न में मुण्डित, जटिल, रूक्ष, मलिन और नील वस्त्र धारण किये हुए रूष्ट रूप में अपने को देखता है, उसे भय की प्राप्ति होती है। स्वप्न में दुर्गन्धयुक्त, पीले एवं भयंकर व्याधियुक्त तपस्वी को देखता है, उसे ग्लानि होती है। जो स्वप्न में लता, वृक्ष, छोटे-छोटे गुल्म या वाल्मीकि-बाँबी को अपनी गोद में देखता है और स्वप्न-दर्शन के पश्चात् जाग जाता है, उसके धन का विनाश होता है। स्वप्न में जिसके मस्तक पर खजूर, अग्नि संयुक्त बांस, लता एवं वृक्ष पैदा हुए दिखलाई पड़े उसकी शीघ्र मृत्यु होती है। जो स्वप्न में वक्षस्थल पर उपर्युक्त खजूर, बांस आदि को उत्पन्न हुआ देखता है उसकी हृदय रोग से मृत्यु होती है तथा शरीर के शेषांगों में से जिस अंग पर उक्त पदार्थों को उत्पन्न होते हुए देखता है, उस-उस अंग का विनाश होता है। जो स्वप्न में अपने जिस अंग को लालसूत, लालपुष्प या रक्त लता-तन्तुओं से वेष्टित देखता है, उसके उस अंग का विनाश होता है। स्वप्न में जिस मनुष्य को जो हाथी, मगरमच्छ या मनुष्य द्वारा खींचते हुए देखता है, उसकी कारागार से मुक्ति होती है। स्वप्न में जिसके घर में दिन में मधुमक्खी का छत्ता प्रवेश होते हुए दिखलाई पड़े, उसका धन-नाश अथवा मरण होता है। जो स्वप्न में विरेचन अर्थात् दस्त लगते हुए देखता है उसके धन का नाश होता है। वमन करते हुए देखने से मरण होता है। वृक्ष की चोटी पर चढ़ते हुए देखने से घर का नाश होता है। स्वप्न में कोई गाना गाता हुआ देखने से रोना, नाचना देखने से वध बंधन, हंसना देखने से शोक-सन्ताप एवं गमन देखने से कलह आदि फल प्राप्त होता है। स्वप्न में शुभ्र-श्वेत वस्त्र का देखना उत्तम फलदायक है किन्तु भस्म, हड्डी, मट्ठा और कपास का देखना अशुभ होता है। स्वप्न में शुक्ल माला और अलंकार आदि का धारण करना शुभ है। रक्त-पीत एवं नीलादि वस्त्रों का धारण करना शुभ नहीं है। स्वप्न आठ प्रकार के होते हैं—पाप रहित मंत्र-साधना द्वारा सम्पन्न मंत्रज्ञ स्वप्न, वातादि दोषों से उत्पन्न दोषज, दृष्ट, श्रुत, अनुभूत, चिन्तोत्पन्न, स्वभावज, पुण्य-पाप के ज्ञापक दैव इन आठ प्रकार के स्वप्नों में मंत्रज्ञ और दैव स्वप्न सत्य

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

होते हैं। शेष छह प्रकार के स्वप्न प्रायःनिष्फल होते हैं। मल-मूत्र की बाधा आदि से उत्पन्न होने वाले स्वप्न, आधि-व्याधि अर्थात् रोगादि से उत्पन्न स्वप्न, आलस्य इत्यादि से उत्पन्न स्वप्न, दिवा स्वप्न एवं पूर्व दृष्ट पदार्थों के संस्कार से उत्पन्न स्वप्न प्रायः निष्फल होते हैं। यदि स्वप्न में पूर्व में शुभ पश्चात् में अशुभ होते हैं अथवा पूर्व में अशुभ और बाद में शुभ होते हैं तो बाद पश्चात् अवस्था में देखा गया स्वप्न फलदायक तथा पूर्ववर्ती अवस्था का स्वप्न निष्फल होता है। अशुभ स्वप्न के आने पर व्यक्ति स्वप्न के पश्चात् जागकर पुनः सो जाये तो अशुभ स्वप्न का फल नष्ट हो जाता है। यदि अशुभ स्वप्न के अनन्तर पुनः शुभ स्वप्न दिखलायी पड़े तो अशुभ फल नष्ट होकर शुभ फल की प्राप्ति होती है। अशुभ स्वप्न के दिखलायी पड़ने पर जगकर णमोकार-मंत्र का पाठ करना चाहिए। यदि अशुभ स्वप्न के पश्चात् शुभ स्वप्न आये तो दृष्ट स्वप्न की शान्ति का उपाय करने की आवश्यकता नहीं। बुद्धिमान व्यक्ति को अपने गुरु के समक्ष शुभ और अशुभ स्वप्नों का कथन करना चाहिए किन्तु अशुभ स्वप्न को गुरु के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति के समक्ष कभी भी नहीं प्रकाशित करना चाहिए।

स्वप्नसार समुच्चय के अनुसार स्वप्नःस्वप्न में सरस्वती के देखने से इच्छित लाभ, गाने-बजाने का, आमोद-प्रमोद और अस्त्र-शस्त्र, शास्त्र-विद्या का लाभ होता है। अपना स्वामी-मालिक (Master) देखने से स्त्री, पुत्र, धन और कन्या का लाभ पाता है। मुनि (Monk or saint) स्वप्न में देखने से सब प्रकार के सुख और प्रारम्भ किया हुआ कार्य सिद्ध होता है। किंबाली (पुंश्चली) (Bad woman) को स्वप्न में देखने से स्थान हानि, क्लेश, पद-पद पर आपत्ति और धन की कमी होती है। हाथी (Elephant) स्वप्न में देखने से सब कार्यों में विजय, अपने आदमियों और पुत्र का समागम, स्त्री और धन का लाभ होता है। फूलमाला का जोड़ा (pair of garlands) स्वप्न में देखने से धन का लाभ, जय, पुत्र-प्राप्ति, आरोग्य लाभ, मुनिपद की प्राप्ति होती है। महिष (Buffalo) स्वप्न में देखने से रोग, शोक, भय, चिन्ता, शीघ्र मृत्यु का कारण और बने-बनाये काम में निराशा आती है। हनुमानजी को स्वप्न में देखने से सोचा-विचारा कार्य सफल, यशः प्राप्ति, धनागम, दुर्बलता एवं रोग दूर होता है। बन्दरों को स्वप्न में देखने से धन्धे में हानि, कोई अचानक बड़ा उत्पात, दरिद्र, रोग की उत्पत्ति तथा अनेक शोक सन्ताप होते हैं। लक्ष्मीजी (Goddess of Wealth) को स्वप्न में देखने से सब जगह सुख, पुत्र-पौत्रों की परम्परा में वृद्धि, राज्यमान और सुख-चैन होता

है। बछड़े सहित गऊ के स्वप्न-दर्शन से धन-धान्य की वृद्धि, इच्छानुसार कार्य-सिद्धि, सोचा हुआ मान-सन्मान मिलता है। यमराज को स्वप्न में देखने से आदमियों की अपमृत्यु, पुत्र-पौत्रादि की हानि और विचारा हुआ काम बिगड़ जाता है। रेवती देवी (Married lady with husband) को स्वप्न में देखने से सब कार्यों में विजय, लाभ, सौभाग्य और बुद्धि अच्छे कार्य करती है। पागल (Insane person) को स्वप्न में देखने से मित्र का नाश, दुःख, क्लेश, अनेकानेक हानि, मानसिक विकलता और शोक-सन्ताप होता है। राक्षस (Devil) को स्वप्न में देखने से धनहानि, मन में चिंता, पुत्र-वियोग, कोई महाभय, मरण, रोग और संताप होता है। निधि-कोष (Treasure) को स्वप्न में देखने से अनेक स्थानों से धरती के धन-धान्य और आरोग्य तथा नित्य-अविनाशी आत्मिक सुख प्राप्त होते हैं। स्वप्न में कौआ (crow) देखने से राजाओं की आपसी खींचतान, दारूण शोक-सन्ताप, कुनबें में लड़ाई और दुःख होता है। श्री कृष्ण (Lord Krishna) को स्वप्न में देखने से सब कामों में विजय, धनलाभ, क्लेश और पापों का अन्त एवं अटका काम सिद्ध होता है। बाज (Hawk) को स्वप्न में देखने से मरण तुल्य कष्ट, धनहानि, परदेश में निरर्थक भ्रमण और अकस्मात् दुःख आ पड़ता है। गिद्ध (Vulture) को स्वप्न में देखने से कोई बड़ा अमंगल, स्थान भ्रष्ट, शोक, सन्तापवर्धक, घोर दुःख, अलाभ होता है। पुन्नाग (Red lotus) के दर्शन स्वप्न में करने से शीघ्र दरिद्र-मुक्ति, धन- धान्य का समागम, सब प्रकार के मंगल और पुत्रप्राप्ति शीघ्र होती है। मुर्गा (cock) स्वप्न में देखने से धन का नाश, मरण तुल्य कष्ट, शोक, मित्रता की हानि और कोई बड़ा क्लेश हो सकता है। वरुण (Varun - a kind of flower) को स्वप्न में देखने से चेहरे पर प्रभाव, सौभाग्य, आत्मशक्ति, बलवर्धक ज्ञान द्वारा तृष्णा की उपशान्ति होती है। क्षेत्रपाल (king) को स्वप्न में देखने से कम पैसे की नौकरी, दुःख से उदरपूर्ति, धनराज्य और पद की हानि होती है। बन्दी (Prisoner) को स्वप्न में देखने से सब संकट का नाश, शत्रुपक्ष का बलक्षीण होता है, धन - धान्य की वृद्धि होती है। उल्लू (owl) को स्वप्न में देखने से निरर्थक विवाद, झगड़ा, धननाश, आवश्यक काम में बिगाड़ होता है। ज्वाला (flame) को स्वप्न में देखने से स्त्री-पुत्र का लाभ तथा धन का लाभ, परमार्थ सेवा और धर्म-लाभ होता है। राजपुत्र (Prince) को स्वप्न में देखने से विजय, धन-लाभ सोचा गया कार्य सफल और सर्व कार्य सिद्ध होते हैं। काला-नाग (Black serpent) को स्वप्न में देखने से मृत्यु तुल्य कष्ट, शोक,

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सन्ताप, कलह, कार्य-हानि और उत्तरोत्तर धन-हानि होती है। विमान को स्वप्न में देखने से सब कार्यों में विजय, राज्यमान और सारे देशों में ख्याति होती है। मेरू पर्वत (Highest Mountain) को स्वप्न में देखने से आत्मा का उत्थान, सन्मान, विजय, मित्रों का मिलाप, धन-लाभ और सुखों की प्राप्ति होती है। सूखा ठूंठ वृक्ष (Fruitless trees) को स्वप्न में देखने से शत्रुभय, हानि और माता-पिता का वियोग होता है। वृक्ष (Fruits of trees) को स्वप्न में देखने से शत्रुनाश, पुत्रवधु समागम, अच्छे कार्यों में मार्गदर्शन होता है। सीता सती (chaste sita) को स्वप्न में देखने से सर्वमंगल आरोग्यवृद्धि, दारिद्र-नाश एवं मनोरथ सिद्ध होते हैं। शेषनाग को स्वप्न में देखने से सारी बुराइयों से मुक्ति, धनधान्य से व्यक्ति समृद्ध होता है। पार्वती (Mate of Shiv) को स्वप्न में देखने से विकारों का विनाश, पापों का प्रणाश, क्लेशों का नाश, पुत्र-लाभ, अर्थ-लाभ होता है। गधे पर चढ़ी शीतला (Goddess of small-pox) को स्वप्न में देखने से सब प्रकार के क्षेम, धनप्राप्ति, दरिद्र और रोग-नाश आदि सभी कार्य सिद्ध होते हैं। नग्न-क्षपणक (naked, nude) को स्वप्न में देखने से पुरुषार्थ बढ़ता है, टिकाऊ लक्ष्मी होती है और मनचिन्तित कार्य सिद्ध होते हैं। दूसरा मत है कि स्वप्न में क्षपणक (नग्न) को देखने से वध-बंधन, आपत्ति, धन-हानि व अपयश होता है। दूसरा मत ज्यादा यथार्थ लगता है। स्वप्न में राम-लक्ष्मण को देखने से ुरुषार्थ में मन लगता है, उत्तरोत्तर लक्ष्मी बढ़ती है, बिगड़ा कार्य बनता है। शशक (hare) यानि खरगोश को स्वप्न में देखने से धनहानि, मन में बैचेनी, पद-पद पर शत्रुओं द्वारा संतापित, शोक एवं संताप ग्रस्त होता है। स्वप्न में नारद को देखने से कलह, विध्न, मतिभ्रष्ट, बुद्धि में विकार उत्पन्न होता है। सुनहरी छतरी (Golden umbrella) को स्वप्न में देखने से स्त्री-लाभ, शास्त्र और धन-धान्य प्राप्ति तथा आरंभ किया गया कार्य शीघ्र पूरा होता है। स्वप्न में राजकीय शोभा (Royal splendour) देखने से राजा-प्रजा में महाक्रान्ति, गंधमाला-विलेपन, वस्त्र, आभूषण और सौभाग्य वृद्धि होती है। स्वप्न में चिता (Pyre) को देखने से दुर्गति, बुरी दशा, दुःख परम्परा, न देखे, सुने अनेक संकट उपस्थित हो जाते हैं। स्वप्न में समुद्र को देखने से सब प्रकार के आनन्द, वस्त्र, लाभ, पुत्र-मित्र समागम, धन को बढ़ने का मार्ग होता है। आम का वृक्ष स्वप्न में देखने से सोचा हुआ काम शीघ्र सफल, अच्छे व्यक्तियों का समागम, बांझको पुत्र प्राप्ति होती है। चकवा-चकवी (Brahmini duck with its mate) स्वप्न में देखने से सुख-हानि, विध्नों का

आरम्भ और इष्ट जनों का वियोग होता है। स्वप्न में वनराजी (Herbage) को देखने से धनलाभ, किसी संघर्ष में विजय, पुत्र और भाइयों का मेल-मिलाप और शुभकार्य ठीक होता है। स्वप्न में वटवृक्ष (Banyantree) देखने से आयु और बल की वृद्धि, टिकाऊ स्वास्थ्य, सर्व कल्याण और सर्वसिद्धि की प्राप्ति होती है। स्वप्न में उगता सूर्य (Rising sun) देखने से अस्थिर कार्य ठीक होता है, भावों में स्थिरता आती है, ज्ञानात्मा में समत्व के योग की वृद्धि होती है। स्वप्न में तोता (Parrot) देखने से घर में अक्षयनिधि रहती है, धनधान्य की वृद्धि, कन्या व लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। कार्यसिद्धि शीघ्र होती है। स्वप्न में इन्द्रधनुष (Rainbow) को देखने से घर और स्थान का लाभ, जय, पुत्र-प्राप्ति और गोधन की शीघ्र वृद्धि होती है। स्वप्न में अंधे नर (Blind man) को देखने से काम बनते-बनते बिगड़ जाता है। शोक, रोग तथा धन हानि होती है। स्वप्न में दशावतार (Ten incarnations of God) को देखने से नये मित्र का लाभ, कार्यसिद्धि तथा आयुवृद्धि होती है। स्वप्न में चन्द्रमा (Moon)देखने से पुरुषार्थ द्वारा कार्य परिपूर्ण होता है, असीम धन की प्राप्ति होती है। स्वप्न में घोड़ा (Horse) देखने से धन की वृद्धि, सब प्रकार से ठीक-ठाक, आपसी प्रेम और कल्याण की वृद्धि, पुत्र और धन का लाभ होता है। स्वप्न में महादेव (A supreme God) के देखने से व्याधि और दरिद्रता का नाश, पापों का विनाश एवं शत्रुपक्ष का क्षय होता है। मनोवांछित कार्य सफल होता है। स्वप्न में कलश का जोड़ा (Pair of pitchers) देखने से सब प्रकार का आमोद-प्रमोद, साध ु-सत्संग एवं असीम धनवृद्धि होती है। स्वप्न में सूअर (Pig) देखने से मनोरथ फलता है, अच्छे निमित्तों का समागम होता है। स्वप्न में मछली का जोड़ा (A couple of fish) देखने से धन लाभ, सौभाग्य वृद्धि, धनधान्य वृद्धि, आयु और आरोग्य लाभ होता है। स्वप्न में हिरण (Deer) देखने से उद्यम में मन लगता है, अटके हुए काम सफल होते हैं। स्वप्न में वराह अवतार देखने से सुख की हानि, बार-बार धन-हानि, खेत में नुकसान और महाचिन्ता होती है। स्वप्न में केदार(A farm tree) वृक्ष देखने से व्याधि और तीनों ताप का नाश, धनधान्य का समागम और दीर्घायु सूचक है। स्वप्न में गणेशजी को देखने से धनलाभ, विजय, मन में आनन्द, सुख सम्पदा, मित्र का आगमन और विध्नों का निवारण होता है। स्वप्न में ग्रहण (Eclipse-solar or lunar) देखने से वध बंध और सब ओर से क्लेश, धन-हानि और आये दिन शोक होता है। स्वप्न में सिंहासन (Throne) देखने से

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पुत्र-पौत्र से युक्त क्षमा, कार्य, बल और ध्यान का लाभ होता है। स्वप्न में मोर (Peacock) देखने से सब कार्यों में मध्यमता, दिल की कमजोरी, अशांति, धनहानि और महान उद्वेग होता है। स्वप्न में दर्पण (Mirror) देखने से लक्ष्मी की प्राप्ति, महान् सुख, सौभाग्य, आत्मतुष्टि, मुनियों की संगति और अनेक लाभ होते हैं। स्वप्न में चित्रकार (Painter) देखने से शुभ, विजय, संघ सेवा का विचित्र अवसर, आरोग्य तथा आत्मसिद्धि का मार्ग मिलता है। स्वप्न में लोमड़ी (Fox) देखने से बायें, दाहिनें, पीछे, आगे या चारों ओर से लाभसूचक हैं। स्वप्न में ऊँट (Camel) देखने से अशुभ, मानहानि, मृत्यु, दरिद्र के अतिरिक्त कारावास जाने का अवसर भी आ सकता है। स्वप्न में चँवर का जोड़ा (Pair of chauris) देखने से स्वराज्यपद, धनलाभ, ऐश्वर्य, मुनियों का सहवास, प्रतिष्ठा और आत्मज्ञान तथा सम्यक् चरित्र का लाभ होता है। स्वप्न में यमुना नदी (Yamuna river) देखने से विजय, धनलाभ, सौभाग्य, अच्छों का दर्शन और दीर्घायु का सूचक है। स्वप्न में तापस देखने से स्थान एवं नौकरी से पतन, शोक-संताप, मूर्खता, ढीठता के साथ अप्रिय घोर विपदा आती है। स्वप्न में राजहंस (Swan) देखने से धनलाभ, मन को सन्तोष, पुत्रलाभ, सज्जन समागम, ज्ञान प्राप्ति और प्रशंसा की प्राप्ति होती है। स्वप्न में बघेरा (Tiger) देखने से सब काम बनते हैं। अधिकारियों से मेलजोल और कार्य के अनुकूल होने का सूचक है। स्वप्न में जौ का खेत (Farm of barley) को देखने से मन को सन्तोष, शान्ति, कान्ति, अक्षय - निधि और उत्तम इच्छा पूरक होती है। स्वप्न में राष्ट्रध्वज (Country's flag) को देखने से राजपूजा, विजय, अक्षय-वृद्धि, बंधुसमागम और पुत्रपौत्रादिक वृद्धि सूचक होता है। स्वप्न में सीप(Shell) को देखने से सब कार्यों में विजय, साधु-सेवा समागम और परमार्थ के कार्यों से प्रसिद्धि होती है। स्वप्न में शक्ति (Goddess of strength) के दर्शन करने से सब कार्य में विजयश्री, स्थान और धन का लाभ होता है। नित्य सर्वतः वृद्धि होती है। स्वप्न में शोक-मूर्ति (Idol in sorrowful posture) को देखने से धन हानि, मन का ताप, बुद्धि और स्त्री का नाश, मरण एवं शोक सन्ताप होता है। स्वप्न में पद्मिनी को देखने से सब प्रकार से सुभिक्ष, कुशल आरोग्य, खेतों में वृद्धि, गुणों का आगम, ज्ञान और धन प्राप्त होता है। स्वप्न में शिकारी (Hunter) को देखने से धननाश, भय, रोग, परदेस में रोग और बना बनाया काम बिगड़ जाता है। स्वप्न में कुबेर (God of treasure) को देखने से धनधान्य शाश्वत रहता है, सात्विक भोजन पाता है,

सर्वकार्यों की सिद्धि होती है। स्वप्न में गधा (Donkey) को देखने से मृत्यु, दुःख, दुर्दशा, महाभय, शोक और बुद्धि का नाश होता है। स्वप्न में बगुला देखने से धननाश, मन में सन्ताप, शत्रुओं से झगड़ा एवं घर में कलह होती है। स्वप्न में कृष्ण वासुदेव को देखने से धर्म, अर्थ, काम की प्राप्ति लंबी चौड़ी विभूति, पुत्र और शिष्य प्राप्त होते हैं। स्वप्न में लंगडा (cripple) को देखने से दरिद्रता, दुर्दशा, शोक, सन्ताप, दासत्व और धनहानि होती है। स्वप्न में मेंढ़ा (Ram) को देखने से धनधान्य की हानि, मन का ताप, कलह, शत्रुओं से खटपट, महादुःख और महाचिंता होती है। स्वप्न में लाल और श्वेत परिधान (Red and white silken dress) को देखने से सब प्रकार की सिद्धि, सन्तोष और दृढ़ता तथा सब कामों मे कल्याण और शुभ होता है। स्वप्न में कछुआ (Tortoise) को देखने से काम में बिगाड़, सुख-हानि, अकस्मात् विनाश का कारण उपस्थित होता है। स्वप्न में कल्पवृक्ष देखने से आरोग्य और बहुत तरह के अच्छे भोजन, पान, सुपारी, सुगन्ध-पदार्थ और काम के बन जाने में कोई भी सन्देह नहीं रहता। कल्पवृक्ष (Treeof paradise) देखना अत्यन्त शुभ होता है। स्वप्न में रीछ देखने से आपसी कलह और लम्बी बीमारी भोगनी पड़ती है, काम का बिगाड़ और धन का नाश होता है। रीछ (Bear) को देखना अशुभ होता है। अन्नपूर्णा (Goddess of food and drink) का स्वप्न देखने से तुष्टि-पुष्टि, वृद्धि, सब प्रकार का सुख और किसी बड़े पद की प्राप्ति होती है। स्वप्न में कदम्ब का वृक्ष देखने से सब कल्याण को देखते हैं, सब निरोगता प्राप्त करते हैं, सब प्रकार की उन्नति होती है। स्वप्न में कुत्ता (Dog) को देखने से भय, शोक, सन्ताप, अपने स्थान की हानि, जनक्षय और धननाश होता है स्वप्न में वृषभ (Bull) को देखने से धन की बढ़ोतरी, शुभ, कुशल क्षेत्रों की उन्नति, धर्म, अर्थ और काम का लाभ होता है। स्वप्न में सामुद्रिक जलयान (Ship) को देखने से स्थानभ्रष्ट, भटकन, धननाश, घर में गया हुआ आदमी फिर न लौटे। स्वप्न में श्रुतदेव स्थान (Precepters seat of learning) देखने से आदमी को कन्या का लाभ, कन्या को पति प्राप्त होता है। स्वप्न में सूर्य देखने से ज्ञान-विज्ञान पाता है, कार्य सिद्ध होते हैं, मित्र गोष्ठी, धनदान का अवसर पाता है। स्वप्न में कर्क-केकड़ा (crab)को देखने से सन्ताप, अशुभ, काम बिगड़े एवं मित्रों के साथ विरोध होता है। स्वप्न में जम्बुक (Jackal)को देखने से धनहानि, मन को ताप, रोग, शोक और माता-पिता का वियोग होता है। स्वप्न में दिव्यरथ (celestial chariot)देखने से परदेश गया हुआ

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वापिस लौटता है, पुत्रलाभ और विजय पाता है। स्वप्न में बिच्छु, वृश्चिक (Scorpion)देखने से कल्याण, शुभ, आरोग्य, भाई या साधुओं का समागम, ध्यानवृद्धि और धनवृद्धि होती है। स्वप्न में वृहस्पति (Teacher of Gods)को देखने से प्रीति, कल्याण, श्रद्धा की वृद्धि होती है, प्रमोद बढ़ता है, शोक का नाश, धनवृद्धि बहुत होती है। स्वप्न में मगरमच्छ (crocodile)को देखने से नित नये शोक, रोग धननाश, महाभय और प्रतिष्ठा की हानि होती है। स्वप्न में स्वस्तिक आवर्त्त (Swastika) को देखने से शुभ मोक्ष प्राप्ति, आत्म कल्याण और मनोरथ सिद्ध होते हैं और धनधान्यादि की वृद्धि होती है।

स्वप्न में प्रतिमा के जंघा, कंधा और उदर के नष्ट होने का फल : जो व्यक्ति प्रतिमा को हाथ रहित स्वप्न में देखता है, उसका जीवन चार महीने, जो पैरों के बिना देखता है उसका जीवन तीन वर्ष, जो घुटनों के बिना देखता है, उसका जीवन एक वर्ष और जो सिर रहित देखता है, उसका जीवन पांच दिन शेष समझना चाहिए। यदि स्वप्न में कोई व्यक्ति जिन प्रतिमा की जंघा नष्ट होते देखे तो उसका जीवन दो वर्ष, जो कंधा नष्ट होते हुए देखता है, उसका जीवन एक मास और जो प्रतिमा का उदर नष्ट होते हुए देखता है उसका जीवन आठ मास समझना चाहिए।

स्वप्न में इष्टदेव का पूजन, दर्शन और आह्वान करना देखने से विपुल धन की प्राप्ति के साथ-साथ परम्परा से मोक्ष की प्राप्ति होती है। स्वप्न में देव प्रतिमा का कम्पित होना, रोना, गिरना, चलना, हिलना, नाचना या गाना देखने से आधि-व्याधि और मृत्यु होती है। स्वप्न में कलह एवं लड़ाई-झगड़े देखने से स्वस्थ व्यक्ति रुग्ण और रोगी व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त होता है। नाई द्वारा स्वयं अपना या अन्य का क्षौर (हजामत) कार्य करते हुए देखने से रोग और व्याधि के साथ धन और पुत्रनाश, केश लोंच करना देखने से भयंकर व्याधि और स्वप्न में नाचते हुए कबंध (कटे सिर वाले) को देखने से आधि-व्याधि और धन नाश होता है।

अंधकारमय स्थानों में वन, भूमि, गुफा और सुरंग आदि में प्रवेश करते हुए स्वप्न में अपने को देखने से रोग और अन्य को देखने से अपनी छह महीने के भीतर मृत्यु समझनी चाहिए। वराहमिहिर ने स्वप्नों के फल का निरुपण करते हुए बताया है कि जिन स्वप्नों में इष्ट वस्तुएं अनिष्ट रूप से दिखलायी पड़े और अनिष्ट वस्तुएं इष्ट रूप से दिखलाई पड़े वे स्वप्न मृत्यु करने वाले होते हैं। पर्वत,

मकान की छत और वृक्ष पर से अपने या पर को गिरते हुए देखने से आधि-व्याधि के साथ सम्पत्ति हानि उठानी पड़ती है। गन्दे जल या पंक वाले कुएं के अन्दर गिरता या डूबता देखने से स्वस्थ व्यक्ति रोगी और रोगी व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। तालाब या नदी में प्रवेश करता देखने से आधि-व्याधि के साथ सम्पत्ति हानि उठानी पड़ती है। जो रोगी व्यक्ति स्वप्न में अपनी छाया को अपने हाथों से छिन्न करता हुआ देखता है, वह जल्दी ही मृत्यु को प्राप्त करता है। अग्नि में स्वयं को या अन्य किसी को जलता हुआ देखने से पांच मास के भीतर मृत्यु होती है।

स्वप्न में छत्र और परिवार भंग दर्शन का फल :यदि स्वप्न में जिनेन्द्र प्रतिमा के छत्र का भंग दिखलाई पड़े तो उस देश के राजा का मरण निश्चित समझना चाहिए। यदि परिवार अनुगामियों का मरण दिखलाई पड़े तो अपने किसी नौकर या अनुगामी का मरण समझना चाहिए।

स्वप्न में विभिन्न वस्तुओं को देखने से दो महीने की आयु का निश्चय :जो व्यक्ति स्वप्न में अपने को विलीन होता हुआ देखता है, कौए और गिद्धों के द्वारा अपने शरीर को खाते हुए देखता है या स्वयं को वमन करते हुए देखता है तो वह दो महीने जीवित रहता है। स्वप्न में अपने अंगों को काटना, टूटना, छिन्न होना, विकृत होना और अंगों से रक्तस्राव का होना देखने से कुछ महीनों में ही मरण होता है। आचार्य वराहमिहिर ने स्वप्न में लिंग और गुदा जैसे गुप्तांगों के विकृत दर्शन को मृत्यु बतलाया है। केवल ज्ञान होरा में भी चन्द्रसेन मुनि ने स्वप्न में शृंगाल, काक, गिद्ध, मार्जार, सिंह या चीते द्वारा अपने शरीर को भक्षण करना देखने से तीन महीने में मृत्यु का होना बतलाया है।

स्वप्न दर्शन द्वारा एक मास की आयु निश्चय :जो स्वप्न में भैंस, गधे और ऊंट की सवारी द्वारा अपने को दक्षिण-दिशा की ओर जाता हुआ देखता है अथवा तेल या घी से अपने को भीगा हुआ देखता है तो वह एक मास जीवित रहता है।

स्वप्न में सूर्य और चन्द्रग्रहण द्वारा आयु का निश्चय :जो स्वप्न में सूर्य और चन्द्र ग्रहण को देखता है अथवा पृथ्वी पर स्वप्न में सूर्य और चन्द्र के पतन को देखता है, वह एक महीने से कुछ अधिक जीवित रहता है।

स्वप्न दर्शन द्वारा एक मास की आयु का ज्ञान :यदि स्वप्न में काले पुरुष के द्वारा घर से खींचकर अपने को ले जाते हुए देखे तो वह एक मास जीवित

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

रहता है, इसमें सन्देह नहीं।

स्वप्न दर्शन द्वारा बीस दिन की आयु का निश्चय :जो स्वप्न में अपने को किसी अस्त्र से कटा हुआ देखता है या अस्त्र द्वारा अपनी मृत्यु का दर्शन करता है अथवा पाताल की ओर जाते हुए अपने को देखता है, वह बीस दिन जीवित रहता है।

स्वप्न द्वारा एक मास आयु का निश्चय :जो स्वप्न में मृतक के समान लाल फूलों से सजाया हुआ नृत्य करते हुए दक्षिण दिशा की ओर अपने को ले जाते हुए देखता है, वह निश्चित एक मास जीवित रहता है। जैन निमित्त शास्त्र में मरण सूचक स्वप्नों का निरूपण करते हुए बताया है कि स्वप्न में तेल मले हुए नग्न होकर भैंस, गधे, ऊंट, कृष्ण बैल और काले घोड़े पर चढ़कर दक्षिण दिशा की ओर अपने को ले जाते हुए देखता है, रसोई गृह में, लाल-पुष्पों से परिपूर्ण वन में, सूतिका गृह में, अंग-भंग पुरुष का प्रवेश करना देखने से, झूलना, खेलना, गाना, दौड़ना, हंसना, नदी के जल में नीचे चले जाना तथा सूर्य, चन्द्रमा, ध्वजा और ताराओं का नीचे गिरना आदि देखने से भस्म, घी, लोह, लाख, गीदड़, मुर्गा, बिलाव, गोह, नेवला, बिच्छू, मक्खी और विवाह आदि उत्सव देखने से एवं स्वप्न में दाढ़ी, मूंछ और सिर के बाल मुंडवाना देखने से मृत्यु होती है। जो स्वप्न में रूधिर, चर्बी, पीप, चमड़ा, घी और तेल के गड्ढ़े में गिर कर डूबता है, वह निश्चित एक मास जीवित रहता है।

शुभाशुभ सूचक स्वप्न:स्वप्न में मांस का दर्शन, ग्रहण, भग्न और शयन आसन करना हितकर और प्रशस्त माना गया है। स्वप्न में गाना, हंसना, नाचना और पढ़ना देखते हैं। गाना देखने से रोना पड़ता है और नाचना देखने से (वध) बंधन होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में तालाब, नदी, पर्वत कलश और गृहों को शोकार्त्त देखता है, उसका शोक बढ़ता है। अलंकार, श्वेत हाथी, घोड़ें, बैल आदि का स्वप्न में दर्शन करने से यश की प्राप्ति होती है। जो स्वप्न में पेशाब या टट्टी करना देखता है, और स्वप्न देखने के बाद ही जग जाता है, वह धननाश को प्राप्त करता है। जो व्यक्ति स्वप्न में बिना घृणा के टट्टी, मूत्र, वमन, वीर्य, रक्त आदि का भक्षण करता हुआ देखता है, वह शोक से छूट जाता है। जटाधारी, सिर मुण्डित विरूपाकृतिवाली, मलिन नीले वस्त्र वाली स्त्री को स्वप्न में ग्लानिपूर्वक देखना सामूहिक भय का सूचक है। तपस्वी पुण्डरीक तथा नवीन कमलों को स्वप्न

में देखकर जो जाग जाता है, उसे ग्लानि फल की प्राप्ति होती है। जो व्यक्ति भूमि पर विकीर्ण फैल जाना या जल में नाश को प्राप्त हो जाना देखता है, उस व्यक्ति को महाभय होता है। स्वप्न में लाल माला या लाल सूत्र के द्वारा जो अंग बांधा जाय, उसी अंग में क्लेश होता है। जब स्वप्न में कोई मकर या घड़ियाल मनुष्य को खींचता हुआ दिखायी पड़े तो, जो व्यक्ति बद्ध है - कारागार आदि में बद्ध है या मुकद्दमें में फंसा है, उसकी मुक्ति होती है - छूटता है। श्वेत मांस, श्वेत आसन, श्वेत सवारी, श्वेत माला का धारण करना तथा अन्य श्वेत द्रव्यों का दर्शन स्वप्न में शुभ होता है। स्वप्न में श्वेत गृह में स्थित पुष्प, फल और शाखाओं से युक्त वृक्षों से यदि गिरता हुआ देखता है, तो उसकी चेष्टा सफल होती है। स्वप्न में दूध, तेल, घी का दर्शन शुभ है, भोजन नहीं। विशेष रूप से दूध का दर्शन शुभ माना गया है।

राज्य प्राप्ति सूचक स्वप्न :जो सिंह, व्याघ्र, गज, गाय, बैल, घोड़ा और मनुष्यों से युक्त होकर रथ पर चढ़कर गमन करते हुए स्वप्न में देखता है वह राजा होता है। श्रेष्ठ हाथी पर चढ़कर जो महल या समुद्र में प्रवेश करता है या स्वप्न में देखता है वह नीच नृप होता है। जो स्वप्न में श्वेत हाथी पर चढ़कर नदी या नदी के तट पर भात का भोजन करता हुआ देखता है वह शीघ्र ही राजा होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में श्वेत वर्ण के मल, मूत्र आदि को इधर-उधर खींचता है, वह राज्य और राज्यकाल को शीघ्र प्राप्त करता है। जो व्यक्ति स्वप्न में प्रासाद, भूमि या सवारी पर आरूढ़ हो, सोने या चांदी के बर्तनों में स्नान, भोजन, पान आदि की क्रियाएं करते हुए देखे उसे राज्य-प्राप्ति होती है। जो व्यक्ति स्वप्न में जहाँ-तहाँ स्थित होकर जीभ को नखों से खुरचता हुआ देखे अथवा रक्त की लाल वर्ण की दीर्घा झील में स्थित होता हुआ देखे तो वह व्यक्ति नीच होने पर भी राजा होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में वन, पर्वत, अरण्ययुक्त पृथ्वी सहित समुद्र के जल को भुजाओं द्वारा पार करता हुआ देखता है, वह राज्य को प्राप्त करता है। जो व्यक्ति स्वप्न में सिर पर पर्वत, घर, खण्डहर तथा दीप्तिमान् पदार्थों को देखता है, वह स्वस्थ होकर पृथ्वी का उपभोग करता है। जो स्वप्न में मृत्तिका के हाथी पर सवार होकर समुद्र को पार करता हुआ देखे तथा उसी स्थिति में जाग जाये तो वह शीघ्र ही पृथ्वी का स्वामी होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में शस्त्रों द्वारा शत्रुओं को परास्त कर पृथ्वी और पर्वतों को अपने अधीन कर लेना देखता है अथवा जो शुभ पर्वतों पर अपने को आरोहण करते हुए देखता है, वह राज्याभिषेक को प्राप्त करता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

यदि स्वप्न में कोई धन-धान्य से मुक्त हो राजा, राजपुत्र या चोर होना अपने को देखे तो राज्य की अभिवृद्धि होती है। यदि स्वप्न में जीभ को शस्त्र से छेदन करता हुआ दिखलायी पड़े तो क्षत्रियों को राज्य की प्राप्ति और अन्य वर्ण वालों की वृद्धि होती है।

विपत्ति प्राप्ताप्राप्त सूचक स्वप्न :जो स्वप्न में सन्तोष के साथ, देव, साधु, ब्राह्मण को और प्रेतों को देखते हैं, वे सब सुख पाते हैं - सुख प्राप्त करते हैं और विपरीत देखने पर विपरीत होता है अर्थात् स्वप्न में उक्त देव साधु आदि का क्रोधित होना देखने से उल्टा फल होता है। , जो व्यक्ति स्वप्न में गृहद्वार या गृह को विवर्ण देखे या पहिचाने तो वह शीघ्र ही विपत्ति से छुटकारा प्राप्त करता है। जो व्यक्ति स्वप्न में श्मशान में सूखे वृक्ष, लता एवं लकड़ी को देखता है अथवा यज्ञ के खूँटे पर जो अपने को चढ़ा देता है, वह विपत्ति को प्राप्त करता है। जो स्वप्न में अलंकार करके, रस पीकर, अगम्या गमन - जो स्त्री पूज्य है, उसके साथ रमण करना देखता है उसके सौभाग्य की वृद्धि होती है। जो व्यक्ति श्रेष्ठ महल के परकोटे पर चढ़ता हुआ देखे तो वह श्रेष्ठ लक्ष्मी का त्याग करता है, भयंकर कष्ट प्राप्त करता है। जो व्यक्ति स्वप्न में रूधिर से अभिषिक्त होकर विवाह करता है, वह व्यक्ति चिरकाल तक धन-धान्य से युक्त नहीं होता। जो स्वप्न में शुक्ल और हरे वृक्षों से युक्त होकर अपने को देखता है तथा उसी समय जाग जाता है तथा अग्नि द्वारा अपने को जलते हुए देखता है, वह फांसी पर लटकाने के समय फांसी से या कारागार में बद्ध होने पर वहां से छोड़ दिया जाता है। स्वप्न में शरीर के अंग-प्रत्यंग का बढ़ना तथा नख और रोम का बढ़ना भी शुभ माना गया है।

सुख समृद्धि सूचक स्वप्न :जो व्यक्ति स्वप्न में सूर्य या चन्द्रमा का स्पर्श करता है अथवा शत्रु सेनापति को मारकर श्मशान भूमि में निर्भीक घूमता हुआ देखता है, वह व्यक्ति सौभाग्य और धन प्राप्त करता है। लिंगच्छेदन होना देखने से स्त्री की प्राप्ति तथा भगच्छेद होना देखने से स्त्री को पुरुष की प्राप्ति होती है। जो राजा स्वप्न में शिर कटा हुआ देखता है अथवा तलवार से छेदित होता हुआ देखता है वह सहस्रों का लाभ तथा प्रचुर भोग प्राप्त करता है। जो राजा स्वप्न में मनुष्य पर बाण चढ़ाना, धनुष का स्फालन करना, प्रत्यंचा को समेटना आदि देखता है, वह अर्थलाभ करता है, युद्ध में जय और शत्रु का वध होता है। जो स्वप्न में

शुक्लवस्त्र और श्रेष्ठ आभूषणों से अलंकृत होकर हाथी पर चढ़ा हुआ भयभीत देखता है, वह समृद्धि को प्राप्त होता है। यदि स्वप्न में शर्बत या जल को पीता हुआ देखे अथवा किसी बंधे हुए व्यक्ति को छोड़ता देखे तो इस स्वप्न का फल विप्र के लिए सोमपान और शिष्यों के लिए धन-वृद्धिकर होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में नीचे कुएं के जल को, छिद्र को और भयभीत होकर स्थल पर चढ़ता हुआ देखता है वह धन-धान्य और बुद्धि के द्वारा वृद्धि को प्राप्त होता है।

स्वप्न में जो निर्जन चौराहे मार्ग में प्रविष्ट होना देखे पश्चात् जाग्रत हो जाए तो सुन्दर, गुणयुक्त पुत्र की प्राप्ति उसकी भार्या को होती है। स्वप्न में वीणा, बेल और विष को ग्रहण करे पश्चात् जाग्रत हो जाए तो उसकी स्त्री को सुन्दर गुणरूपयुक्त कन्या की प्राप्ति होती है। जो व्यक्ति स्वप्न में विष भक्षण द्वारा मृत्यु को प्राप्त हो अथवा विष भक्षण करना देखे तो वह धन -धान्य से युक्त होता है तथा चिरकाल तक किसी प्रकार के बंधन में बंधा नहीं रहता है। अभक्ष्य का भक्षण करना, पूज्य व्यक्तियों का दर्शन करना, सामायिक, पुष्प और फलों का दर्शन करना धन प्राप्ति सूचक है। स्वप्न में जो कोई किसी को आसन, शय्या, सवारी, घर, वस्त्र, आभूषण दान करता हुआ देखता है, वह सुखी होता है। लक्ष्मी की प्राप्ति उसे होती है। पताका, तलवार, लाठी, शुक्ति, सीप, मोती, सोना, दीपक आदि को जो स्वप्न में प्राप्त करना देखता है वह भी धन प्राप्त करता है। जो व्यक्ति स्वप्न में सांप, बिच्छू या अन्य कीड़ों द्वारा काटे जाने पर भयभीत नहीं होता और शोक नहीं करता हुआ देखता है, वह धन प्राप्त करता है। जो व्यक्ति स्वप्न में काला गुरू, चन्दन, लोध्र तगर-अगर की घिसने से सुगन्धि के कारण प्रशंसा करता है तथा उनका लेप करना और घिसना देखता है, उसके धन की वृद्धि होती है। जो व्यक्ति स्वप्न में पुष्पित शाल्मली, केला और नीलम या देवदारू के वृक्ष पर बैठना या चढ़ना देखता है, उसे सम्पत्ति प्राप्त होती है स्वप्न में किसी व्यक्ति को यदि पीले या लाल फलों को देना दिखलाई पड़े तो उसे सोना, चांदी का लाभ निस्सन्देह होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में श्रेष्ठ बैलों के रथ पर चढ़कर पूर्व या उत्तर की ओर गमन करता हुआ देखता है, वह धन प्राप्त करता है। स्वप्न में जिस व्यक्ति की गोद सुन्दर, धान्य फल, पुष्प से भर दी जाये, वह महान धन प्राप्ति करता है। यदि स्वप्न में सुन्दर रूपयुक्त कन्या या आर्या दिखलायी पड़े तो सुन्दर स्त्री की प्राप्ति होती है। यदि स्वप्न में स्त्री अपने को पुरुष होना और पुरुष स्त्री होना देखे तो वे शीघ्र कुटुम्ब के बंधन में बंधते हैं। स्वप्न में जिस मनुष्य

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

को अपने दाहिने हाथ की ओर श्वेत सर्प दिखाई दे या उसके दाहिने हाथ में काटे तो उसको पांच दिन में दस हजार मुद्रा का धन प्राप्त होता है। जो नर स्वप्न में मूत्र, वीर्य और रूधिर का पान करता है शरीर में तैल मलता है वह धनवान होता है। जो नर स्वप्न में फल खाता है या फूल देखता है उसके आंगन में लक्ष्मी लौटती है इसमें सन्देह नहीं है। जो नर स्वप्न में, दूसरों की निन्दा करने वाले का वध या बन्धन करता है वह पुरुष लोक में धनवान होता है।

मरण सूचक स्वप्न :जो व्यक्ति स्वप्न में शीशा, राँगा, जस्ता, पीतल, रज्जु, सिक्का तथा मधु का दान करता हुआ देखता है, उसका मरण निश्चय होता है। स्वप्न में जिस घर में लाक्षारस या रोग अथवा वायु का अभाव देखा जाए तो घर में आग लगती है या चोरों द्वारा शस्त्र घात होता है। यदि स्वप्न में कोई व्यक्ति आसव या घृत का पान करता हुआ देखे अथवा अकिंचन-निस्सहाय होकर अपने को मरता हुआ देखे तो इस अशुभ स्वप्न की शान्ति के लिए सत्य वचन बोलना चाहिए, क्योंकि थोड़ा भी असत्य भाषण विकास के लिए हितकारी नहीं होता। जो स्वप्न में प्रेतयुक्त, गर्दभयुक्त रथ में आरूढ़ दक्षिण दिशा की ओर जाता हुआ देखता है, वह मनुष्य शीघ्र ही मरण को प्राप्त होता है। यदि रात्रि के उत्तरार्ध में स्वप्न में कोई शूकरयुक्त नारी किसी की बँधी हुई गर्दन को खींचे तो उसकी पर्वत पर मृत्यु होती है। स्वप्न में कोई व्यक्ति खर-गर्दभ, शूकर, ऊंट, भेड़िया सहित रथ से दक्षिण दिशा को जाए तो शीघ्र उस व्यक्ति का मरण होता है। स्वप्न में यदि कृष्ण वास होने पर भी प्रवास को प्राप्त न हो तो मार्ग में भय प्राप्त होता है तथा दक्षिण दिशा की ओर गमन दिखलायी पड़े तो मृत्यु भी हो जाती है। जो व्यक्ति रात्रि के पिछले भाग में स्वप्न में यज्ञ-स्तम्भ गर्दभ, शूल पर आरोहित हुआ देखता है वह कल्याण नहीं पाता है। यदि कोई व्यक्ति रात्रि के पिछले पहर में स्वप्न में दुर्वासा, कृष्णभस्म तैलपान करना आदि देखे तो कल्याण नहीं होता है। स्वप्न में वमन करना देखने से मरण, विरेचन-दस्त लगना देखने से धन, नाश, यान आदि के छत्र को ग्रहण करने से धन-धान्य का अभाव होता है। स्वप्न में दिन में जिसके घर में श्वान प्रवेश करता हुआ देखे, उसका धन नाश निश्चित होता है अथवा मृत्यु का निर्देश करे। जो व्यक्ति स्वप्न में काले वस्त्र धारण कर काले घोड़े पर सवार होकर खिन्न हो दक्षिण दिशा की ओर गमन करता है, वह निश्चय से मृत्यु को प्राप्त करता है। भयंकर विकृत रूप वाली, काली स्त्री यदि स्वप्न में उत्तर या दक्षिण दिशा की ओर खींचे तो शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होता

है। जो व्यक्ति स्वप्न में अपने शरीर पर लता, गुल्म, वृक्ष, वाल्मीक बाँबी आदि का होना देखता है उसके शरीर का विनाश होता है। स्वप्न में जो व्यक्ति अपने मस्तक पर माला, बाँस, गुल्म, खजूर और हरे वृक्षों को उपजते देखता है, उसकी एक सप्ताह में मृत्यु होती है। यदि हृदय में उक्त वृक्षादिकों का उत्पन्न होना स्वप्न में देखे तो हृदय रोग से उसका विनाश होता है। जिस अंग में उक्त वृक्षादिकों का उत्पन्न होना स्वप्न में दिखलायी पड़ता है, उसी अंग की बीमारी द्वारा मृत्यु होती है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बौद्ध संस्कृति में स्वप्न एवं स्वप्नफल

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तीसरा वरदान : बौद्धसंस्कृति में स्वप्न एवं स्वप्न फल

बौद्ध ग्रंथों का आर-पार दिव्य स्वप्नों से सराबोर है। मानव जाति का इतिहास उन्नति एवं विकास का सोपान रहा है। प्रगति की इस यात्रा में स्वप्नों ने प्रकाश स्तम्भ एवं मील के पत्थर (माइल स्टोन) की भूमिका बखूबी से निभाई है। जीवन कैनवास पर दिव्य स्वप्नों की तूलिकाओं ने मनोरम चित्र उकेरे हैं। जिन्दगी के दीवट पर दिव्य स्वप्नों का जगमगाता हुआ दीपक नई रोशनी एवं नया आलोक बिखेरता है। क्योंकि ये दिव्य स्वप्न ऊर्जा के अक्षय-कोष है। ये मानव को प्रकृति की अद्भुत सौगात है। इसलिए कहा गया है-

'स्वप्न किसी दिव्य चेतना लोक के दिशा बोधक संकेत हैं। ' जो व्यक्ति जितना अधिक सात्विक और उच्च विचारों वाला होगा, उसके सपनों का सच उतना ही अधिक होगा। सार्थक स्वप्न उन्हें ही आते हैं, जिनका अंतः करण पवित्र होता है। जिनके कथनी-करनी में समानता होती है, भावों एवं भाषा में ऋजुता होती है। जब व्यक्ति का आध्यात्मिक स्तर ऊचाँ उठने लगता है तो इस प्रकार की अनुभूतियां स्वप्न के माध्यम से सहज हो जाती है। कुछ दिव्य संदेश एवं अलौकिक संकेत दिव्यात्माओं के द्वारा भी मानव को स्वप्नों के माध्यम से मिलते हैं। मृतात्माएं तीन प्रकार की होती हैं।

(1) श्रेष्ठ (2) मध्यम (3) निकृष्ट

जिन आत्माओं का स्तर ऊंचा होता है, वे अपनी उदार सद्भावना के कारण दूसरों की सहायता करने की मनःस्थिति में रहते हैं। अपनी जानकारी के हिसाब से साधारण मनुष्य को दिव्य-संकेत और जानकारियां देकर उनका उपकार करते रहते हैं। ऐसे दिव्य स्वप्नों की संख्या कम नहीं हैं बल्कि उनमें भवितव्यतता के गूढ़ संकेत भी अन्तर्निहित रहते हैं। वे प्रेरणा-प्रदीप बनकर पथ-दर्शन करते हैं, उन्नति का द्वार उद्घाटित करते हैं, छिपी क्षमताओं को भी उजागर करते हैं।

'महात्मा बुद्ध जब राजकुमार गौतम थे, तो वे अहिंसा, वैराग्य व जीवन की नश्वरता आदि के बारे में सोचा करते थे। एक रात्रि में स्वप्न में उन्हें श्वेत वस्त्रधारी एक साधु दिखाई पड़ा, जो उन्हें हाथ पकड़कर श्मशान ले गया। वहां उस समय एक शव पड़ा हुआ था। उस शव को इंगित कर साधु ने कहा- ''देख लो सिद्धार्थ, यह शव तेरा है। इस तथ्य को समझ और जीवन का सदुपयोग कर।'' प्रातः जागते ही वे रात को देखे सपने के बारे में चिन्तन करने लगे। अंततः राज्य को छोड़कर उन्होंने संन्यास ले लिया। इस प्रकार उनके एक दिव्य स्वप्न ने जीवन की दिशा ही परिवर्तित कर दी।

बोधिसत्त्व को इन्द्र ने दिए दर्शनः भगवान बुद्ध के पहले जन्म की बात है। वह बोधिसत्त्व अवस्था में थे। उन्होंने एक समृद्ध परिवार में जन्म लिया था। वह धन से दरिद्रों, भिखारियों तथा बीमारों की सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। वह एक दिन प्रातः काल सोकर उठे तो देखा कि चोरों ने पूरा घर खोज लिया। वे तमाम धन ही नहीं, अन्य वस्तुएं भी ले गए हैं। उन्हें धन के जाने का किंचित् भी दुःख नहीं हुआ, पर चिन्ता यह हुई कि अब दान करने के अपने नियम का पालन कैसे करेंगे। वह चिन्ता में घुल रहे थे कि देखा, सामने की खूंटी से टेडो हंसुआ (हंसिया) रस्सी उठाकर वह जंगल में जा पहुंचे। वहां घास काटी और सिर पर रखकर बाजार ले गए। वह प्रतिदिन घास बेचकर दरिद्रों की सहायता करते रहे।

एक रात स्वप्न में किसी देवदूत ने उनसे कहा-'तुम घोर मेहनत करके घास बेचकर मिले पैसे बांट देते हो। दो बार की जगह एक बार सूखी रोटी खाने से तुम्हारा शरीर पिञ्जर हो रहा है। ऐसा मत करो। प्राप्त धन का आधा धन अपने पर खर्च किया करो। जिनके पास असीमित धन है, उन्हीं के लिए दान धर्म है। ' बोधिसत्त्व ने जवाब दिया- ' मुझे नश्वर शरीर को तृप्त करने में वह आनन्द नहीं मिलता, जो दरिद्र की सेवा से मिलता है। ' बोधिसत्त्व ने अचानक देखा कि इन्द्र सामने खड़े हैं। वे कह रहे हैं- 'मैंने ही तुम्हारा धन हरण किया था। वह तुम्हें मैं अभी वापिस दे रहा हूँ। वास्तव में तुम सच्चे दानवीर हो। 'यह कहकर इन्द्र अन्तर्धान हो गये।

मिलिन्दपण्हो में स्वप्न :बौद्ध-दर्शन(मिलिन्दपण्हो) में स्वप्न संबंधी विस्तृत संवाद राजा प्रसेनजित एवं नागसेन का मिलता है। स्वप्न संबंधी विविध जिज्ञासाओं

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

का समाधान करते हुए नागसेन बताते हैं - स्वप्न चित्त के सामने आनेवाला निमित्त मात्र है। वे छह प्रकार के आते हैं :-

(1) वायु भर जाने से स्वप्न आता है।
(2) पित्त के प्रकोप से स्वप्न आता है।
(3) कफ बढ़ जाने से स्वप्न आता है।
(4) देवताओं के प्रभाव में आकर कितने स्वप्न आते हैं।
(5) भविष्य में होने वाली बातों का भी कभी-कभी स्वप्न आता है।
(6) पूर्व निमित्त से होने वाले स्वप्न।

इन छह में जो स्वप्न आता है, वही सच्चा है, बाकी सभी मिथ्या। भविष्य में होने वाली बातें स्वयं चित्त में चली आती हैं। जैसे - दर्पण स्वयं बाहर के बिम्ब को खोजकर अपने में नहीं लेता और न कोई दूसरा दर्पण में बिम्ब डाल देता है किन्तु बाहर की चीजों की छाया स्वयं जाकर दर्पण में प्रतिबिम्बित होती है। इसी तरह न तो चित्त बाहर जाकर भविष्य में होने वाली घटनाओं की खबर ले आता है और न कोई दूसरा आकर बता जाता है। भविष्य में होने वाली बातें स्वयं ही जहां कहीं से आकर चित्त में प्रतिबिम्बित हो जाती हैं। जो चित्त स्वप्न देखता है, वह नहीं जानता कि इसका फल कैसा होगा?

मनुष्य के शरीर में तिल, फुंसी या दाद हो जाता है। ज्योतिषी लोग ही फुंसी उठने के स्थान के अनुसार देख कर बताते हैं, इसका ऐसा फल होगा। इसी तरह, जो चित्त स्वप्न देखता है वह नहीं जानता कि इसका फल कैसा होगा-शान्तिकर या भयप्रद? उसका अर्थ लगाते हैं। जो स्वप्न देखता है वह तो न सोते हुए देखता है और न जागते हुए किन्तु गहन नींद के हल्का हो जाने पर जो एक अवस्था होती है उसी में स्वप्न आते हैं। घोर नींद आ जाने पर चित्त विस्मृत (भवङ्गगत) हो जाता है, विस्मृत चित्त काम नहीं करता और तब उसे सुख दुःख का पता भी नहीं होता। जब चित्त कुछ नहीं जानता है तो उसे स्वप्न भी नहीं आते। चित्त के काम करने पर ही स्वप्न आते हैं। जाग्रत अवस्था में चित्त चंचल बना हुआ, प्रगट और स्वच्छन्द होता है। इस अवस्था में कोई निमित्त नहीं आता। जैसे अपने को छिपाकर रखने की इच्छा करने वाला पुरूष किसी खुले स्थान में सबके सामने चुप-चाप बैठकर दूसरे पुरूष से नजर बचाकर रहना चाहता है। इसी तरह, जागते हुए चित्त में दिव्य अर्थ नहीं आते। इसलिए जागृत पुरूष स्वप्न नहीं देखता।

शरीर थका हुआ सा मालूम होता है, कमजोरी मालूम होने लगती है, शरीर मन्द और ढ़ीला पड़ जाता है- यही उसका आदि है। बन्दर की नींद की तरह आधा जागता है और आधा सोता है- यह उसका मध्य है। अपने को बिल्कुल भूल जाता है, विस्मृत हो जाता है (भवङ्गगत) यह अन्त है। इसमें जो मध्य की अवस्था है, उसी में स्वप्न आते हैं। जैन दर्शन में भी अर्द्ध निद्रावस्था को ही स्वप्नावस्था कहा गया है। यह मंतव्य जैन-दर्शन से साम्यता रखता है।

माता महामाया के सपने : सोते समय नींद में आने वाले स्वप्न भी कहीं न कहीं दबी हुई इच्छाओं और स्मृतियों का रूप ही होते हैं। विचार शुद्ध हो तो सपने भी अच्छे आते हैं। जब मन मयूर सूक्ष्म सत्ता की ओर अग्रसर होता है तो स्वप्नों के वातायन से उसे अदृश्य अतीत एवं अनागत की सही एवं सच्ची घटनायें दिखाई देती हैं। मन जितना सूक्ष्मग्राही, परिष्कृत एवं संयमी होगा, सपने उतने ही सच्चे होंगे। जैसे-जैसे चेतना गहराई में उतरती जाती है, सार्थक स्वप्नों का क्रम चल पड़ता है। स्थूल जगत में जो कुछ यथार्थ उन्नति हुई है वह सब यथार्थ स्वप्न-शक्ति की प्रबल प्रेरणा से हुई। मन को साधना की आंच में पकाकर वांछित स्वप्न भी देखे जा सकते हैं। सार्थक स्वप्नों का संबंध पवित्र आभामंडल एवं शुद्ध विचारों के साथ भी जोड़ा गया है। स्वच्छ मन की मंजूषा में सार्थक स्वप्नों के बहुमूल्य रत्न भरे पड़े हैं तभी तो महापुरूष एवं उनकी मातायें महास्वप्न देखा करती हैं। गौतम बुद्ध की माता महामाया के साथ ऐसी घटना घटी थी। राजा शुद्धोधन की रानी महामाया राजकीय शय्या पर सोयी हुई थीं और उन्हें स्वप्न आया कि देवताओं ने उन्हें हिमंवत प्रदेश में एक शाल-वृक्ष के नीचे रखा है। वहां का वातावरण एकदम शुद्ध है तभी सुमेध नामक एक बोधिसत्व उनके पास आया और उसने पूछा-मैनें अपना अंतिम जन्म पृथ्वी पर धारण करने का निश्चय किया है, क्या आप मेरी माता बनना स्वीकार करेंगी?

स्वप्न में ही महामाया ने उत्तर दिया- हां और उनकी नींद खुल गई तब रानी ने अपने सपने की चर्चा राजा से की। राजा ने श्रेष्ठ ब्राह्मणों को बुलाकर रात्रि में रानी को निद्रा में आए उस स्वप्न का अर्थ पूछा। ब्राह्मणों ने बताया कि राजा बड़ी खुशी की बात है आपके यहां पुत्र का योग है। यदि वह घर में रहा तो एक दिन चक्रवर्ती राजा बनेगा और यदि वह संन्यासी होगा तो वह बुद्ध बनेगा यानी संसार के अंधकार का नाश करने वाला होगा। महामाया को पवित्र विचारों से अच्छा स्वप्न आया और इस स्वप्न की पूर्ति हेतु वह अपनी गर्भावस्था में उत्तम

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आचरण करने लगी। गर्भस्थ शिशु को श्रेष्ठतम विचार, चिन्तन, जीवनशैली प्रदान की गई। अतः बुद्ध जैसी दिव्यात्मा ने जन्म लिया। व्यक्तित्व-निर्माण में पवित्र विचार और सार्थक स्वप्नों के योगदान को किसी भी तराजू में बटखरों से नहीं तोला जा सकता है। अंगुत्तर निकाय में स्वप्न कुछ भिन्न प्रकार से मिलता है।

महात्मा बुद्ध की माता के स्वप्न : बौद्ध धर्म ग्रंथों के अनुसार महात्मा बुद्ध की माता महामाया उपोस्थ (व्रत) के नियम ग्रहण कर सु-अलंकृत् शयनागार में रमणीय पल्यंक पर लेट गई। निहित अवस्था में उस समय उसने स्वप्न देखा- चार महाराज(दिक्पाल) शय्या-सहित मुझे उठाकर हिमवन्त प्रदेश में ले गए। साठ योजन के मनशिला नामक शिला पर सात योजन छाया वाले महान शालवृक्ष के नीचे मुझे रखकर खड़े हो गये। उन दिक्पालों की देवियां तब मुझे अनोतप्त देह पर ले गई।

मनुष्य-मल को दूर करने के लिए स्नान कराया। दिव्य वस्त्र पहनाएं, गध ांषविलेपन किया और दिव्य फूलों से मुझे सजाया। उसके समीप ही रजत-पर्वत है। उसमें स्वर्ण विमान है। वहां पूर्व की ओर सिर करके दिव्य बिछौने पर मुझे लेटा दिया। बोधिसत्व श्वेत सुन्दर हाथी बन समीपवर्ती सुवर्ण पर्वत पर विचरे तथा वहां से उतर रजत-पर्वत पर चढ़े। उत्तर दिशा से होकर उक्त स्थान पर पहुंचे। रूपहली माला के सदृश उनकी सूंड में श्वेत कमल था। मधुर नाद करते हुए स्वर्ण-विमान में प्रविष्ट हुए। शय्या की तीन प्रदक्षिणा की और दाहिनी बगल चीरते हुए कुक्षि में प्रविष्ट हुए। देवी महामाया ने दूसरे दिन प्रातः स्वप्न के बारे में राजा शुद्धोधन को सूचित किया। राजा ने चौसठ प्रधान ब्राह्मणों को बुलाया। ब्राह्मणों ने स्वप्नफल बताते हुए निवेदन किया- महाराज! चिन्ता-मुक्त हो, महारानी ने जो गर्भ धारण किया है, वह बालक है, कन्या नहीं है। आपके पुत्र रत्न होगा। यदि वह गृहस्थ में रहा तो चक्रवर्ती बनेगा और परिव्राजक बना तो महाज्ञानी बुद्ध होगा। आगे चल कर महारानी का यह स्वप्न साकार हुआ।

शेष आयु सूचक स्वप्न :

तेल और काले रंग से शरीर लिपा हो, केश बिखरे हुए देखे, गधे या ऊँट पर चढ़कर दक्षिण दिशा में अपने को स्वप्न में जाता हुआ देखे वह मरण सूचक जानना चाहिए। लाल कपड़ें पहने हुए, किसी नंगे व्यक्ति पर चढ़कर जाने का स्वप्न-फल अवश्य मरण फलदायक है। नंगा हो और घी से चुपड़े हुए हो तो मरण शरण जानना चाहिए। लाल-पुष्प धारण किये, लाल कपड़े पहने हुए कुछ

स्त्रियां हंसती हुई दिखाई पड़े तो रक्त-पित्त के दोष से मरण निष्पन्न होता है। चाण्डाल से स्नेह करने का फल प्रमेह से मरण उत्पन्न करने का प्रसंग आता है। यदि पानी में डूबने का स्वप्न आवे तो राक्षस दोष से मरता है। उन्माद से भटक कर स्वप्न में मादक पेय का पान करे तो उन्माद दोष से जीवन-लीला समाप्त करता हैं चाँद-सूरज के पतन से आँख दूखकर मरे। चाँद-सूरज का ग्रहण देखे तो मरण सूचक जानना चाहिए। स्वप्न में यदि कोई नंगा या मस्तक मुंडा हो, चाण्डालों के घरों की ओर या दक्षिण दिशा में जाता हो गड़ढ़े में पड़ गया हो, श्मशान में सोया पड़ा हो, ठोकर खाई हो, खार या धूल में लोटता हो, पानी या कीचड़ में फंस गया हो, अपहरण हुआ हो, शोक का वेग बढ़ा हो, लाल फूलों की माला पहने, लाल विलेपन किए हुए हो, सजे हुए विमान में गाना-बजाना-नाच और कूद-फाँद करता हो, पकवान भक्षण, दस्त, लोह का धंधा इन सब स्वप्नों का देखने वाला रोगी मरण-शरण होता है। इन परम दारूण स्वप्नों को देखने वाला रोगी का बचना असंभव है। मृत्युसूचक स्वप्नों का विवरण जैन, बौद्ध, वैदिक दर्शन के अलावा आयुर्वेद में भी इनका अच्छा निरूपण हुआ है। स्वप्नफल पद्धति के आधार पर जीवन-दर्शन के साथ-साथ मृत्यु का भी पूर्वानुमान स्वप्न द्वारा हो सकता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वैदिक संस्कृति में स्वप्न एवं स्वप्नफल

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चौथा वरदान : वैदिक संस्कृति में स्वप्न एवं स्वप्न फल

वैदिक वांगमय के व्योम में सुनहरे स्वप्नों के चमकते सितारे बिखरे पड़े हैं। इनसे रोशन रजनी में शयन करके अनेक पुण्यात्माओं ने अपने सृकृत के प्रभाव से दिव्य-स्वप्नों का साक्षात्कार किया है। इनके बिम्ब में भावी प्रतिबिम्ब देखकर उन्होंने अपने कर्तृत्व की उजली रेखाओं को ओर अधिक निखारा है। अपनी यशः काया को परवान चढ़ाया है। स्वप्नों का निरूपण वैसे तो हर दर्शन में हुआ है किन्तु वैदिक दर्शन के बहुआयामी स्वप्नों की कुछ बात ही निराली है। इसमें राम जन्म से लेकर कार्त्तवीर्यार्जुन वध तक भविष्यसूचक शुभाशुभ स्वप्नों का सांगोपांग चित्रण किया हुआ है। जो स्वप्नों की प्रामाणिकता एवं उपयोगिता को सही ढ़ंग से रेखांकित कर रहे है, जीवन-विकास के अनेक मानक प्रस्तुत कर रहे हैं। इन भविष्यसूचक स्वप्नों ने जीवन की समग्र बारीकियों को मित्र, सहायक एवं सलाहकार बनकर प्रस्तुति दी है। इन्हें नूतन सृष्टि के सन्देशवाहक भी हम कह सकते हैं। इनकी भावुक जमीन पर भविष्य-दर्शन की खड़ी अद्‌भुत अट्‌टालिकाएं अपने विकास की कहानियां कह रही हैं।

कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी के स्वप्न :जिस प्रकार जल बरसाने वाली अमृता नामक सूर्य की किरणें प्रजा के कल्याणार्थ जल रूप गर्भ को धारण करती हैं, उसी प्रकार उन तीनों रानियों ने लोक कल्याणार्थ विष्णु के अंश से परिपूर्ण गर्भ को धारण किया। कौशल्या, सुमित्रा एवं कैकेयी तीनों रानियां एक साथ गर्भवती हुई। इनकी शरीर की कान्ति धीरे-धीरे पीली पड़ने लगी, उस समय ये अनाज की बालों के समान पीली लगती थीं, जिनके अन्दर अंकुर पड़ गये हैं। उन तीनों रानियों ने रात में स्वप्न देखा कि शंख, गरूड, गदा, धनुष और चक्र लिए हुए कोई बौना पुरूष हमारी रक्षा कर रहा है। यह भी देखा कि आकाश में सुनहले पंखों के प्रभाजाल को फैलाते हुए और अपने वेग से बादलों को भी खींचकर ले जाते हुए गरूड़ हमें आकाश में उड़ाकर ले जा रहे हैं। भगवान से धरोहर के रूप में प्राप्त

कौस्तुभमणि को धारण करती हुई लक्ष्मी हाथ में कमल रूप पंखा लेकर हमारी सेवा कर रही हैं, यह स्वप्न भी देखा। इतना ही नहीं, आकाशगंगा में स्नान करके कश्यपादि सप्तर्षि वेदपाठ करते हुए हम लोगों की स्तुति करते हैं - इस प्रकार के स्वप्नों को देखकर रानियों ने राजा से कहा। रानियों से इस प्रकार के स्वप्नों को सुनकर राजा दशरथ अति प्रसन्न हुए। उन्होंने समझ लिया कि अब संसार में मेरे समान कोई सौभाग्यशाली नहीं है क्योंकि मैं अब संसार के गुरू विष्णु का भी पिता बन रहा हूँ।

राजा भरत का दुःस्वप्न दर्शन :हिन्दू धर्म के अनुसार राम-वनवास के अनन्तर तथा दशरथ के मरण के बाद राजा भरत ने भयंकर दुःस्वप्न देखा था। वाल्मिकी रामायण में उसका वर्णन इस प्रकार है - जिस रात में अयोध्या के दूतों ने भरत को बुलाने के लिए नगर में प्रवेश किया था। उससे पहली रात में भरत ने भी एक अप्रिय स्वप्न देखा था। रात बीतकर प्रायः सवेरा हो चला था तभी उस अप्रिय स्वप्न को देखकर राजाधिराज दशरथ के पुत्र भरत मन ही मन बहुत संतप्त हुए। उन्हें चिन्तित जान उनके अनेक प्रियवादी मित्रों ने उनका मानसिक क्लेश दूर करने की इच्छा से एक गोष्ठी की और उसमें अनेक प्रकार की बातें करने लगे। कुछ लोग वीणा आदि बजाने लगे।

दूसरे लोग उनके खेद की शान्ति के लिए नृत्य करने लगे। दूसरे मित्रों ने नाना प्रकार के नाटकों का आयोजन किया, जिनमें हास्यरस की प्रधानता थी। किन्तु रघुकुलभूषण महात्मा भरत उन प्रियवादी मित्रों की गोष्ठी में हास्य विनोद करने पर भी प्रसन्न नहीं हुए। तब सुहृदों से घिरकर बैठे हुए एक प्रिय मित्र के बीच में विराजमान भरत से पूछा-सखे ! तुम आज प्रसन्न क्यों नहीं होते हो? भरत ने उत्तर दिया - मित्र! मैंने आज स्वप्न में अपने पिताश्री महाराज दशरथ को देखा है। उनका मुखम्लान था। बाल खुले हुए थे और वे पर्वत की चोटी से एक ऐसे गन्दे गढ़े में गिर पड़े थे, जिसमें गोबर भरा हुआ था। मैंने उस गोबर के कुण्ड में उन्हे तैरते देखा था। वे अञ्जलि में तेल लेकर पी रहे थे, बार-बार हंसते हुए से प्रतीत हो रहे थे। फिर उन्होंने तिल और भात खाया। इसके बाद उनके सारे शरीर में तेल लगाया गया और फिर वे सिर नीचे किये तैल में ही गोते लगाने लगे। स्वप्न में मैंने यह भी देखा कि समुद्र सूख गया, चन्द्रमा पृथ्वी पर गिर पड़े हैं, सारी पृथ्वी उपद्रव से ग्रस्त और अन्धकार से आच्छादित हो गई है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

महाराज की सवारी के काम में आने वाले हाथी का दांत टूकटूक हो गया है। पहले से प्रज्वलित होती हुई आग सहसा बुझ गयी है।

मैंने यह भी देखा है कि पृथ्वी फट गई है, नाना प्रकार के वृक्ष सूख गये हैं तथा पर्वत ढ़ह गए हैं और उनसे धुंआ निकल रहा है। काले लोहे की चौकी पर महाराज दशरथ बैठे हैं। उन्होंने काला ही वस्त्र पहन रखा है। श्याम एवं पिंगल वर्ण की स्त्रियां उनके ऊपर प्रहार करती हैं। धर्मात्मा राजा दशरथ लाल रंग के पुष्पों की माला पहने और लाल चंदन लगाये गधे जुते हुए रथ पर बैठकर बड़ी तेजी के साथ दक्षिण दिशा की ओर गये हैं। रक्त वस्त्र धारण करने वाली एक स्त्री, जो विकराल मुखवाली राक्षसी प्रतीत होती थी। महाराज को हंसाती हुई स्त्री खींचकर लिये जा रही थी। यह दृश्य मैनें देखा है। इस प्रकार भयंकर रात्रि के समय मैंने यह स्वप्न देखा है। इसका फल यह होगा कि मैं (भरत) श्री राम, राजा दशरथ अथवा लक्ष्मण इनमें से किसी एक की अवश्य मृत्यु होगी। जो मनुष्य स्वप्न में गधे जुते हुए रथ से यात्रा करता दिखाई देता है उसकी चिता का धुंआ शीध्र ही देखने में आता है। यही कारण है कि मैं दुःखी हो रहा हूं। मेरा गला सूख रहा है और मन अस्वस्थ हो गया है। मैं भय का कोई कारण नहीं देखता तो भी भय को प्राप्त हो रहा हूँ। मेरा स्वर बदल रहा है तथा मेरी कान्ति भी फीकी पड़ गयी है। मैं अपने-आप से घृणा सी करने लगा हूं परन्तु इसका कारण क्या है? यह मेरी समझ में नहीं आता। जिनके विषय में मैंने पहले कभी सोचा तक नहीं था। ऐसे अनेक प्रकार के दुःस्वप्नों को देखकर तथा महाराज का दर्शन इस रूप में क्यों हुआ ? जिसकी मेरे मन में कोई कल्पना तक नहीं थी यह सोचकर मेरे हृदय से महान भय दूर नहीं हो रहा है। इस प्रकार महाराज भरत ने राजा दशरथ की मृत्यु का आभास स्वप्न में देख लिया था। विशिष्ट विभूतियों के अवतरण से पूर्व स्वप्नों द्वारा शुभ संदेश अवश्य मिलते हैं। जैनागम भगवती सूत्र में इसका उल्लेख है। जन-सामान्य को दिखाई देने वाले स्वप्न यथार्थ और अयथार्थ दोनों ही हो सकते हैं किन्तु विशिष्ट व्यक्तियों के स्वप्न सर्वदा सच्चे एवं सार्थक होते है। अतः कहा जाता है कि स्वप्न भविष्य का आइना है।

महासती सीताजी का स्वप्न : जब भरत रामचन्द्रजी से मिलने के लिए चित्रकूट जाते हैं, तो वहां सीताजी ने जो स्वप्न देखा था, वह भी अमंगल सूचक ही सिद्ध हुआ था। श्री रामचन्द्रजी रात्रि अवशेष रहते ही जाग गये थे। रात को सीताजी ने ऐसा स्वप्न देखा, जिसे वे श्री राम जी को सुनाने लगी। प्रभो! भरतजी

समाज सहित यहां आये हैं। प्रभु के वियोग की अग्नि से उनका शरीर संतप्त है। सभी लोग मन से उदास, दीन और दुःखी हैं। माता कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी आदि सासुओं को दूसरी सूरत में देखा। सीताजी का स्वप्न सुनकर श्री रामचन्द्र जी की आंखों में पानी भर आया। सबको चिन्ता एवं सोच से मुक्त करने वाले प्रभु श्री राम स्वयं चिन्तित एवं सोच के वश हो गये। भगवान श्री राम बोले - लक्ष्मण! यह स्वप्न अच्छा नहीं है। कोई भीषण कुसमाचार (बहुत ही बुरी खबर) सुनावेगा, ऐसा कहकर उन्होंने भाई सहित स्नान किया और महादेव जी का पूजन करके साधुओं का सम्मान किया। इस प्रकार महासती सीता ने दशरथ-मरण का पूर्वाभास स्वप्न में किया। जिसका हृदय पवित्र एवं साफ होता है उसे शुभाशुभ भविष्य का पूर्वाभास स्वतः ही हो जाता है।

वाल्मिकी रामायण में त्रिजटा के दिव्य स्वप्न : श्री रामचन्द्रजी की विजय की शुभ सूचना देने वाले तथा राक्षसों के विनाशसूचक स्वप्न त्रिजटा ने देखे हैं। उनका वर्णन वाल्मिकी रामायण में इस प्रकार हैं - आज मैंने बड़ा भयंकर और रोमांचकारी स्वप्न देखा है, जो राक्षसों के विनाश और सीतापति के अभ्युदय की सूचना देने वाला है। त्रिजटा के ऐसा कहने पर वे सब राक्षसियां, जो पहले क्रोध ा से मूर्च्छित हो रही थी त्रिजटा से इस प्रकार बोली- अरी सखि! बताओ तो सही, तुमने आज रात में यह कैसा स्वप्न देखा? उन राक्षसियों के मुख से निकली हुई यह बात सुनकर त्रिजटा ने उस समय वह स्वप्न इस प्रकार बताये-

(1) आज स्वप्न में मैंने देखा कि आकाश में चलने वाली एक दिव्य शिविका है। वह हाथी-दांत की बनी हुई है। उसमें

एक हजार घोड़े जुते हुये हैं और श्वेत-पुष्पों की माला तथा श्वेत परिधान धारण किये हुए स्वयं श्रीराम, श्रीलक्ष्मण

के साथ उस शिविका पर चढ़कर यहां पधारे हैं।

(2) सीता श्वेत वस्त्र धारण कर श्वेत पर्वत पर बैठी हैं। वह पर्वत समुद्र से घिरा हुआ है। सूर्य से जिस प्रकार उसकी प्रभा मिलती है, उसी प्रकार सीता श्रीरामचन्द्रजी से मिली।

(3) मैंने श्रीरघुनाथ जी को फिर देखा, वे चार दाँत वाले विशाल गजराज पर, जो पर्वत के समान ऊँचा था, लक्ष्मण के साथ बैठे हुए बड़ी शोभा पा रहे थे।

(4) तदनन्तर अपने तेज से सूर्य समान प्रकाशित होते हुए तथा श्वेत माला व श्वेत वस्त्र धारण किये हुए श्रीराम एवं लक्ष्मण सीताजी के पास आये थे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

(5) फिर उस पर्वत-शिखर पर आकाश में ही खड़े हुए और पति द्वारा पकड़े गये उस हाथी के कंधे पर जानकी भी पहुंची।

(6) इसके बाद कमल नयनी सीता अपने पति के अंक से ऊपर उछल कर चन्द्र एवं सूर्य के पास पहुंच
गई। वहां मैंने देखा वे अपने दोनों हाथों से चन्द्रमा और सूर्य को छू रही है, परिमार्जन कर रही हैं।

फलादेश :- जो स्त्री या पुरूष स्वप्न में अपने दोनों हाथों से सूर्य अथवा चन्द्रमा को छू लेता है, उसे विशाल राज्य की प्राप्ति होती है।

(7) तत्पश्चात् जिस पर वे दोनों राजकुमार एवं विशाल लोचना सीताजी विराजमान थी, वह महान गजराज लंका में
आकर खड़ा हो गया।

(8) फिर मैंने देखा कि आठ श्वेत वृषभों से युक्त रथ पर आरूढ़ हो ककुत्स्थ कुलभूषण श्री रामचन्द्रजी श्वेत पुष्पों की
माला और वस्त्र धारण किये अपनी धर्मपत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ यहांपधारे हैं। इसके बाद दूसरी जगह मैंने देखा-सत्य पराक्रमी और बल विक्रमशाली पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ सूर्य तुल्य तेजस्वी दिव्य पुष्पक विमान पर आरूढ़ हो उत्तर दिशा को लक्ष्य करके यहां से प्रस्थित हुए हैं।

इस प्रकार मैंने स्वप्न में भगवान विष्णु के समान पराक्रमी श्रीराम का उनकी भार्या सीता एवं भ्राता लक्ष्मण के साथ दर्शन किये। श्रीरामचन्द्रजी महातेजस्वी हैं। उन्हें देवता, असुर, राक्षस तथा दूसरे लोग भी कदापि जीत नहीं सकते। ठीक उसी तरह, जैसे पापी मनुष्य स्वर्गलोक पर विजय नहीं पा सकते।

रावण से सम्बन्धित त्रिजटा के स्वप्न :मैंने रावण को भी सपने में देखा था। वह मूंड मुंडाये तेल से नहाकर लाल कपड़े पहने हुए था। मदिरा पीकर मतवाला हो रहा था। करवीर के पुष्पों की माला पहने हुए था। इसी वेशभूषा में आज रावण पुष्पक विमान से पृथ्वी पर गिर पड़ा था।

एक स्त्री उस मुण्डित-मस्तक रावण को कहीं खींचे ले जा रही थी। उस समय मैंने फिर देखा रावण ने काले वस्त्र पहन रखे हैं। वह गधे युक्त रथ से यात्रा कर रहा था। लाल फूलों की माला एवं रक्त चंदन से विभूषित तेल पीता हुआ, हंसता हुआ नाच रहा था। पागलों की भांति उसका चित्त भ्रान्त और इन्द्रियां

व्याकुल थी। वह गर्दभारूढ़ होकर शीघ्रतापूर्वक दक्षिण दिशा की ओर जा रहा था। फिर देखा राक्षसराज रावण गधे से नीचे गिर पड़ा है। उसका सिर नीचे की ओर है और पैर ऊपर की ओर तथा वह भय से मोहित हो रहा है। फिर वह भयातुर हो घबराकर सहसा उठा और मद से विह्वल हो पागल के समान नंग-धड़ंग बहुत से दुर्वचन बकता हुआ आगे बढ़ गया। सामने ही दुर्गन्धयुक्त, दुःसह घोर अंधकारपूर्ण एवं नरक तुल्य मल का पंक था, रावण उसी में घुसा और वहीं डूब गया। तदनन्तर फिर देखा रावण दक्षिण की ओर जा रहा है। उसने एक ऐसे तालाब में प्रवेश किया है, जिसमें कीचड़ का नाम नहीं है, वहां एक काले रंग की स्त्री है, जिसके अंगों पर कीचड़ लिप्त है, वह युवती रक्त वस्त्र पहने हुए है और रावण का गला बांधकर उसे दक्षिण दिशा की ओर खींच रही है। वहां महाबली कुम्भकर्ण को भी मैंने इसी अवस्था में देखा है। रावण के सभी पुत्र भी मूंड-मुंडाये और तेल में नहाये हुए दिखाई दिए हैं। यह भी देखने में आये कि रावण सूअर पर, इन्द्रजीत सूंस (शिशुमार) पर एवं कुम्भकर्ण ऊँट पर सवार हो दक्षिण दिशा को गये हैं। राक्षसों में एकमात्र विभीषण ही ऐसे हैं, जिन्हें मैंने वहाँ श्वेत छत्र लगाये, सफेद माला पहने, श्वेत वस्त्र धारण किये तथा श्वेत चन्दन और अंगराग लगाये देखा है। उनके पास शंख ध्वनि हो रही थी, नगाड़े बजाये जा रहे थे। इनके गम्भीर घोष के साथ ही नृत्य और गीत भी गाये जा रहे थे, जो विभीषण की शोभा बढ़ा रहे थे। वह अपने चार मंत्रियों सहित पर्वत के समान विशाल, मेघ के समान गम्भीर शब्द करने वाले चार दांतों वाले दिव्य गजराज पर आरूढ़ हो कर आकाश में खड़े थे। यह भी देखने में आया कि तेल पीने वाले तथा माला और लाल वस्त्र धारण करने वाले राक्षसों का वहां बहुत बड़ा समाज जुटा हुआ है एवं गीतों और वाद्यों की मधुर ध्वनि हो रही है। यह रमणीय लंकापुरी घोड़े, रथ और हाथियों सहित समुद्र में गिरी हुई, इसके बाह्य और भीतरी द्वार टूटे हुए देखे हैं।

रावण द्वारा सुरक्षित लंकापुरी को श्रीराम के दूत बनकर आये हुए एक वेगशाली वानर ने जलाकर भस्म कर दिया है। राख से रूक्ष लंका में सभी राक्षसणियां तेल पीकर मतवाली हो बड़े जोर-जोर से ठहाका मार कर हंसती हैं। कुम्भकर्ण आदि ये समस्त राक्षस शिरोमणि वीर रक्त वस्त्र पहनकर गोबर के कुण्ड में घुस गए हैं। जिस दुःखिनी नारी के विषय में ऐसा स्वप्न देखा जाता है, वह बहुत दुःखों से छुटकारा पाकर परमोत्तम प्रिय वस्तु को पा लेती है। इस प्रकार पतिदेव के विजय सूचक हर्ष से भरी हुई लजीली सीता उनसे बोली- यदि तुम्हारी बात सत्य

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

हुई तो मैं तुम्हारी रक्षा करूंगी। इससे स्पष्ट होता है कि शुभस्वप्न का प्रभाव शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक रूप से व्यक्तित्व पर पड़ता है।

रामचरित मानस में त्रिजटा के स्वप्न : जब सीताजी रावण की बन्दिनी थी। त्रिजटा नामक एक राक्षसी उनकी देख-भाल के लिए रावण द्वारा नियुक्त की गई थी। जब श्रीराम ने वानर-सेना के साथ श्री लंका पर आक्रमण किया तो उन्हीं दिनों त्रिजटा ने एक महत्त्वपूर्ण स्वप्न देखा जिसका तुलसीदासजी ने वर्णन 'रामचरितमानस' में निम्न प्रकार से किया है-त्रिजटा नाम की एक राक्षसी थी। वह राम भक्ति में रत, विवेकशील एवं चतुर थी। उसने कुछ स्वप्न देखे। सब राक्षसियों को वे महत्त्वपूर्ण स्वप्न बताती हुई कहती हैं कि सीता अपना हित करने वाली हैं। मैंने स्वप्न देखा कि वानरों ने लंका जलाकर राख कर दी है। सारी राक्षस-सेना मारी गई है। दशानन रावण की बीसों भुजाएं कट गई हैं, सिर मुण्डित है। वह गर्दभ पर नग्न सवार होकर दक्षिण दिशा की तरफ जा रहा है। लंका का राज्य विभीषण ने प्राप्त किया है। पूरे लंका नगर में श्रीराम की यश पताका फहरा रही है। लंका विजय के पश्चात् प्रभु सीता को पाकर प्रमुदित हुए। यह स्वप्न मैंने देखे हैं। चार दिन के पश्चात् मेरे सारे स्वप्न सत्य साबित होंगे। इससे त्रिजटा का स्वप्नों के प्रति दृढ़ विश्वास एवं अटूट आस्था मुखर हो रही है। क्योंकि कष्टों के कुहासे में उगते स्वर्णिम स्वप्न-सूर्य की रश्मियां तिमिराच्छादित मन में चारों ओर आशा का प्रकाश फैला देती है।

नन्दबाबा का स्वप्न : जन्माष्टमी के दिन रात्रि में बारह बजे तक नंद बाबा ने जागरण किया। ब्रजवासी अधीर भाव से प्रतीक्षा कर रहे थे कि आनन्द की वार्ता कब आयेगी। नंद बाबा के कुलगुरू शाण्डिल्य ऋषि को परमात्मा की प्रेरणा हुई। उन्होंने नंदबाबा से कहा- अभी इस समय जागने की जरूरत नहीं है। बाबा आप सो जाइए। सुबह आनंद की वार्ता सुनेंगे। नंदबाबा जैसे ही शैया पर सोये कि योगमाया का आवरण आ गया। सभी को प्रगाढ़ निद्रा आ गई। वासुदेवजी जब बाल कृष्ण लला को गोकुल में ले आये तब नंदबाबा शैया में सोये हुए थे, उन्हें एक सुन्दर स्वप्न दिखाई दिया। नंदबाबा ने स्वप्न में देखा कि मैं गायों की पूजा कर रहा हूं। मेरे घर बड़े-बड़े ऋषि महात्मा आये हैं। सब मुझे आशीर्वाद दे रहे हैं। यशोदा की गोद में अति सुन्दर बालक खेल रहा है। नंदजी निद्रा से जागे। शैया में बैठकर सोचने लगे- रात्रि में बारह बजे तक मैं पुत्र का चिन्तन कर रहा था। इससे स्वप्न में मुझे बालक दिखाई दिया। स्वप्न में मैंने जैसा बालक यशोदाजी

की गोद में देखा, वैसा जगत् में कहीं नहीं होगा। गाय की सेवा करते हुए नंद बाबा स्वप्न का स्मरण कर रहे थे। यशोदाजी की गोद में बालकृष्ण के दर्शन की याद आती है। कैसा सुन्दर बालक था, परम आश्चर्य हुआ है। नंदबाबा सोच रहे थे कि अगर नारायण की कृपा हो तो, ऐसा सुन्दर पुत्र हो। अगर ऐसा पुत्र हो तो मेरे घर की शोभा बढ़ जाएगी। मेरे लिए नहीं, पर मेरी गायों की सेवा के लिए मुझे पुत्र दे दीजिए। जो बालक स्वप्न में देखा था, वही गौशाला में दीख पड़ा। नंदबाबा की बहिन सुनन्दा ने देखा, भाभी की गोद में सुन्दर बालक है। सुनन्दा दौड़कर गौशाला पहुंची और कहा- भैया। लाल भयौ है। नन्द बाबा का स्वप्न साकार हुआ। सत्य स्वप्न का संवाद वास्तविक जगत का अमिट इतिहास बन गया। इसलिए तो सम्पूर्ण संसार स्वप्नों पर करता है विश्वास। जब व्यक्ति का अशुभ समय आने वाला होता है तो स्वप्न भी अनिष्ट सूचक आते हैं। दुःस्वप्नों का यह जाल ही जंजाल साबित हो उठता है। स्वप्नों पर किसी का जोर नहीं चलता है, ये वो अग्नि है जो लगाये न लगे और बुझाने पर भी न बुझे। ऐसी भीषण दुर्भविष्य की भभकती लपटों का अनुमान स्वप्नों द्वारा करके व्यक्ति भयभीत हो उठता है। अपने धूमिल भविष्य का पूर्वाभास उसे स्वतः ही होने लगता है। कभी लाभ, कभी हानि, कभी सुख, कभी दुःख, कभी संयोग, कभी वियोग इन द्वन्द्वात्मक परिस्थितियों के बीच शुभाशुभ स्वप्नों का चक्र गतिमान रहकर भविष्य बोध कराता रहता है।

कंस के दुःस्वप्न : कंस दुःस्वप्न को देखकर एक दिन समुद्विग्न हो गया। उसे महान् भय व्याप्त हो गया और उत्साहहीन होते हुए निराहार रहने लगा। उसने अपने पुत्र-मित्र, बन्धुवर्ग-बान्धव और पुरोहित इन सबको बुलाकर बहुत अधिक दुःखित होते हुए सभा के मध्य में इस प्रकार कहा- "जब मैंने अर्द्ध रात्रि में एक बहुत ही बुरा स्वप्न देखा जिससे अत्यधिक भय ने मुझे घेर लिया है। अब आप समस्त मेरे बान्धव लोग, विद्वान और पुरोहित मुझे समझाने की कृपा करें। मैंने स्वप्न देखा है कि मेरे नगर में एक अत्यंत वृद्धा, जिसका वर्ण एकदम काला है, नृत्य करती हुई भ्रमण कर रही है। वह रक्तवर्ण के पुष्पों की माला तथा रक्त चन्दन धारण करने वाली थी। उसके वस्त्र भी रक्तवर्ण के थे। उसके हाथ में एक तीक्ष्ण खड्ग और अति भयंकर खप्पर था। उसकी बहुत ही चंचल लम्बी जिह्वा बाहर निकल रही थी, वह एकदम बड़े ही जोर से अट्टहास कर रही थी। उसके सिर के बाल बिखरे हुए थे। उसकी नासिका छिन्न (नकटी) थी तथा वह कृष्ण

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अम्बर वाली थी। वह विधवा महाशूद्री मेरा आलिंगन करने की इच्छा वाली हो रही थी। वह मैले, पुराने वस्त्र के खण्ड को धारण करने वाली तथा जिसके केश बहुत ही रूक्ष थे और चूर्ण तिलक को कपाल पर लगाये हुए वह महाशूद्री, विधवा थी।

मेरे वक्षःस्थल पर कृष्णवर्ण वाले पक्षी और छिन्न-भिन्न ताल के फल निरन्तर शब्द करते हुए गिर रहे थे। एक कुवस्त्रधारी-विकृत आकार वाला-रूखे केशों से युक्त म्लेच्छ है, जो मुझे वेशभूषा के लिए छिन्न-भिन्न चिथड़ों को दे रहा था। पति और पुत्र वाली सती दिव्य स्त्री अत्यधिक मुझ पर रूष्ट हो रही थी और वह पुनः पुनः पूर्ण कुम्भ का भञ्जन कर मुझे अभिशप्त कर रही थी। एक महान् रूष्ट विप्र रक्त चन्दन से चर्चित अम्लान मूढ़माला मुझे अभिशप्त करके दे रहा था। क्षण भर में तो मैंने स्वप्न में देखा कि अंगारों की वर्षा चारों ओर हो रही थी, दूसरे ही क्षण में राख (भस्म) की वर्षा हो रही है। कभी-कभी क्षण-क्षण में रक्त-वृष्टि होती हुई मैंने पहले ही नगर में देखी। मैंने रात्रि के स्वप्न में यह भी देखा कि वानर वायस, श्वान, भालू, शूकर और गधा-विकृत आकार वाला सब अत्यन्त भीषण शब्द कर रहे थे। मैंने शुष्क काष्ठों के समूह को अम्लान कज्जल रूप में देखा तथा अरूणोदय के समय में छिन्न नखों वाले बन्दरों को देखा। कंस ने कहा-मैंने रात्रि के समय स्वप्न में देखा कि एक पीतवस्त्रधारी-शुक्लचन्दन से चर्चित अंगोंवाली, मालती-माला धारण किये हुए-रत्नों के आभूषणों से विभूषित तथा क्रीड़ार्थ कमल हाथ में लेने वाली तथा सिन्दूर-बिन्दु से सुशोभित भालवाली देवी है, जो मुझ पर अत्यन्त रूष्ट होकर, मुझे अभिशाप देकर मन्दिर से बाहर चली गई। मैंने स्वप्न में देखा कि मुक्त केशों वाले, अत्यन्त भयंकर एवं बहुत ही अधिक रूखे पुरूष, जिनके हाथों में पाश (बेड़ी) लगे हुए थे, वे इस नगर में प्रवेश कर रहे थे।

एक नग्न नारी, जिसके मस्तक के केश एकदम खुले हुए थे, घर-घर में नृत्य करती हुई भ्रमण कर रही थी। उसकी आकृति अत्यन्त विकृत थी और मुस्करा रही थी। एक छिन्न नासिकावाली (नकटी) विधवा महाशूद्री बिल्कुल ही नग्न थी। वह अत्यन्त भयंकर मेरा तैलाभ्यंग कर रही थी। मैंने देखा कि निर्वाण अंगारों युक्त भस्म से पूर्ण और नग्न, स्मित करने वाले विचित्र पुरूष अति प्रभात के समय में यहाँ मेरे नगर में आए हुए हैं। मैंने स्वप्न में विवाह-मनोहर नृत्यगीत-रक्तवस्त्र के परिधान वाले कृष्ण रक्त केशों वाले पुरूष देखे। ऐसा पुरूष भी देखा जो नग्न-तेजी से दौड़ लगाने वाला, रक्त का वमन करने वाला, नाचता

हुआ-सोता हुआ और मुस्कान युक्त था। मैंने चन्द्रमा एवं सूर्य दोनों को आकाश में राहु के द्वारा ग्रसा हुआ देखा। मैंने एक ही काल में, समस्त बान्धवों का सर्व ग्रास होते हुए देखा। उल्कापात, धूमकेतु, भूकम्प, राष्ट्र विप्लव, झंझावात महोत्पात, ये सब मैंने हे पुरोहित! स्वप्न में देखे। मैंने यह भी देखा कि वायु के द्वारा वृक्ष एक साथ हिल रहे थे और उनके स्कंध टूट-टूट कर गिर रहे थे। मैंने पर्वतों को गिरते हुए देखा, जो पृथ्वी पर उखड़-उखड़ कर पतित हो रहे थे।

कटे हुए मस्तक वाले, नग्न और उच्छ्रित एवं नृत्य करने वाले पुरूष को देखा। मैंने घर-घर में मुण्ड मालाओं का ढ़ेर देखा, जो कि अत्यन्त ही घोर रूप वाला था। समस्त आश्रम दग्ध भस्म से पूर्ण और अंगारों से घिरे हुए थे। मैंने देखा कि सभी ओर सब हाहाकार और चीत्कार कर रहे थे। इस प्रकार से राजा कंस यह सब कहकर सभा में चुप हो गया। बान्धवों ने जब इस प्रकार के दुःस्वप्न को सुना तो सबके सब नत मस्तक होकर लम्बी श्वास लेने लगे। सत्यक नामक पुरोहित ने तुरन्त ही चेतना का हरण किया। हे नारद! मैंने अपने यजमान कंस के विनाश का होना मान लिया। समस्त नारी वर्ग रूदन करने लगा तथा माता-पिता भी शोक से ग्रस्त होकर रूदन कर रहे थे। सबने शीघ्र ही स्वयं उपस्थित विनाश का काल अच्छी तरह से मान लिया।

अक्रूजी के शुभ स्वप्न :अक्रूजी उत्तम मिष्टान्न खाकर शय्या पर सोये। उन्होंने सुवासित जल पीकर कपूर मिला हुआ पान खाया और सुखपूर्वक निद्रा ली। तदनन्तर रात के पिछले प्रहर में उन्होंने एक सुन्दर सपना देखा। ऐसा सपना, जिसकी पुराणों और श्रुतियों में प्रशंसा की गई है। उन्होंने स्वप्न में पहले एक ब्राह्मण बालक को देखा, जिसकी किशोर अवस्था और अंग कान्ति श्याम थी। वह दो भुजाओं से विभूषित था। उसके हाथ में मुरली थी। वह पीत वस्त्र धारण करके वनमाला से सुशोभित था। उसके सारे अंग चन्दन से चर्चित थे। मालती की माला उसकी शोभा बढ़ाती थी। वह पीत भूषण के योग्य और उत्तम मणि रत्न निर्मित आभूषणों से विभूषित था। उसके मस्तक पर मोर पंख का मुकुट शोभा दे रहा था। मुख पर मन्द मुस्कान की प्रभा फैल रही थी और नेत्र कमलों की शोभा को लज्जित कर रहे थे। इसके बाद उन्होंने पति और पुत्रों से युक्त, पीताम्बर धारिणी तथा रत्नमय आभूषणों से विभूषित एक सुन्दर सती को देखा, जिसके एक हाथ में जलता दीपक था और दूसरे में श्वेत धान्य। उसका मुख शरद् ऋतु के चन्द्रमा को तिरस्कृत कर रहा था। वह सुन्दरी हंसती, मुस्कुराती हुई वर देने को उद्यत

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

थी। इसके बाद उन्हें शुभाशीर्वाद देते हुए एक ब्राह्मण, श्वेत कमल राजहंस, अश्व एवं सरोवर के दर्शन हुए। उन्होंने फल और फूलों से लदे हुए आम, नीम, नारियल, विशाल आक और केले के वृक्ष का सुन्दर मनोहर चित्र भी देखा। उन्हें यह भी दिखाई दिया कि सफेद सर्प मुझे काट रहा है और मैं पर्वत पर खड़ा हूं। उन्होंने कभी अपने को वृक्ष पर, कभी हाथी पर, कभी नाव पर और कभी घोड़े की पीठ पर बैठे देखा। कभी देखा कि मैं वीणा बजा रहा हूं और खीर खा रहा हूं। कमल के पत्ते पर परोसा हुआ प्रिय अन्न, दही, दूध के साथ ले रहा हूं। कभी देखा कि मेरे अंगों में कीड़े और विष्ठा लग गये हैं। मैं रोता-रोता मोहित हो रहा हूं। कभी उन्हें अपने हाथों में श्वेत धान्य और श्वेत पुष्प दिखाई दिये। कभी उन्होंने अपने आपको चन्दन से चर्चित देखा। कभी अपने आपको अट्टालिका पर और कभी समुद्र में देखा। शरीर में रक्त लगा है; अंग-अंग छिन्न-भिन्न एवं क्षत-विक्षत हो रहा है। उसमें मेद तथा पीब लिपटे हुए हैं। यह बात देखने में आयी। तदनन्तर चांदी, सोना, उज्ज्वल मणि रत्न, मुक्ता, माणिक्य भरे हुए कलश का जल, बछड़ा सहित गौ, सांड, मोर, तोता, सारस, हंस, चील, खंजरीट, ताम्बूल, पुष्पमाला, प्रज्ज्वलित अग्नि, देवपूजा, पार्वती की प्रतिमा, श्रीकृष्ण की प्रतिमा, शिवलिंग, ब्राह्मण-कन्या, सामान्य बालिका, फली और पकी हुई खेती, देवस्थान, सिंह, बाघ, गुरू और देवता के दर्शन हुए। ऐसा स्वप्न देख प्रातः काल उठकर उन्होंने इच्छानुसार अष्टाह्निक कृत्यों का सम्पादन किया। इसके बाद उद्धव से स्वप्न का सारा वृतांत कहा। स्वप्न के फलस्वरूप अक्रूरजी वृन्दावन दर्शन करते हुए नन्द भवन में गये। उन्हें वहां श्री कृष्ण के विविध रूपों में दर्शन हुए। इस प्रकार श्री अक्रूरजी के स्वप्न साकार हुए।

परशुराम के शुभ स्वप्न : नर्मदा तट पर, कार्तवीर्यार्जुन के आश्रम के निकट परशुराम ने रात में पुष्प-शय्या पर शयन किया। रात व्यतीत होते-होते भार्गव परशुराम को एक सुन्दर स्वप्न दिखायी दिया, जो वायु, पित्त और कफ के प्रकोप से रहित था। उन्होंने देखा कि मैं हाथी, घोड़ा, पर्वत, अट्टालिका एवं फलयुक्त वृक्ष पर चढ़ा हुआ हूं। मुझे कीड़े काट रहे हैं, जिससे मैं रो रहा हूं। मेरे शरीर में चन्दन लगा है। मैं पीले वस्त्र से शोभित तथा पुष्पमाला धारण किये हुए हूँ। मेरा सारा शरीर मल-मूत्र से सराबोर है और उसमें मज्जा और पीब चुपड़ा हुआ है ऐसी दशा में मैं नौका पर सवार हूं और उत्तम वीणा बजा रहा हूं।

फिर देखा कि मैं नदी तट पर बड़े-बड़े कमल-पत्रों पर रख कर दही, घी और मधु-मिश्रित खीर खा रहा हूं। पुनः देखा कि मैं पान चबा रहा हूं। मेरे सामने फल, पुष्प और दीप रखे हुए है तथा ब्राह्मण मुझे आशीर्वाद दे रहे हैं। फिर अपने को बार-बार पके हुए फल, दूध, शक्कर मिश्रित गरमागरम अन्न, स्वस्तिक के आकार की बनी मिठाई खाते देखा। पुनः, मैंने देखा कि मुझे जल-जन्तु, बिच्छु, मछली तथा सर्प काट रहे हैं और मैं भयभीत होकर भाग रहा हूं। चन्द्रमा एवं सूर्य का मण्डल, पति और पुत्र से सम्पन्न नारी और मुस्कराते हुए ब्राह्मण को देख रहा हूं। पुनः अपने को सुन्दर वेशवाली परम संतुष्ट कन्या तथा संतुष्ट एवं मुस्कानयुक्त ब्राह्मण द्वारा आलिंगित होते हुए देखा। फिर देखा कि मैं (परशुराम) फल-पुष्प समन्वित वृक्ष, देवता की मूर्ति, हाथी एवं रथ पर सवार हुए राजा को देख रहा हूं। पुनः मैंने देखा-मैं एक ऐसी ब्राह्मणी को देख रहा हूं, जो पीला वस्त्र धारण किए हुए हैं, रत्नों के आभूषणों से विभूषित है और घर में प्रवेश कर रही है। फिर अपने को शंख, स्फटिक, श्वेत माला, मोती, चन्दन, सोना, चांदी और रत्न देखते हुए पाया। पुनः भार्गव को हाथी, बैल, श्वेत सर्प, श्वेत चंवर, नीला कमल और दर्पण दिखायी पड़ा। परशुराम को स्वप्न में अपने को रथारूढ़, नये रत्नों से संयुक्त, मालती की मालाओं से शोभित और रत्न सिंहासन पर स्थित देखा। परशुराम ने स्वप्न में कमलों की पंक्ति, भरा हुआ घट, दही, घी, मधु, पत्ते का छत्र और नाई देखा। भृगुनन्दन ने स्वप्न में बगुलों की कतार, हंसों की पंक्ति और मंगल कलश की पूजा करती हुई, व्रती कन्याओं की पंक्ति देखी।

परशुराम ने स्वप्न में ब्राह्मणों को देखा, जो मण्डप में स्थित होकर शिव और विष्णु की पूजा कर रहे थे तथा 'जय हो' ऐसी जय ध्वनि का उच्चारण कर रहे थे। फिर परशुराम ने स्वप्न में सुधावृष्टि, पत्तों की वृष्टि, फल-फूल एवं चंदन की वर्षा, काटा हुआ मांस, जीवित मछली, मोर, श्वेत खंजन, सरोवर, तीर्थ, कबूतर, शुक नीलकण्ठ, सफेद चील, चातक, बाघ, सिंह, सुरभि (गाय) हल्दी गोरोचन, सफेद धान का विशाल पर्वत, प्रज्वलित अग्नि, दूब देव-मंदिर के समूह, पूजित शिव की मृण्मयी मूर्ति को देखा। परशुराम ने स्वप्न में जौ और गेहूं के आटे की पूड़ी और लड्डू को देखा एवं उन्हें बार-बार खाया। फिर अकस्मात् अपने को शस्त्र से घायल और जंजीर से बंधा हुआ देखकर उनकी नींद टूट गयी। वे प्रातः काल श्रीहरि का स्मरण करते हुए उठ बैठे। इस स्वप्न से उन्हें अत्यन्त हर्ष हुआ और मन में ऐसा समझ लिया कि निश्चय ही सारे शत्रुओं को जीत लूंगा। कालान्तर में वैसा ही हुआ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

राधा के दुःस्वप्न : राधा ने रात्रि में बड़े बुरे स्वप्न देखे। उन्होंने उठकर श्री कृष्ण से कहा-प्रभो! मैं रत्नसिंहासन पर रत्नमय छत्र धारण किये हुए बैठी थी। उसी समय रोष से भरे हुए एक ब्राह्मण ने आकर मेरा वह छत्र ले लिया और मुझ अबला को ही महाघोर कज्जलाकार दुस्तर गम्भीर सागर में फेंक दिया। मैं शोक से पीड़ित हो वहां जल के प्रवाह में बारम्बार चक्कर काटने लगी। घड़ियालों से भरे उस समुद्र में बड़ी-बड़ी लहरों के वेग से टकराकर मैं व्याकुल हो गई। बार-बार तुम्हें (श्रीकृष्ण) पुकारने लगी 'हे नाथ! मेरी रक्षा करो, रक्षा करो।' तुम्हें न देखकर मैं महान् भय में पड़ गई और देवता से प्रार्थना करने लगी।

हे कृष्ण! समुद्र में डूबती हुई मैंने देखा; चन्द्रमण्डल के सैंकड़ों टुकड़े हो गये हैं और वह आकाश से भूतल पर गिर रहा है। दूसरे ही क्षण मुझे दिखाई दिया कि सूर्य मण्डल भी आकाश से पृथ्वी पर गिर पड़ा और उसके चार टुकड़े हो गये। फिर एक ही समय में आकाश के भीतर चन्द्रमा एवं सूर्य के मण्डल को मैंने पूर्णतः राहु से ग्रस्त और अत्यन्त काला देखा। एक ही क्षण के बाद देखती हूं कि एक तेजस्वी ब्राह्मण ने रोषपूर्वक आकर मेरी गोद में रखे हुए अमृत-कलश को तोड़ डाला। क्षण भर बाद यह दिखाई दिया कि वह महारूष्ट ब्राह्मण मेरे नेत्रगत पुरूष को पकड़कर ले जा रहा है। प्रभो! मेरे हाथ से क्रीड़ा-कमल-दण्ड सहसा गिर पड़ा और उसके टुकड़े-टुकड़े हो गये। उत्तम रत्नों के सार भाग से बना हुआ दर्पण भी सहसा हाथ से गिरकर टूक-टूक हो गया। जो पहले निर्मल था, वह पीछे काला दिखाई देने लगा था। मेरा रत्नसार निर्मित हार और कमल छिन्न-भिन्न हो वक्षः स्थल से खिसक कर पृथ्वी पर गिर पड़ा। कमल अत्यन्त मलिन हो गया था। मेरी अट्टालिका में जो पुतलियां बनी हैं, वे सबकी सब क्षण-क्षण में नाचती, हंसती, ताल ठोकती, गाती और रोती दिखाई दी। आकाश में काले रंग का एक विशाल चक्र बार-बार घूमता दिखाई दिया, जो बड़ा भयंकर था। वह कभी-नीचे को गिरता और फिर ऊपर को उठ जाता था। मेरे प्राणों का अधिष्ठाता देवता पुरूष रूप में भीतर से बाहर निकला और बोला- राधे! विदा होकर अब मैं यहां से जा रहा हूं।

काले वस्त्र पहने हुए काली प्रतिमा दिखाई दी, जो आलिंगन और चुम्बन करने लगी। प्राण वल्लभ! यह विपरीत लक्षण देखकर मेरे दाये अंग फड़क रहे हैं और प्राण आन्दोलित हो रहे हैं। वे शोक से रोते और क्षीण होते हैं। मेरा चित्त उद्विग्न हो उठा है। यों कहकर राधिका देवी शोक से विह्वल और भयभीत हो

श्रीकृष्ण के चरण कमलों में गिर पड़ी। श्री कृष्ण बोले-प्रिये! तुम्हे तो पूर्वजन्म की बातों का स्मरण है। गोलोक का सारा वृतान्त और सुदामा का शाप क्या तुम्हें याद नहीं है?

महाभागे! उस शाप के कारण कुछ दिनों तक मुझसे तुम्हारा वियोग रहेगा। शाप की अवधि समाप्त होने पर फिर हम दोनों का मिलन होगा। फिर मैं गोलोकवासी गोपों और गोपांगनाओं के साथ अपने परमधाम गोलोक को चलूंगा। सुन्दरि! सुदामा के शाप से वियोग हमें अभीष्ट नहीं है, तथापि यह होकर ही रहेगा। सुमध्य में मैं राधा को वर देता हूं। उस वर के अनुसार जाग्रतावस्था में ही इन्हें मुझसे वियोग का अनुभव होगा परन्तु स्वप्न में राधा को निरन्तर मेरा सानिध्य प्राप्त होता रहेगा। स्वप्नों के विमान पर सवार होकर अतीन्द्रिय शक्तियां अपना परिचय देकर जनता को लाभान्वित करती है। ऐसे अनेक स्वप्न हैं जिनका सुनहरा रंग यदि इसमें भरा जाएं तो रेखाचित्र और भी अधिक नयनाभिराम बन जाएं किन्तु यहां उनकी झलक मात्र है।

राजा इन्द्रद्युम्न के स्वप्न : मालवा देश की अवन्ती नगरी के राजा इन्द्रद्युम्न के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि मैं किस प्रकार भोग मोक्षदाता योगेश्वर श्रीहरि की आराधना करूं? बहुत काल तक विचारकर राजा इन्द्रधुम्न ने सर्वोत्तम तीर्थ पुरूषोत्तम क्षेत्र में जाने का निश्चय किया। उस तीर्थक्षेत्र में पहले इन्द्रनील मणि से निर्मित प्रतिमा विराजित थी, जिसे स्वयं भगवान ने छिपा दिया था। भगवान् ने उस प्रतिमा को इसलिए तिरोहित कर दिया था कि उस प्रतिमा का दर्शन कर पृथ्वी के सब मनुष्य भगवद्धाम में चले जाते थे। राजा इन्द्रद्युम्न ने दृढ़ संकल्प किया कि मैं ऐसा प्रयत्न करूंगा, जिससे सत्यपराक्रमी विष्णु मुझे साक्षात् दर्शन देंगे। अश्वमेधयज्ञ तथा दान-पुण्यादि कर्म कर लिए गये। पुरूषोत्तम प्रासाद निर्माण कार्य विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ। अब राजा को अहर्निश भगवत् प्रतिमा के लिए चिन्ता सताने लगी। पाञ्चरात्र की विधि से उन्होंने पुरूषोत्तमावतार-पूजन-कथा कीर्तन करके अनेक भावमयी प्रार्थनाएं कीं। स्तुति प्रार्थना के उपरांत राजा ने वासुदेव को प्रणाम किया एवं वहां धरती पर कुश और वस्त्र बिछाकर चिन्तामग्न हो सो गये। भगवान् ने राजा को स्वप्न में अपने शंख, चक्र और गदा धारण करने वाले स्वरूप का दर्शन कराया। राजा इन्द्रद्युम्न ने बड़े प्रेम से भगवान का दर्शन किया। वे शंख और चक्र धारण किये हुए थे। उन्होंने शारंगनामक धनुष और बाण भी धारण कर रखे थे। उनका स्वरूप प्रलयकालीन सूर्य के समान

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

देदीप्यमान हो रहा था। वे प्रज्वलित तेज के विशाल मण्डल प्रतीत होते थे। वे गरूड़ के कंधे पर विराजमान थे। उनके आठ भुजाएं शोभा पा रही थी। स्वप्न में दर्शन देकर भगवान ने कहा-राजन्! तुम्हें साधुवाद! तुम्हारे इस दिव्य यज्ञ से, भक्ति से तथा श्रद्धा से मैं बहुत संतुष्ट हूँ। तुम चिन्तित न होओ, यहां जो सनातनी प्रतिमा छिपी है उसकी प्राप्ति का उपाय बताता हूं। आज की रात बीतने पर निर्मल प्रभात में जब सूर्योदय हो, समुद्र तट पर जाना। वहां समुद्र प्रांत में एक विशाल वृक्ष सुशोभित है, जिसका कुछ अंश तो जल में और कुछ अंश स्थल पर है। समुद्र की लहरों से आहत होने पर भी वह वृक्ष कम्पित नहीं होता। तुम हाथ में तीक्ष्ण अस्त्र लेकर अकेले ही वहां जाना और उस वृक्ष को काट डालना। वहां तुम्हें कुछ अद्भुत वस्तु दिखाई देगी। विचार-विमर्श कर उसी से दिव्य प्रतिमा का निर्माण करना। अब मोहप्रद चिन्ता त्याग दो। तत्पश्चाद् श्रीहरि अदृश्य हो गये। राजा विस्मित हुए। प्रातः उठकर वे समुद्र तट पर पहुंचे एवं स्वप्नानुसार तेजस्वी वृक्षराज को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने उस वृक्ष को काट गिराया और दो टुकड़े करने का विचार किया। फिर उन्होंने जब काष्ठ का भलीभांति निरीक्षण किया तो उन्हें एक अद्भुत बात दिखाई दी। उन्हें सहसा दो ब्राह्मणवेशधारी दिव्य पुरूष दिखाई दिये। ब्राह्मणों ने राजा के पास आकर पूछा-आपने किस लिए वनस्पति को काट गिराया है? राजा ने कहा 'आदि-अन्तहीन अवतार की आराधना के लिए मैं विष्णु की प्रतिमा का निर्माण करना चाहता हूं। तदर्थ स्वप्न में भगवान् ने मुझे प्रेरित किया है। ' यह सुनते ही विप्ररूपधारी भगवान् ने सहर्ष कहा-राजन्! आपका विचार अत्युत्तम है तथा मेरे ये साथी श्रेष्ठ शिल्पी विश्वकर्मा हैं, जो मेरे निर्देशानुसार प्रतिमा निर्माण करेंगे। तब विश्वकर्मा ने भगवदीय आज्ञा के अनुसार प्रतिमाओं का निर्माण कर दिया। जिनमें पहली मूर्ति बलराम की, दूसरी श्रीजगन्नाथ की एवं तीसरी भगवान् वासुदेव की बहन सुभद्राजी की थी। यह देखकर आश्चर्यचकित हो इन्द्रद्युम्न ने पूछा-गुप्तरूप से आप कौन हैं? तब भगवान् ने कहा- वेदों में जिसका उल्लेख हुआ है, वही मैं हूँ। भगवान् की वाणी सुनकर राजा इन्द्रद्युम्न के शरीर में रोमाञ्च हो आया। वे स्तुतिपूर्वक प्रणाम करते हुए बोले-जो निर्गुण-निर्मल शांत एवं परमपद है, उसे मैं आपके प्रसाद से पाना चाहता हूं। तब भगवान् राजा को 'तथास्तु' कहकर वर देते हुए विश्वकर्मा सहित अन्तर्धान हो गये।

कार्तवीर्यार्जुन का स्वप्न : कार्तवीर्यार्जुन रानी मनोरमा से कहने लगा-प्रिये! जमदग्नि के महान् पराक्रमी पुत्र परशुराम भाइयों के साथ नर्मदा-तट पर ठहरे हैं। वे मुझे युद्ध के लिए ललकार रहे हैं। मेरा बायां अंग निरंतर फड़क रहा है। प्रिये! मैंने एक स्वप्न भी देखा है, - मैं तेल से सराबोर हूं, लाल वस्त्र धारण किये हुए हूं, शरीर पर लाल चन्दन लगा है, लोहे के आभूषणों से भूषित हूं, अड़हूल के फूलों की माला पहने हुए हूं और गधे पर चढ़कर हंस रहा हूं तथा बुझे हुए अंगारों की राख राशि से क्रीड़ा कर रहा हूँ। पतिव्रते! पृथ्वी पर अड़हुल के पुष्प बिखरे हुए हैं और वह राख से आच्छादित हो गयी है। आकाश चन्द्रमा और सूर्य से रहित होकर संध्याकालीन लालिमा से व्याप्त हो गया है। मैंने एक विधवा स्त्री को देखा, जो लाल वस्त्र पहने थी, केश खुले थे, नाक कट गयी थी और वह अट्टहास करती हुई नाच रही थी।

महारानी! मैंने एक चिता देखी, जिस पर बाण बिछे थे और वह अग्नि से रहित एवं भस्म से संयुक्त थी। फिर राख की वर्षा, रक्त की वर्षा और अंगारों की वर्षा होते हुए देखा। पृथ्वी पके हुए ताड़ के फलों से आच्छादित और हड्डियों से संयुक्त थी। फिर खोपड़ियों की ढ़ेरी देखी, जो कटे हुए बालों एवं नखों से संयुक्त थी फिर रात के समय नमक का पहाड़, कौड़ियों की ढ़ेरी और धूल तथा तेल की कन्दरा दृष्टिगोचर हुई। फिर फूलों से लदे हुए अशोक और करवीर के वृक्ष दीख पड़े। वहीं ताड़ के वृक्ष भी थे, जिनमें फल लगे थे और फटाफट गिर रहे थे। यह भी देखा कि मेरे हाथ से भरा हुआ कलश गिर पड़ा और चकनाचूर हो गया। आकाश से चन्द्रमण्डल गिर रहा है। पुनः आकाश से भूतल पर गिरते हुए सूर्यमण्डल को तथा उल्कापात, धूमकेतू और सूर्य एवं चन्द्रमा के ग्रहण को देखा। फिर एक ऐसे भयानक पुरूष को सामने से आते हुए देखा, जिसका आकार बेडौल, मुख विकराल था और जिसके शरीर पर वस्त्र नहीं था।

रात में मैंने यह भी देखा कि एक 12 वर्षीय कन्या, जो वस्त्राभूषणों से सुशोभित थी, रूष्ट होकर मेरे घर से बाहर जा रही है। जाते समय उसने कहा 'राजेन्द्र! आप शोकपूर्ण चित्त से बोलते हैं अतः मैं आपके घर से वन को चली जाऊंगी। इसके लिए मुझे आज्ञा दीजिये। ' मैंने देखा कि क्रुद्ध ब्राह्मण, संन्यासी और गुरू मुझे शाप दे रहे हैं और दीवार पर चित्रित पुत्तलिकाएं नाच रही हैं। रात में मैंने देखा कि चञ्चल गीधों, कौओं और भैंसों का समूह मुझे पीड़ा पहुंचा रहा है। महारानी! मैंने तेल, तेली द्वारा घुमाया जाता हुआ कोल्हू और पाशधारी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दिगम्बरों को देखा। मैंने रात में देखा कि मेरे घर में परमानन्ददायक विवाहोत्सव मनाया जा रहा है, जिसमें गायक गीत गा रहे हैं और नाच रहे हैं। रात में देखा कि लोग रमण कर रहे हैं परस्पर खींचातानी कर रहे हैं और कौवे तथा कुत्ते लड़ रहे हैं। कामिनी रात में मोदक, पिण्ड, शवसंयुक्त श्मशान, लाल वस्त्र और सफेद वस्त्र भी दीखे हैं। शोभने! मैंने देखा कि एक विधवा स्त्री, जो काले रंग की थी और काला वस्त्र पहने हुए थी और जिसके बाल खुले हुए थे, नंगी होकर मेरा आलिंगन कर रही है।

प्रिये! नाई मेरे सिर तथा दाढ़ी के बाल छील रहा है और वक्षःस्थल पर नखों की खरोंच लगी है; रात में मैंने ऐसा भी देखा है। सुन्दरि! पादुका, चमड़े की रस्सियों की बहुत बड़ी राशि और कुम्हार के चाक को भूमि पर घूमते हुए देखा। सुव्रते! रात में देखा कि आंधी ने एक सूखे पेड़ को झकझोर कर उखाड़ दिया है और वह वृक्ष पुनः उठकर खड़ा हो गया है तथा बिना सिर का धड़ चक्कर काट रहा है। एक गूंथी हुई मुण्डों की माला, जिसमें अत्यन्त भयंकर दांत दीख रहे थे, जिसे आंधी ने चूर-चूर कर दिया था, मुझे दीख पड़ी। रात में मैंने यह भी देखा कि झुंड के झुंड भूत-प्रेत, जिनके बाल खुले हुए थे और जो मुख से आग उगल रहे थे-मुझे लगातार भयभीत कर रहे हैं।

रात में मैंने जला हुआ जीव, झुलसा हुआ वृक्ष, व्याधिग्रस्त मनुष्य और अंगहीन शूद्र को भी देखा है। रात में मैंने स्वप्न में यह भी देखा कि सहसा घर, पर्वत और वृक्ष गिर रहे हैं तथा बार-बार वज्रपात हो रहा है। रात में घर-घर में कुत्ते और सियार निश्चित रूप से बारंबार रो रहे थे, मुझे यह भी दिखायी पड़ा है।

मैंने एक पुरूष को देखा-जो दिगम्बर था, जिसके बाल बिखरे थे और जो नीचे मस्तक तथा पैर ऊपर करके पृथ्वी पर घूम रहा था। उसकी आकृति और बोली विकृत थी। फिर प्रातः काल ग्राम के अधिदेवता का रूदन सुनकर मैं जाग पड़ा। अब बतलाओ, इसका क्या उपाय है। राजा की बात सुनकर मनोरमा का हृदय दुःखी हो गया। मनोरमा ने कहा-हे नाथ! आप रमण करने वाले उत्तम पुरूष हो। जमदग्निनन्दन महाबली भगवान परशुराम के साथ आप युद्ध न कीजिए। कार्तवीर्यार्जुन ने कहा-सुन्दरि! कर्म भोग के योग्य काल आने पर सुख, दुःख, भय, शोक, कलह और प्रेम-ये सभी होते रहते हैं; क्योंकि काल राज्य देता है; काल मृत्यु और पुनर्जन्म का कारण होता है। श्रीकृष्ण उस काल के भी काल और

विधाता के भी ब्रह्मा हैं। महाबली भगवान परशुराम नारायण के अंश हैं। मैं उनका वध्य हूं। मैं उनकी शरण में कैसे जा सकता हूं? प्रतिष्ठित पुरूषों की अपकीर्ति मृत्यु से भी बढ़कर दुःखदायिनी होती है। राजा को युद्धातुर देखकर रानी मनोरमा का योग द्वारा शरीर त्याग, राजा का विलाप सुन आकाशवाणी हुई। युद्ध में जाते समय अपशकुन होने से कार्तवीर्य का वध हो गया। परशुराम की जीत हुई।

अतीन्द्रिय स्वप्न में व्यक्ति की अन्दरूनी शक्तियां स्वयमेव जागृत हो जाती है। इसलिए स्वप्न को भविष्य का झरोखा बताया गया है। नियति की सार्वभौम व्यवस्था का अंश है - स्वप्न। जिन स्वप्नों को हम प्रतिदिन देखते हैं, जिनसे रू-ब-रू होते है, उन स्वप्नों के धागों में भविष्य बोध की कुछ गाठें भी होती हैं। वे सुख-दुःख, हर्ष-शोक, शुभ-अशुभ से जुड़े विविध दृश्य दिखाते हैं। ऐसे सार्थक स्वप्न दीखने में भले ही अटपटे लगते हो लेकिन इनका परिणाम रमणीय एवं मधुर होता है। अनन्त शक्तियों का अक्षय खजाना स्वयं में समेटे हुए ये स्वप्न अपनी परछाइयों में हार-जीत, जन्म-मरण का दिग्दर्शन स्वयं करते हैं।

ब्रह्मवैवर्त पुराण में स्वप्न :सदियों से स्वप्नों की व्याख्या का प्रचलन चला आ रहा है। रहन-सहन के तौर-तरीकों में परिवर्तन आ गया है किन्तु स्वप्न और उनके अर्थ में समय की गति के अनुसार कोई खास अन्तर नहीं आया है। ब्रह्मवैवर्त पुराण, भविष्य-पुराण, मत्स्य-पुराण आदि में बहु आयामी शुभाशुभ स्वप्न-विज्ञान का विस्तृत विवेचन हुआ है

सुस्वप्न-दर्शन-फल : स्वप्न में गौ, हाथी, अश्व, महल, पर्वत और वृक्षों पर चढ़ना, भोजन करना तथा रोना धनप्रद कहा गया है। हाथ में वीणा देकर गीत गाना, खेती से भरी हुई भूमि की प्राप्ति का सूचक होता है। यदि स्वप्न में शरीर अस्त्र-शस्त्र से विद्ध हो जाये, उसमें घाव हों, कीड़े हो जायें, विष्ठा अथवा खून से शरीर लिप्त हो जाये तो यह धन की प्राप्ति का सूचक है। स्वप्न में अगम्या स्त्री के साथ समागम भार्या प्राप्ति की सूचना देने वाला है। जो स्वप्न में मूत्र से भीग जाता है, वीर्यपात करता है, नरक में प्रवेश करता है, नगर या लाल समुद्र में घुसता है अथवा अमृतपान करता है; वह जगने पर शुभ समाचार पाता है और उसे प्रचुर धनराशि का लाभ होता है। स्वप्न में हाथी, राजा, सुवर्ण वृषभ, धेनु, दीपक, अन्न, फल, पुष्प, कन्या, छत्र, ध्वज और रथ का दर्शन करके मनुष्य कुटुम्ब, कीर्ति और विपुल सम्पति का भागी होता है। भरे हुए घड़े, ब्राह्मण, अग्नि, फूल, पान, मंदिर, श्वेत धान्य, नट एवं नर्तकी को स्वप्न में देखने से लक्ष्मी की

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्राप्ति होती हैं गोदुग्ध और घी के दर्शन का भी यही फल है। सपने में कमले के पत्ते पर खीर, दही, दूध, घी, मधु और स्वस्तिक नामक मिष्ठान खाने वाला मनुष्य भविष्य में अवश्य ही राजा होता है। छत्र, पादुका और निर्मल एवं तीखें खड्ग की प्राप्ति, धान्य, लाभ की सूचना देती है। खेल-खेल में ही पानी के ऊपर तैरने वाला मनुष्य प्रधान होता है। फलवान वृक्ष का दर्शन और सर्प का दंशन धन-प्राप्ति का सूचक है। स्वप्न में सूर्य और चंद्रमा के दर्शन से रोग दूर होता है। घोड़ी मुर्गी और कौञ्ची को देखने से भार्या का लाभ होता है। स्वप्न में जिसके पैरों में बेड़ी पड़ गयी, उसे प्रतिष्ठा और पुत्र की प्राप्ति होती है। जो सपने में नदी के किनारे अथवा फटे-पुराने कमल के पत्ते पर दही मिला हुआ अन्न और खीर खाता है; वह भविष्य में राजा होता है। जलौका (जौंक) बिच्छू और सांप यदि स्वप्न में दिखाई दें तो धन, पुत्र, विजय एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। सींग और बड़ी-बड़ी दाढ़वाले पशुओं, सूअरों और वानरों से यदि स्वप्न में थोड़ा प्राप्त हो तो मनुष्य निश्चय ही राजा होता है और प्रचुर धनराशि प्राप्त कर लेता है। जो स्वप्न में मत्स्य, मांस, मोती, शंख, चन्दन, हीरा, शराब, खून, सुवर्ण, विष्ठा तथा फले-फूले बेल और आम को देखता है, उसे धन मिलता है। प्रतिमा और शिवलिंग के दर्शन से विजय और धन की प्राप्ति होती है। प्रज्वलित अग्नि को देखकर मनुष्य, धन, बुद्धि और लक्ष्मीवान होता है। आंवला और कमल धन प्राप्ति का सूचक है। देवता, द्विज, गौ, पितर और साम्प्रदायिक, चिह्नधारी पुरूष स्वप्न में परस्पर जिस वस्तु को देते हैं, उसका फल भी वैसा ही होता है। श्वेत वस्त्रधारण करके, श्वेत पुष्पों की माला और श्वेत अनुलेपन से सुसज्जित सुन्दरियां स्वप्न में जिस पुरूष का आलिंगन करती हैं, उसे सुख और सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जो पुरूष स्वप्न में पीत वस्त्र, पीले पुष्पों की माला और पीले रंग का अनुलेपन धारण करने वाली स्त्री का आलिंगन करता है, उसे कल्याण की प्राप्ति होती है। स्वप्न में भस्म, रूई और हड्डी को छोड़कर शेष सभी श्वेत वस्तुएं प्रशंसित हैं और कृष्ण गौ, हाथी, घोड़े, ब्राह्मण तथा देवता को छोड़कर शेष सभी काली वस्तुएं अत्यन्त निन्दित हैं।

रत्नमय आभूषणों से विभूषित दिव्य ब्राह्मणजातीय स्त्री मुस्कुराती हुई जिसके घर में आती हैं, उसे निश्चय ही प्रिय पदार्थ की प्राप्ति होती है। स्वप्न में ब्राह्मण देवता का स्वरूप है और ब्राह्मणी देवकन्या का। ब्राह्मण और ब्राह्मणी संतुष्ट हो, मुस्कराते हुए स्वप्न में जिसको कोई फल दें, उसे पुत्र होता है। पिताश्री,

ब्राह्मण स्वप्न में जिसे शुभाशीर्वाद देते हैं, उसे अवश्य ऐश्वर्य प्राप्त होता है। सपने में संतुष्ट ब्राह्मण जिसके घर आ जाये; उसके यहां नारायण, शिव और ब्रह्मा का प्रवेश होता है; उसे सम्पत्ति, महान् सुयश, पग-पग पर सुख, सम्मान और गौरव की प्राप्ति होती है।

यदि स्वप्न में अकस्मात् गौ मिल जाये तो भूमि और पतिव्रता स्त्री प्राप्त होती है। स्वप्न में जिस पुरूष को हाथी सूंड से उठाकर अपने माथे पर बिठा ले; उसे निश्चय ही राज्य लाभ होगा। स्वप्न में संतुष्ट ब्राह्मण जिसे हृदय से लगाये और फूल हाथ में दे; वह निश्चय ही सम्पत्तिशाली, विजयी, यशस्वी और सुखी होता है। साथ ही उसे तीर्थ स्नान का पुण्य प्राप्त होता है।

स्वप्न में तीर्थ, अट्टालिका और रत्नमय गृह का दर्शन हो तो उससे भी पूर्वोक्त फल की प्राप्ति होती है। स्वप्न में यदि कोई भरा हुआ कलश दे तो पुत्र और सम्पत्ति का लाभ होता है। हाथ में आढ़क लेकर स्वप्न में कोई वीरांगना जिसके घर आती है; उसे निश्चय ही लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। जिसके घर पत्नी के साथ ब्राह्मण आता है; उसके यहां पार्वती सहित शिव अथवा लक्ष्मी के साथ नारायण का शुभागमन होता है। ब्राह्मण और ब्राह्मणी स्वप्नावस्था में जिसे धान्य पुष्पाञ्जलि, मोती का हार, पुष्पमाला और चन्दन देते हैं तथा जिसे स्वप्न में गोरोचन, पताका, हल्दी, ईख और सिद्धान्न का लाभ होता है; उसे सब ओर लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

ब्राह्मण और ब्राह्मणी स्वप्नावस्था में जिसके सिर पर छत्र लगाते अथवा श्वेतधान्य बिखेरते हैं या अमृत, दही और उत्तम पात्र अर्पित करते हैं अथवा जो स्वप्न में श्वेत माला और चंदन से अलंकृत हो रथ पर बैठकर दही या खीर खाता है; वह निश्चय ही राजा होता है। स्वप्न में रत्नमय आभूषणों से विभूषित आठ वर्ष की कुमारी कन्या जिस पर संतुष्ट हो जाती है और जिस पुण्यात्मा को पुस्तक देती है; वह विश्वविख्यात कवीश्वर एवं पण्डितराज होता है। जिसे स्वप्न में माता की भांति वह पढ़ाती है; वह सरस्वती पुत्र होता है और अपने समय का सबसे बड़ा पण्डित माना जाता है। यदि विद्वान्, ब्राह्मण किसी को पिता की भांति यत्नपूर्वक पढ़ावें या प्रसन्नतापूर्वक पुस्तक दे तो वह भी उसी के समान विद्वान् होता है। जो स्वप्न में मार्ग पर या यत्र-तत्र पड़ी पुस्तक पाता है; वह भूतल पर विख्यात एवं यशस्वी पण्डित होता है। जिसे स्वप्न में ब्राह्मण-ब्राह्मणी महामंत्र दें, वह पुरूष विद्वान्, धनवान और गुणवान होता है। ब्राह्मण स्वप्न में जिसे मंत्र

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अथवा शिलामयी प्रतिमा देता है; उसे मंत्र सिद्धि प्राप्त होती है। यदि ब्राह्मण स्वप्न में ब्राह्मण समूह का दर्शन एवं वन्दन करके आशीर्वाद पाता है तो वह राजाधिराज अथवा महान् कवि एवं पण्डित बनता है।

स्वप्न में ब्राह्मण जिसे संतुष्ट होकर श्वेत धान्य युक्त भूमि देता है; वह राजा होता है। ब्राह्मण जिसे स्वप्न में रथ पर बिठाकर नाना प्रकार के स्वर्ग दिखाता है; वह चिरंजीवी होता है तथा उसकी आयु एवं सम्पत्ति की निश्चय ही वृद्धि होती है। सपने में संतुष्ट ब्राह्मण जिस ब्राह्मण को अपनी कन्या देता, वह सदा धनाढ्य राजा होता है। स्वप्न में सरोवर, समुद्र, नदी, नद, श्वेत सर्प और श्वेत पर्वत का दर्शन करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। जो स्वप्न में अपने को मरा हुआ देखता है, वह चिरंजीवी होता है। रोगी देखने पर निरोग होता है और सुखी देखने पर निश्चय ही दुःखी होता है। दिव्य नारी जिससे स्वप्न में कहती है कि आप मेरे स्वामी हैं और वह उस स्वप्न को देखकर तत्काल जाग उठता है तो अवश्य राजा होता है। स्वप्न में कालिका का दर्शन करके और स्फटिक की माला, इंद्रधनुष एवं व्रज को पाकर मनुष्य अवश्य ही प्रतिष्ठा भागी होता है। स्वप्न में ब्राह्मण जिसे कहे कि तुम मेरे दास हो जाओ, वह मेरी दास्य भक्ति पाकर वैष्णव हो जाता है। स्वप्नावस्था में ब्राह्मण शिव और विष्णु का स्वरूप है। ब्राह्मणी लक्ष्मी एवं पार्वती का प्रतीक है तथा श्वेत वर्णों वाली स्त्री वेदमाता सावित्री, गंगा एवं सरस्वती का स्वरूप है। ग्वालिन का वेष धारण करने वाली बालिका मेरी राधिका है और बालक बाल-गोपाल का स्वरूप है। स्वप्नविज्ञान के जानने वाले विद्वानों ने इस रहस्य को प्रकाशित किया है। पिताजी! यह मैंने पुण्यदायक उत्तम स्वप्नों का वर्णन किया है।

ब्रह्मवैवत में दुःस्वप्न एवं उनके फल : दुःस्वप्न केवल पाप का बीज और विघ्न का कारण होता है। गौ और ब्राह्मण की हत्या करने, कृतघ्न, कुटिल ब्राह्मण को देखने से पाप लगता है। जो स्वप्न में हर्षातिरेक से अट्टहास करता है अथवा यदि विवाह और मनोनुकूल नाच-गान देखता है तो उसके लिए विपत्ति निश्चित है। स्वप्न में जिसके दांत तोड़े जाते हैं और वह उन्हें गिरते हुए देखता है तो उसके धन की हानि होती है। उसे शारीरिक कष्ट भोगना पड़ता है। जो तेल से स्नान करके गधे, ऊंट और भैंसे पर सवार हो दक्षिण दिशा की ओर जाता है; निःसंदेह उसकी मृत्यु हो जाती है।

यदि स्वप्न में कान लगे हुए अड़हुल, अशोक और करवीर के पुष्प को तथा तेल और नमक को देखता है तो उसे विपत्ति का सामना करना पडता है। नंगी, काली, नक्कटी, शूद्र-विधवा तथा जटा और ताड़ के फल को देखकर मनुष्य शोक को प्राप्त होता है। स्वप्न में कुपित हुए ब्राह्मण तथा क्रुद्ध हुई ब्राह्मणी को देखने वाले मनुष्य पर निश्चय ही विपत्ति आती है और लक्ष्मी उसके घर से चली जाती है। जंगली पुष्प, लाल-फूल भली भांति पुष्पों से लदा पलाश, कपास और सफेद वस्त्र को देखकर मनुष्य दुःख का भागी होता है। काला वस्त्र धारण करने वाली, काले रंग की विधवा स्त्री को हंसती और गाती हुई देखकर मनुष्य मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। जिसे स्वप्न में देवगण नाचते, गाते, हंसते, ताल ठोंकते और दौड़ते हुए दीख पड़ते हैं; उसका शरीर मृत्यु का शिकार हो जायेगा। जो स्वप्न में काले पुष्पों की माला और कृष्णांग राग से सुशोभित एवं काला वस्त्रधारण करने वाली स्त्री का आलिंगन करता है; उसकी मृत्यु हो जायेगी। जो स्वप्न में मृग का मरा हुआ छौना, मनुष्य का मस्तक और हड्डियों की माला पाता है; उसके लिए विपत्ति निश्चित है। जो ऐसे रथ पर, जिसमें गधे और ऊंट जुते हुए हों, अकेले सवार होता है और उस पर बैठकर फिर जागता है तो निःसंदेह वह मौत का ग्रास बन जाता है। जो अपने को हवि, दूध, मधु, मट्ठा और गुड़ से सराबोर देखता है; वह निश्चय ही पीड़ित होता है। जो स्वप्न में लाल पुष्पों की माला, लाल अंगराग से युक्त तथा लाल वस्त्र धारण करने वाली स्त्री का आलिंगन करता है; वह रोगग्रस्त हो जाता है, यह निश्चित है। गिरे हुए नख और केश, बुझा हुआ अंगारा और भस्मपूर्ण चिता को देखकर मनुष्य अवश्य ही मृत्यु का शिकार बन जाता है। श्मशान, काष्ठ, सूखा घास-फूस, लोहा, काली स्याही और कुछ-कुछ काले रंग के घोड़े को देखने से अवश्यमेव दुःख की प्राप्ति होती है। पादुका, ललाट की हड्डी, लाल पुष्पों की माला, उड़द मसूर और मूंग देखने से तुरंत शरीर में घाव या फोड़ा हो जाता है। स्वप्न में सेना गिरगिट, कौआ, भालू, वानर, नीलगाय पीब और शरीर के मल का देखा जाना केवल व्याधि का कारण होता है। स्वप्न में फूटा बर्तन, घाव, शूद्र, गलकुष्टी, रोगी लाल-वस्त्र, जटाधारी, सूअर, भैंसा, गधा, महाघोर अंधकार मरा हुआ भयंकर जीव और योनि-चिह्न देखकर मनुष्य निश्चय ही विपत्ति में फंस जाता है।

कुवेषधारी म्लेच्छ और पाश ही जिसका शस्त्र है, ऐसे पाशधारी भयंकर यमदूत को देखकर मनुष्य मृत्यु को प्राप्त हो जाता हे। ब्राह्मण, ब्राह्मणी, छोटी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कन्या और बालक-पुत्र क्रोधवश विलाप करते हों तो उन्हें देखकर दुःख की प्राप्ति होती है। काला फूल, काले फूलों की माला, शस्त्रास्त्र सेना और विकृत विकारवाली म्लेच्छ वर्ण की स्त्री को देखने से निस्सन्देह मृत्यु हो जाती है। बाजा, नाच, गान, गवैया, लाल वस्त्र, बजाया जाता हुआ मृदंग इन्हें देखकर अवश्यमेव दुःख मिलता है। प्राणरहित मुर्दे को देखकर निश्चय ही मृत्यु होती है। जो मत्स्य आदि को धारण करता है, उसके भाई का मरण ध्रुव है। घायल अथवा बिना सिर का धड़ अथवा मुण्डित सिर वाले एवं शीघ्रतापूर्वक नाचते हुए बेडौल प्राणी को देखकर मनुष्य मौत का भागी हो जाता है। मरा पुरूष अथवा मरी हुई काले रंग की भयानक म्लेच्छनारी जिसका स्वप्न में आलिंगन करती है; उसका मर जाना निश्चित है। स्वप्न में जिनके दांत टूट जायें और बाल गिर गये हों तो उसके धन की हानि होती है अथवा वह शारीरिक पीड़ा से दुःखी होता है। स्वप्न में जिसके ऊपर सींगधारी अथवा दंष्ट्रावाले जीव तथा बालक और मनुष्य टूट पड़ते हों; उन्हें राजा की ओर से भय प्राप्त होता है। शिलावृष्टि, भूसी, छुरा, लाल अंगारा और राख की राशि देखने से दुःख की प्राप्ति होती है। गिरते हुए ग्रह अथवा नक्षत्र, भयानक धूमकेतू अथवा टूटे हुए कंधेवाले मनुष्य को देखकर स्वप्नद्रष्टा दुःख का भागी होता है। जो स्वप्न में रथ, पर्वत, वृक्ष, गौ, हाथी और घोड़ा आकाश से भूतल पर उतरता देखता है; उसके लिए विपत्ति निश्चित है। जो भस्म और क्षारयुक्त गढ्ढों में, क्षारकुण्डों में तथा धूलि की राशि पर खाई से गिरते हैं; निसन्देह उनकी मृत्यु होती है। जिसके घर से गौ बछड़े सहित चली जाती है; उस पापी की पृथ्वी भी नष्ट हो जाती है। म्लेच्छ यमदूत जिसे बांधकर ले जाते हैं; उसकी मृत्यु निश्चित है। जिसे ज्योतिषी, ब्राह्मण-ब्राह्मणी तथा गुरू रूष्ट होकर शाप देते हैं, उसे निश्चय ही विपत्ति भोगनी पड़ती है। जिसके शरीर पर कौए, मुर्गे और रीछ आकर टूट पड़ते हैं, उसकी मृत्यु हो जाती है और जिसके ऊपर भैंसे, भालू, ऊंट, सूअर और गधें क्रुद्ध होकर धावा करते हैं, वह निश्चय ही रोगी हो जाता है।

भविष्य-पुराण में शुभाशुभ स्वप्न :यदि स्वप्न में सूर्य का उदय, इन्द्रध्वज और चंद्रमा दिखाई दे तो सभी समृद्धियां प्राप्त होती हैं। माला पहने व्यक्ति, गाय या वंशी की आवाज, श्वेत कमल, चामर दर्पण, सोना, तलवार, पुत्र की प्राप्ति, रूधिर का थोड़ा या अधिक मात्रा में निकलना तथा पान करना-ऐसा स्वप्न देखने से ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। घृतासिक्त प्रजापति के दर्शन से पुत्र प्राप्ति का फल

होता है। स्वप्न में प्रशस्त वृक्ष पर चढ़े अथवा अपने मुख में महिषी, गौ या सिंहनी का दोहन करे तो शीघ्र ही ऐश्वर्य प्राप्त होता है। सोने या चांदी के पात्र में अथवा कमल-पत्र में जो स्वप्न में खीर खाता है, उसे बल की प्राप्ति होती है। द्युत, वाद तथा युद्ध में विजय प्राप्ति का जो स्वप्न देखता है, वह सुख प्राप्त करता है। स्वप्न में जो अग्नि-पान करता है, उसके जठराग्नि की वृद्धि होती है। यदि स्वप्न में अपने अंग प्रज्ज्वलित होते दिखाई दें और सिर में पीड़ा हो तो सम्पत्ति मिलती है। श्वेत वर्ण के वस्त्र, माला और प्रशस्त पक्षी का दर्शन शुभ होता है। देवता-ब्राह्मण, आचार्य, गुरू, वृद्ध तथा तपस्वी स्वप्न में जो कुछ कहते हैं, वह सत्य होता है। स्वप्न में सिर का कटना अथवा फटना, पैरों में बेड़ी का पड़ना राज्य-प्राप्ति का संकेत है। स्वप्न में रोने से हर्ष की प्राप्ति होती है। घोड़ा, बैल, श्वेत कमल तथा श्रेष्ठ हाथी पर निडर होकर चढ़ने से महान् ऐश्वर्य प्राप्त होता है। ग्रह और ताराओं का ग्रास देखे, पृथ्वी को उलट दे और पर्वत को उखाड़ फेंके तो राज्य-लाभ होता है। पेट से आंत निकलें और उससे वृक्ष को लपेटे, पर्वत, समुद्र तथा नदी पार करे तो अत्यधिक ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। सुन्दर स्त्री के गोद में बैठे और बहुत सी स्त्रियां आशीर्वाद दें, शरीर को कीड़े भक्षण करें, स्वप्न में स्वप्न का ज्ञान हो, अभीष्ट बात सुनने और कहने में आए तथा मंगलदायक पदार्थों का दर्शन एवं प्राप्ति हो तो धन और आरोग्य का लाभ होता है। जिन स्वप्नों का फल राज्य और ऐश्वर्य की प्राप्ति है, यदि उन स्वप्नों को रोगी देखता है तो वह रोग से मुक्त हो जाता है। इस प्रकार रात्रि में स्वप्न देखने के पश्चात् प्रातः काल स्नानकर राजा-ब्राह्मण अथवा भोजक को अपना स्वप्न सुनाना चाहिए। श्रृंगार, चंवर, दर्पण स्वर्णालंकार केशपात, वृक्षाधिरोपण शीघ्र ऐश्वर्यदायक है। महिषी, सिंही तथा गौ का अपने हाथ से दोहन और इनका बंधन करने पर राज्य का लाभ होता है। नाभि का स्पर्श करने पर दुर्बुद्धि होती है। भेड़, सिंह एवं जल में उत्पन्न जन्तु को मारकर स्वयं खाने से, अपने अंग, अस्थि भक्षण, मदिरापान, विष्ठा का अनुलेपन, रथ-यात्रा, अनेक सिर और भुजाएं देखने पर लक्ष्मी का आगमन होता है। ग्रह, तारा सूर्य का जो स्वप्न में परिवर्तन करता है और पर्वत का उन्मूलन करता है, उसे पृथ्वीपति होने का संकेत मिलता है।

मत्स्य पुराण में स्वप्न :मनु ने कहा-देव! यात्रा के समय एवं स्वप्न में विविध प्रकार के दृश्य दिखाई पड़ते हैं उनका क्या फल घटित होता है, कृपया उन्हें कहिए। मत्स्य भगवान ने कहा-हे मनु! अब मैं तुम्हें स्वप्नों के फलों को बतला

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

रहा हूं। नाभि बिना अन्य अंगों में तृण-वृक्ष आदि का उगना, मूर्धा पर कांसे के चूर्णों का गिरना, मुंडन, नंगा होना, मलिन वस्त्रों को पहनना, तेल लगाना, कीचड़ में गिरना, ऊंचे स्थान से गिरना, झूले पर चढ़ना, कीचड़ और लोहे को इकट्ठा करना, घोड़ों को मारना, लाल-पुष्प वाले वृक्षों की श्रेणी, शूकर, रीछ, गधे और ऊंटों पर चढ़ना, पक्षी और मछलियों का भोजन करना, तेलयुक्त भोजन करना, खिचड़ी खाना, नाचना, हंसना, विवाह होते देखना, गायन, वीणा को छोड़कर अन्य वादनों का स्वागत करना, जल के सोते में स्नान करना, माता के उदर में प्रवेश करना, चिता पर चढ़ना, इन्द्र की धनुष (ध्वजा) का गिरना, चन्द्रमा और सूर्य का पतन, दिव्य अन्तरिक्ष तथा भौम उत्पातों का दर्शन, देवता, द्विजाति, राजा और गुरू का क्रोधित होना, कुमारी स्त्री का आलिंगन, पुरूषों का संभोग, अपने ही शरीर की हानि, विरेचन, वमन, दक्षिण-दिशा की यात्रा, किसी व्याधि से पीड़ित होना, फलों की हानि, पुष्पों की हानि, घरों का गिरना, घरों की सफाई का होना, लिपाई-पुताई करते हुए घरों को देखना, शत्रु से पराजित होना या उसकी ओर से किसी प्रकार की उद्विग्नता होना, कषाय वस्त्रधारी होना, उसी प्रकार स्त्री के साथ क्रीड़ा करना, तेल का मालिश करना या उसी में स्नान करना, लाल-पुष्प एवं लाल-चन्दन को धारण करना, ये उपर्युक्त तथा इनके अतिरिक्त अन्याय बहुत दुःस्वप्न कहे गये हैं। इन्हें देखने के बाद साथियों से कह देना तथा पुनःशयन करना शुभ दायक कहा गया है।

मत्स्य पुराण में शुभ स्वप्न : पर्वत, राजमहल, हाथी, घोड़ा, वृषभ-इन पर सवारी करना शुभदायक है। हे द्विज! उसी प्रकार गमन काल में श्वेत-पुष्प वाले वृक्षों पर आरोहण करना शुभप्रद है। उसी प्रकार नाभि से वृक्ष एवं तृण की उत्पत्ति होना तथा अनेक बाहुओं का होना, अनेक शिरों का होना, फलवाले उद्भिजों का दर्शन, सुन्दर सफेद माला धारण करना, सफेद वस्त्र पहनना, चन्द्रमा, सूर्य एवं ताराओं को हाथों से पकड़ना या उन्हें स्वच्छ करना, इन्द्र धनुष का दर्शन करना या उसे ऊपर उठाना, पृथ्वी एवं समुद्रों को निगलना, शत्रु का संहार करना, हे द्विज! विवाद एवं जुए में जीतना, कच्चे मांस का खाना, दूध में बनी खीर को, रक्त का दर्शन अथवा रक्त से स्नान करना, मदिरा, रक्त तथा दुग्ध का पीना, अपनी आंतों एवं नाभि को बांधना, निर्मल आकाश को देखना भैंस तथा गायों को मुंह से दुहना, उसी प्रकार नंगा हो हथिनी तथा घोड़ियों को भी मुंह से दुहना, देवता, गुरू तथा ब्राह्मणों की प्रसन्नता, सभी पर चढ़ना भी फलदायक होता है।

राज्य भ्रष्ट सूचक स्वप्न : जल द्वारा अभिसिंचन होना अथवा गाय के सींग से चूने वाले जल द्वारा अभिषेक रीछ, गधे को देखना अथवा चन्द्रमा के समीप से गिरते हुए खुद को देखना-हे राजन्! यह सब राज्य खोना, नाश होने स्वप्न कहे गए हैं। अपना राज्याभिषेक होते देखना, शिरों को काटते देखना मृत्यु, अग्निदाह, जल के सोते में बाग लगना, राज्य चिह्नों की प्राप्ति, वीणा का स्वर सुनाई पड़ना उसी प्रकार जल में तैरना घर में हथिनी, घोड़ी तथा गायों का ब्याहना, घोड़े पर सवार होना तथा सूर्य, चन्द्रमा के सब स्वप्न भी शुभदायक होते हैं। सुन्दर स्त्री की प्राप्ति, उसका आलिंगन, अपने को जंजीरों से जकड़ा देखना गुरू को क्रोधित देखना, मल का लेपन होते हुए देखना, जीवित राजाओं तथा मित्रों का दर्शन, देव-दर्शन, वमन, नदी जल का दर्शन-ये सभी स्वप्न मनुष्य को शुभ देने वाले कहे गये हैं, इनके देखने से निश्चित अर्थ की प्राप्ति होती है। हे धर्मज्ञों में श्रेष्ठ! इन स्वप्नों को देखने से भयंकर रोगातुर व्यक्ति भी सभी रोग से मुक्त होता है। आयुर्वेद, चरक-संहिता, सुश्रुत-संहिता, अष्टांग-हृदय, अग्नि-पुराण, दैवज्ञ एवं कल्पद्रुम आदि में स्वप्नों का विस्तृत विवेचन किया गया है उनमें रोग-सूचक एवं मरण-सूचक स्वप्नों की प्रधानता हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पांचवा वरदान

आयुर्वेद में स्वप्नफल

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पांचवां वरदान : आयुर्वेद में वर्णित स्वप्न

चरक-संहिता में वर्णित स्वप्न : स्वप्न में जिसके सिर पर बांस, गुल्म (झाड़ियों के समूह) तथा लता आदि उत्पन्न हो जाते हैं और पक्षी उनमें अपने घोंसले बनाकर रहने लगते हैं, जिसका स्वप्न में सिर मुण्डित हो जाता है। जो स्वप्न में गिद्ध, उल्लू, कुत्ता, कौवे आदि से घिर जाता है एवं राक्षस, प्रेत-पिशाच, स्त्री, चाण्डाल, द्रवित (दौड़ते हुए) या अन्धे समूह में चलता हुआ मोह को प्राप्त होता है-फंस जाता है-निकलने की युक्ति नहीं सूझती और गिर भी जाता है अथवा जो स्वप्न में चलता हुआ बार-बार गिर पड़ता है। जो धूल से युक्त भूमि, भस्मराशि (राख) में गिर पड़ता है अथवा प्रविष्ट होता है। स्वप्न में जो मलिन जल में, कीचड़ में अथवा अंधेरे कुएं में डूब जाता है और जो वेग से बहने वाले स्रोत से बहाया जाकर दूसरी जगह ले जाया जाता है। स्वप्न में स्नेह का पीना, स्नेह की मालिश, बन्दी होना, युद्ध में पराजित होना, सुवर्ण वा धन की प्राप्ति, विवाद का होना, विरेचन होना, स्वप्न में जूतें के जोड़ों का नष्ट होना, गुम होना या चुराया जाना, धूल और चमड़े का गिरना, स्वप्न में हर्ष होना क्रोधित पितरों से धमकाया जाना ये सब अशुभ स्वप्न होते हैं।

स्वप्न में दांत, चन्द्र, सूर्य (तारामण्डल) देवता, दीपक, आंख इनका टूट कर गिर जाना या विनष्ट हो जाना, पहाड़ का टूट-टूट कर गिरना, लाल-लाल फूलों वाले वन में, लाल-फूलों वाली भूमि में, पापकर्म के स्थान-वेश्यालय या वधभूमि में, चिता में, अंधेरी और झाड़ी आदि से भरी गुफा में प्रवेश करता है। स्वप्न में रक्त पुष्पों की माला पहनकर जोरों से अट्टहास करता हुआ नंगे शरीर जो दक्षिण दिशा में जाता है। स्वप्न में जो वानरों के साथ घोर भयावने जंगल में जाता है। स्वप्न में कषाय (गैरूए) वस्त्र धारण किये पुरूषों का जो सौम्य मूर्ति न हो उनका, नग्न, दण्डाधारी, कृष्ण वर्ण के तथा लाल आंखों वाले पुरूषों का दर्शन अभीष्ट नहीं।

इनका दर्शन अशुभ का कारण है। स्वप्न में काली, पापिन, दुराचारी, लम्बे केश, नख और स्तनों वाली लाल वर्ण की माला और लाल रंग के ही वस्त्रों को पहने हुए स्त्री कालरात्रि ही है अर्थात् ऐसी स्त्री का स्वप्न में दर्शन मृत्यु का कारण है। ये दारूण स्वप्न हैं; जिन्हें देखकर रोगी मृत्यु को प्राप्त करता हैं। निरोगी पुरूष का जीवन संशय में पड़ जाता है, जिससे कोइ-कोई ही बच पाता है।

जो स्वप्न में कुत्तें, ऊंटों वा गधों पर सवारी करके दक्षिण-दिशा की ओर जाता है, वह यक्ष्मा रोग से आक्रान्त होकर मर जाता है। जो स्वप्न में प्रेतों के साथ शराब पीता है या कुत्तों से खींचा या घसीटा जाता है, वह अतिघोर ज्वर से आक्रान्त होकर मृत्यु को प्राप्त होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में लाल माला को धारण किये हुये, लाल ही सब अंगों वाला, लाल वस्त्र पहने हुए, बार-बार हंसता हुआ स्त्री से ले जाया जाता है, वह रक्तपित्त से आक्रान्त होकर कष्ट को पाता है अथवा प्राणत्याग करता है। सपने में जिस पुरूष के हृदय देश पर कांटों वाली लता उत्पन्न होती है, उसकी मृत्यु के लिये दारूण गुल्म उस पुरूष का आश्रय लेता है। अर्थात् घोर गुल्म होकर उस पुरूष की मृत्यु होती है। स्वप्न में जो पुरूष नग्न होकर अंगों पर घी को चुपड़े हुए ज्वाला रहित एवं अप्रज्वलित अग्नि में आहुतियां देता है और स्वप्न में ही जिसकी छाति पर पद्म (कमल) उत्पन्न हो जाते हैं, वह कुष्ठ से मृत्यु को प्राप्त होता है। स्वप्न में जो पुरूष चाण्डाल के साथ बहुत प्रकार के स्नेहों (घृत, तैल, वसा, मज्जा) को पीता है, उसे प्रमेह रोग हो जाता है और उससे ही उस पुरूष की मृत्यु हो जाती है। स्वप्न में जो राक्षसों के साथ नृत्य करता हुआ, जल में डूब जाता है, वह हठात् उन्माद को प्राप्त होकर परलोक में जाता है। सपने में मस्त होकर नाचते हुए जिस मनुष्य का सिर नीचे की ओर करके प्रेत ले जाता है, उस मनुष्य की अपस्मार होकर मृत्यु होती है। जो पुरूष स्वप्न में शुष्कली या अपूपो (पूड़ों) को खाता है, वह जागने पर यदि वैसी ही कै (वमन) करता है तो वह व्यक्ति जीवित नहीं रहता।

जो मनुष्य स्वप्न में लाख और लाल वस्त्र के समान आकाश को देखता है, वह रक्तपित्त रोग को प्राप्त हो, और उसी रक्तपित्त में मरण को प्राप्त होता है। जो मनुष्य स्वप्न में शूलरोग, अफारा, आंतों का रोग, अत्यन्त दुर्बलता का रोग और जिसके नख दुष्ट रंग के हो जायें, उस मनुष्य की मृत्यु गुल्म रोग से होती है। देवता, ब्राह्मण, गौ, बैल, जीते हुए अपने सुहृद, राजा देदीप्यमान अग्नि, विप्र और

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

निर्मल जल को स्वप्न में देखना कल्याण और लाभकारी होता है। द्विज, छत्र, तुष, कमल, राजा, सफेद पुष्प और श्वेत आभूषणों को धारण करने वाली स्त्री, बैल, पर्वत, दूध, फलयुक्त वृक्षों पर चढ़ना, दर्पण, मांस और माला इनकी प्राप्ति होना, बड़े भारी जलाशय से पार होना इत्यादि स्वप्न में देखने से धन की प्राप्ति होती है और रोग से मुक्ति होती है। वृहस्पति लिखते हैं कि जो मनुष्य स्वप्न में मनुष्य का अपक्व मांस का भक्षण करता है उसके प्रत्येक अंग का फल में कहता हूं-पैर का मांस खाने से 500 रूपये की प्राप्ति होती है। भुजा के मांस भक्षण से 1000 रूपये की प्राप्ति, मस्तक भक्षण से राज्य प्राप्ति और हृदय के मास भक्षण से मंत्री पद की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य स्वप्न में बेड़ी और फांसी से बंध जावे, उसके सुन्दर पुत्र होता है और उत्तम प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है।

सुश्रुत-संहिता में स्वप्न :देह में तेल का लगाना तथा ऊँट, सर्प, गधा, सुकर और भैंसा इन पर बैठकर जो दक्षिण दिशा को जाये तथा लाल वस्त्र को धारण करनेवाली काली, बाल जिसके खुले हो ऐसी हंसती, नाचती स्त्री जिस मनुष्य को बांधकर दक्षिण दिशा को घसीटे अथवा जो चंडालों द्वारा दक्षिण-दिशा को घसीटा जावे अथवा जिसको मृत पुरूष और संन्यासी आलिंगन करें। स्वप्न में जिसके मस्तक को विकराल मुख के कुत्ते सूंघे और जो सुहृद तैल पीये अथवा कीच में डूब जाये अथवा जिसके संपूर्ण अंगों में कीच लग जाये, नाचे, हंसे तथा नग्न हो मस्तक पर लाल पुष्प की माला धारण करे। स्वप्न में जिसकी छाति पर बांस का, नरसलका अथवा ताड़ का वृक्ष उत्पन्न हो तथा जिसको मछली निगल जावे अथवा अपनी माता में प्रवेश कर जावे, पर्वत के अग्रभाग से अंधकार युक्त गड्ढे में गिरे अथवा पानी के वेग से बह जावे या मुंडन हो तथा शत्रु से पराजित हो वा बंधन को प्राप्त हो एवं जो काक (चील, गीध, घुघु) आदि से पीड़ित होवे। जो मनुष्य स्वप्न में देवप्रतिमा को और पृथ्वी को हिलती देखे तथा सेमर का वृक्ष, ढाक का वृक्ष, यूप (यज्ञ में पशु मारने का स्तम्भ) बांबी (वल्मीक) नीम का वृक्ष और फैला हुआ कचनार का वृक्ष देखे अथवा अपने को चिता में बैठा देखे तथा कपास, तेल खल, लोहे के पदार्थ, नमक, तिल, ये प्राप्त होवें अथवा पक्वान्न (पूड़ी, कचौड़ी, लड्डू) आदि को स्वप्न में भक्षण करे, दारू पीवे इत्यादि स्वप्नों से स्वस्थ पुरूष रोगी हो और रोगी पुरूष की मृत्यु होवे। नियत रोगों में स्वप्नारिष्टज्वर में स्वप्न में कुत्तों से मैत्री होना और शोषरोग में वानरों से स्नेह होना अशुभ है। उन्माद

रोग में राक्षसों से और मृगी रोग में प्रेतों के संग प्रवर्तन होना शुभ नहीं। प्रमेह और अतिसार वालों को स्वप्न में जल पीना तथा कुष्ठरोग में तैल पीना तथा गुल्मरोग और कुष्ठरोग और मूर्धा के रोग और शिर के रोग (स्वप्न में) स्थावर वृक्षादि की उत्पत्ति दीखे तो अशुभ है। वन में सुहाली खाना स्वप्न में दीखे तथा श्वास और तृषा रोग में मार्ग चलने का स्वप्न हो और जिस पांडुरोग वाले को स्वप्न में पीला भोजन खाना दीखे तो मृत्यु हो। जो रक्तपित्त रोगवाला स्वप्न में रक्त पीवे तो अवश्य नाश को प्राप्त होवे।

शुभदायक श्रेष्ठ स्वप्न-दर्शन का वर्णन : मनुष्य स्वप्न में देवताओं, (सौम्य देवों) ब्राह्मणों को गौ और वृषभ को तथा जीवित हुए मित्रों और प्रजापालक राजा को तथा ज्वलित अग्नि वेदपाठी विप्रों तथा निर्मल जलों को जो देखे तो कल्याण की प्राप्ति हो और रोग का नाश हो, मांस, मत्स्य श्वेतमाला, उज्ज्वल वस्त्र और फल इन्हें ये स्वप्न में प्राप्त हो तो धन का लाभ हो तथा व्याधि का नाश हो। बड़े महल और फलयुक्त वृक्ष तथा अंबारी सहित हाथी तथा पर्वत इन पर जो स्वप्न में चढ़े तो द्रव्य का लाभ हो और रोग से छूटे। नदी-नद तथा क्षुभित समुद्र और जोहड़ इन्हें जो स्वप्न में देखे तो कल्याण की प्राप्ति हो तथा रोगी रोग से मुक्त हो अथवा स्वप्न में सर्प, जलौका या भौंरे आदि जिसे डस लें तो बुद्धिमान उसके रोग-नाश अथवा धन का लाभ बतलावे। जो ऐसे श्रेष्ठरूप स्वप्नों को रोगी देखे तो वह दीर्घायुवाला होता है और उसकी चिकित्सा करनी चाहिए।

अष्टांगहृदय में वर्णित स्वप्न :ज्वर से मृत्यु होने के स्वप्न- जो व्यक्ति स्वप्न में प्रेतों के साथ मद्य पीता हुआ, कुत्तों से खींचा जाता है, वह ज्वर रूप मृत्यु से शीघ्र ही कुछ दिनों में लोकान्तर में ले जाया जाता है।

रक्तपित्त से मृत्यु होने के स्वप्न- लाल माला, लाल शरीर या लाल वस्त्र वाला हंसता हुआ, जो मनुष्य स्वप्न में स्त्री से खींचा जाता है, वह रक्त पित्त से मरता है।

यक्ष्मा से मृत्यु होने के स्वप्न- जो मनुष्य स्वप्न में भैंसा, कुत्ता, सुअर, ऊँट और गधे की सवारी से दक्षिण दिशा में जाता है, वह यक्ष्मा रोग से मरता है।

गुल्म से मृत्यु होने के स्वप्न-जिस रोगी के हृदय में कांटों वाली लता, बांस या ताल स्वप्न में उत्पन्न होते हैं, वह जल्दी गुल्म से मरता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कुष्ठ से मृत्यु होने के स्वप्न-स्वप्न में नंगे होकर तथा घी का अभ्यंग कर ज्वालारहित अग्नि में हवन करते रहने पर जिस मनुष्य की छाति में कमल उत्पन्न होता है, वह कुष्ठ रोग से मरता है।

प्रमेह से मृत्यु होने के स्वप्न-जो मनुष्य स्वप्न में चाण्डालों के साथ बहुत प्रकार का स्नेह पीता है, वह प्रमेह से मरता है।

उन्मादसे मृत्यु होने के स्वप्न-जो मनुष्य स्वप्न में राक्षसों के साथ नाचता हुआ जल में डूबता है, वह उन्माद से मरता है।

अपस्मार से मृत्यु होने के स्वप्न-जो मनुष्य स्वप्न में नाचता हुआ प्रेतों द्वारा खींचा जाता है, वह अपस्मार से मरता है।

मृत्युसूचक अन्य स्वप्न-स्वप्न में जिसकी सवारी गधा, ऊंट, बिल्ली, बन्दर, सिंह सूअर प्रेत या श्रृंगाल होते हैं वह शीघ्र मरता है। स्वप्न में अपूप या कचौड़ी खाता हुआ अपने को देखकर जो प्रातः वैसा ही वमन करता है, वह नहीं जीता।

नेत्ररोग तथा अंधतासूचक स्वप्न-स्वप्न में सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण देखना, नेत्ररोग तथा सूर्य या चन्द्र का गिरते देखना दृष्टिनाश के लिए होता है।

अन्यान्य अशुभ स्वप्न-सिर पर बांस या लतादि का उत्पन्न होना, पक्षियों के घोंसलों का सिर में बनना, सिर का मुंडना, कौआ, गीध आदि से घिर जाना, प्रेत, पिशाच, स्त्री, द्रविड़, आन्ध्र, गोमांस-भक्षक इनका संग होना, बैंत, लता, बांस तिनके या कांटों में से रास्ता न मिलना गड्ढ़े या श्मशान में सोना, धूल या राख में गिरना, जल या कीचड़ में डूबना, तेजधारा वाले स्रोत में बह जाना, नाचना, , गाना, बजाना, लाल माला या वस्त्र का पहनना, वय या अंग का बढ़ना, विवाह, हजामत करवाना, पकवान (मण्डक, पूरी, हलवा) आदि स्नेह या मद्य का खाना, वमन या विरेचन करना, स्वर्ण या लोहे की प्राप्ति, झगड़ा, पराजय का देखना, दोनों जूतों का नाश, पैर तथा चमड़े का गिरना, अतिशय हर्ष, कुपित पितरों से तिरस्कृत होना, दीपक, नक्षत्र, ग्रह, दांत, दैवता और चक्षु का नाश या गिरना, पर्वत का टूटना, फूल वाले जंगल में प्रवेश, पापियों के घर में जाना, चिता में, अंधकार में या माता के उदर में प्रविष्ट होना, महल या पर्वतादि से गिरना, मछली से निगला जाना, गेरूए वस्त्रधारी, अप्रशस्त या नग्न दण्डधारी, लाल आंखों वाले और काले वर्ण के पुरूषों का स्वप्न में देखना कभी भी अच्छा नहीं।

स्वप्न में काल रात्रि रूपी स्त्री -स्वप्न में कामी, पापी मुख एवं आचार वाली, लम्बे बाल, नख एवं स्तन वाली, सूखे फूलों की माला और वस्त्रों से युक्त, स्त्री को स्वप्न में देखना मृत्यु की रात्रि के समान है। मन को वहन करने वाले स्रोतों के अतिबलवान मलों (दोषों) द्वारा भर जाने से रोगी भयानक स्वप्न देखते हैं। जिसे देखकर रोगी मरता है और निरोगी मनुष्य जीवन के सन्देह को प्राप्त करके कोई विरला ही मृत्यु से बचता है।

शुभ सूचक स्वप्न :सौम्य स्वप्न देवताओं, ब्राह्मणों गायों, बैलों, जीते हुए मित्र तथा राजाओं, साधुओं, यशस्वी पुरूषों, जलती आग, स्वच्छ जलाशयों, कन्याओं, गौरवपूर्ण श्वेत वस्त्र पहने, तेजस्वी कुमारों तथा चारों ओर रक्तसिक्त, दीप्त देह वाले राक्षसों को जो देखता है अथवा जिसको स्वप्न में छत्र, दर्पण, विष, मांस, श्वेतपुष्प, श्वेतवस्त्र, पवित्र विलेपन, फल, पर्वत, महल, फल से युक्त पेड़, शेर, हाथी तथा गाय या घोड़े की सवारी करे, नदी, तालाब या समुद्र को तैर, पूर्व या उत्तर की यात्रा करे, अगम्य वस्तुओं का आना या अगम्य स्त्री के साथ संपर्क, मृत्यु देवों द्वारा संकट से निकालना, पितरों से अभिनन्दन करना, रोते-गिरते हुए को उठाना, शत्रुओं को पराजित करना इन शुभ स्वप्नों को जो देखे उसकी आयु, आरोग्य, तथा बहुत वित्त प्राप्त होता है। मंगल करने वाले आचरण से युक्त परिवार एवं रोगी श्रद्धा रखता हुआ और अनुकूल रोगी, प्रचुर द्रव्य, धन का संग्रह, सत्त्व तथा लक्षणों का संयोग, वैद्य, ब्राह्मण आदि में भक्ति तथा चिकित्सा में उत्साह-ये आतुर (रोगी) के निरोग होने के लक्षण अष्टांग हृदय में बताए गए हैं।

अग्नि-पुराण में वर्णित स्वप्न :

अशुभ स्वप्न :नाभि को छोड़कर अन्य शरीर के भाग में तृण तथा वृक्ष का उत्पन्न होना-मस्तिष्क में, कास्यों का चूर्ण, मुण्डन तथा नग्न हो जाना, मैले वस्त्रों को धारण करना-अभ्यंग करना-पङ्क (कीचड़) में दिग्ध होना, ऊंचे से गिरना, विवाह होना, गीत-गायन होना, तन्त्री वाद्य के द्वारा विनोद करना, झूला पर चढ़कर झूलना, पक्षियों के मांस का भक्षण करना तथा तैल और कृशर (कसार) का भक्षण करना। माता के जठर (पेट) में प्रवेश करना, चिता पर आरोहण करना, शुक्रध्वजा का पतन होना, चंद्रमा और सूर्य का नीचे गिर जाना, देवलोक, आकाश और भूमि पर होने वाले उत्पातों का दिखलाई देना, देव, द्विजाति और भूपों का

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दर्शन, गुरूओं का कोप, नाचना, हंसना, विवाह होना, गीत गायन का होना, तन्त्री से रहित बाजों का बजना। स्रोतोंवहों का नीचे की ओर बहकर जाना, गोबर, पानी से स्नान करना, कीच से युक्त पानी से नहाना, स्याही के पानी से स्नान करना, कुमारियों का आलिंगन करना, पुरूषों का मैथुन, अपने अंगो की हानि को देखना, दस्त या कै (उल्टी) हो जाने की क्रिया का देखना, दक्षिण दिशा की ओर जाना, किसी व्याधि के द्वारा अभिभूत होना, फलों की हानि होना, धातुओं का भेदन होना, घरों का गिर जाना, गृहों का समार्जन करना, पिशाच, राक्षस, वानर तथा नीच नरों के साथ क्रीड़ा करना, दूसरे से तिरस्कार का होना और पर से किसी व्यसन का उत्पन्न होना, गेरूआ रंगे हुए वस्त्र धारण करना तथा उन वस्त्रों के साथ क्रीड़ा करना, तैलादि का पान तथा स्नान करने वाला होना, रक्तमाल्य, अनुलेपन, ये सब बुरे स्वप्न होते हैं। उनका नहीं कहना ही शुभ होता है।

शुभ स्वप्न :पर्वत, प्रासाद (महल) नाग, हाथी, अश्व, वृषभ (बैल) इन पर आरोहण किया जाना यदि स्वप्न में देखें तो यह हितकारी स्वप्न होता है। हे द्विज! द्रुमों का जो कि सफेद फूल वाले हो तथा गगन में आरोहण भी शुभ होता है। नाभि में वृक्ष तथा तृणों का उत्पन्न होना तथा बहुत सी बाहुओं (भुजाओं) का भी हो जाना एवं बहुत शीर्षों का होना, पलित (श्वेत बालों का होना) का उत्पन्न होना, श्वेत माला का धारण करना, श्वेत वस्त्रों को धारण करना, चन्द्र या सूर्य ग्रहण का होना, शक्रध्वज का आलिंगन करना, ध्वज के उड़ने (लहराने) की क्रिया का होना-ये शुभ स्वप्न होते हैं। भूयम्बुधारा का ग्रहण करना, शत्रुओं की किसी विक्रिया का होना किसी विवाद में या द्यूत में जीत का होना तथा संग्राम में विजय का लाभ करना, आर्द्र मांस का भक्षण करना, पायस (खीर) का खाना रूधिर के द्वारा स्नान करना, शराब, रूधिर और मद्य का पान करना, क्षीर का पान करना, अस्त्रों के द्वारा भूमि विशेष में चेष्टा करना, निर्मल आकाश को देखना। भैंसों या गायों का मुख से ही दोहन करना परमप्रशस्त माना गया है। इसी प्रकार सिंहनियों, हथिनियों और घोड़ियों का दोहन भी अच्छा होता है। हे द्विज! देव एवं विप्रों के लिए प्रसाद, जल अभिषेक, गौओं के श्रृंग से च्युत तथा चन्द्र से देखा गया प्रसाद तथा जल से अभिषेक राज्य प्रदान करने वाला होता है। राज्याभिषेक तथा सिर का काटना, मरण हो जाना, अग्नि का लाभ, अग्नि से दाह गृहादि में होना, राजचिह्न की प्राप्ति, तन्त्री, वाद्य का अभिवादन यह सब स्वप्न के अन्त में देखता

है, राजा, हाथी, घोड़ा, सुवर्ण, बैल और गौ को देखता है तो देखने वाले का कुटुम्ब बढ़ता है। वृषभ, हाथी, गृह-शैल की चोटी और वृक्ष का आरोहण तथा रोदन घृत और विष्ठा से शरीर का अनुलेपन और अगम्य का गमन भी शुभ होते हैं।

स्वप्न केवल जीवन-चक्र का ही बोध नहीं कराते हैं। अपितु मृत्यु का भी यथार्थ जानकारी प्रदान करते हैं। प्रकृति की यह अनुपम देन मानव को यह ज्ञान कराती है कि रोगी स्वस्थ होगा या नहीं? यदि नहीं होगा तो किस बीमारी के कारण रोगी की मृत्यु होगी और कब होगी? इस प्रकार रोग एवं मृत्यु से जुड़े सवालों का जवाब स्वप्नों द्वारा आयुर्वेद में दिया गया है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

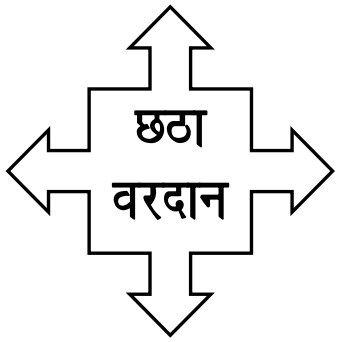

ज्योतिष-शास्त्र में स्वप्नफल

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

छठा वरदान : ज्योतिष में स्वप्न

संसार में ऐसा कौन व्यक्ति होगा जिसने स्वप्न न देखा हो। प्रायः प्रत्येक व्यक्ति दो-एक दिन में कभी नित्य ही स्वप्नों की अचरजभरी दुनिया में घूम लेता है। अतीतकाल की घटनायें तो मनुष्यों को सदैव ही दिखाई देती रहती हैं, पर अगले काल में घटने वाली बातें भी स्वप्न में अधिकांश दिखाई दे जाती हैं। कहा जाता है कि ऐसे स्वप्न मनुष्यों को पूर्वाभास देने के लिए ही दिखलाई देते हैं। इसी प्रकार मृत्यु के पहले, सुख-दुःख के पहले भी अनेक शुभ-अशुभ स्वप्न दिखाई देते हैं। प्रत्येक शुभाशुभ कार्य के पूर्व में मनुष्य को प्रायः कोई स्वप्न अवश्य आया करता है।

ज्योतिष-रहस्य में देश की महान विभूतियों के जन्मसूचक स्वप्न वर्णित हैं - आदि गुरू शंकराचार्य के पिता शिव गुरू ने वृद्ध विप्र एवं खेलते शिशु को देखा तो आचार्य रामानुज के पिता श्री केशवाचार्य ने श्री भगवान और शिशु को स्वप्न में देखा। ज्योतिष-रत्नाकर के अनुसार रामकृष्ण परमहंस के पिता श्रीखुदीराम चट्टोपाध्याय ने गदाधर के दर्शन स्वप्न में किए। महाकवि दांते की माता ने कलकल बहते झरने के किनारे हरे-भरे वृक्ष, क्रीड़ा करते बच्चे, नर्तन करता मयूर एवं गडरिया को स्वप्न में परिलक्षित किया।

स्वप्न ज्योतिष शास्त्र का एक भाग है। ज्योतिष-शास्त्र में स्वप्नों का विवेचन विविध ा रूपों में मिलता है। इनकी प्रामाणिकता एवं उपयोगिता को सही ढ़ंग से रेखांकित करने वाले स्वप्नाध्याय, स्वप्न कमलाकर, स्वप्न-विज्ञान, स्वप्न-सिद्धान्त दर्पण, स्वप्न-प्रदीप, आचार मयूख, वृहद यात्रा आदि स्वप्न शास्त्र है। स्वप्नों की शुभाशुभता का विस्तृत विवेचन मिलता है। ज्योतिष वटवृक्ष पर बैठे स्वप्न रूपी पंछी अपने शुभाशुभ के गीत गुनगुना रहे हैं -

स्वप्नाध्याय में राजयोग कारक स्वप्न :

जो मानव स्वप्न में सिंह, घोड़े, हाथी और बैल जुते रथ पर चढ़ता है, वह पृथ्वीपति होता है। स्वप्न में जिस नर का सिर कटे और जो व्यक्ति सिर काटे,

वे दोनों ही राज्य प्राप्त करते हैं। स्वप्न में जिस पुरुष की जिह्वा का छेदन हो, वह क्षत्रिय जाति का होने पर सार्वभौम सम्राट्, अन्य जाति का होने पर भी मण्डलेश्वर होता है। स्वप्न में जो मनुष्य हाथी पर चढ़कर नदी के किनारे चावलों का भात खाता है वह समस्त पृथ्वी को भोगता है। जो नर स्वप्न में सूर्य या चन्द्रमा के समग्र मण्डल को निगल लेता है, वह बलपूर्वक सावर्ण मनु की समस्त पृथ्वी को भोगता है। जो नर स्वप्न में अपने या पराये मानव के तन का मांस खाता है, वह साम्राज्य प्राप्त करता है। जो नर स्वप्न में महल के ऊपर चढ़कर स्वादिष्ट पकवान का भक्षण कर अगाध जल में तैरता है, वह पृथ्वीपति होता है। जो पुरुष स्वप्न में अपनी वमन या विष्ठा खाये और उसका अनादर न करे तो वह अवश्य ही राज्य को प्राप्त करता है। जो नर स्वप्न में कमलों की शय्या पर बैठकर खीर खाता है, वह मनुष्य राज्य को प्राप्त करता है। स्वप्न में जिस मनुष्य की जय और शत्रु की पूर्णरूप से पराजय होती है, वह निःसन्देह चक्रवर्ती राजा होता है। जो मानव स्वप्न में रजत या स्वर्ण के पात्र में खीर खाता है अथवा पर्वत या वृक्ष के ऊपर चढ़कर स्थित होता है, वह राज्य-पद को प्राप्त होता है। स्वप्न में जो नर पर्वत, ग्राम एवं वन से युक्त पृथ्वी को अपनी भुजाओं के बल पर पार करता है, वह शीघ्र ही राज्य प्राप्त करता है। स्वप्न में जिस मनुष्य की जिह्वा पर कोई लिखता है या लिखाता है उस पर सरस्वती प्रसन्न होती है और वह धार्मिक राजा होता है। जो नर स्वप्न में घोड़े पर चढ़कर दूध पीता है, जलपान करता है वह निश्चय ही नृप बनता है। स्वप्न में जो नर राजा बनकर चोर हो जाये और फिर स्वामी हो जाये तो वह निश्चय राजा होता है। जो मनुष्य स्वप्न में विष पीकर मर जाये वह श्रेष्ठ मनुष्य रोग और क्लेशों से छूटकर बहुत से भोगों को भोगता है। जो मनुष्य स्वप्न में रुधिर की नदी में स्नान कर रुधिर पीता है या जिसके शरीर से रुधिर निकलता है, वह निश्चय ही धनवान होता है। स्वप्न में जो पुरुष दूसरे का सिर काटे अथवा उसका सिर काटा जाये वह सहस्रों धन प्राप्त करके अनेक प्रकार के सुख पाता है। स्वप्न में जो पुरुष अपने को मतवाले हाथी पर चढ़ा हुआ देखकर जाग जाये और भयभीत न हो उसके पास बहुत धन होता है। स्वप्न में जिस मानव का शरीर केश रहित हो जाता है, उस नर-शार्दूल के पास लक्ष्मी दासी के समान रहती है। स्वप्न में जिस मनुष्य को नीलवर्ण गौ, धनुष या जूते प्राप्त होते हैं वह परदेस जाकर शीघ्र ही अपने घर आता है। जो पुरुष स्वप्न में गुदाद्वार से जलपान करता है उसके यहां निश्चित रूप से बहुत धन-धान्य होता है। स्वप्न

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

में जो नर अपने शरीर को कुंकुम से लाल करके अपना विवाह देखता है वह जगत में धन-धान्य से युक्त हो सुख पाता है। जो मनुष्य स्वप्न में नीची (गहरी) पृथ्वी में गिर कर फिर उठता है उसकी बुद्धि प्रसन्न (निर्मल) होती है और वह धन-धान्य से पूर्ण होता है। जिस मनुष्य को स्वप्न में मक्खी, मच्छर या खटमल काटते हैं अथवा चारों ओर से घेरते हैं, वह उत्तम पत्नी को प्राप्त करता है। शोक से पीड़ित जो मनुष्य स्वप्न में नदी, कमल, बगीचे और पर्वत देखता है, वह शोक से छूट जाता है। यदि कोई स्वप्न में पीला फल और लाल पुष्प जिस व्यक्ति को देता है उसको सुवर्ण का लाभ होता है अथवा उसे पद्मराग मणि की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य स्वप्न में शुद्ध वस्त्र धारण किये लक्ष्मीजी को देखता है उस व्यक्ति से लक्ष्मीजी या सरस्वती जी प्रसन्न होती हैं। स्वप्न में जिस व्यक्ति को शुभ्र शरीर एवं वस्त्रों से सुशोभित स्त्री आलिंगन करती है, उसके सन्मुख लक्ष्मी हर समय रहती है। स्वप्न में जिस मनुष्य के शरीर में मूत्र व विष्ठा लग जाये या श्मशान में अपना निवास स्थान देखे तथा मूत्र एवं विष्ठा का भक्षण करे वह पृथ्वीपति होता है। जो पुरुष स्वप्न में श्वेत बैल जुड़े रथ पर आरूढ़ होकर पूर्व या उत्तर दिशा की जाता है, वह पृथ्वीपति होता है। जो नर स्वप्न में ग्राम या नगर को घेरता है, वह मण्डलाधिपति होता है अथवा ग्राम का मुखिया होता है। स्वप्न में जो मनुष्य दोनों कानों में कुण्डल, गले में मोतियों का हार तथा मस्तक पर मुकट धारण करता है, वह निश्चय ही राजा होता है। स्वप्न में जिसके घर के आँगन में बहुत से कमल उत्पन्न हों और वह उन्हें दोनों हाथों में पकड़कर इकट्ठा करे उसको उत्तम राज्य मिलता है। स्वप्न में रत्नों से युक्त पलंग पर जो शयन करता है अथवा सिंहासन पर बैठता है उसका राज्य अकंटक होता है। स्वप्न में जिसको शोक होता है और जो परिताप करता है अथवा रुदन करता है और जो मरता है वह सदैव सुखी रहता है। स्वप्न में जो पुरुष सुवेषधारी से पूजित होता है, वह पुरुष संसार में धन-धान्य से युक्त होता है। स्वप्न में जो पुरुष श्रेष्ठ हाथ में वीणा लेकर जाग जाये उसे निश्चित ही कुलीन कन्या प्राप्त होती है। जिस व्यक्ति के शरीर के वस्त्र, शयन, स्थान और महल या घर स्वप्न में अग्नि में जलें तो उसके चारों ओर लक्ष्मी निवास करती है। बहुत से श्वेत वस्त्रों में लिपटा हुआ जो व्यक्ति स्वप्न में अग्नि से जलता है वह निश्चय ही संसार में श्रेष्ठता का पात्र होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में ऋतुकाल में उत्पन्न फल या पुष्प खाता है उसकी लक्ष्मी विपत्ति में प्रसन्न होती है, इसमें कुछ सन्देह नहीं। स्वप्न में जो मानव एकाग्रचित्त

से बहुत वर्षा को देखता है अथवा जलती हुई अग्नि को देखता है, लक्ष्मी उसके वश में होती है। जो मनुष्य स्वप्न में पशु अथवा पक्षी को हाथ से स्पर्श करके जाग जाये उस मनुष्य को निःसन्देह अच्छी कन्या वरण होती है। जो मनुष्य स्वप्न में अपने आपको शीतल-जल में स्नान करता या जल क्रीड़ा करता देखता है उसका सौभाग्य प्रतिदिन बढ़ता है। जो व्यक्ति स्वप्न में माता, पिता, देवता व साधुओं को भक्तिपूर्वक देखते हैं उनका रोग नष्ट हो जाता है और अश्रद्धा से देखने से रोगी होता है। जो नर स्वप्न में पितरों को देखता है, उसका गोत्र बढ़ता है, राजा से सुवर्ण मिलता है और उसकी प्रसन्नता प्राप्त होती है, इसमें सन्देह नहीं। स्वप्न में जो व्यक्ति धान्य के ढ़ेर पर पर्वत के शिखर पर अथवा फलित वनस्पति पर चढ़कर जाग जाये तो उसको सम्पदा प्राप्त होती है। स्वप्न में जो पुरुष दूध वाले वृक्ष पर चढ़कर जाग जाये तो निःसन्देह उसके धन-धान्य की वृद्धि होती है। स्वप्न में गौ, वृष, मनुष्य, महल, पक्षी, हाथी या पर्वत पर चढ़कर जो मनुष्य समुद्र का जल पीता है, वह राजा होता है। जो मनुष्य स्वप्न में अपने को घर के ऊपर चढ़ा हुआ देखता है, वह पुरुष सात रात्रि में साम्राज्य को प्राप्त करता है। जो मनुष्य स्वप्न में श्वेत पक्षी, घोड़ा, हाथी तथा घर को देखे और उन पर चढ़े वह साम्राज्य को भोगता है। स्वप्न में जो व्यक्ति मिट्टी के पात्रों में गौओं का अथवा अन्य चतुष्पदों का दूध पीता है, उसका निश्चय ही पृथ्वीमण्डल में बड़ा राज्य होता है। नदी, भंवर, स्वस्तिक चिह्न, दूब और मांगलिक डोरी (कलावा) स्वप्न में जिस व्यक्ति को दिखाई देते हैं, वह राजाओं में अग्रणी होता है। जो नर स्वप्न में सुगन्धित सुन्दर कुसुमों की माला देखता है या प्राप्त करता है या जिसके गले में गिरती है, वह निश्चय ही राजा होता है। जो नर स्वप्न में इन्द्रधनुष, सूर्य के रथ और भगवान शंकर के मन्दिर को देखता है, उसके धन की वृद्धि होती है। जो व्यक्ति स्वप्न में किले का परकोटा, बन्दनवार और श्वेत छत्र को देखता है उसको धन-धान्य और सन्तति की वृद्धि होती है। जिस मनुष्य को स्वप्न में उल्कापात और नक्षत्रों का स्पर्श हो तथा बिजली और बादलों का स्पर्श हो उसका निश्चय ही शुभ होता है। स्वप्न में जो मानव समुद्र या नदी को वायुयान द्वारा पार करता है अथवा पुए खाता है उसके धन की वृद्धि होती है। स्वप्न में जिस व्यक्ति के मुख में गौ का दूध दोहन हो उसके शत्रु का नाश होता है और जो वीणा बजाता है, उसके धन की वृद्धि होती है। काला अगर, कपूर, कस्तूरी, चन्दन और बादल जिस व्यक्ति को स्वप्न में दिखाई दें अथवा जो व्यक्ति इन वस्तुओं को मस्तक पर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

लगाता है, वह सम्मानित होता है। स्वप्न में मित्रों को और शरीर पर आभूषण धारण किये बंधुओं तथा स्त्रियों को और कमलों को देखना शुभदायक होता है। गौरेया, नीलकंठ, चातक पक्षी और सारस इनको स्वप्न में देखकर जो व्यक्ति जाग जाये उसे निश्चित ही पत्नी प्राप्त होती है। जो पुरुष स्वप्न में गौ के दुहने के बर्तन में ही झाग सहित दूध बैठकर पीता है, उसका मंगल होता है। जिस मनुष्य को स्वप्न में गेहूँ, जौ और पीली सरसों के ढ़ेर की प्राप्ति हो अथवा दर्शन हो उसको श्रेष्ठ विद्या की प्राप्ति होती है। स्वप्न में राजा, ब्राह्मण, गौएं, देवता और पितर जिस व्यक्ति को जो कुछ भी कहते हैं, वह निःसन्देह वैसा ही होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में अपनी भुजा में ध्वजा और नाभि में लता या वृक्ष देखता है, लक्ष्मी उस व्यक्ति की दासी होती है, इसमें तिल मात्र भी सन्देह नहीं है। जो व्यक्ति स्वप्न में अपने को धुआं पीते हुए देखता है उससे लक्ष्मी प्रसन्न होती है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। जो पुरुष स्वप्न में धूम और ज्वाला रहित अग्नि को मथता है या निकालता है, उसकी लक्ष्मी स्थायी होती है। स्वप्न में अगम्या स्त्री के पास जाने में और अभक्ष्य पदार्थ के भक्षण में जो मनुष्य शंका रहित होकर अभक्ष्य भक्षण करे उसको सम्पत्ति प्राप्त होती है। स्वप्न में पक्षी, हिरण, शंख, मछली या सीपी जिस मनुष्य के हाथ में आती है, वह मनुष्य प्रसिद्धधनवान होता है। जो पुरुष स्वप्न में पृथ्वी को निगलता है और पुल बांधता है, उस बुद्धिमान मनुष्य की सम्पत्ति वृद्धि को प्राप्त होती है। जो मनुष्य स्वप्न में चतुरंगिणी (हाथी, घोड़े, रथ और पैदल) ये चार प्रकार की सेना देखता है अथवा अपना मरण देखता है उसकी सम्पत्ति कभी भी नष्ट नहीं होती, ऐसा स्मृति कहती है। जो व्यक्ति सपने में मोती, मूंगा, लता या कौड़ी को प्राप्त करता है, उसको शीघ्र ही धन प्राप्त होता है। बाजूबन्द, गले का हार, मुकुट, कंठा और मछली के आकार का कोई आभूषण जो व्यक्ति सपने में देखता है या उन्हें प्राप्त करता है, उसे निरन्तर लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। कान का आभूषण, ललाट का आभूषण और पत्ते युक्त लता (पलाश शीतला) को स्वप्न में जो व्यक्ति देखता है, उसकी धन सम्पत्ति पूर्ण होती है। नदी, भंवर, स्वस्तिक चिह्न, दूब और मांगलिक डोरी स्वप्न में जिस व्यक्ति को दिखाई देते हैं, वह राजाओं में अग्रणी होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में पंखा, हाथी हांकने का अकुंश, इन्द्र का भाला जैसा वज्र, बर्तन, ध्वजा, पताका और बन्दनवार देखता है अथवा उन्हें स्पर्श करता है, वह वृद्धि को प्राप्त करता है। खडग पट्टिश (एक प्रकार का शस्त्र) धनुष, छुरी, चक्र, गदा, शिरस्त्राण और पांचजन्य (अग्नि या

शंख) जो व्यक्ति स्वप्न में देखता है, उसे भूमि प्राप्त होती है। जो व्यक्ति स्वप्न में सुवर्ण, वैडूर्यमणि और हीरों से शोभित पृथ्वी को देखता है, वह सैंकड़ों शुभों से युक्त होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में धान्य और शस्त्रादि वस्तुओं को तराजू में तुलते हुए देखे अथवा स्वयं तोले तो उसको अच्छा लाभ होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में साठी के चावल और मूंग के कण देखता है और स्वयं हाथ में लेता है या उन्हें खाता है, वह धनवान होता है। जो पुरुष स्वप्न में बैकुण्ठपति चतुर्भुज भगवान श्री हरि को देखता है, वह पुरुष योगियों में श्रेष्ठ योगी होता है। जो पुरुष लक्ष्मी, सरस्वती, सूर्य का बिम्ब और अपने गौत्र के देवता या ऋषि को देखकर जग जाये वह मनुष्य धन्य और पूजनीय होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में शीतलजल से पूर्ण तालाब और समुद्र को तथा अपने मित्र के नाश को देखता है उसको बिना कारण (अकारण) ही धन प्राप्त होता है। स्वप्न में देवता के दिये हुए अमृत का जो व्यक्ति स्वाद ले, वह राजा अथवा विद्वानों में अग्रणी होता है। जो पुरूष स्वप्न में समुद्र पर्यन्त पृथ्वी का राजा हो अथवा दूध और अन्न का आहार करे, उसको उत्तम सुख प्राप्त होता है। स्वप्न में वेदगान, हाथी, सिंह या घोड़े की ध्वनि जो मनुष्य सुनता है, उसे बहुत धन प्राप्त होता है। जो मनुष्य सुमेरू पर्वत के ऊपर की भूमि पर अथवा कल्पवृक्ष के शिखर पर चढ़कर नीले तृण वाली भूमि को देखता है, वह धनी होता है। जो व्यक्ति आकाश में तारों को, कामधेनु गौओं की पंक्ति को और श्वेत मेघ-खण्डों को स्वप्न में देखता है, वह बहुत धनी होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में चम्पा या श्वेत कमल, चमेली, तिल नागकेशर, मालती और सिरस के फूल देखता है, उसका फल शुभ होता है। जो व्यक्ति केला, अनार, नारंगी और बिजौरा नींबू यदि इनमें से किसी फल को स्वप्न में देखे या खाये तो उसका निश्चित कल्याण होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में मुनक्का या किशमिस, खिरनी या पयाल, सुपारी और नारियल वृक्षों के फलों को देखता है, वह व्यक्ति उत्तम लक्ष्मी को पाता है। अशोक वृक्ष, चम्पा-वृक्ष, सुवर्ण, चन्दन और पीली कटसुरैया (पिया बांस) इनको जो स्वप्न में देखता है, वह पुरुष लक्ष्मीवान होता है। इलायची, लौंग, कपूर, सुगन्धित फल और जायफल जो व्यक्ति स्वप्न में खाता है अथवा उन्हें देखता है, वह धनवान होता है। श्वेत कनेर के फूल और बेला या मोतिया के फूल जो पुरुष श्रेष्ठ स्वप्न में प्राप्त करता है अथवा देखता है, वह धनवान होता है। जो पुरुष केवड़ा, मौलश्री और पाढ़र के फूल स्वप्न में देखता है, वह धन-धान्य वाला होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में गन्ना और पान खाता है, उसके हाथ में इमली के फल

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

के बीज की तरह धन लौटता है। स्वप्न में जिस मनुष्य के आगे सीसा, रांगा और पीतल धातुओं के उपहार रखे हों वह सुखी होता है। स्वप्न में असीम कृपा कर ईश्वर आपको दर्शन दे तो आपका जीवन हर्षोल्लास से पूर्ण हो जाएगा। आप पर सदा ईश्वर की कृपा रहेगी, सब प्रकार के सुख और सुविधायें आपको उपलब्ध होंगी और आपके व्यवसाय में उन्नति होगी। स्वप्न में किसी व्यक्ति को यह दिखाई दे कि उसके पास बहुत भेड़-बकरियाँ, गाय और घोड़े हैं तो उसकी धन-समृद्धि में वृद्धि होती है। कोई व्यक्ति स्वप्न में देखे कि उसके सारे शरीर में खुजली के दाने फैले हुए हैं तो उसे बहुत धन-लाभ होता है। स्वप्न में कोई किसी राजा, रानी या उसी प्रकार के उच्च पदाधिकारी का दर्शन करे तो सुख, सम्पत्ति, सम्मान और समृद्धि प्राप्त होती है। स्वप्न में कोई व्यक्ति देखे कि वह बहुत फकीरी हालत में है तो उसकी समृद्धि में वृद्धि होती है। स्वप्न में कोई व्यक्ति शहतूत का पेड़ देखे तो उसकी धन-सम्पत्ति और सन्तान में वृद्धि होती है। स्वप्न में किसी व्यक्ति को मधुर संगीत सुनाई पड़े तो यह समझना चाहिए कि उसे कोई शुभ समाचार आने वाला है परन्तु यदि संगीत बेताल हो तो अशुभ समाचार प्राप्त होगा। नाखून बढ़े हुए देखने का स्वप्न बहुत सौभाग्य सूचक होता है। ऐसा स्वप्न देखने वाले की समृद्धि में वृद्धि होती है, प्रेम में सफलता मिलती है, धन, सन्तान और सम्पत्ति का सुख प्राप्त होता है। ऐसे व्यक्ति को सहसा एक बड़ी धनराशि मिलने की संभावना होती है। जिसे स्वप्न में कबूतर दिखाई दे तो विदेश में समृद्धि प्राप्त होती है। सफेद कबूतर को देखना बहुत शुभ होता है।

स्वप्न कमलाकर में अशुभ स्वप्न :स्वप्न में शस्त्र, आभूषण, मणि, मूंगे, सुवर्ण और तांबा आदि सब प्रकार की धातु चुराना अशुभ होता है। जो मनुष्य स्वप्न में केश रहित अत्यन्त डरावने व्यक्ति को हंसते हुए और नाचते हुए देखता है वह मनुष्य दो मास तक जीवित रहता है। जो व्यक्ति स्वप्न में अपने कान, नाक और हाथों को काटता हुआ देखता है तथा कीच में सनना, दांत और केशों का गिरना देखता है, वह बहुत रोगी होता है और उसका निश्चय मरण होता है। घोड़े और हाथियों का तथा वस्त्रों और स्थानों को जो व्यक्ति स्वप्न में हरण करता है, उसको राज्य भय होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में अपनी पत्नी का दूसरों के द्वारा हरण देखता है, उसकी लक्ष्मी (धन) का निश्चय ही नाश होता है। यदि स्वप्न में अपना अपमान होता हुआ देखे तो परिवार में क्लेश होता है और अपने गोत्र की स्त्रियों में लड़ाई होती है। स्वप्न में जिस मनुष्य के जूते चोरी चले जाते हैं अथवा पत्नी

का देहान्त दिखाई देता है उस मनुष्य का शरीर रोग से पीड़ित होता है। स्वप्न में जिस मनुष्य को अपने दोनों हाथ कटे हुए दिखाई दे, वह माता-पिता से रहित होता है अथवा अपनी गौओं से रहित हो जाता है। अनाथ बनने का संकेत है। स्वप्न में दांतों का गिरना, नाक-कान का कटना धननाश का संकेत है। जो पुरुष स्वप्न में नेत्र-रोगी होता है और दीपक को बुझते हुए या आकाश से तारे को टूटते हुए देखता है, वह पुरुष शरीर के किसी अंग का रोगी होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में अपने घर के द्वार का फाटक या कुन्डी, ग्रह-नक्षत्र और जूते को टूटना देखता है, उसका गोत्र नष्ट हो जाता है। जो व्यक्ति स्वप्न में हरिण, बकरा, ऊँट का बच्चा और गधों का दर्शन करता है, वह अनिष्टकारक होता है। स्वप्न में सर्प, नेवला, सुअर, गीदड़ और तरक्ष को देखना मनुष्यों के लिए अवश्य ही द्वेषकारक होता है। जो मनुष्य स्वप्न में चीता, सुरागाय और गेंडा देखता है, उस पुरूष का सौभाग्य नष्ट हो जाता है। चटक (गौरैया पक्षी) कौआ, उल्लू, शीतकाल तक दिखाई देने वाला प्रसिद्ध खंजन पक्षी और शूकर इनको स्वप्न में देखकर जो मनुष्य जागता है, वह धन रहित होता है। जलमुर्गा, जलकाक (काला पौधा), कुररी (कुरल पक्षी) और मुर्गी यदि स्वप्न में दिखाई दें तो निश्चय ही विनाश होता है। कुआं, गड्ढ़ा तथा गुफा में जो व्यक्ति स्वप्न में प्रवेश करता है, उसको अनेक आपदाएं घेरे रहती है, मानों वह विपत्तियों के स्थान में पहुंच गया हो। जो व्यक्ति स्वप्न में पके हुए मांस का भक्षण करे, देखें, प्राप्त करे, क्रय करे या विक्रय करे उसके द्रव्य का निश्चित रूप से नाश होता है। स्वप्न में जो व्यक्ति पूरी, रोटी और पुए तथा वरूण वृक्ष का भक्षण करता हैं, वह शोक आदि से पीड़ित होता है। जो मनुष्य स्वप्न में अशोक वृक्ष, टेसू वृक्ष और नीम के ऊपर चढ़ता है, वह व्यक्ति व्यथायुक्त होता है। जो मनुष्य स्वप्न में कुछ सोचता हुआ हंसता है बाद में बारम्बार नृत्य प्रारम्भ करता है, उस पुरूष का निःसन्देह वध या बंधन होता है। जो मानव स्वप्न में रूधिर का मूत्र करता है अथवा रक्त का मल त्याग करता है, उस मानव का धन - धान्य बहुत बार नष्ट होता है। सिंह, हाथी, सर्प, मनुष्य और मगरमच्छ अपनी ओर खींचते हैं वह मानव बंधन से मुक्त होने के पश्चात् फिर बांधता है। जो व्यक्ति स्वप्न में पितृ तर्पण, विवाह और वार्षिक कर्म (श्राद्ध) में भोजन करता है, वह शीघ्र ही नाश को प्राप्त करता है। स्वप्न में अन्य पाण्डुरोगी पुरूष को देखकर जिस पुरूष को पाण्डु-रोग हो जाये उसका शरीर निःसन्देह रूधिर से रहित हो जाता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वप्न विज्ञान में मृत्यु-सूचक स्वप्न :स्वप्न में जिस मनुष्य को लाल अंग वाली अथवा रक्त वर्ण से चित्रित अंग वाली सूखे फूलों की माला से अलंकृत स्त्री दृढ़ आलिंगन करती है, वह शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होता है। खुले हुए केशवाली और काली गंध से युक्त शरीरवाली स्त्री स्वप्न में जिस मनुष्य का आलिंगन करती है, उस मनुष्य की शीघ्र ही मृत्यु होती है। भयंकर और लाल नेत्रवाली, पीले वस्त्र धारण करने वाली स्त्री स्वप्न में जिस पुरुष का आलिंगन करती है, उसकी शीघ्र ही मृत्यु होती है। पतले पेट या कमर वाली, पीले नेत्रों वाली, नंगी और बड़े नाखून वाली स्त्री स्वप्न में जिस पुरुष का आलिंगन करती है, उसकी शीघ्र ही मृत्यु होती है। काले रंग की विकृतांगी (कान-नाक एवं नेत्र से हीन) नंगी एवं टेढ़े बालों वाली स्त्री जिस पुरुष को खींचकर उसके साथ रमण करती है, उसकी शीघ्र ही मृत्यु होती है। स्याही और तेल को अपने शरीर में लगाये हुए जो व्यक्ति स्वप्न में गधे के ऊपर चढ़कर दक्षिण दिशा को जाता है, उसकी निश्चय ही मृत्यु होती है। जो पुरुष जटाधारी, रूखा, मलिन, विकृत अंग और निंदा से युक्त व्यक्ति को स्वप्न में देखता है उसकी मान-हानि होती है। स्वप्न में जिस पुरुष की शत्रु के साथ कलह में, विवाद में और युद्ध में पराजय हो उसका वध या बंधन होता है। स्वप्न में जिस व्यक्ति के घर में या आंगन में शहद की मक्खियाँ वास करती हैं, वह व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त होता है अथवा कल्याण-रहित होता है। दीवार पर अथवा दीवार के नीचे चित्रकार द्वारा लिखित राहु से युक्त चन्द्रमा की परछाई जो व्यक्ति स्वप्न में देखता है, उसका नाश होता है। स्वप्न में जिस मनुष्य को अपने इष्ट देवता की प्रतिमा खंडित या चलती हुई दिखाई दे, उस मनुष्य की मृत्यु दुःख निवारण के निमित्त होती है। जो देवता स्वप्न में अपने को कुल देवता की प्रतिमा चुराते हुए देखता है, उसकी प्राण-वायु यमराज के योद्धाओं द्वारा चुराई जाती हैं। बगीचे में वृक्ष के नीचे जाते हुए मार्ग का अन्त जो व्यक्ति स्वप्न में नहीं देखता उस व्यक्ति का निःसंदेह मरण होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में कीचड़ युक्त जल में डूबता है, ऊपर को उठता है, फिर डूबता है और उससे बाहर निकलता है, वह बड़े कष्ट से मरता है। स्वप्न में जो मनुष्य उन्मत दशा में नाचता हुआ यमराज की नगरी का मुख देखता है अथवा उसमें प्रवेश करता है, वह मृत्यु को प्राप्त होता है। जो गधा और ऊँट से युक्त सवारी में चढ़कर स्वप्न में जाग जाये उसकी निश्चित मृत्यु होती है। जो पुरुष स्वप्न में चाण्डाल के साथ तेल पीता है, वह प्रमेह (मधुमेह) की व्याधि से ग्रसित होकर मरण को प्राप्त होता है। जो व्यक्ति

स्वप्न में कृशरा (तिल-चावल की खिचड़ी) खाता है, वह क्षयरोगी (तपेदिक) होता है। स्त्री के स्तन से दूध पीने वाला व्यक्ति पुनर्जन्म पाता है। जो व्यक्ति स्वप्न में गोबर सहित अत्यंत गरम पानी को पीता है अथवा औषधि के साथ कटु तैल (सरसों का तेल) पीता है, उसे अतिसार रोग होता हैं। जो व्यक्ति स्वप्न में ताड़, बांस, खजूर, रोहित नाम का वृक्ष और नारियल का वृक्ष इन सब में सब ओर लगे कांटों द्वारा ऊपर चढ़ता है, वह निश्चय ही मरता है। स्वप्न में जो व्यक्ति लाली लगाये लाल अंगों वाली, लाल ही वस्त्रों और आभूषणों से प्रेम करने वाली तथा उनसे सज्जित स्त्री का चुम्बन करके सम्भोग करता है, उसकी मृत्यु होती है। जो व्यक्ति स्वप्न में निरंतर क्रूर पुरुष को देखता है, उसके प्राण एक वर्ष के अन्दर ही यमराज के अतिथि होते हैं अर्थात् उसकी एक वर्ष के अन्दर ही मृत्यु होती है। स्वप्न में जिस मनुष्य को अत्यंत प्रसन्नता होती हो उसका विवाह भी होता हो तो उस मनुष्य को मृत्यु समीप आई हुई जाननी चाहिए। खप्पर में अन्न लाकर अर्पण करती हुई स्त्री जिस पुरुष के स्वप्न में रात्रि में मिलने के लिए आती है, वह पुरुष भी शीघ्र ही नाश को प्राप्त होता है। स्वप्न में पिशाची, चण्डाली, प्रेत स्वभाव वाली युवा स्त्री से और कन्या से जो कामी पुरुष रमण करता है वह शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होता है। सर्पों से, नाखूनों वाले जीवों से, चोरों से, घृणित या पापी मनुष्यों से और गीदड़ों से जिस मनुष्य को स्वप्न में भय लगता है। उसका भी विनाश होता है। स्वप्न में जिस पुरुष को काक और सफेद चील आदि पक्षियों द्वारा पकड़कर नीचे गिराया जाता है, उसकी निश्चित ही मृत्यु होती है। जो व्यक्ति स्वप्न में शय्या से, आसन से, वृक्ष से, परकोटे की दीवार से, देव स्थान से और घोड़े की सवारी से गिरता है, वह मृत्यु को प्राप्त होता है। स्वप्न में जो व्यक्ति निरन्तर धूलियुक्त पृथ्वी में बैठा रहे अथवा आकाश में जाये उसकी मृत्यु होती है। स्वप्न में जिस पुरुष को सूअर, कौवा, बिलाव, व्याघ्र, गीदड़ और कुत्ते खींचते हैं, उसकी शीघ्र ही मृत्यु होती है। गिद्ध, काक, व मत्स्य भोजी बगुला- इन पक्षियों का स्वप्न में जिसके सिर पर पतन हो, वह नर धर्मराज के भक्षण योग्य होता है अर्थात् उसकी मृत्यु होती है। पीले नेत्रों वाली भयंकर बंदरी जिस नर से लिपटती है, वह बहुत दुःख भोगता है। जो व्यक्ति स्वप्न में वानर, हिरण, मेंढ़ा और भैंसे जुड़े हुए रथ पर चढ़ता है, वह बहुत दुःखों से पीड़ित होता है। स्वप्न में जिस मनुष्य को अपने वंश में मृतक व्यक्ति के द्वारा राहु के समान ग्रसित किया जाता है, उसका शीघ्र ही मरण होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में संन्यास ग्रहण करता है

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अथवा कलह करता है वह निःसंदेह क्लेश पाता है। जो व्यक्ति स्वप्न में धान्यराशि को धूलि में मिली हुई देखता है अथवा उसको तेल सहित पकाता हुआ देखता है, उसकी दुर्गति होती है। स्वप्न में जिस नंगे अथवा सिर मुंडे प्राणी को पिशाच अथवा चण्डाल दक्षिण-दिशा की ओर ले जाते हैं, उसके प्राण निश्चित ही संकट में पड़ते हैं। स्वप्न में जिस व्यक्ति के ऊपर उसके माता-पिता और भ्राता क्रोधित होते हैं, उस व्यक्ति का शीघ्र ही निश्चित नाश होता है। स्वप्न में जो व्यक्ति गेरुआ रंग के वस्त्रों से अपने को सजाता है या छाल के वस्त्र धारण करता है, वह यमराज के समीप जाता है। स्वप्न में जो व्यक्ति असमय में मेघों की घनी छाया देखता है अथवा वायु मिश्रित वर्षा को देखता है। वह क्लेश भोगता है। स्वप्न में सूर्य रहित अस्त हुए दिन को ओर चन्द्रमा रहित रात्रि को तथा नक्षत्रों के बिना आकाश को देखकर मानव यमालय जाता है। जो व्यक्ति स्वप्न में (अपने घर से) तेली एवं कुम्हार के साथ भागता है, उसके चित्त में अहर्निश दुःख होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में छोटी मक्खी के छत्ते के नीचे या ऊपर निद्रा लेता है, वह बहुत दूर देश का प्रवासी यमलोक वासी होता है। स्वप्न में जो व्यक्ति वाल्मीकि (दीमक का स्थान) कूड़ा-कर्कट और तीक्ष्ण कांटों वाले वृक्ष पर सोता है अथवा इन सबको देखता है, वह विपत्ति में पड़ता है। जो पुरुष स्वप्न में वनकंड, भूसे, कंकाल (हड्डी का पिंजर) और लकड़ी के टुकड़ों में बैठता या सोता है, वह महान दुःख पाता है। जो व्यक्ति स्वप्न में चारपाई पर मृतक की शय्या पर और पत्थर की शिला पर बैठता है, वह सहज ही यमलोक को जाता है। जो व्यक्ति स्वप्न में गोबर, कीच, राख और धूल को अपने शरीर में मलता है, वह शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होता है। स्वप्न में जिसके शरीर में गोरोचन, हल्दी, नील और काजल मला जाता है, वह शीघ्र ही यमराज का अतिथि होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में चर्बी तथा दुर्गन्धियुक्त अन्न को खाता है, उसका शीघ्र मरण अवश्यमेव होता है। स्वप्न में कांजी, शहद, मट्ठा तेल, और घृत का जिसके शरीर पर लेप किया जाता है, वह मृत्यु को प्राप्त होता है। स्वप्न में जिस पुरुष को जुलाहा, दर्जी, लुहार, चमार, धीवर और व्याध स्पर्श करते हैं, वह दुःख का भागी होता है अर्थात् वह दुःख पाता है। स्वप्न में जिस नर को विकलांग, लंगड़ें, वैद्य, नीच, नर्तक, दास या नौकर और जुआरी स्पर्श करते हैं, वह दुःख पाता है। कटसरैया - करञ्ज, कुटज तथा सप्तपर्ण इनका स्वप्न में दर्शन ही नाशकारक है फिर खाने को क्या कहा जाये? कनेर, शीशम, धवः खदिर (खैर) बेर, शमी (कीकर) - इनका स्वप्न में दर्शन

नाशकारक है। कुश एवं काश के अंकुर, माकल के वृक्ष जिसको स्वप्न में दिखाई दें उसको महादुःख होता है। जवा एवं चम्पक के पुष्प जो व्यक्ति स्वप्न में लाल रंग के देखता है, वह शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होता है। जम्बीरी, नींबू, लौकी, तरबूज या कुम्हड़ा, कुंदरू और ककड़ी इन्हें जो व्यक्ति स्वप्न में देखता या खाता है उसकी शीघ्र ही मृत्यु होती है। पसही धान, कोदों धान, मूंग या तिल और कुलत्थी को जो नर स्वप्न में देखता और खाता है, वह दुःख पाता है। जो व्यक्ति खट्टे, चरचरे, कड़वे और कसैले पदार्थों को स्वप्न में खाता है उसकी निःसंदेह हानि होती है। शरीर के मांस को आंतों में मिलाकर या नाखून से मिली हुई आंतों को जो पुरुष स्वप्न में खाता है, वह शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त करता है। खजूर-वृक्ष का गुड़, हींग वृक्ष का गोंद, जो व्यक्ति स्वप्न में खाता है, उसे शीघ्र ही यमदूत ले जाते हैं। जो नर शैवाल से लिपटा हुआ शरीर एक महीने तक स्वप्न में देखता है, वह व्यक्ति क्षयीभूत होकर मरता है। कांसा, पीतल, कथिल, तांबा तथा रांगा इनको स्वप्न में जो देखता है, वह निर्धन होता है। तलवार, कुठार, कुदाल, फाल, भाला, मुद्गर तथा आरा को जो स्वप्न में देखता है, उसका विनाश होता है। जो नर स्वप्न में बुहारी (झाड़ू) बटलोई (पतीली) थाली एवं मूसल को देखता है अथवा उनको प्राप्त करता है, उसकी मृत्यु होती है। ईंधन, धुआं, कोयला, धुंए सहित अग्नि जो व्यक्ति स्वप्न में देखता है, उसका धन्य-धान्य का नाश होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में मथानी का डंडा, सूप, छाज, जोतने का हल, रस्सी और तागा 'डोरा' देखता है या इनका स्पर्श करता है, उसके धन का नाश होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में स्वयं अपनी आयु में दोष या परिवर्तन देखता है, उसके मंगल कार्यों का निस्संदेह विनाश होता है। जो पुरुष स्वप्न में अपने महल, किले, छत्र, ध्वजा और कलश का टूटना देखता है उसके राज्य का नाश होता है, अथवा उसकी मृत्यु होती है। जो व्यक्ति स्वप्न में देव मंदिर का टूटना अथवा ग्राम का नष्ट होना देखता है, उसका नाश होता है। स्वप्न में शरीर भंग देखने से शरीर भंग होता है, नेत्र-भंग देखने से अन्धता होती है और कान भंग होने से बहरापन होता है, इसमें कोई संदेह नहीं है। यदि स्वप्न में किसी मनुष्य को अपना खेत या समतल स्थान बाढ़ से जलमग्न दिखाई दे तो उस वर्ष उसका धन-धान्य नष्ट होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में अकस्मात् स्थल भूमि को जल मग्न देखता है उसको निस्संदेह व्याधि 'रोग' आदि ग्लानि और धन-हानि होती है। स्वप्न में जिस मनुष्य ने यदि अछूत जाति की स्त्री का स्पर्श किया हो, जुआं खेला हो अथवा किसी स्त्री

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

के साथ मैथुन किया हो तो प्रातः स्नान करने से दुःख नहीं होता अर्थात् स्वप्न का दोष मिट जाता है। जो मनुष्य स्वप्न में आकाश, शुक्र का तारा, अग्नि, ध्रुवतारा और सूर्य को देखता है (बीमारी अवस्था में) वह ग्यारह मास से अधिक जीवित नहीं रहता। जो मनुष्य स्वप्न में सुवर्ण अथवा चांदी का मूत्र त्याग करता है अथवा इनकी विष्ठा करता है, वह दस माह जीवित रहता है। स्वप्न में भूत, पिशाच, गंधर्वों के नगर और स्वर्ण-वृक्ष देखकर मनुष्य नौ मास जीवित रहता है। स्वप्न में जो स्थूलकाय मानव अकस्मात कृश हो जाये या कृश नर मोटा हो जाये और स्वभाव भी बदल जाये, वह पुरुष आठ मास जीवित रहता है। स्वप्न में जिस मनुष्य को अपनी एड़ी के ऊपर की गांठ से पैर खण्डित (टूटा हुआ) दिखाई दे उसकी आयु सात मास होती है। कपोत, गिद्ध, काकोल, 'सर्प विशेष' काक आदि मांस-भक्षी को सिर पर अथवा वह राक्षस और दुष्ट (जंजाल) को स्वप्न में देखता है, वह छह मास जीवित रहता है। जो पुरुष स्वप्न में काक और चाण्डालों से अथवा धूलि की वर्षा से नाश को प्राप्त होता है अथवा अपनी छाया को किसी दूसरी तरह से देखता है, वह चार मास जीवित रहता है। रात्रि-स्वप्न में, दक्षिण दिशा में मेघ रहित बिजली को चमकते देखकर मनुष्य दो या तीन मास तक ही जीवित रहता है। अथवा उत्तर दिशा में इन्द्रधनुष को जो व्यक्ति स्वप्न में देखता है, वह तीन महीने जीवित रहता है। जो मनुष्य स्वप्न में घृत में, तैल में, शीशे में या जल में सिर रहित अपने शरीर को देखता है, वह एक मास से अधिक जीवित नहीं रहता। स्वप्न में अथवा जाग्रत अवस्था में भी स्नान करते ही जिस मनुष्य का हृदय और पैर सुख जाते हैं, वह व्यक्ति केवल दस दिन तक जीवित रहता हैं। जिस व्यक्ति के शरीर से बकरी अथवा मृत देह के समान गन्ध आने लगती है, वह पन्द्रह दिन तक जीवित नहीं रहता। नीचे की तेज वायु जिस व्यक्ति के मर्म-स्थानों को काटती है और जल के स्पर्श से जिसको प्रसन्नता नहीं होती उसकी मृत्यु उपस्थित है, ऐसा समझना चाहिए। जो व्यक्ति स्वप्न में बन्दर और रीछ युक्त सवारी में बैठ कर गाता हुआ दक्षिण दिशा को जाता है उसकी भी मृत्यु काल की प्रतीक्षा करती है। स्वप्न में लाल और काले वस्त्र धारण किये गाती हुई और हंसती हुई स्त्री जिस व्यक्ति को दक्षिण दिशा में ले जाती है, वह भी जीवित नहीं रहता। जो व्यक्ति स्वप्न में नंगे या नागा और संन्यासी को प्रसन्नतापूर्वक, हंसते हुए अभिचारिक विद्या 'मारण प्रयोग' करते हुए देखता है, उसकी मृत्यु आ गई है, ऐसा समझना चाहिए। जो व्यक्ति स्वप्न में नीचे से मस्तक पर्यंत अपने

को कीच के समुद्र अर्थात् अगाध कीच में डूबा हुआ देखता है, वह शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में केश, अंगारे, भस्म और वक्रगामिनी एवं जल रहित नदी अथवा भूत-प्रेत द्वारा अपना अहित करते हुए देखता है, उसकी शीघ्र ही मृत्यु होती है। जिसके भोजन करने पर भी भूख हृदय को पीड़ा देती है और जो स्वप्न में दांत किटकिटाता है, वह निःसंदेह असुर लोक को जाता है। जिस व्यक्ति को धूप आदि सुगन्धित द्रव्यों की सुगंध ज्ञात नहीं होती और जो दिन-रात सोता ही है और जिसे दूसरे के नेत्रों में अपना प्रतिबिम्ब दिखाई नहीं देता, वह जीवित नहीं रहता। अर्द्ध रात्रि में इन्द्रधनुष और दिन में तारागणों को देखकर मनुष्य को यह समझ लेना चाहिए कि अब अपना जीवन क्षीण हो गया है। जिस मनुष्य के कानों तथा नेत्रों की ऊँचाई टेढ़े हो जाने के कारण अधिक न रही हो और जिसके बायें नेत्र से बराबर जल बहता रहे उसकी आयु थोड़ी ही रह जाती है। जिस व्यक्ति का मुख अकस्मात् लाल हो जाये और जीभ यदि सफेद हो जाये तो उसकी मृत्यु एक मास में जाननी चाहिए। जो पुरुष ऊँट और गधे की सवारी में बैठकर दक्षिण दिशा को जाता है, उसकी मृत्यु शीघ्र जाननी चाहिए। जो व्यक्ति अपने कानों को ढ़ककर अपना शब्द नहीं सुनता और जिसके नेत्रों की ज्योति नष्ट हो जाये वह भी जीवित नहीं रहता। जो व्यक्ति स्वप्न में गड्ढे में गिरकर निकल नहीं पाता हो और उठ भी नहीं सकता हो उसके जीवन का अन्त समझना चाहिए। स्वप्न में जो व्यक्ति अग्नि में प्रवेश करे और फिर निकल न सके अथवा जल में भी प्रवेश करके न निकले उसके भी जीवन का अन्त समझना चाहिए। जिसकी दृष्टि उर्ध्वगामी हो जाये और अपने स्थान पर समभाव में न आवे और फिर अवस्था में लाल हो जाये, मुख में गर्मी एवं नाभि में विवर ज्ञात हो, उस पुरुष के शरीर का भी अन्त होता है। जो व्यक्ति स्वप्न में दुष्ट प्राणियों द्वारा रात्रि अथवा दिन में मारा जाये वह सात रात्रि में ही मृत्यु को प्राप्त होता है। इसमें कुछ भी संदेह नहीं है। जो पुरुष स्वप्न में अपने निर्मल श्वेत वस्त्रों को लाल और काले देखता है, वह पुरुष मृत्यु ग्रस्त है। ऐसा निर्देश करना चाहिए। जिन मनुष्यों का स्वभाव विपरीत होकर प्रकृति ही बदल जाये उनके जीवन की अवधि छह मास की कहनी चाहिए। लिंगपुराण में लिखा है कि जो पुरुष जल अथवा शीशे में यदि अपनी आकृति को नहीं देखता या अपने शरीर को शीश रहित देखता है वह एक मास से ऊपर जीवित नहीं रहता। नारदजी कहते हैं कि जो व्यक्ति अपने सिर की छाया को कभी नहीं देखता ऐसे उत्पात

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

को देखकर वह एक मास तक जीवित रहता है। स्वर-शास्त्र में लिखा है कि सिर पर हाथ रखने से यदि हस्त छाया खण्डित न दिखाई दे, तो छह माह तक मृत्यु का भय नहीं होता है और दोनों हाथ सम्पुट करके सिर पर रखने से यदि केले के पत्ते की कोर के बराबर भी अंतर दिखाई दे अथवा नौका द्वारा जल से अपने को तरता देखे तो मृत्यु-भय नहीं होता।

स्वप्न प्रदीप में स्वप्न :देवता द्वारा स्वप्न में फल, शाखा आदि की प्राप्ति से वंश-वृद्धि होती है (अर्थात् पुत्र पौत्रादि होते हैं) दीर्घकाल तक स्थायी रूप से समृद्धि प्राप्त होती है, उत्तम प्रकार के वस्त्राभूषण प्राप्त होते हैं और राज्य मान्यता प्राप्त होती है। स्वप्न मे देवता पुष्पादि की वर्षा करे तो स्वप्नद्रष्टा के घर में महोत्सव होते हैं। स्वप्न में देवता या देव-मूर्ति अर्द्ध खुले या बन्द नेत्रों से ध्यानारूढ़ दिखाई दे तो महाज्ञान का प्रकाश प्राप्त होता है। स्वप्न में यदि देवता विकट रूप वाले दिखाई दें तो शोक प्राप्त होता है, धन तथा मान-मर्यादा की हानि होती है। स्वप्न में देवतादि रोते हुए दिखाई दें तो बहुत शोक, दरिद्रता तथा शत्रु से भय प्राप्त होता है। स्वप्न में देवमूर्ति या देवता कांपता हुआ दिखाई दें तो दुर्भिक्ष होता है, मलिन मुख दिखाई दे तो रोग होता है। स्वप्न में देवतादि गाते-हंसते दिखाई दें तो इस स्वप्न को मृत्यु या मारणान्तिक कष्ट सूचक समझना चाहिए। स्वप्न में देवतादि को स्नान के बाद गिरता दिखाई देने से दोष, भय तथा महापाप की प्राप्ति होती है। यदि वे खाते हुए दिखाई दें तो खाद्य पदार्थ की प्राप्ति होती है। स्वप्न में देवतादि यदि जय-विजय, जीओ, आनन्द हो, सुखी रहो, स्थिर हो, जैसे आशीर्वाद सूचक शब्द कहें तो मनोवांछित कार्य सिद्ध होते हैं। स्वप्न में देवतादिकी शुभ चेष्टाएं शुभफलदायी होती हैं और अशुभ चेष्टाएं अशुभफलदायी होती हैं। अपवित्र, अनुचित स्थान पर पड़ी, अपूजित, पूजा चाहने वाली, अपने स्थान से भ्रष्ट, खंडित देव-प्रतिमा यदि स्वप्न में दिखाई दे, तो महा अशुभ फल प्राप्त होता है। स्वप्न में पितर श्वेत वस्त्र पहने हुए, आभूषणों से अलंकृत दिखाई दें तो शुभ फल प्राप्त होता है। स्वप्न में पितर मुंडित दिखाई दें तो कुल-नाश होता है। स्वप्न में पितर श्राद्ध-तर्पण आदि चाहते हों, नग्न हों और वस्त्र चाहते हों, श्मशान और वन-जंगलों में रहते हुए, स्थान मांगते हों, रोते हों तो अपने परिजनों से वियोग और क्लेश होता है। यदि वे प्रसन्नतापूर्वक गाते हुए दिखाई दें तो घर में शुभ उत्सव होते हैं। स्वप्न में यदि पितर हाथ में फल लिए हों तो पुत्र की प्राप्ति होती है। दूध लिए हों तो शुभ फल प्राप्त होता है। यदि ये वस्तुएं स्वप्न द्रष्टा को

देते हुए दिखाई देते हों तो धन का लाभ होता है। स्वप्न में मुनि, साधु-संन्यासी निष्पाप और शांत मूर्ति हों अथवा शुभ चेष्टाएं करते दिखाई दें तो शुभ फल प्राप्त होता है। स्वप्न में ब्राह्मण अपनी उपयुक्त वेशभूषा में हो, शुभ वचन बोलता हो तो उत्तम फल प्राप्त होता है। यदि वह मुंडित या जटाधारी दिखाई दे तो अशुभ फल होता है। स्वप्न में बछड़े वाली गाय के स्तनों से दूध निकलता दिखाई दे तो स्वास्थ्य लाभ, कुल की वृद्धि तथा भूमि प्राप्त होती है। स्वप्न में गाय दीन, दुःखी, दुर्बल, पतली, टूटे हुए सींगों वाली, रोती हुई दिखाई दे, तो कुल का नाश होता है। स्वप्न में भिक्षार्थी मुनिराज भिक्षा से प्राप्त अन्न से भरे हुए पात्र के साथ दिखाई दें तो धन-वृद्धि, मुख से आशीर्वाद देते दिखाई दें तो वंश की वृद्धि होती है। स्वप्न में मरी हुई अथवा घावों या फोड़ों से परिपूर्ण शरीर वाली कटे अंगों वाली गाय दिखाई दे तो देश का और कुल-नाश होता है। स्वप्न में राजा छत्र, सुन्दर वस्त्रों, आभूषणों आदि से सज्जित अपने सिंहासनारूढ़ हो, या अश्वारूढ़ हो, या रथ पर सवार हो या उत्तम वचन बोलते हुए, शस्त्र लिए दिखाई दे तो धन सुख, सफलतादि मनोवांछित कार्य सिद्ध होते हैं। राजा दण्डधारण किए हुए दिखाई दे तो मृत्यु या मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। स्वप्न में स्वस्तिक देखने से धन-वृद्धि, आरोग्य-वृद्धि तथा पुरुषार्थ-वृद्धि ।

स्वप्न सिद्धान्त दर्पण में स्वप्न – स्वप्न में इन्द्रदेव को देखने से धन-लाभ, विजय, आरोग्य सुख तथा कल्याण प्राप्त होता है। स्वप्न में जलयात्रा देखने से राज्य की तथा धन-सम्पत्ति की प्राप्ति और पुत्र-लाभ होता है। वन-वृक्षों को फले-फूले स्वप्न में देखने से संतोष, उत्साह तथा राज्य-प्रतिष्ठा और कार्यसिद्धि होती है। स्वप्न में देव-विमान देखने से हर्षोल्लास और अभिलषित पदार्थ की प्राप्ति और सब विघ्न दूर होते हैं। स्वप्न में कुम्हार को घड़ा बनाते हुए देखने से प्रीति, कल्याण, आनन्द और धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। स्वप्न में नये पत्तों सहित वृक्ष को देखने से धन-धान्य, सुख, राज-सम्मान और पुत्र की प्राप्ति होती है। छत्र से युक्त घोड़ा तथा सूर्य का बिम्ब देखने से आनन्द, उल्लास तथा इच्छित वस्तु की प्राप्ति होती है, बाधाएं दूर होती हैं। चौपड़ खेलती हुई स्त्री को स्वप्न में देखने से धन, सदा-सुख, राज-सम्मान प्राप्त होता है और धन-धान्य की वृद्धि होती है। स्वप्न में समुद्र, छत्र, चामर, चन्द्रमा, अष्टापद एवं सिंह देखने से विद्या, वैभव, पुत्र-पौत्रादि तथा कार्य में सफलता प्राप्त होती है। स्वप्न में ब्रह्मा, सरस्वती, गणेश, लक्ष्मी अथवा उसकी मूर्ति देखने से धन-वृद्धि, विजय, लाभ, सिद्धि तथा संतान

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्राप्त होती है। स्वप्न में केले का वृक्ष देखने से राज-मान, धन, संतान, यश व सफलता की प्राप्ति होती है। लग्न मंडप का चोरी हो जाना देखने से विद्याओं का ज्ञान प्राप्त अति शीघ्र होता है। महाज्ञान का प्रकाश होता है। नव विवाहित दम्पत्ति, पर्वत, घोड़ा, सिंहासन, पक्षियों के जोड़े, विमान, नंद्यावर्त, स्वस्तिक, जलभरे कलशों सहित पनघट (पनिहार) एवं जलपूर्ण कुम्भ देखने से हर्षोल्लास, राज-सम्मान, आनन्द, वैभव, इष्ट की प्राप्ति शीघ्र होती है। सब विघ्न दूर होते हैं।

वृहद् यात्रा में स्वप्न :चन्द्र, तारे तथा सूर्य को ग्रसना या स्वप्न में उनको ढूंढना, पृथ्वी और समुद्र को ग्रसना, शत्रुओं का वध करना विवाद और खेल में जीत होना, लड़ाई एवं कुश्ती में जीत होना, दूध, खीर आदि से पृथ्वी का व्याप्त होना, निर्मल आकाश में देखना, मुंह में गाय, भैंस, सिंहनी, घोड़ी आदि का दूध दुहना, रुधिर का देखना तथा उससे स्नान करना, देव, ब्राह्मण तथा गुरुओं एवं मंदिर का दर्शन करना राज्य प्राप्ति सूचक हैं। स्वप्न में जल से अभिषेक देखना भी राज्यदाता है। मस्तक कटना, मरण, अग्नि-लाभ तथा आग से घर जल जाना, जलाशय में तैरना, विषम स्थान को फांदना, हथिनी, घोड़ी, गाय का घर में प्रसव, हाथी पर बैठना, रोना स्वप्न में यह सब देखना शुभ होता है। स्वप्न में स्त्रियों का लाभ होना उनका आलिंगन करना शुभ एवं राज्य लाभकारी हैं।

उत्तराध्ययन सूत्र टीका में स्वप्न :श्रृंगार किए हुए अश्व तथा श्वेत बैल स्वप्न में दिखाई दें तो यश प्राप्त होता है।

रत्नचूड़ कथा में स्वप्न :स्वप्न में देव, दिवंगत पिता, राजा या उत्तम साधु जो कुछ आदेश दें उसका पालन करना चाहिए। स्वप्न में बैल, हाथी, वृक्ष, पर्वत, महल और घोड़े की सवारी विष्टा का विलेपन, रोना और मृत्यु देखने से लक्ष्मी प्राप्त होती है। स्वप्न में यदि दही लाभ हो तो धन मिले, घी का लाभ हो तो जय मिले, दही खाये तो यश प्राप्त होता है। स्वप्न में श्वेतवस्त्र, श्वेत माला, श्वेत गंधानुलेपन से अलंकृत नारी से आलिंगन करने से धन प्राप्ति होती है। स्वप्न में ताम्बूल, मोती, शंख, वस्त्र, चन्दन, मोगरा, बकुल नामक वृक्ष तथा कमल देखें तो धन प्राप्ति होती है। जो व्यक्ति स्वप्न में आसन, शय्या, घर तथा अपने शरीर को जलता हुआ देखकर जग जाए तो धन और यश मिलता है। जो मनुष्य स्वप्न में अपने आपको महल, कमल-पत्र पर सरोवर के मध्य या पास भोजन करते हुए

दोनों भुजाओं से समुद्र में तैरते हुए देखता है, वह राजा होता है। बीमार व्यक्ति यदि स्वप्न में सूर्य और चन्द्रमा का मण्डल देखे तो रोग शांत होता है और वह निरोगी और धनी बनता है।

जो मनुष्य स्वप्न में सोना, राजा, गज, अश्व, गाय देखे उसको पारिवारिक सुख एवं समृद्धि प्राप्त होती है। जो मनुष्य स्वप्न में अपने आपको नौका और जहाज पर चढ़ते और कुशलतापूर्वक समुद्र पार करते हुए देखे तो वह यात्रा पर जाता है, धन और यश प्राप्त करके वापिस लौटता है। स्वप्न में दूध, शराब या रक्त पीते हुए देखने से जातक को धन प्राप्त होता है। देव प्रतिमा देखने से शीघ्र जय-लाभ करता है। कोई व्यक्ति स्वप्न में तेल, दूध, घी आदि से मालिश करे तो वह शीघ्र रोगग्रस्त होता है। स्वप्न में दरवाजे या पलंग का अर्गल टूटा हुआ देखने से पति/पत्नी की मृत्यु का सूचक है।

आचार मयूख में स्वप्न :स्वप्न में जिस व्यक्ति को सर्प या बिच्छू डंक मारे उसे विजय, धन तथा पुत्र की प्राप्ति होती है। स्वप्न में जो व्यक्ति तालाब के बीच में बैठकर कमल के पत्ते पर घी और खीर का भोजन करता है, वह राजा बनता है।

स्वप्न में दही देखने से लोकप्रियता प्राप्त होती है। गेहूं देखने से धन की प्राप्ति होती है और यज्ञ देखने से घर में यज्ञ पूजादि होती है। स्वप्न में जिसे पान, कपूर, अगर, चन्दन और पीला फूल मिले उसे धन की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य स्वप्न में दुहा हुआ झाग सहित दूध पीता है वह अनेक भोगों को भोगता है। जो व्यक्ति स्वप्न में अपने आपको गाय या बैलों से जुते हुए रथ में अकेला बैठे देखे और उसी समय उसकी नींद खुल जाए तो उसे शीघ्र ही धन की प्राप्ति होती है।

स्वप्न और उसकी अनन्त क्षमताओं की व्याख्या केवल मनोविज्ञान से ही नहीं की जा सकती अपितु उनके विविध पक्षों का सूक्ष्म फलितार्थ ज्योतिष से ही संभव है। स्वप्न का जितना प्रचार-प्रसार पंडितों एवं ज्योतिषयों ने किया है उतना किसी ओर ने शायद ही किया है। जन साधारण तक स्वप्न का फलादेश ज्योतिषियों ने पहुंचा कर जनता का उपकार किया है तभी इनका विस्तृत विशाल विवेचन ज्योतिष में सूक्ष्मता के साथ हुआ है। इसमें सूक्ष्म से सूक्ष्म पहलू की शुभता अशुभता पर सर्वांगीण विवेचन उपलब्ध है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

देखे हुए सपने एवं उनका प्रभाव अकारादि क्रम से

अकाल–अकाल का अंत अच्छा। अकाल के भूखे मनुष्य और पतले-दुबले पशुओं को देखे तो दृष्टा की दरिद्रता का सूचक।

अखरोट–अखरोट इकट्ठा करना विपत्ति का परिचायक, स्त्री देखे तो उसके परिवार में मतभेद। अखरोट खाए तो दरिद्रता का सूचक। अखरोट प्राप्त करने का मतलब मित्र दूर-दूर भागेंगे।

अखबार –अखबार पढ़ना, खरीदना, बेचना, देखना गृह-कलह का सूचक।

अग्नि–जलती आग देखना शुभ सूचक है। भोजन पकता हुआ दिखें तो रोगों से छुटकारा। ऋणमुक्त। हलवाई की दुकान में भट्टी पर आग जलती दिखाई दे तो उत्सव का प्रतीक यज्ञशाला में अथवा यज्ञवेदी प्रज्वलित देखें तो बहुत शुभ लक्षण, हर प्रकार का कल्याण, धर्म और अध्यात्म में रूचि बढ़ेगी। जैनाचार्य चन्द्रसेन मुनि के मत से धूमयुक्त अग्नि देखने से उत्तम क्रान्ति, वराहमिहिर और मार्कण्डेय के मत से प्रज्वलित अग्नि देखने से कार्य-सिद्धि, दैवज्ञ गणपति के मत से अग्नि भक्षण करना देखने से भूमिलाभ के साथ स्त्रीरत्न की प्राप्ति। बृहस्पति के मत से जाज्वल्यमान अग्नि के देखने से कल्याण। आग उठाने से मुफ्त का मालमिले।

अग्नि दग्ध–आसन, शय्या, यान और वाहन पर स्वयं स्थित होकर अपने शरीर को अग्निदग्ध होते हुए देखें, अन्य को जलता हुआ देखे, तत्क्षण जाग उठे, उसे धन-धान्य की प्राप्ति। अग्नि में जल कर मृत्यु देखने से रोगी की मृत्यु। स्वस्थ पुरूष बीमार पड़ता है। गृह अथवा दूसरी वस्तु को जलते हुए देखना शुभ है। वराहमिहिर के मत से अग्नि लाभ भी शुभ है।

अघोरी–अघोरी या तांत्रिक को देखना शुभ लक्षण है कार्य सिद्धि का।

अचार–अचार बनाना, देखना, खाना उदर पीड़ा का परिचायक।

अजगर–अजगर देखना रेंगने बाले जीवों से खतरा। अजगर से मुकाबला और उससे बच निकले तो अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्ति का सूचक।

अजनबी–अजनबी से भेंट करना शुभ शकुन और धन प्राप्ति का सूचक। स्त्री देखे तो विवाहोत्सव में सम्मिलित होगी। अजनबी से झगड़ा प्रसिद्धि का सूचक।

अजा–शुभ सूचक, बकरी उछल- कूद करती हुई दिखाई दे तो आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव। बकरा दिखाई दे तो सामान्य फल खाता दिखे तो अन्न की कमी की ओर संकेत।

अण्डे–अण्डे देखना या खाना अच्छा शकुन। टूटे हुए अण्डे देखना झगड़े और मुकदमेंबाजी का सूचक। स्त्री अण्डे सेती हुई मुर्गी को भगा देती है तो उसे पुत्र का दुःख। दूसरे के हाथ सेअण्डा छीनने से सजा।

अर्थी–विवाह में शामिल होने का संकेत। अर्थी ले जाने वालों में सम्मिलित होना शुभकार्य का निमन्त्रण।

अदरक–आनन्द और सुख के समय का संकेत।

अनार –स्वप्न में अनार पाना धन-समृद्धि का सूचक।

अन्वेषण–खर्च, मुकदमे का संकेत। तहकीकात करना देखें तो पदोन्नति। स्त्री किसी तहकीकात में साक्षी के रूप में उपस्थित होना देखे तो किसी गंभीर अपराध का मुकदमा का संकेत।

अनुलेपन–श्वेत रंग की वस्तुओं का अनुलेपन शुभफलदायक। वराहमिहिर के मत से लाल रंग के गन्ध, चन्दन और पुष्पमाला आदि के द्वारा अपने को शोभायमान देखें तो शीघ्र मृत्यु।

अन्धकार–अन्धकारमय स्थानों में वन, भूमि, गुफा और सुरंग आदि स्थानों में प्रवेश होते हुए देखना रोग सूचक।

अन्न–सभी प्रकार के अन्न-गेहूं, मटर, जौ, चना आदि का दिखना शुभ और लाभ सूचक। अनाज के दाने बड़े और मोटे हैं तो लाभ बड़ा, दाने छोटे और पतले हैं तो लाभ कम। अर्थ लाभ और सन्तान प्राप्ति। आचार्य चन्द्रसेन के मत से श्वेत अन्न देखने से इष्ट मित्रों की प्राप्ति। लाल अन्न देखने से रोग। पीला अन्न देखने से हर्ष। कृष्ण अन्न देखने से मृत्यु।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनाथ– उत्तराधिकार में धन मिलेगा। अनाथ को या अनाथालय को धन देने का स्वप्न से अचल सम्पत्ति शीघ्र नष्ट।

अनानास–धन मिलने का सूचक। अनानास बेचे तो बुरे दिनों का सूचक।

अनुपस्थित–परिवार का कोई व्यक्ति या उसका मित्र अनुपस्थित देखे तो वह बुरी संगति में फंस जाएगा। पहले से अनुपस्थित व्यक्ति स्वप्न में दिखे तो बहुत शीघ्र अपने घर लौट आने का संकेत।

अनुसंधान–पुरुष द्वारा अनुसंधान करना असफलता का परिचायक है। स्त्री देखे तो उसकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक होगी। अनुसंधानवृत्ति प्राप्त करता है तो व्यवसाय में असफलता।

अप्सरा–पुरुष स्वप्न में अप्सरा देखता है तो उसे चहुं ओर प्रसन्नता।

अपराध–अच्छा संकेत, प्रसन्नता सूचक। किसी अपराध का दोषी ठहराया गया है तो यह अच्छा संकेत है और परिवार में प्रसन्नता का परिचायक है। स्वप्न देखने वाला दूसरे पर अपराध का दोष लगाता है तो बुरे परिणामों का द्योतक है।

अभिमान–देश और जाति का अभिमान अच्छा है। धन का अभिमान का सपना चिंता और संकट का सूचक है।

अभिसारिका–शुभ सूचक। वृद्ध देखे तो घर में पुत्र आदि के विवाह का अवसर।

अमरत्व–अल्पायु का सूचक, दूसरे के अमर होने का स्वप्न दीर्घायु बनाता है।

अलंकार–अलंकार देखना शुभ परन्तु पहनना कष्टप्रद होता है।

अवकाश–खुशहाली और आनन्द का सूचक। बिना पूर्व सूचना के छुट्टी पर चले जाने का स्वप्न नौकरी में पदोन्नति और वेतनवृद्धि। स्त्री देखे उसका पति छुट्टी पर है, बीमारी या दुःख।

अश्वशाला–मेहमान आएंगे। व्यापारी देखे तो धन प्राप्ति। नई अश्वशाला बनाना लाभदायक व्यापार।

अश्व–शुभ फल। अकेला दिखाई दे तो निर्विघ्न यात्रा का संकेत। रथ, गाड़ी, तांगा आदि में जुड़ा हुआ हो तो दूर की यात्रा का सूचक। हिनहिनाता हो तो कष्टकारी भविष्य को व्यक्त करता है। घोड़ी दिखाई दे तो शुभ पर्व का

संकेत। घोड़ा-घोड़ी दोनों दिखाई दें तो दाम्पत्य जीवन में समृद्धि का प्रतीक। घोड़े पर सैनिक सवार हो तो सुरक्षा का प्रतीक।

अस्त्र-शस्त्र–रोग, दुःख, संकट, भय आदि का निवारण। कोर्ट में परिणाम दृष्टा के हित में। शत्रु का भय दूर होगा।

अस्त्र–अस्त्र देखना शुभफलप्रद। अस्त्र द्वारा शरीर में साधारण चोट लगना तथा अस्त्र लेकर दूसरों का सामना करना जयप्रद।

अंग-विच्छेद–विश्वस्त मित्र या सलाहकार की मृत्यु का द्योतक।

अंगीठी–अतिरिक्त खर्चे का परिचायक। पकाने का स्वप्न अच्छा है। धन की प्राप्ति का सूचक। अंगीठी खरीदना निवास के परिवर्तन का सूचक, नौकरी पेशा लोगों का स्थानांतरण।

अंगुली–अंगुलियां काटना देखें तो प्रेम में सफलता। भाप से जली अंगुलियां देखें तो झगड़ा। अंगुलियों से खून बहता दिखे तो धन हानि।

अंगूठा–धन और खुशहाली का परिचायक, अपराधी देखे तो शीघ्र ही पकड़ा जाएगा, लंबी सजा। अंगूठा रंगा हुआ देखें तो कर्ज अथवा फौजदारी के मुकदमें।

अंगूठी– सोने की अंगूठी देखे व्यापार में सफलता, पुत्र प्राप्ति।

अंक–शुभ सूचक। यह अंक उन तिथियों के सूचक होते हैं, जिनमें कि काम बनने या यश मिलने की संभावना रहती है। काले रंग वाले अंक अशुभ।

अंगिया –किसी स्त्री को अंगिया पहने देखना, छूना, खिसकाना रोग होने की पूर्व सूचना है।

अंग्रेज–अंग्रेज दिखे तो आराम और सुख का द्योतक।

अंग-क्षय–अंग कटकर गिरना अशुभ। अंग वृद्धि देखे तो घर में सन्तान आदि का जन्म, शुभ समाचार की प्राप्ति।

अंगूर–जैनाचार्य भद्रबाहु के मत से काले रंग का अंगूर देखने से निःसन्देह अर्थलाभ। चन्द्रसेन मुनि के मत से सुख। वराहमिहिर के मत से धन के साथ स्त्री लाभ। बृहस्पति के मत से इष्ट मित्रों के दर्शन। आचार्य मयूख एवं दैवज्ञवर्य गणपति के मत से अर्थलाभ एवं विदेश गमन।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अंधापन–मित्रों से सावधान। पुत्र और पत्नी भी उसके प्रति वफादार नहीं होंगे। अंधा दरवाजा खटखटाता दिखे तो व्यापार में खूब लाभ।

असभ्य–असभ्य से मिलना सम्मान सूचक, लड़ना अशुभ और दुर्भाग्य सूचक। यात्री देखे तो यात्रा आनंदपूर्ण।

आकाश–आकाश की ओर उड़ना लम्बा सफर का द्योतक है। भद्रबाहु के मत से निर्मल आकाश देखना शुभ फलप्रद, लालवर्ण की आभावाला आकाश देखना कष्टप्रद, नीलवर्ण का आकाश देखना मनोरथ सिद्धि का सूचक। आकाश से गिरना अशुभ।

आर्थिक दण्ड–जुर्माना हुआ देखे तो बुरी आदतों से मुक्त। जुर्माना अदा करना ऋण चुकेगा। दूसरे व्यक्ति पर जुर्माना करना अनेक शत्रु बनने का संकेत।

आग–चिंगारियां उठ रही हों तो शीघ्र घर में धन आएगा। घर को आग में जलता हुआ देखे तो भविष्य में उसका भाग्य अच्छा साथ देगा।

आत्महत्या–अच्छे स्वास्थ्य का सूचक। स्त्री देखे तो घर में खुशहाली। दूसरों को आत्महत्या करते देखना चिन्ता सूचक। अपनी पत्नी को आत्महत्या करते देखना परिवार में सम्पन्नता का सूचक। मित्र को आत्महत्या करते देखना मित्र से धोखा।

आंगन–मुसीबतों का परिचायक। आंगन में सोना अच्छे स्वास्थ्य का सूचक। स्त्री देखे तो सन्तान प्राप्ति। आंगन में प्रवेश करता हुआ देखे तो लाभ प्राप्ति, मकान प्राप्ति सूचक। रोगी होवे तो शीघ्र स्वस्थ। कैदी देखे तो मुक्त हो जाएगा। स्त्री देखे तो अपमान। आंगन से बाहर जाता हुआ देखे तो मकान आपके हाथ से निकल जायेगा।

आरोहण–वृषभ, गाय, हाथी, वृक्ष, प्रसाद, पर्वत एवं सीढ़ी पर चढ़ना, आरोहण करना लाभ सूचक।

आला–भरा हुआ आला देखना प्रसिद्धि, प्रगति का सूचक, खाली आला अशुभ।

आनन्द–बीमार देखे तो स्वास्थ्य लाभ, सैनिक देखे तो युद्धबन्दी।

आपरेशन–चिन्तामुक्ति का संकेत।

ऑफिस–आफिस में काम करते देखना बुरे समय का परिचायक।

आभूषण–खर्च का परिचायक, आभूषण पहना देखे तो पुरुष के लिए अशुभ। स्त्री के लिए शुभ।

आयु–आयु से बड़ा दिखना बुद्धिमतापूर्ण कार्य करने का संकेत, आयु से छोटा दिखना मूर्खता का संकेत।

आलस्य–सफलता सूचक।

आविष्कार–वैज्ञानिक आविष्कार देखे तो प्रतिष्ठा प्राप्ति, नई खोज का संकेत।

आहुति–कष्टों का द्योतक।

आम–सफलता सूचक।

आश्रम–हानि की संभावना।

आंसू–पुरुष आंसू बहाए तो शुभ फलप्रद। पति से पृथक् हुई स्त्री देखे तो पति शीघ्र मिलेगा। दूसरों को सपने में आंसू बहाता देखें तो शीघ्र ही अपने परिवार से अलग होने की सूचना।

आंतें–आतें देखना भयानक दुर्घटना का द्योतक।

आंधी–आंधी चलती में खुद को फंसा देखना संकट मुक्ति का सूचक।

इंजेक्शन–खुद के लगाना बीमारी सूचक, दूसरों के लगाना स्वास्थ्यप्रद।

इंजन–भाप इंजन सफलता सूचक, विद्युत इंजन यात्रा सूचक।

इमली–कच्ची इमली देखना रोग सूचक, पक्की इमली रोगमुक्ति का सूचक।

ईंटें–पक्की ईंटें देखना अच्छा, कच्ची ईंटें देखना बुरा।

ईश्वर निन्दा–देवता/पैगम्बर की निन्दा का प्रतिवाद करना सफलता सूचक, निन्दा में हां में हां मिलाना असफलता एवं अशुभ सूचक।

उदासी–आनन्द का परिचायक।

उपदेश–अपमानित होने का परिचायक।

उपहार– सौभाग्य, मनोकामनापूर्ति का संकेत। उपहार देना अशुभ।

उजाड़–उजाड़ स्थान में भ्रमण लंबी यात्रा का परिचायक।

उल्लू–उल्लू का घोंसला धनहानि, रोग, कष्ट सूचक।

उड़ना– पदोन्नति, लाभदायक।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उतरना-पतन, कठिनाइयां, हानि का परिचायक।

उदर- उदर दर्द देखें तो धनप्राप्ति, पुत्रप्राप्ति, सफलताप्राप्तिसूचक। पेट में फोड़ा देखना आर्थिक हानिसूचक।

उद्योग- नया उद्योग आरम्भ करना देखें तो हानि, उद्योग हानि देखें तो व्यापार में लाभ।

उड़न-तश्तरी- यूएफओ- अन्तरिक्ष यात्रा अथवा जीवन में सतर्क रहने का इशारा।

ऊंट-ऊंट देखना लम्बी, कठिनाईयुक्त यात्रा का परिचायक, ऊंट पर चढ़ना रोग सूचक।

ऋण- ऋणी बनना शुभ भविष्य का संकेत।

एक्स-रे- आनन्दमय जीवन का संकेत।

एड़ी- एड़ी दीखना कठिनाईयों का संकेत।

ओस- सुख, शान्ति, समृद्धि का परिचायक।

औजार-औजार खोना अशुभ, औजार प्राप्त करना सफलता का विस्तार।

औषध- औषध दूसरों को देना धन, प्रतिष्ठा, खुशहाली, आनन्दमय दिनों का संकेत। औषध लेना बुरा।

कंघा- कंघा करना सौभाग्य और स्वास्थ्यप्रद।

कंजर- कंजर जाति देखना अशुभ।

कंजूस- कंजूस से झगड़ा मित्र प्राप्ति सूचक, कंजूस से धन लेना अशुभ, कंजूस देखना अशुभफलदायक।

कलंक- भावी जीवन उज्ज्वल होगा, पदोन्नति का सूचक।

कचौरी- कचौरी या चटपटा खाना खुशहाली का संकेत, दूसरों को चटपटा खिलाना संकटदायक।

कछुआ- सौभाग्यदायक, धनदायक। कछुए को मारना खतरे का संकेत।

कट्टीखाना-- कट्टीखाना वेधशाला अनुकूल समय आने का, लाभ एवं सफलता का संकेत।

कठिनाइयां- अच्छे दिनों का संकेत।

कपि- बन्दर देखना अशुभ।

कपास- रोग, कष्ट, परेशानी। दूसरों को कपास देना शुभप्रद है।

कबन्ध- नाचते हुए क्षीण कटि कबन्ध देखना आधि-व्याधि और धननाशदायक।

कलह- अशुभ।

कटवाना- हजामत करवाना, बाल कटवाना पुत्र, धननाशक।

कबूतर- धन, ऐश्वर्यदायक, शुभ शकुन। उड़ता कबूतर मुसीबतों का द्योतक। कबूतर की भेंट लेना प्रसिद्धि सूचक।

कब्र -खुशियां समाप्त, कब्र से बाहर निकलना सफलता का सूचक।

कम्बल- आराम की जिन्दगी बीताने का सूचक। फटा कम्बल देखना अशुभ। कम्बलों का बंडल (गांठ) पर बैठना पदोन्नति, प्रसिद्धि का संकेत। कम्बल चोरी होना बदनामी, अपकीर्ति का संकेत।

कमी- किसी की कमी दीखना अधिकता का द्योतक है।

कमल पुष्प- प्रसन्नतादायक।

कमीज- कमीज पहनना स्वास्थ्यदायक, उतारना रोग की सूचना, नई कमीज प्राप्ति उच्च सम्मान का द्योतक।

करमकल्ला-(बंदगोभी) बुरी खबर या सूचना सूचक।

कलई करना-भारी हानि सूचक।

कलहंस-मित्र मिलन सूचक।

कलाकार-आनन्द सूचक।

कविता-कविता लिखना आय में कमी सूचक, किन्तु विद्यार्थियों के लिए शुभ।

कसाई- अपशकुन सूचक।

कस्तूरी-समृद्धि सूचक।

कन्यादान- अशुभ।

कन्या- शुभलक्षण, अध्यात्मिक उन्नति, देव दर्शन सूचक।

कंचन (सोना)-अशुभ।

कंगन-स्त्री के लिए शुभ, पुरूष के लिए अशुभ।

कली (कुसुम)-सुख, शान्ति, समृद्धि।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कब्रिस्तान- प्रतिष्ठा, विजयश्री सूचक।

कामिनी–सफलता सूचक।

कारागृह- अशुभ।

कांटा–अप्रत्यक्ष कष्ट प्राप्ति सूचक।

कांपना–भय से कांपना शुभ। ठंड से कांपना अशुभ।

कांसी- कार्य में सफलता।

कागज–सौभाग्यसूचक, काला कागज दीखना बुरा है। हरा कागज, लाल कागज उत्सव, विवाह आदि मांगलिक कार्यों का प्रतीक, कागज का व्यापार या चिट देखना असफलतादायक।

काटना- प्रतिशोध, आक्रमण, बीमारी सूचक।

काढ़ना–कढ़ाई करना कुशलता सूचक, कढ़े कपड़े खरीदना परिवार में मांगलिक उत्सव सूचक।

कान– कान साफ करना शुभ समाचार सूचक, कान कटा हुआ अशुभ। कान पकड़े हुए देखना सजा मिलने का संकेत।

कानों की बाली- सुखी जीवन का द्योतक।

कानून– मुकदमें मे फंसना शुभ, कानूनविद् बनने का सपना उच्चपद प्राप्ति सूचक।

कॉफी– कॉफी पीना सौभाग्य और प्रसिद्धि सूचक।

काम- कठोर श्रम करना देखे तो कार्य में सफलता सूचक। गर्भवती स्त्री देखे तो अशुभ।

कार्यालय–क्लर्क के रूप में कार्य करते स्वप्न में देखना बुरा, अध्यक्ष के रूप में कार्य करते स्वप्न में देखना शुभ।

कारागार– पुरूष देखे तो खुशहाली, स्त्री देखे तो सन्तान प्राप्ति, वृद्ध देखे तो रोगी, व्यापारी देखे तो हानि, कैदी से झगड़ा अच्छा, कैदी से प्रेम बुरा जेलर बनने का स्वप्न देखना पदोन्नति सूचक, जेलर से झगड़ा बुरे समय का द्योतक।

काली मिर्च– अच्छे स्वास्थ्य का द्योतक किन्तु बीमार देखे तो अशुभ, काली मिर्च की भेंट लेना सहायता प्राप्ति सूचक, काली मिर्च व्यापार अशुभ, काली मिर्च पीसना रोग की पूर्व सूचना।

किला– खाली किला अशुभ। भरा हुआ देखना शुभ।

कीचड़–कीचड़ देखना शुभ, कीचड़ में फंसना, चलना अशुभ। कीचड़ में पत्थर फेंकना कलंकसूचक। कीचड़ से लथपथ शरीर देखना अथवा बाहर निकलना शुभ।

कीटाणु– बीमारी सूचक। कीटाणु नष्ट करना स्वास्थ्य सूचक।

कीड़े- कीड़े मारना स्वास्थ्य सूचक। दूध में गिरा कीड़ा दुर्घटना का संकेत।

कीर्ति स्तम्भ–दीर्घायु, कष्ट समाप्ति सूचक।

कुआं–कुए में गिरना, पानी खींचना शुभ। दूसरे को गिरते देखना अशुभ।

कुकुरमुत्ता–समृद्धि सूचक। कुकुरमुत्ता नष्ट करना शत्रु वृद्धि सूचक।

कुत्ता– अशुभ। शत्रु बढ़ने का संकेत।

कुदाल- आराम प्राप्ति सूचक।

कुमारियां– धन प्राप्ति सूचक।

कुमुदिनी –अति श्रेष्ठ।

कुर्सी– भाग्योन्नति सूचक। टूटी कुर्सी देखना अशुभ।

कुस्वप्न– कुस्वप्न देखना महाअशुभ।

कुल्हाड़ी– मदद मिलने का संकेत। कुल्हाड़ी से पेड़ काटते देखना पतन की निशानी।

कुश्ती लड़ना– अतिश्रम सूचक।

कुहरा– विश्वास घात सूचक। कुहरा साफ होते दीखना दुःख मुक्ति सूचक।

कूड़ा कर्कट- कूड़ा कर्कट पर चलना शुभ, सिर पर ढ़ोना अशुभ। घर के चारों तरफ कूड़ा कर्कट धन प्राप्ति सूचक।

कूदना- ऊपर कूदना अच्छा, नीचे कूदना पतन सूचक, लंबी कूद विजयश्री द्योतक।

केक– जली केक बीमारी सूचक। केक का ढ़ेर सौभाग्यकारक, केक का टुकड़ा खाना सन्तानवृद्धि सूचक।

कैंची - अशुभ

कोढी– कोढ़ी बनना अशुभ, कोढ़ी को देखना उन्नति सूचक। , कोढ़ी से बात करना धन प्राप्ति सूचक।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कोयल- कोयल देखना, गाना सुनना कठिनाइयां सूचक।

कोयला- खतरा।

कौआ- कौआ पकड़ना विजय सूचक। कौआ देखना अशुभ।

क्रान्ति- राजनैतिक क्रान्ति देखना शुभ, उन्नतिदायक।

क्रुद्ध- दूसरों को क्रुद्ध देखना अशुभ, खुद का क्रुद्ध होना शुभ।

खजूर- आनन्द सूचक। खजूर का पेड़ अशुभ।

खटमल- संघर्ष सूचक। खटमल मारना शत्रु समाप्ति सूचक।

खतरा- चारों ओर खतरा देखना खुशहाली सूचक।

खत्री-प्रसन्नतादायक।

खमीर-दरिद्रता सूचक।

खरगोश-खरगोश पकड़ना शुभ, खरगोश का शिकार अशुभ, खरगोश गोद में लेना अच्छा। खरगोश लेकर दूसरों को आया देखें तो धोखा हो सकता है।

खंजर- प्रतिष्ठा सूचक। खंजर खोना संकट सूचक।

खच्चर- अशुभ।

खर्राटे लेना- आराम सूचक।

खरोंच आना- चिन्तामुक्ति। दूसरों को खरोंच मारना हानि सूचक, रोगी के लिए अशुभ।

खजाना- शुभ।

खाई- अशुभ।

खाट- टूटी खाट अशुभ, खाट छीन ले तो भारी अनर्थ, उल्टी खाट मृत्युसूचक, जली खाट रोग सूचक, सजी हुई खाट विवाह सूचक।

खान- खान से खाली निकलना निराशा सूचक, निर्धनता सूचक, रोगी खान से प्रविष्ट होता देखे तो शुभ।

खाना-बीमारी सूचक।

खाद्य सामग्री-जीवन में निराशा सूचक, दरिद्रता सूचक।

खिलौना- आनन्दमय पारिवारिक जीवन सूचक।

खुजली-खुजली का ईलाज देखना संकट मुक्ति सूचक। खुजली होना अशुभ सूचक।

खेल खेलना- रोना, शोक, पश्चाताप, धननाश, परिवारिक कष्ट, अपकीर्ति, सन्तान कष्ट सूचक।

खोज-असफलता सूचक। स्त्री देखे तो शुभ।

खून पीना- बड़ी जायदाद मिलने का संकेत। कपड़ों पर खून के छींटे बीमारी सूचक, दूसरे के बिस्तर पर खून के छींटें देखे तो विजय सूचक। खून का नाला, नदी या स्रोत देखना अज्ञात धनराशि मिलने का द्योतक।

खेत-उन्नति सूचक।

खोदना- पुरूष के लिए शुभ, स्त्री के लिए अशुभ। कब्र खोदना दीर्घायु सूचक, कुआं खोदना प्रसिद्धि का प्रतीक।

गली संकरी- सफलता, प्रगति, सुखद भविष्य सूचक।

ग्वाला-धनदायक, लाभदायक।

गजट- गजट देना प्रसिद्धिसूचक, गजट पढ़ना अशुभ, गजट फाड़ना असफलता सूचक, स्त्री का आनन्द पूर्वक गजट खोलना धनप्राप्तिसूचक।

गड़गड़ाहट-गड़गड़ाहट युक्त आंधी या तूफान देखना उत्तम।

गलगलियां- हानि सूचक।

ग्रहण- अति अशुभ।

गडरियां- भेड़ों युक्त गडरियां आत्मिक प्रगति सूचक। क्रुद्ध गडरियां दुर्दशा सूचक।

गंदा नाला- गटर में गिरना पतन, बाहर निकलना उत्कर्ष सूचक।

गर्म झरणा-देखना स्वस्थता की निशानी। नहाना अशुभ, धक्का खाना षड्यंत्र सूचक। स्त्री का नहाना सन्तानोत्पत्ति सूचक।

गल्ला-खाली देखे तो अशुभ। भरा शुभ।

गला घोंटना-खुद का देखे तो शुभ, दूसरों का देखे मो अशुभ।

गृह प्रवेश- अति उत्तम। गृह आरोहण प्रगति सूचक। गृह- पतन, पतन की निशानी। अपने घर को सजाना अशुभ, दूसरों के गृह को सजाना शुभ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गंगा- अति श्रेष्ठ।

गंजा- अशुभ।

गंध-सफलता, प्रशंसासूचक।

गमला-फूलोंयुक्त गमला प्रसन्नता।

गर्दन-विजय सफलता सूचक।

गरूड़-धन सम्पदा में वृद्धि।

गमन-दक्षिण दिशा में गमन से धननाश एवं कष्ट। पश्चिम दिशा में गमन से अपमान, उत्तर दिशा की ओर गमन देखने से स्वास्थ्य लाभ। पूर्व दिशा में गमन से धन प्राप्ति।

गर्त्त-अति अशुभ।

गलना-वस्तु का गलना कमजोरी के लक्षण।

गलीचा-अवनति की पूर्वसूचना।

गाय- घास चरती अमीरी सूचक, गौ-पालन धन प्राप्ति सूचक, सन्तान प्राप्ति सूचक, श्वेत गाय- चीनी, चांदी आदि श्वेत वस्तु से लाभ। पीली गाय- गुड़, सोना आदि पीली वस्तु के व्यापार में लाभसूचक, चितकबरी गाय- शेयर, सौदागिरि आदि में लाभसूचक, दूध दूहना मनोवांछित सिद्धिसूचक, ग्वाला भरा बर्तन दे तो शुभ, खाली बर्तन दे तो अशुभ। बछड़े सहित गाय संतान सुख का प्रतीक। लात मारती गाय धन प्राप्ति में बाधा सूचक। जल पीती गाय कीर्ति, पुण्य, कन्या जन्म सूचक।

गांव- यात्रा, सन्तान, आनन्द सूचक।

गाजर- व्यवसाय में सफलता द्योतक।

गाना सुनना-विजय, व्यापार लाभ यश प्राप्ति। जोर-जोर से गाना गाना कष्ट और रंज सूचक। खुद गाना अपार कष्ट सूचक।

गाली सुनना-झगड़ा होने का संकेत। गालीयुक्त झगड़ा विजयसूचक।

गाड़ी-भरी गाड़ी भाग्योदय का संकेत, खाली गाड़ी हानि, असफलता दुर्भाग्य का प्रतीक।

ग्रास-रोटी का ग्रास (टुकड़ा) दरिद्रता सूचक, बहुत से ग्रास जीवन में उन्नति सूचक। ग्रास छीनना संघर्ष का प्रतीक।

गिरना-दुर्भाग्य, अपमान, दुःख, चिन्तासूचक।

गिरोह-आर्थिक हानि सूचक।

गिलट-हानि सूचक। गिलट का गहना पहनना शोक सूचक।

गिलहरी-कठिन श्रम के बाद सफलता। गिलहरी मारना दुर्भाग्य सूचक, गिलहरी पकड़ना, हाथ में लेना शुभ।

गिलास-भरा गिलास शुभ, खाली गिलास देखना हानि सूचक। गिलास से पीना सफलता सूचक।

गिटार- सफलता सूचक, टूटी फूटी गिटार असफलता सूचक।

गीता-पढ़ना, देखना, छूना सर्वोत्तम कार्य की निशानी।

गीली-गीली वस्तु का स्पर्श बीमारी सूचक।

गुड़- खाना देखना मांगलिक कार्य का संकेत।

गुत्थमगुत्था- शुभ सूचक।

गुफा-अकेले प्रवेश संकट सूचक, बाहर निकलना संकटमुक्ति सूचक।

गुरू-गुरू का शुभाशीर्वाद शुभ सूचक, वार्तालाप से धनलाभ, उपदेश श्रवण झगड़ा सूचक।

गुलदस्ता-अच्छे भाग्य का संकेत।

गुलाब- खुशहाली सूचक।

गुड़िया-सौभाग्य, सन्तान प्राप्ति सूचक।

गूदड़ी-धनहानि सूचक।

गेंद-उत्तराधिकार में सम्पति मिलने का प्रतीक।

गेंहूं-मांगलिक कार्य या धनप्राप्ति।

गेरूआ वस्त्र-देखना, पहनना सुखद जीवन का लक्षण।

गैंडा-कठिनाईयों से मुक्ति।

गौशाला-परिवार वृद्धि का संकेत।

गोखरू-दूरदर्शिता से लाभ।

गोटा-सोने का गोटा देखने से राज्य- सम्मान, चांदी का गोटा देखने से वेतन-वृद्धि, गोटा टूटे तो मित्र या संबंधी से मन मुटाव। गोटे का व्यापार स्थिर व्यवसाय सूचक।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गोली मारना–पशु या पक्षी को गोली मारने से दुःख एवं रंज। पत्नी को गोली मारने से पत्नी के स्वास्थ्य और दीर्घायु का द्योतक।

गौचर भूमि–अचल सम्पत्ति मिलने का संकेत।

गौता लगाना–संकट मुक्ति का सूचक।

गौरेया पक्षी–चिन्ता सूचक।

घड़ा–रिक्त घट चिन्तासूचक, भरा घड़ा समृद्धि सूचक। नूतन घट प्रसिद्धि सूचक, नूतन घट स्नान से पुत्र प्राप्ति, मांगलिक कार्य, टूटे - फूटे और लौह घट देखना अशुभ।

घरेलू बर्तन–अच्छी आय का सूचक। अस्त -व्यस्त बर्तन मनभेद या अस्त -व्यस्त मन का प्रतीक। बर्तन मांजना विशिष्ट अतिथि आने का संकेत। दूसरों के बर्तन मांजना अप्रतिष्ठा का द्योतक।

घबराना–मित्र, स्त्री, डॉक्टर आदि जिससे ज्यादा घबराता है उससे अधिक प्रेम और सहयोग।

घड़ियाल-(मगरमच्छ) कष्टसूचक।

घंटा–घर में चोरी, जेबकटी, दुर्घटना आदि से सावधान होने का संकेत।

घर–अच्छा घर अचल सम्पत्ति द्योतक। टूटा- फूटा घर छोटी -मोटी आय सूचक।

घृत–अच्छे दिन आने का द्योतक। घी का व्यापार बुरा।

घास–दीर्घायु, सन्तोष, शान्ति, सुख, सौभाग्यदाता।

घाट–तीर्थयात्रा सूचक।

घुंघरू–बजाना, बजते देखना, पहनकर नाचना पुरस्कार प्राप्ति सूचक।

घुड़दौड़ जीतना–सफलता, उच्चपद, विजय सूचक।

घेरा–शत्रु या दूसरों को मेखला युक्त देखना शुभ। खुद के देखना रोग सूचक। स्त्री देखे तो सन्तान सूचक।

घोड़ा–अर्थलाभ, कुटुम्बवृद्धि, विजय, सफलता सूचक। घोड़े से गिरना अशुभ।

घोंघा–वेतनवृद्धि सूचक।

घोषणा–अधिकारवृद्धि, सम्मान सूचक।

घोंसला–(बयां व चिड़ियां)- घोंसला आनन्द और शानदार भवन प्राप्ति सूचक, घोंसला नष्ट होना, करना भवन नष्ट होने और बच्चों की बीमारी सूचक।

चण्डी/दुर्गा/काली–सुख-समृद्धि, मांगलिक कार्य, धनागम, प्रतिष्ठा, अध्यात्मिक रूचि सूचक।

चपरासी–मुकदमा, झगड़ा, पराजय सूचक।

चरागाह–हराभरा चरागाह समृद्धि, धन, सम्मान, आरोग्य आशातीत लाभ, खुशहाली सूचक।

चन्दन–घिसा चन्दन शुभ समाचार सूचक, सूखा चन्दन देखना अशुभ, चन्दन घिसना, तिलक लगाना सम्मान सूचक।

चन्द्र ग्रहण–कार्य- विनाश

चम्पा–देखना, खुशबू लेना, महसूस करना चोट, रोग सूचक।

चमेली–चोट, रोग सूचक।

चंवर ढुलाना–राज्य प्राप्ति, राज्य सम्मान सूचक।

चटाई पर लेटना –शुभ, चटाई सिर पर रखना अशुभ।

चट्टानें–काली चट्टानें शुभ, श्वेत अशुभ।

चना– कच्चे-भूने चने खाना अच्छा भोजन मिलने की सूचना। जमीन पर बिखरे चने देखना अशुभ।

चमगादड़उड़ता–विदेश यात्रा सूचक। लटका चमगादड़ अशुभ।

चरखा चलाना–अशुभ सूचक।

चरस पीना–धनहानि सूचक।

चर्म/चमड़ा–गाय, भैंस, अजा चर्म अशुभ, व्याघ्र चर्म शुभ। चमड़े का कार्य देखना चमार के लिए शुभ।

चक्रवात–मिलन सूचक।

चटनी–दीर्घायु, सौभाग्य, स्वास्थ्यप्रद। दूसरों को खिलाना या खाते देखे तो अशुभ।

चर्च प्रवेश–सफलता या विवाह सूचक।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चश्मा पाना–बुद्धिमत्ता सूचक, चश्मा खोना चोरी का द्योतक।

चलना–पदोन्नति। पानी और आकाश पर चलना अशुभ।

चढ़ना–सौभाग्य, समृद्धि, पद-वृद्धि, यश, कीर्ति, ख्याति द्योतक।

चक्षु नष्ट होना –मृत्यु या संतान हानि का द्योतक।

चन्द्रमा–पूर्ण चन्द्रमा, चांदनी, धन, समृद्धि, सौभाग्य, प्रतिष्ठा, उन्नतिकारक।

चप्पलें–दुर्भाग्य सूचक। रूपहली या चांदी की खड़ाऊं पहनना प्रसिद्धि और उच्च स्थिति सूचक।

चावल–मांगलिक कार्य सूचक।

चारा–सूखी घास का ढ़ेर बहुत शुभ। घास सुखाना धनप्राप्ति सूचक, सूखी घास बेचना, जलते देखना, जलाना हानि सूचक।

चॉकलेट खाना–भाग्योदय।

चादर–सफेद या लाल चादर सन्तान हानिसूचक। चादर ओढ़ना दीर्घायु, सम्मान सूचक, गृह कलह सूचक, समेटकर रखना अकारण विवाद सूचक, धोबी को देना नुकसान या चोरी सूचक।

चारदीवारी–कलंक, धोखा, बाधा सूचक।

चाबुक मारना–झगड़ा सूचक।

चांदी–देखना धनप्राप्ति सूचक, आभूषण पहनना हानि सूचक।

चिट्ठियां–लिखना, पढ़ना, पाना भाग्योदय कारक किन्तु चिट्ठी खो जाना हानिकारक।

चिलम पीना–आरोग्य, धनदायक, पदोन्नति सूचक। दूसरों को पिलाना बुरा।

चिराग–जलता चिराग सुख- समृद्धि कारक, बुझा चिराग अशुभ।

चिड़ियाघर–पदोन्नति सूचक। प्रबंधक बनना अशुभ।

चिता–रोग, मृत्यु सूचक।

चिमनी–चिमनी से उठता धुआं प्रसिद्धि कारक।

चिड़ियां–बैठी अतिथि आगमन सूचक, उड़ती यात्रा सूचक, चहचहाहट रोना-पीटना सूचक, मृत चिड़ियां धनागम सूचक।

चीर फाड़–चिन्तामुक्ति।

चीनी–भाग्योदय कारक।

चीता–चीते की सवारी शुभदायक।

चींटी–कतारबद्ध चीटियां यात्रा सूचक उत्तेजित विभिन्न दिशाओं में जाती चींटियां हानिकारक।

चील–अशुभ।

चुनाव-आन्दोलन–प्रसिद्धि सूचक। चुनाव लड़ना दरिद्रता सूचक। वोट देना मित्र-मिलन सूचक।

चुनरी ओढ़ना–मांगलिक कार्य द्योतक।

चुटकी काटना–विरोध सूचक।

चूजें–मुर्गी के बच्चे उच्चाधिकार सूचक।

चूहें–बिल्ली द्वारा चूहे पकड़ना, चूहेदानी में चूहे पकड़ना शुभ। अकेला चूहा अशुभ।

चूड़ियां–स्त्री के लिए शुभ, सौभाग्यकारक, पुरूष के लिए अशुभ।

चेतावनी–सफलता सूचक।

चेचक निकलना–शुभ। चेचक का रोगी अशुभ।

चोर/चोरी–हानि सूचक, शत्रु के घर चोरी देखना लाभदायक। पुलिस के लिए चोर/ चोरी देखना पदोन्नति सूचक।

छत– छत पर सोना सुखी जीवन या संतान सूचक। छत में दरारें देखना हानिकारक।

छप्पर–आय वृद्धि सूचक। खाली छप्पर दरिद्रता सूचक।

छछून्दर–सफलता का प्रतीक। बहुत सी छछूंदरी अशुभ।

छड़ी–वृद्ध देखे तो दीर्घायु। युवक देखे तो हानिकारक। लोहे की छड़ अशांति का प्रतीक।

छपाई–कलंक द्योतक।

छापा–शीशे में देखना अति शुभ, पानी में देखना अशुभ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

छाता–चिन्तामुक्ति, सफलता, पदोन्नति सूचक। टूटा- फूटा छाता अशुभ।

छावनी–सम्मान सूचक।

छाति–अशुभ।

छींटे–कीचड़ के छींटें शुभ। रक्त के छींटे अशुभ।

छुरा/छुरी–समस्या समाधानकारक।

छूटना–जेल से छूटना विपत्तिकारक।

जल–निर्मल जल देखना कल्याणकारक, जलाभिषेक देखने से भूमि प्राप्ति, तैरना सुखकारक, जलपीना कष्टकारक। डूबना मृत्युकारक, जल-प्लावन (बाढ़) देखना महा अशुभ।

जलपात्र–भरा देखना शुभ। रिक्त पात्र, उलटा पात्र अशुभ।

जटाधारी साधु–भाग्योन्नति का लक्षण। आशीर्वाद दे तो वचन फलित होंगे।

जंग–जंग लगे वस्त्र, बर्तन, हथियार देखना कलंक सूचक।

जगमगाहट–सफलता, सन्तान, परिवार, प्रसन्नतावृद्धि सूचक।

जंगल देखना–खुशी, धनप्राप्ति सूचक। जंगल में भटकना, शिकार करना, परिवार से अलग होकर जंगल जाना अशुभ।

जंजीर–सोने की जंजीर पहनना शुभ समाचार सूचक, लोहे की जंजीर पहनना कैद सूचक, सोने की जंजीर टूटना बुरा, लोहे की जंजीर टूटना शुभ सूचक।

जज–जज बनना, जज की खुशी देखना शुभ, अपराधी बन जज के सामने उपस्थित होने, जज से झगड़ा भारी कष्ट का द्योतक।

जननी–सौभाग्यवर्धक, कल्याणकारी। आशीर्वाद मुद्रा में प्रतिष्ठा सम्मान, विजय सूचक।

जयमाला–हानिसूचक।

जल्लाद–अशुभ।

जलना–खुद को जलते देखना उच्चपद प्राप्ति सूचक।

जवाहरात–स्त्रियों के लिए सौभाग्य सूचक। पुरूष खरीदता देखे तो अशुभ।

जहाज–विदेश यात्रा सूचक। अपनी ओर आता लाभ सूचक, जाता जहाज हानिकारक।

ज्योति –ज्ञान, धर्म, अध्यात्म, सौभाग्यवृद्धि कारक।

ज्वालामुखी–अशुभ।

जाल/जाला–परेशानी सूचक।

जागना–सौभाग्यकारक।

जादू–दुरात्माओं से सावधान रहने की चेतावनी।

जादूगरनी–अशुभ सूचक।

जीभ–देखना, काटना, निकलना झगड़े की पूर्व सूचना।

जुआं खेलना– जुऐं में हारना लाभदायक, जीतना हानिकारक।

जुलूस–बारात, जनाजा देखना अशुभ, बढ़िया वस्त्रों से सज्जित जुलूस दीखे तो मांगलिक कार्य सूचक।

जुर्माना–दूसरों का जुर्माना भरना शुभ, अपना जुर्माना अदा करना अशुभ।

जूं–देखना प्रतिकूल परिस्थिति सूचक। जूं मारना धन सूचक।

झंडा–फहराता झंडा उन्नति, मान प्रतिष्ठा, कार्य सिद्धि, विजय, धर्मवृद्धि द्योतक।

झरना–सुख-समृद्धि सूचक। झरने में बहना दुर्भाग्य सूचक।

झगड़ा–अहितकारी।

झपट्टा मारना–लॉटरी, जुआं, सट्टा, रेस में अचानक लाभ।

झाड़ू देखना–नया भाग्योदय कारक, पुराना हानिकारक।

झील–भरी झील सफलता, शान्ति, सुख सूचक।

झुलसना–संकटमुक्ति।

झुर्री –चेहरे पर झुरियां उन्नतिकारक।

झूला–शिशु सहित झूला सन्तान सुखकारक, खाली झूला सुख में कमी सूचक, वृद्ध देखे कि वह झूले में पड़ा है तो मृत्यु सूचक।

झूठ बोलना–शुभ समाचार सूचक, अपरिचित झूठ बोले धन प्राप्ति, मित्र बोले ठगाई, दूसरे लोग व्यापारी से बोले बेहद नफा द्योतक।

झोंपड़ा देखना–मकान, खजाना, समृद्धि, आध्यात्मिक प्रगति द्योतक।

टब देखना–सफलता सूचक।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

टमाटर –खाना सौभाग्यकारक, स्वास्थ्यप्रद।

टहलना–दूसरों को टहलते देखना स्वास्थ्यप्रद, खुद को देखना बुरा।

टापू देखना–संकट सूचक।

टाट–बैठना, लपेटना, पहनना, पदोन्नति सूचक।

टिकट–खरीदना, एकत्र करना, खोना अशुभ कारक।

टिड्डियां–रोग सूचक।

टीका लगाना–स्वास्थ्यप्रद, खुद के लगवाना रोग सूचक।

टुकड़ा –दरिद्रता सूचक।

टेनिस खेलना–खर्च द्योतक।

टो/टो–पहनना, खरीदना सम्मान सूचक, उतारना, जलना विश्वासघात, कष्ट सूचक।

टोकरी/टोकरा–सफाईकर्मचारी का टोकरा देखना शुभ। सब्जी, फल से भरा टोकरा शुभ, खाली अशुभ।

ठंड-ठंड लगना अशुभ।

ठग–विपत्तिसूचक।

ठुमक–शिशु द्वारा ठुमक- ठुमक चलना सौभाग्य प्राप्ति सूचक।

ठेला–फलों आदि से भरा शुभ, खाली अशुभ।

ठोकर/ ठुकराना–पति या धनी द्वारा शुभ, जानवर द्वारा अशुभ।

डंसना–सर्प, बिच्छू द्वारा शुभ।

डंका बजाना–बजते सुनना कलंक सूचक।

डॉक्टर–रोग, खर्च सूचक।

डाकिया–संदेश सूचक।

डाकखाना–व्यापार विस्तार।

डिग्री लेना/ देना–अधिकार प्राप्ति सूचक।

डिबियां –भरी शुभ, खाली हानि सूचक।

डूबना–दुर्भाग्य सूचक।

डोम–शवदाह करने वाला डोम देखना उत्तराधिकार में सम्पति।

ढ़ांकना–हानि सूचक।

ढ़ेला–ईंट, पत्थर, मिट्टी के ढेले देखना, फैंकना अशुभ।

ढोलक –देखना, बजाना आनंद सूचक। बजते देखना अशुभ।

तपस्या–अशुभ।

तपस्वी–धार्मिक, आध्यात्मिक रूचि, दान, परोपकार में वृद्धि।

तपोवन–तीर्थयात्रा सूचक।

तर्पण–अशुभ। वृद्ध व्यक्ति देखे तो शुभ।

तमाशा–बन्दर, भालू का नाच पीड़ादायक।

तलवार–दीवार लटकती, म्यान रखी सन्तोष, शान्ति सूचक, नंगी अशुभ।

तलवा–देखना, धोना, मैल लगना, कांटा, कील चुभना सफलता सूचक।

तम्बू देखना–उच्चपद प्राप्ति सूचक।

तख्त चढ़ना–गौरव प्राप्ति।

तम्बाकू–पीना शुभ, खुशहाली द्योतक। सफलता सूचक।

तमगा–स्वर्ण, रजत पदक प्रसिद्धि सूचक, दूसरों को पदक देना अशुभ।

तरबूज–पक्के तरबूज सफलता सूचक, कच्चे तरबूज अशुभ। खाना धन प्राप्ति सूचक। छीना जाये तो अशुभ।

तराजू–अन्याय सूचक।

त्याग–जिस वस्तु को स्वप्न में त्यागा जायेगा, उसकी वृद्धि होयेगी।

त्योहार मनाना –शोक सूचक।

ताख-(आला)–भरी हुई ताख शुभ।

ताला–खरीदना, बनाना, व्यापार करना, खोलना, तोड़ना सफलता सूचक, लगाना कठिनाई सूचक।

ताड़ना–विजय सूचक, चांटा खाना पराजय सूचक।

ताड़ वृक्ष –देखना, चढ़ना, उतरना अवनति सूचक।

तालाब–नहाना रंज प्राप्ति।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तार–आशातीत धन।

ताबीज–ऐश्वर्य का द्योतक।

तारकोल– खोई वस्तु पाने का द्योतक।

ताम्रपत्र –सम्मान सूचक।

ताम्बूल–मांगलिक कार्य का द्योतक।

तारा मंडल–सौभाग्य, सुख, शांति, सुयश, सम्मान सूचक।

तिल/तेल–तिल का ढ़ेर मांगलिक, धार्मिक अनुष्ठान का संकेत, तेल, तिल खली शुभ, तिल चबाना कलंक सूचक, तेल पीना रोग सूचक, मालिश करना मारणांतिक कष्ट सूचक।

तिलक–अशुभ।

तिरंगा–सम्मान प्राप्ति का द्योतक।

तिनका–अभाव सूचक।

तीतर–शुभ।

तीर चलाना–आशापूर्ण होने का द्योतक।

तूणीर–उन्नति सूचक।

तैरना–विजय का प्रतीक।

त्रयम्बकम्-(शव)–देखना शुभ, सुख-शांति, सुमति, सुख्याति।

त्रिशूल–आत्मोन्नति कारक।

थकना–थककर बैठना, थकावट अनुभव करना, गिर पड़ना शुभ समाचार सूचक।

थन–गधी, गाय, सूअर के थन देखना, स्पर्श करना धनप्राप्ति सूचक। बकरी एवं भैंस के अशुभ।

थप्पड़ खाना–अशुभ, दूसरों को मारना शुभ।

थाली /थैली–भरी देखना शुभ, खाली देखना अशुभ। थाली बजाना, बजती देखना, आवाज सुनना मांगलिक कार्य सूचक।

थूकना–अपमान सूचक।

दंगल–विजय, कार्य सफलता सूचक।

दरवाजा खोलना–नये कार्य की शुरूआत, नया बनाना, बनते देखना, टकराना, टकराते देखना उन्नति सूचक।

दरार–फूट सूचक

दर्जी–फटे- पुराने की मरम्मत शुभ। नये कपड़े की सिलाई अशुभ।

दवा लेना–रोगमुक्ति सूचक। दवा गिरना भी शुभ।

दही–देखने से प्रीति, भक्षण से यश, सन्तान-लाभ दूसरों को देना, लेना से धन लाभ।

दर्द से छटपटाना–संकट मुक्ति।

दम्पत्ति –सुखी जीवन का संकेत।

दवात–धनागम सूचक।

दर्पण –शुभ सूचक।

दरिद्र–हानिकारक।

दक्षिणा–दक्षिणा लेना शुभसूचक।

दांत पतन–विनाश सूचक।

दातुन करना–उत्तम भोजन प्राप्ति सूचक।

दाढ़ी देखना–उदासीनता सूचक। काटना, काटते देखना कार्यनाश सूचक।

दावत खाना–भाग्योदय द्योतक। दावत खिलाना, सम्मान बिखरना अशुभ।

दाह संस्कार–देखना, करना अशुभ सूचक।

दीपक–जलता दीप, उर्ध्व लौ, दीपावली देखना भाग्योदय कारक। बुझा दीपक अशुभ।

दुर्घटना देखना–दुर्घटना सूचक।

दुश्मन देखना–शुभाशुभ दोनों परिणाम मिलते हैं।

दुपट्टा देखना–मांगलिक कार्य सूचक।

दुकान देखना–समृद्धि सूचक किन्तु पंसारी की दुकान देखना अशुभ।

दुबला-पतला– खुद को, परिवार को देखना अशुभ। शत्रु को देखना शुभ।

दूत–समाज में सम्मान प्राप्ति द्योतक।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दूध–दूध पीना, पीते देखना, बिखरते देखना, भरा बर्तन देखना आर्थिक सम्पन्नता सूचक।

देव प्रतिमा देखना–अर्थ, धर्म, लाभ। गिरना, हिलना, चलना, नाचना, गाना आधि, व्याधि और मृत्यु सूचक।

देवस्थान /नदी–परोपकार, अध्यात्म, धर्म में अभिरूचि।

देश निकाला–भारी कष्ट सूचक।

देवता–अत्यन्त दुर्लभ स्वप्न। भाग्योन्नति कारक।

दैत्य–कष्ट सूचक।

दौड़ना–सफलता सूचक।

धन-प्राप्ति –शुभ। दूसरों को देना हानि सूचक। गड़ा हुआ धन लाटरी सूचक।

धब्बा–कलंक सूचक।

धर्म बहिष्कृत–उन्नति दीर्घायु सूचक।

ध्यान–आत्मोन्नति कारक ।

धनिया–सूखा धनिया देखना, खाना, पीसना यात्रा सूचक। हरा धनिया रोग सूचक।

धारा–पानी, दूध की धारा शुभ, तेल की धारा अशुभ।

धागा–कार्य भार बढ़ने सूचक।

धाय–सौभाग्य सूचक।

धुआं–मानसिक परेशानी द्योतक। चिमनी का उठता धुआं शुभ।

धूप–आनन्दसूचक।

धूल–दरिद्रता सूचक। धूल का ढ़ेर लाभ सूचक।

धोना–खुद को धोना शुभ, कपड़े धोना अशुभ।

नक्शा–नई योजना का श्री गणेश।

नक्सीर–परेशानी सूचक।

नकाब–धोखा सूचक। नकाब हटाना छिपे धन की प्राप्ति सूचक।

नगर-प्रवेश–धन प्राप्ति द्योतक। नगर विनाश देखनाअशुभ सूचक।

नदी पार करना–भरी नदी सफलता सूचक, खाली नदी निराशासूचक।

नग्न–नग्न व्यक्ति रक्त पुष्पमाला धारण करे तो मृत्यु सूचक।

नृत्य–रोग, अपमान सूचक। मधुरलय, व्यवस्थित ताल हो तो शुभ।

नंदीश्वर शिव-द्वारपाल–(नन्दी/नांदियां) शुभ लक्षण सूचक।

नवयौवना–शुभ।

नमक–नमक का ढ़ेर शुभ, नमक खाना, चाटना, बेचना परिवारवृद्धि सूचक, किन्तु नमक बनाना चिन्ता सूचक।

नख काटना–रोग सूचक।

नट-नटनी–कार्यनाश सूचक।

न्यायालय–अशुभ।

नांद–धन लाभ सूचक।

नाई–विश्वासघात का द्योतक।

नाग–काला नाग शुभ। मारना, प्रहार करना, लटकना अशुभ। नाग का डंसना सम्मान प्राप्ति सूचक, नाग विष से मरे हुए को देखना दीर्घायु सूचक।

नाव में सवार –सौभाग्य सूचक। नाव उलटना दुर्भाग्य सूचक।

नाश्ता–अशुभ।

नासूर–सफलता सूचक।

नाटक–अशुभ।

नायिका/नर्तकी–आमोद-प्रमोद सूचक।

निकिल देखना–हानि सूचक।

निन्दा सुनना–प्रसिद्धि सूचक।

निवास स्थान–सेनाघर देखना वियोग सूचक, रेल्वे क्वार्टर लम्बी यात्रा के प्रतीक।

निर्धनता–खुद को निर्धन देखना सौभाग्यकारक, दूसरों को निर्धन देखना अशुभ।

निष्कासन–घर से निष्कासन सुदूर यात्रा का प्रतीक।

नीलगाय–भौतिक और आध्यात्मिक लाभ, दान, पुण्य, परोपकार में रूचि बढ़ेगी।

नीड़–आरोग्य, सुख-शान्ति, समृद्धिकारक। टूटा फूटा घोंसला अशुभ।

नींबू–परिवार में फूट का संकेत।

नूपुर–कल्याणकारी।

नेत्र–ज्ञान वृद्धि द्योतक।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

नेवला–भय मुक्ति का द्योतक।
नौकर–नौकर रखना संकट सूचक, निकालना चिन्तामुक्ति, लड़ना झगड़ना प्रतिष्ठा सूचक, बात करना हानि सूचक।
पंखा–कष्टों से छुटकारा।
पंच–सफलता सूचक।
पकाना–पारिवारिक उन्नति सूचक।
पहिया–घूमता देखना अशुभ, खड़खड़ाहट सुनना सुख शान्ति का प्रतीक।
पहेली–चिन्ता सूचक।
पंडाल–देखना, बैठना, स्थान परिवर्तन का संकेत।
पढ़ना–पढ़ना, पढ़ाना, पढ़ते देखना शुभ, प्रशंसा सूचक।
पतंग–उड़ाना, उड़ते देखना यात्रा सूचक। पतंग काटना या कटी पतंग देखना धन प्राप्ति सूचक।
पत्थर–पत्थर से ठोकर खाना उन्नति सूचक। पत्थर लगना शत्रुता सूचक, काले पत्थर देखना शुभ।
पनघट–उत्सव सूचक।
पकवान–बीमारी सूचक।
परिचित–शुभ समय सूचक।
परिश्रमी–सफलता सूचक।
पगड़ी–मान-मर्यादा एवं प्रतिष्ठा सूचक।
पंचमुखी–आत्मिक उन्नति, दान, धर्म में रूचि, तीर्थयात्रा का योग।
परीक्षा–असफलता सूचक।
पलंग–शुभ।
पहरेदार–वस्तु गुम हो जाने सूचक।
पहलवान–शक्ति प्राप्ति का द्योतक।
पगडंडी–समस्या समाधान।
पंख–कल्पनाशील होने का संकेत।
पंजर–हड्डियों का ढ़ाचा देखना भाग्योदय कारक।
परदेशी–विदेश यात्रा सूचक।
पवनपुत्र–कल्याणकारी, उत्थान सूचक।

प्रणव–तीर्थयात्रा, दान, पुण्य व्रतोपवास में वृद्धि सूचक।
प्रकाश–तत्त्व ज्ञान सूचक।
प्रतिग्रह–दान लेना दरिद्रता सूचक।
प्रयाण–सेना का प्रयाण सुरक्षात्मक एवं शुभ।
प्रसाद–लेना, देना धन, सम्पत्ति, सुयश, सम्मानादि की प्राप्ति।
प्रहरी–कारावास या बंधन का प्रतीक।
प्राण-प्रतिष्ठा–मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा देखना उपलब्धि सूचक।
पागल होना–ज्ञान प्राप्ति सूचक। पागलखाना देखना उच्चपद प्राप्ति सूचक, पागल से बात करना दुर्भाग्यसूचक।
पान खाना–मित्रता सूचक।
पाजामा पहनना–पदोन्नति सूचक। विदेश यात्रा भी हो सकती है।
पाणिग्रहण–अशुभ।
पिंजरा–चिन्तामुक्ति, सफलता सूचक।
पियानो–आनन्द सूचक।
पिस्तौल–भय सूचक।
पीटना–असफलता सूचक।
पीठ–अशुभ।
पुष्पगुच्छ–प्रसन्नता सूचक।
पूजन–देव पूजन अत्यन्त शुभ।
फकीर–बूढ़ा फकीर शुभ, अन्यथा अशुभ।
फफोला/फोड़ा–सौभाग्यकारक।
फर्नीचर–सजा हुआ भाग्योदय कारक, बिखरा हुआ हानि सूचक।
फव्वारा– धनलाभ सूचक।
फरिश्ता–भाग्य वृद्धि, बात करना अशुभ।
फसल–सफलता सूचक।
फंदा लगाना–संकट मुक्ति सूचक।
फल–धन प्राप्ति, खाना रोग, सन्तान -नाश सूचक। कच्चे फल, सड़े फल देखना, खाना दुर्गतिकारक, मुरझाए पेड़ पर फल देखना अज्ञात धन प्राप्तिसूचक।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

फांसी–नई राह मिलने का द्योतक।
फावड़ा चलाना–कड़े परिश्रम के बाद आराम प्राप्ति सूचक।
फाटक देखना–विजय श्री सूचक।
फिसलना–पतन सूचक।
फूल–श्वेत फूल धन प्राप्ति सूचक, पीत फूल यशप्राप्ति सूचक, हरे फूल इष्ट मित्र सूचक, लाल फूल रोग सूचक, काले फूल मृत्यु सूचक।
बन्दर– विरोध सूचक।
बन्दूक–संकट सूचक।
बरसात देखना–शुभ।
बरात–अशुभ।
बर्फ–अशुभ।
बहिन–सौभाग्य सूचक।
बत्तख–समृद्धि सूचक।
बच्चा–भाग्य सूचक।
बछड़ा–परिवारवृद्धि सूचक।
बलि–प्रसन्नता का द्योतक।
बर्बादी–खुशहाली सूचक।
बलिदान–शुभ।
बसन्त ऋतु–मांगलिक उत्सव सूचक।
बहुरानी–सुख, सौभाग्य, शोभा, सेवा, प्रेमसूचक।
बाढ़–चोरी, अग्नि आदि द्वारा संचित धन-हानि सूचक।
बादल–विपत्तिसूचक। वर्षा होती दिखाई दे शुभ।
बाघ–विजय द्योतक। मान, प्रतिष्ठा, शक्ति में वृद्धि।
बाल–श्वेत आयु वृद्धि, कटे हुए ऋण मुक्ति, बिखरे हानि सूचक।
बाज पक्षी–विदेश यात्रा, पदोन्नति, स्वास्थ्यलाभ सूचक।
बाजार–बाजार में घूमने का स्वप्न शुभ। सवारी पर बैठ कर जाना मुसीबत सूचक।
बाग-बगीचा–खुशहाली सूचक। सूखा बाग अशुभ।
बिल्ली–निन्दा, अपयश, चोरी, आलोचना, आर्थिकहानि सूचक।

बिल्वपत्र–धान्य, वैभव, सुयश, , प्रतिष्ठा, धार्मिक अनुष्ठान द्योतक।
बिच्छू–प्रतिष्ठासूचक।
बीज–सन्तानवृद्धि सूचक।
बुखार आना–चहुंमुखी सफलता। खांसी, जुकाम के साथ बुखार देखने से व्यापार-लाभ।
बुलबुल–ज्ञान प्राप्ति सूचक।
भवन–अच्छा मकान मिलने का द्योतक।
भक्त–शुभ।
भगवान–आध्यात्मिक, धार्मिक, आर्थिक लाभ का द्योतक।
भंवर–मांगलिक उत्सव सूचक।
भयभीत–साहसी बनने का प्रतीक।
भभूत लगाना–सुखमय जीवन का प्रतीक।
भट्टी–समृद्धि सूचक भट्टी में अनाज भूनना दरिद्रता का लक्षण।
भ्रमण करना–शांति सूचक।
भ्राता देखना–अर्थ लाभ, प्रेम, सौहार्द का द्योतक।
भांग–पीना, देखना, बनाना मानसिक परेशानी सूचक।
भागना–हानि सूचक।
भालू–काला भालू शुभ, सफेद भालू, नाचता भालू अशुभ।
भिखारी–भीख देना, भिखारी बनना सौभाग्य सूचक। भिखारियों को देखना अशुभ।
भूख–भूखा रहना दुर्भाग्यसूचक। दूसरों को भूखा देखना सौभाग्यवर्धक।
भूकम्प–भारी उपद्रव सूचक।
भूत पर आक्रमण करना–शुभ सूचक। भूत देखना अशुभ सूचक।
भेंट देना–बुरा। लेना अच्छा।
भेड़िया–असफलता सूचक।
भेड़ पालना–शुभ।
भैंस–दूध देती, बड़े- बड़े थनों वाली, धनप्राप्ति सूचक। भूरी भैंस, सींग रहित भैंस अशुभ सूचक।
भैंसा–महा अशुभ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भौंकना–अपयश एवं निन्दा सूचक।
मकड़ी–खतरनाक।
मकबरा–शांति सूचक।
मक्खन–सौभाग्य वर्धक।
मक्खियां–शत्रुतासूचक।
मद्यपान–भाग्य का द्योतक।
मखमल–पहनना दुर्भाग्य सूचक।
मच्छर–शत्रुता सूचक।
मछली–समृद्धि सूचक। मृत अशुभ।
मधु खाना–आनन्द और आरामदायक। मधु खरीदना रोग सूचक।
महल बनाना–अधिकारवृद्धि का द्योतक।
मशाल–उन्नति सूचक।
मस्जिद–सुखद भविष्य सूचक।
मगरमच्छ(मत्स्य)–महान अशुभ सूचक।
मधु मक्खी–काटना शुभ।
मल- मूत्र–शरीर पर लगना धन सूचक, भक्षण करना सम्मान सूचक।
मंदिर–शत्रु परास्त।
मृत्यु–भाग्योदय कारक। दूसरों की मृत्यु देखने का स्वप्न कभी-कभी सत्य भी हो सकता है।
मृत व्यक्ति–बातचीत करना प्रसिद्धि सूचक, भोजन करना दीर्घायु सूचक, मृतक को गोद में बिठाना अशुभ कारक।
मृग(हिरण)–भागता यात्रा सूचक, मृग-शावक सन्तान सूचक।
म्यान–शत्रु से पराजय सूचक।
माला–भाग्योदय का द्योतक।
माणक–धन वृद्धि का द्योतक।
मिठाई लेना–शुभ। खाना अशुभ।
मिर्चें –अशुभ।
मीनार–शुभ।
मुकुट पहनना–प्रतिष्ठासूचक।

मुख–सुन्दर मुख प्रसन्नता का प्रतीक, भद्दामुख, टेढ़ा मुख सफेद या पीला पड़ता मुख अशुभ सूचक।
मुर्गा/मुर्गी–लाभ सूचक।
मूर्च्छित-होना–शुभ समाचार का द्योतक।
मूर्ति–आनन्द सूचक।
मेंढ़क–शुभ किन्तु सांप मेंढ़क को निगलता देखे तो आपत्ति का द्योतक।
मोर–नृत्ययुक्त मोर शुभ अन्यथा अशुभ।
मोती- सौभाग्यवर्धक।
मैना–धोखा सूचक।
यव जौ–मांगलिक कार्य का द्योतक।
यज्ञ–करना, करवाना, देखना, आहूति देना यश, मान, सम्मान, धन पद- प्रतिष्ठा सूचक।
यात्रा करना–भाग्योदय, यात्रा सूचक।
युद्ध –विजय देखे तो विजय, पराजय देखे तो पराजय, अस्त्र-शस्त्र देखे तो चिन्ता सूचक। खुद लड़े तो चिन्ता दूसरे लड़े तो शुभ।
युवावस्था–अपने को जवान देखे तो अशुभ सूचक।
योद्धा–सशस्त्र योद्धा शुभ। योद्धा से लड़ना अशुभ।
रक्षा करना–शुभ सूचक।
रक्षा बंधन––महान सफलता का द्योतक।
रक्षक बनना–शुभ सूचक।
रसोइयां–उत्सव सूचक।
रहस्य उजागर–धोखा का द्योतक।
रंगना–अशुभ।
रथ–शुभ।
रजिस्टर–उन्नति सूचक।
रसभरी–आनन्द एवं कल्याण सूचक।
रस्सा–समृद्धि।
राजा–राजा से बातें करना धन प्राप्ति सूचक।
राक्षस–जीवित राक्षस शोक सूचक

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

रानी–शुभ सूचक।
रात–चांदनी रात शुभ, अंधेरी रात अशुभ।
राज्याभिषेक–दूसरों का राज्याभिषेक देखना शुभ, खुद का राज्याभिषेक देखना अत्यन्त अशुभ।
रिपु– सावधानी सूचक।
रूद्राक्ष– कल्याणकारक।
रूधिर– धन-धान्य, अर्थ लाभ। रूधिर वमन रोग सूचक।
रूपया–अतिशुभ।
रूमाल–भेंट में लेना, देखना शुभ सूचक।
रेंगना–हानि सूचक।
रेडियो– समाचार प्राप्ति सूचक।
रेल मार्ग–यात्रा सूचक।
रोगी बनना–स्वास्थ्य सूचक।
रोना–शुभ।
रोशनी–आनन्द सूचक।
रोटी–बीमारी सूचक।
लता–कांटे वाली अशुभ, फल-फूलयुक्त शुभ।
लक्ष्मी–धनागम, प्रतिष्ठा सूचक।
लटकना–विचाराधीन कार्य पूर्ण हो जाने का लक्षण।
लहंगा–शुभ।
लहसुन–परेशानी सूचक।
लंगर–यात्रा सूचक।
लड़का-लड़की–सन्तानवृद्धि सूचक।
लंगड़ा–अशुभ।
लॉटरी–टिकट या नंबर दिखाई दे तो उस नंबर की लॉटरी खुलने की संभावना। लॉटरी में हानि देखना सम्पत्ति सूचक।
लिफाफा–शुभ।
लीची–शुभ।
लेखन –प्रसिद्धि सूचक।

लोहा– अशुभ।
लौकी–स्वस्थ रहने का संकेत।
लौमड़ी–धोखा सूचक।
वर्षा –सौभाग्य सूचक।
वस्त्र–नये वस्त्र प्रतिष्ठा सूचक। फटे अशुभ।
वन विहार–परिवारवृद्धि सूचक।
वरमाला–अशुभ।
वजीफा पाना–हानि सूचक।
वसीयतनामा –हानि सूचक।
वृद्ध–भाग्योदयकारक।
वृक्ष–हरा भरा सौभाग्यदायक, सूखा अशुभ।
वादा–वादा टूटना सौभाग्य सूचक, निभाना दुर्भाग्यसूचक।
वाद-विवाद–शुभाशुभ।
विद्यालय–खुशहाली सूचक।
विवाह–अशुभ।
विष भक्षण–संकट मुक्ति सूचक।
विपत्ति–खुशी का द्योतक।
विमान–अति शुभ।
विस्फोट–अशुभ।
विधवा–बातें करना अशुभ।
विदाई–अशुभ।
विज्ञापन–उन्नति सूचक।
वीणा वादन–मांगलिक कार्य सूचक।
वेदी–आध्यात्मिक प्रगति सूचक।
शक्कर–शुभ।
शतरंज–अशुभ।
शत्रु–अशुभ।
शराब–सम्पति सूचक।
शराबखाना–आनन्द सूचक।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

शव–दीर्घायु एवं समृद्धि सूचक।
शर्बत पीना–सम्मान, प्रतिष्ठा का द्योतक।
शहनाई बजाना–अशुभ।
शलजम–शुभ।
शहर–धन प्राप्ति सूचक।
शहतीर–प्रसिद्धि सूचक। शहतीर टूटना भारी खतरा सूचक।
शतुरमुर्ग–अशुभ किन्तु उसके पंख दीखना शुभ।
शपथ लेना–मंदिर या देवस्थान में शपथ लेना इच्छापूर्ति सूचक।
शय्या –लक्ष्मी प्राप्ति सूचक।
शंख–बजता हुआ शंख अति शुभ, कल्याणकारी, सौभाग्य सूचक। भाग्योदय सूचक।
शामियाना–मंगलकार्य का संकेत।
शाल–सम्मान सूचक।
शिकार–सौभाग्य का द्योतक।
शीशा देखना–आर्थिक लाभ का द्योतक।
शेर–धन प्राप्ति सूचक।
शेषनाग–मंगलकारी एवं अति शुभ।
सफर–बेहद शुभ एवं सौभाग्य सूचक।
सभा–अपारधन प्राप्ति सूचक।
सड़क–चौड़ी सड़क देखना भाग्य सूचक, संकरी सड़क दुर्भाग्य सूचक।
सराय में प्रवेश–दुर्भाग्यसूचक।
समुद्र–खुशी का समाचार सूचक।
समाचार–सुनना आनन्द प्राप्ति का द्योतक, भेजना यात्रा सूचक, पढ़ना घबराहट का परिचायक। शोक समाचार सुनना मंगलकारी।
सम्पादक बनना–प्रसिद्धि सूचक।
समाधि देखना–सौभाग्य का प्रतीक।
संगीत–संगीत कार्यक्रम में जाना खुशहाली का द्योतक।
संतरा–पके संतरे देखना शुभ, कच्चे अशुभ।

संन्यासी/संन्यासिनी–देखना कष्ट सूचक, वार्तालाप उन्नति सूचक, लड़ना कलंक सूचक।
स्वर्ग की यात्रा–इहलौकिक और पारलौकिक सुखों की प्राप्ति सूचक।
स्वस्तिक–अत्यन्त शुभ।
सारंगी–निराशा सूचक। वादन सुनना समृद्धि सूचक। सारंगी वादक देखना आर्थिक लाभ का द्योतक।
सिर–सिर का बड़ा होना देखे तो पदोन्नति सूचक।
सुनार–समृद्धि सूचक।
सूप–सूप अनाज साफ करने वाला अनिष्टकारी।
सेना–आती सेना भाग्योदय सूचक, जाती दीखे तो दुर्भाग्य सूचक। विजयी सेना सौभाग्य सूचक, पराजित सेना दुर्भाग्यसूचक।
सोना–सोना शयन देखना अति शुभ सूचक।
श्राद्ध करना–शुभ लक्षण।
श्रीमन्त–धन प्राप्ति सूचक।
हंसना–दुःख वृद्धि सूचक।
हत्या करना–अशुभ।
हथकड़ियां–अशुभ।
हवा–बुरे भाग्य का द्योतक।
हड्डी–अशुभ।
हथौड़ा–कठिनाई सूचक।
हंसवाहिनी–शुभकारी, विद्वान, ज्ञानी बनने का द्योतक।
हंस–सुयश, प्रतिष्ठा, राज सम्मान, सन्तान सुख तथा वैभव प्राप्ति सूचक।
हाथी–सफलता का द्योतक। हाथी पर चढ़ना, ऐश्वर्य पदोन्नति सूचक।
हानि–लाभ सूचक।
हीरा–सुखसौभाग्य कारक।
हुंकार–हुंकार मारना हानि की संभावना।
होमकुण्ड–धार्मिक उन्नति सूचक।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

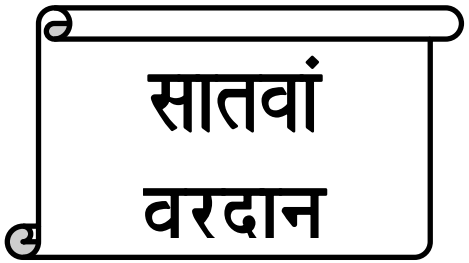

मनोविज्ञान में स्वप्नों के शुभा-शुभफल

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सातवां वरदान : मनोविज्ञान में स्वप्नों के शुभाशुभफल

अप्रैल, 1912 में हुए टाइटैनिक हादसे को टाला जा सकता था। यदि टाइटैनिक पर सफर कर रही एक महिला के स्वप्न को उसके स्वामी ने गंभीरता से लिया होता। उस महिला ने स्वप्न देखा कि जहाज उफनती लहरों के कारण डूब जायेगा। जब महिला ने यह बात अपने पति से कही, तो उसने कहा भला सपने सच होते हैं? यद्यपि श्रीमती ने सपने को सच माना। जीवनरक्षक साजो-समान को उसने पहले से ही तैयार कर लिया। टाइटैनिक के आइसबर्ग से टकराने पर उस महिला ने अपने बच्चों को लेकर जहाज छोड़ दिया था इसके कारण उस श्रीमती की जान बच गई। विश्व-विख्यात अश्वेत गांधीवादी नेता मार्टिन लूथर किंग ने अपनी हत्या होने का सपना देखा था। जो चंद दिनों में सच साबित हुआ।

मनोवैज्ञानिक सपनों के महत्त्व को खारिज नहीं करते हैं। उनके अनुसार सपने व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं एवं आने वाली घटनाओं की प्रतीकात्मक रूप से खबर भी देते हैं, जिन्हें समझने के लिए हमको बुद्धि के घोड़े (तुरंग) दौड़ाने पड़ते हैं। संसार के सभी संभागों में विभिन्न स्वप्नों के संदर्भ में अनेक प्रकार के शुभ-अशुभ फल माने जाते हैं। यदि किसी स्वप्न का शुभाशुभ फल न भी हो, तो वह किसी न किसी महत्त्वपूर्ण सूचना की ओर संकेत अवश्य करता है। स्वप्नों की अपनी एक भाषा है। स्वप्न जहां हमारी मानसिक स्थिति को बयां करते हैं, वहीं कई बार ये भविष्य के संकेत एवं उनके निहितार्थ के बारे में सूचना देते हैं जैसे-

दांतों का गिरना-एक मान्यता यह है कि ऐसा स्वप्न देखना मृत्यु के निकट पहुंचने का सूचक है या निकट भविष्य में बीमारी आने का संकेत है। दूसरी ओर स्वप्न-विज्ञान के विशेषज्ञों की राय है कि यह सपना उम्र से उपजी चिंताओं का सूचक है। ऐसी चिंताओं कोसकारात्मक और यथार्थवादी नजरिए से आप दूर कर सकते हैं।

- **गिरना** : खुद को कहीं से गिरते हुए देखना दर्शाता है कि आपका आने वाला समय संघर्ष भरा होगा, लेकिन अगर आपने सपने में खुद को गिरकर उठते हुए भी देखा है तो आप जीवन में और प्रगति करेंगे।
- **बाढ़ का प्रकोप** : यह बीमारी, व्यापार में नुकसान, नाखुश या अव्यवस्था बने रहने की निशानी है।
- **खेत-खलिहान** : खेत-खलिहान देखने का अर्थ है कि आपके विकास का समय शुरू हो गया है। आपका आने वाला समय व्यस्तता से भरा है और आप परेशानी और कष्ट में भीघिर सकते हैं।
- **आग देखना** : महिलाओं को स्वप्न में अग्नि दिखना वैवाहिक जीवन में समस्याओं का द्योतक है।
- **फूल देखना** : फूल स्वप्न देखने वाले की भावानाओं को बताता है। यह हमारे ग्रह के जीवन चक्र के बनने बिगड़ने को भी दर्शाता है।
- **इन्द्रधनुष** : शादी वाले दिन इन्द्रधनुष देखना शुभ होता है।
- **पक्षी** : सपने में उड़ता पक्षी और बच्चा देखने का मतलब है कि पैसे की कोई कमी नहीं होगी।
- **चांद** : सपने में चांद देखना भाग्य को नई ऊंचाई देता है।
- **चरागाह** : सपने में चरागाह देखने का मतलब है कि जल्दी ही खुशहाली आने वाली है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

✡ **बेडरूम :** यदि सपने में आप यह देखते हैं कि किसी नए या अजीब से दिख रहे बेडरूम में विराजमान हैं, तो इस बात का संकेत हैं कि निकट भविष्य में आपके जीवन में कुछ अच्छा परिवर्तन होने वाला है। यदि सपने में आप अपना ही बेडरूम देखती हैं, तो यह इस बात का सूचक है कि निकट भविष्य में हालात आपके अनुकूल रहेंगे।

✡ **उड़ना एवं गिरना :** उड़ने के स्वप्न का आशय यह है कि व्यक्ति ऊपर उठकर महत्त्वाकांक्षा की उड़ान पर निकलना चाहता है। हालांकि इसके लिए आपको जोश के साथ होश का भी परिचय देना होगा। वहीं गिरने का सपना देखना असुरक्षा एवं भय को दर्शाता है। ऐसे सपने देखने वाले को यह समझ लेना चाहिए कि उसे अपनी मानसिक शक्ति के जरिए भय से पार पाना है।

✡ **दौड़ने का सपना :** इस तरह के सपने के कई निहितार्थ होते हैं। एक निहितार्थ यह है कि किन्हीं कारणों से आपकी कुछ इच्छाएं दब गयी हैं या कुछ महत्त्वपूर्ण चीज आपने गंवा दी हैं। साथ ही यह सपना बताता है कि कुछ भावों जैसे क्रोध आदि की व्यक्तित्व में अधिकता हो गयी है। भागने का सपना भय का भी सूचक है। यह सपना संकेत देता है कि आप अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखें।

✡ **अचानक सफर :** कभी-कभी आप इस तरह का सपना देखती होंगी कि तैयारी के बगैर आप सफर पर जा रही हैं। विशेषज्ञों के अनुसार इस तरह के सपनों का आशय है कि आप किसी विषय या मुद्दे को लेकर असमंजस में हैं।

✡ **हाथी के दर्शन :** इस तरह का सपना यह संकेत करता है कि आपके जीवन में जल्दी ही भाग्योदय होगा और समृद्धि दस्तक देगी। परेशानियों से आप दूर होंगी। आपको कोई खुशखबरी प्राप्त होगी।

✡ **धनदौलत देखना :** अगर सपने में अक्सर आप यह देखती हैं कि आपके चारों तरफ रूपया-पैसा बिखरा है या सोने-चांदी के गहनों की भरमार है तो यह तय मानिए कि निकट भविष्य में आप बीमार होने वाली हैं या आपके घर-परिवार का कोई सदस्य बीमारी से ग्रसित होने वाला है। स्वप्नविज्ञानियों के अनुसार यह दरिद्रता की निशानी भी है।

✡ **कोई वस्तु बार-बार देखना :** इस तरह के स्वप्न का मतलब है कि आप जहां हैं और जैसी स्थिति में हैं उसी में रहने वाली हैं। आपकी जिन्दगी में कोई परिवर्तन नहीं होने वाला है।

✡ **पहाड़ देखना :** सपने में पहाड़ देखने का मतलब है कि आपके व्यक्तित्व में मजबूती आने वाली है।

✡ **उड़न-तश्तरी (यूएफओ) :** अगर आपने सपने में उड़न-तश्तरी देखी हो तो हो सकता है कि यह एक इशारा हो आपके स्पेस में जाने का। दूसरी तरफ यह आपको जीवन में सतर्क रहने का इशारा भी है।

✡ **दर्द :** सपने में किसी तरह के दर्द का अहसास होने का मतलब है कि आपके विचारों से दूसरे फायदा उठा रहे हैं।

✡ **घंटिया :** यह बताती है कि किसी की मृत्यु हो सकती है।

✡ **जेब्रा :** सपने में जेब्रा देखने का अर्थ है कि आपके जीवन में सब कुछ संतुलित चल रहा है। इससे यह भी पता चलता है आप खुश जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

✡ **जीरो :** यह पूर्ण सावधानी का सूचक है, यह गोलाई भी दर्शाता है जिसका अर्थ है किसी चीज का पूरा या अमर होना।

✡ **चिड़ियाघर :** इसे देखने का अर्थ है कि आप किसी खास लिहाज से स्वतंत्रता चाहते हैं। साथ ही आपकी कार्य क्षमता लोगों से छिपी हुई है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

✡ **चेहरा :** सपने में अपना ही चेहरा देखने का अर्थ है कि आप दुनियां को अपना यही चेहरा दिखाना चाहते हैं, लेकिन जीवन में कुछ अप्रिय हालातों के चलते ऐसा हो नहीं पा रहा है।

✡ **फल** : नींद के दौरान फल देखने का अर्थ है कि आपका भावी जीवन खुशहाल होगा।

✡ **पिता** : सपने में अपने पिता को देखने का अर्थ है कि आप किसी घोर विपदा में फंसने वाले हैं। इस विपदा से निकलने के लिए आपको विशेष सलाह की आवश्यकता होगी जो पिता तुल्य लोगों से ही मिल सकती है।

✡ **उड़ान :** उड़ान भरने वाले स्वप्न देखना तो यह सकारात्मक असर देगा।

✡ **कैंची** : इसे देखना हर लिहाज से बुरा माना जाता है। बुर्जुग तो काफी हद तक इस बात को मानते आये हैं यह संकेत है कि घर, ऑफिस और बिजनेस वाली जगह पर झगड़े या मंदी के आसार बन रहे हैं।

✡ **डूबने का स्वप्न :** समुद्री लहरों या तूफान को देखना, बाढ़ का दृश्य देखना या नदी या फिर झील में डूबने का सपना आमतौर अच्छा नहीं माना जाता। स्वप्नशास्त्र के अनुसार पानी भावनाओं का प्रतीक है। आपको भावनात्मक रूप से दुःख पहुंचने की संभावना है। विशेषज्ञों का मानना है कि डूबने का स्वप्न देखना यह चेतावनी देता है कि आप विषम स्थितियों से घिर गई हैं या घिरने वाली हैं। इसलिए आपको मानसिक दृढ़ता का परिचय देना होगा, तभी आप प्रतिकूल स्थिति से उबर सकती हैं।

✡ **दुर्घटना का सपना :** यदि आप स्वप्न में किसी दुर्घटना का स्वप्न देखती हैं, तो आपके लिए चंद हफ्तों के लिए यात्रा संबंधी कार्यक्रम स्थगित करना बेहतर रहेगा। यदि आपने कार से हादसे का सपना देखा है, तो उस दिन यात्रा करते समय सजग रहें।

✡ **दुल्हन :** यदि सपने में आप स्वयं को दुल्हन के रूप में या किसी अन्य महिला को दुल्हन के रूप में देखती हैं, तो यह निकट भविष्य में आने वाले सौभाग्य का प्रतीक है। यदि आपके विवाह की बात चल रही है, तो यह सपना आपकी आकांक्षाओं की पूर्ति का सूचक है।

✡ **अन्त्येश्टि :** स्वप्नमनोविज्ञान के अनुसार यह शुभफलदायक स्वप्न है। यह सपना संकेत करता है कि निकट भविश्य में आप किसी मांगलिक कार्य में भाग लेंगी या फिर आपको खुशी का कोई समाचार मिलेगा। संभव है कि ऐसा स्वप्न देखने वाले परिवार के किसी सदस्य की सगाई या विवाह होने वाला है। इनके मनोविज्ञान में स्वप्नों के सूक्ष्मांशों का विश्लेशण किया गया है जबकि ज्योतिश में सम्पूर्ण स्वप्न का एक फलितार्थ बताया गया है। मनोवैज्ञानिक व्याख्या अपना विशेश महत्त्व रखती है। इससे व्यक्तित्व की सुप्त भावनाओं का सूक्ष्मता से विवेचन किया गया है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पाश्चात्य विचारधारा में स्वप्नों के शुभा-शुभफल

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आठवां वरदान : पाश्चात्य - विचारधारा

सपनों की दुनियां के संकेत हमारे लिए कभी खुशियां लाते हैं, तो कभी गम का संकेत देते हैं। ये संकेत मिलन-विरह सुख-दुःख, प्रगति-अवनति, आशा-निराशा, प्यार, घृणा की ओर भी इशारा करते हैं। हर समाज में जिस प्रकार अन्य ाास्त्र बनाए गए हैं, उसी तरह स्वप्न-शास्त्र बनाए गए हैं, जो उनकी जीवन पद्धति, धर्म, दर्शन और सदियों के अनुभव से मेल खाते हैं। पूरब का अपना स्वप्न-शास्त्र है तो पश्चिम का अपना।

धन-समृद्धि : यदि स्वप्न में नजर आए कि आप विशाल धन सम्पत्ति या समृद्धि के मालिक हैं, तो यह संकेत है कि आप स्वतंत्र व्यवसाय कार्य में रूचि रखते हैं। आप अपने दायित्वों या कर्त्तव्यों का वहन करते हुए अपने प्रियजनों, परिवार के सदस्यों की अपेक्षा न करें, आगे बढ़ें, आपका परिश्रम व्यर्थ नहीं जाएगा।

दुर्घटना : यदि आप किसी चीज, हथियार या अन्य वस्तु से घायल हुए हैं या चोट लगी है तो चाकू का इस्तेमाल करते समय ध्यान रखें ऐसे सपने का अर्थ यह भी हो सकता है कि आप सम्बंध-विच्छेद करने के इच्छुक हैं, खासकर व्यापारिक संबंध या किसी से मैत्री-संबंध। इसका यह भी अर्थ है कि आपको मैत्री, सहानुभूति की जरूरत है। यात्रा में दुर्घटना इस बात का संकेत है कि तत्काल दूसरे दिन या उसके अगले दिन यात्रा में सावधानी बरतें। स्वप्न में दुर्घटना भावी बीमारी की द्योतक हो सकती है, खान-पान आदि में सावधानी रखें।

वायुयान : सपने में कोई हवाई जहाज उड़ता देखता है तो भवि-य के सुखद होने का संकेत है। आप विमान में बैठे हैं और वह हवाई अड्डे पर खड़ा है तो इसका अर्थ यह हुआ कि आप अपने वर्तमान वातावरण या स्थिति से निकलकर सफलता की ओर बढ़ने के इच्छुक हैं। अगर आपका विमान उड़ रहा है तो यह इच्छा-पूर्ति की ओर संकेत करता है। यह सपना क्रियाशीलता और कामयाबी का द्योतक है।

कटार : स्वप्न में कटार के देखने से कश्ट और कटार चलाते हुए देखने से धन-हानि तथा निकट कुटुम्बी के दर्शन, मांस, भोजन एवं पत्नी से प्रेम होता है। किसी-किसी के मत से अपने में स्वयं कटार घोंपते हुए देखने से किसी के रोगी होने के समाचार सुनाई पड़ते हैं।

कनेर : स्वप्न में कनेर के फूले वृक्ष का दर्शन करने से मान-प्रति-ठा मिलती है। कनेर वृक्ष से फूल और पत्तों को गिरना देखने से किसी निकट आत्मीय की मृत्यु होती है। कनेर का फल भक्षण करना रोग सूचक है तथा एक सप्ताह के भीतर अत्यन्त अशान्ति देने वाला होता है। कनेर के वृक्ष के नीचे बैठकर पुस्तक पढ़ता हुआ अपने को देखने से दो व-र्ा बाद साहित्यिक क्षेत्र में यश की प्राप्ति होती है एवं नये-नये प्रयोग का आवि-कर्त्ता होता है।

किला : किले की रक्षा के लिए लड़ाई करते हुए देखने से मान-हानि एवं चिन्तायें, किले में भ्रमण करने से ाारीरिक क-ट, किले के दरवाजे पर पहरा लगाने से मित्रों की प्राप्ति और किले के देखने मात्र से प्रदेशी बंधु से मिलन होता है तथा सुन्दर-स्वादि-ट मांस भक्षण को मिलता है।

केला : स्वप्न में केला का दर्शन शुभफलदायक होता है और केले का भक्षण अनि-ट फल देने वाला होता है। किसी के हाथों से जबरदस्ती केला लेकर खाने से मृत्यु और केले के पत्तों पर रखकर भोजन करने से क-ट एवं केले के थंभे लगाने से घर में मांगलिक कार्य होते हैं।

खल (दुश्ट) : स्वप्न में किसी दु-ट के दर्शन करने से मित्रों से अनबन और लड़ाई करने से मित्रों से प्रेम होता है। खल के साथ मित्रता करने से नाना भय एवं चिन्तायें उत्पन्न होती हैं। खल के साथ भोजन-पान करने से शारीरिक क-ट, बातचीत करने से रोग और उसके हाथ से दूध लेने से सैकड़ों रूपयों की प्राप्ति होती है।

दूसरा मत है कि खल का दर्शन शुभ माना गया है।

खेल : स्वप्न में खेल-खेलते हुए देखने से स्वास्थ्य-वृद्धि और दूसरों को खेलते हुए देखने से ख्याति लाभ होता है। खेल में अपने को पराजित देखने से कार्य में सफलता और क्रीड़ा में जय देखने से कार्य हानि होती है। खेल का मैदान देखने से युद्ध से भाग लेने का संकेत होता है। खिलाड़ियों का आपस में मल्लयुद्ध करते हुए देखने से बड़े भारी रोग का सूचक है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गाय : यदि स्वप्न में कोई गाय दूध दूहने की इंतजार में बैठी हुई दिखाई पड़े तो सभी इच्छाओं की पूर्ति होती है।

घड़ी :स्वप्न में घड़ी देखने से शत्रु भय होता है। घड़ी के घण्टों की आवाज सुनने से दुःखद संवाद सुनते हैं या किसी मित्र की मृत्यु का समाचार सुनाई पड़ता है। किसी के हाथ में घड़ी गिरते हुए देखने से मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। अपने हाथ की घड़ी का गिरना देखने से छह महीने के भीतर मृत्यु होती है।

चाय : स्वप्न में चाय का पीना देखने से शारीरिक कष्ट, वियोग एवं व्यापार में हानि होती है। मतान्तर से चाय पीना शुभकारक भी है।

जन्म : यदि स्वप्न में कोई स्त्री, बच्चे का जन्म देखे तो उसकी किसी सखी-सहेली को पुत्र-प्राप्ति होती है तथा उसे उपहार मिलते हैं। यदि पुरूष यही स्वप्न देखे तो यश प्राप्ति होती है।

झाड़ू : यदि स्वप्न में नया झाड़ू दिखायी पड़े तो शीघ्र ही भाग्योदय होता है। पुराने झाड़ूका दर्शन करने से सट्टे में धन-हानि होती है। यदि स्त्री इसी स्वप्न को देखे तो उसे भविष्य में नाना कष्टों का सामना करना पड़ता है।

मछली : सपने में पानी में मछली देखना, अप्रत्याशित लाभ की ओर इशारा है। मछली जीवन का प्रतीक। मरी हुई मछली परेशानी और हानि की स्थिति बताती है। चट्टानों और कन्दराओं में तैरती मछली अवनति एवं अंधकार की सूचक है। जो व्यक्ति की जिम्मेदारियों को भूलने को प्रेरित करती हैं।

कार चलाना : अगर आप सपने में कार चला रहे हैं तो इसका अर्थ यह हुआ कि कोई स्वतंत्र निर्णय, व्यवसाय या कार्य में रूचि रखते हैं। एक अपने बारे में स्वयं निर्णय लेना चाहते हैं, अगर कोई और व्यक्ति कार चला रहा है और आप पास बैठे हैं तो उस व्यक्ति में भरोसा है एवं आप उसके साथ सहयोग के इच्छुक हैं। अगर आप स्वयं तेजी से कार चला कर किसी को पीछे छोड़ रहे हैं तो लगता है भावावेश में है और जीवन में उससे त्रस्त हैं तथा सपने के माध्यम से अलग होना चाहते हैं।

बिल्ली :सपने में अगर आप पर बिल्ली हमला करती है तो हो सकता है कोई आपसे दुश्मनी करे। आपने बिल्ली को भगा दिया तो मानो कि आपकी प्रतिष्ठा सुरक्षित है। अगर आपको कोई दुबली पतली बिल्ली दिखी है तो शायद आपका कोई मित्र कुछ अस्वस्थ हो। बिल्ली को आपने भगा दिया है तो आपका मित्र बीमारियों या खतरे से बाहर है। सफेद बिल्ली का स्वप्न किशोरों या किशोरियों के लिए अनुचित व्यवहार तथा वयस्कों के लिए हानि का संकेत हो सकता है।

जानवर : सपने में कोई जानवर आपके वश में नहीं आ रहा हो तो इसका अर्थ हुआ आपकी इच्छाएं असीम हैं। अगर जानवर आज्ञाकारी लगता है, जैसे आपका पालतू हो, तो यह संतोष और खुशी का संकेत है। जंगली जानवर जैसे-सिंह, सांड, सांप एवं चीता अपूर्ण इच्छाओं की ओर संकेत करते हैं।

गुड़िया : वयस्क व्यक्ति स्वप्न में गुड़िया देखता है तो उसके अचेतन मन में अवनति की भावना हो सकती है। बच्चा स्वप्न में गुड़िया देखता है तो यह उसके अकेलेपन की भावना का संकेत है।

बिस्तर : यह सपना अधिकांश मामलों में अच्छा होता है, यथा आप अपने बिस्तर को छोड़कर दूसरे के बिस्तर में सो रहे हैं तो यह नवीन अवसर एवं लाभ का संकेत है। अगर आप सपने में बिस्तर बिछा रहे हैं तो आप जागृत अवस्था में मित्रों की संख्या बढ़ा रहे हैं, अपने सामाजिक दायरे का विस्तार कर रहे हैं। बिस्तर में बीमार व्यक्ति को देखना अशांति का कारण हो सकता है।

पुस्तकें : सपने में पुस्तकों का ढ़ेर देखना सांस्कृतिक रूचि का परिचायक है। यह संकेत है कि आप अपने बौद्धिक विकास की दिशा में आगे बढ़ें। अगर आप पुस्तकों की भरी अलमारियां देखते हैं तो अपने कार्य को अच्छे ढंग से करने के लिए कमर कस लें। पुस्तकों की खाली अलमारियां ज्ञान की कमी के कारण होने वाले नुकसान की ओर इंगित करती हैं। किसी पुस्तकों की दुकान में पुस्तकें आनन्द की अनुभूति देंगी लेकिन इससे आपके नियमित काम, नौकरी, धंधे में कुछ बाधा का संकेत है।

भोजन बनाना : सपने में यदि आप दूसरे लोगों के लिए खाना बना रहे हैं तो यह दूसरों को प्रसन्न करने की इच्छा का प्रतीक है। यदि आप भरपेट भोजन नहीं परोस रहे हैं तो वह हताशा और उत्तरदायित्व अधूरा रहने की ओर संकेत है। यदि भोजन पाकर कोई भी प्रसन्न नहीं होता तो निराशा हाथ लग सकती है।

मोमबत्ती : यदि स्वप्न में आप मोमबत्ती जलती हुई देखते हैं और उसकी लौ स्थिर है तो यह स्थिरता, समरूपता एवं निष्ठा की द्योतक है, सच्चे प्रेम की ओर संकेत है। किसी बड़े प्रतिष्ठित परिवार में मोमबत्तियों का प्रकाश यह बताता है कि स्वप्नदृश्य अपनी पारिवारिक परम्पराओं का पूरी तरह से पालन करेगा।

कीड़े : सपने में मधुमक्खी, मक्खियां, कीड़े, खटमल आदि देखना मामूली परेशानी का सूचक हो सकता है।

ताश के पत्ते : सपने में यदि आप मित्रमंडली एवं परिचितों के साथ ताश खेल रहे हैं तो आपकी योजनाएं सफल हो सकती हैं। यदि आप ताश के माध्यम से

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जुआ खेल रहे हैं तो आर्थिक संकट हो सकता है। यदि आप हार रहे हों तो समझो एक दुश्मन तैयार हो रहा है। यदि जीत रहे हैं तो आर्थिक स्थिति सुधर सकती है। आपके हाथ में यदि लाल पान के पत्ते हैं तो आनन्द तथा प्रियजनों की निष्ठा, यदि चिड़ी के पत्ते देखते हैं तो मित्रों के साथ छोटी बात पर झड़प, यदि हुकुम के पत्ते हैं तो बुरी खबर और ईंट के पत्ते हैं तो धन एवं समृद्धि की प्राप्ति का संकेत हो सकता है।

हीरे जवाहरात : सपने में आपको कोई बहुमूल्य जवाहरात के जेवर भेंट कर रहा है तो यह अच्छे सुखी दाम्पत्य जीवन की निशानी है। मात्र हीरे जवाहरात के जेवर देखना उच्च अभिलाषाओं का सूचक है। टूटे-फूटे जवाहरात भावी निराशा की ओर संकेत करते हैं। बुरी दशा में जवाहरात एवं जेवर देखने से व्यापार में परेशानी हो सकती है।

बाल : किसी सुन्दरी के केश-पाश का स्वप्न में दर्शन, चुम्बन करने से प्रेमिका-मिलन होता है। बाल काटते दिखें तो भारी खर्च सामने आ सकता है। आप कंघी कर रहे हैं तो आपकी शाही खर्ची आपको मुसीबत में डाल सकती है। लाल बालों का सपना परिवर्तन की इच्छा, उलझे बाल धन एवं परिवार संबंधी उलझनों की ओर इशारा करते हैं।

हाथ : सपने में यदि आप हाथ में हाथ डाले खड़े हैं तो यह भावनात्मक तनाव का द्योतक हो सकता है। खूबसूरत हाथ देख रहे हैं तो निकट भविष्य में भारी सम्मान, प्रतिष्ठा, बंधे हुए हाथ अत्यधिक आत्मसंयम प्रतिबंध एवं रोकथाम, गंदे या खून से सने हाथ, ईर्ष्या, सूचक है। शरीर से अलग हाथ देखना परिवारजनों एवं मित्रों से मतभेद के सूचक माने जाते हैं।

घास : सपने में हरी-भरी घास के लॉन का दृश्य बड़े सुखद मिलन या भेंट का द्योतक है। सुन्दर घास के कालीन का दृश्य इच्छापूर्ति करता है स्वप्न देखने वाला घास को कुचलता दिखता है तो इच्छापूर्ति में कई अवरोध हो सकते हैं।

द्वीप-दर्शन : घास की तरह द्वीप दर्शन की भी स्वप्न शास्त्र में विशेष महत्ता है। द्वीप निर्बाध स्वतंत्र प्रवृत्ति के प्रतीक होते हैं। आम दुनिया से अलग एक नवीन जीवन, अलग जीवन की इच्छा के प्रतीक। सपने में आपने एक द्वीप देखा तो खुशी और आराम के दिन करीब होने की संभावना है। अगर द्वीप पर भारी भीड़ या लोग हैं तो हो सकता है कि आप पर अकेलापन हावी है और आप साथियों समाज समुदाय की तलाश में है। द्वीपदर्शन के संदर्भ में अगर आप दुश्मनों से भाग कर द्वीप में शरण लेने को तत्पर हैं तो हो सकता है आप वर्तमान से भागने की प्रवृत्ति के शिकार हैं।

घोड़े : श्वेत पंखों वाले घोड़े पर अगर आप सपने में सवार हैं तो समझें आप समृद्धि की ओर बढ़ रहे हैं। सफेद घोड़े का सपना समृद्धि का सूचक है। काला घोड़ा धोखे की स्थिति, दूर भागता घोड़ा देखें तो अपनी पूंजी के दुरूपयोग से बचें।

आग :सपनों में आग का दर्शन सामान्यतया शुभ होता है। यदि स्वप्न में आपका घर जल रहा हो तो घर में सुख समृद्धि एवं आनन्द, दुकान या व्यापार के केन्द्र जलता देखे तो समृद्धि विशाल क्षेत्र में आग सौभाग्य का सूचक माना जाता है। आग के पश्चात् खंडहर या भग्नावशेष कई समस्याओं की ओर संकेत देता है। साथ ही नवीन उद्योग धंधे के आरंभ की सूचना भी है।

अस्वस्थ : अपने सिवाय अन्य किसी को अस्वस्थ देखने से कष्ट होता है। स्वयं को अस्वस्थ देखने से प्रसन्नता होती है। जी.एच. मिलन के मत से स्वप्न में स्वयं अपने को अस्वस्थ देखने से कुटुम्बियों के साथ मेल-मिलाप बढ़ता है एवं एक मास के बाद स्वप्नदृष्टा को कुछ शारीरिक कष्ट होता है तथा अन्य को अस्वस्थ देखने से दृष्टा शीघ्र रोगी होता है। डॉ. सी.जी. हिटवे के मतानुसार अपने को अस्वस्थ देखने से दृष्टा शीघ्र सुखी होता है और दूसरे को अस्वस्थ देखने से विपत्ति आती है सुकरात के सिद्धांतानुसार अपने को अस्वस्थ देखना निरोग सूचक और दूसरे को अस्वस्थ देखना पुत्र-मित्रादि के रोग को प्रकट करने वाला होता है।

आवाज : स्वप्न में किसी विचित्र आवाज को स्वयं सुनने से अशुभ संदेश सुनने को मिलता है। यदि स्वप्न की आवाज सुनकर निद्रा-भंग हो जाती है तो सारे कार्यों में परिवर्तन होने की संभावना होती है। अन्य किसी की आवाज सुनते हुए देखने से पुत्र और स्त्री को कष्ट होता है तथा अपने अति निकट कुटुम्बियों की आवाज सुनते हुए देखने से किसी आत्मीय की मृत्यु प्रकट होती है। डॉ. जी.एच. मिलर के मत से आवाज सुनना भ्रम का द्योतक है।

ऊपर : यदि स्वप्न में कोई चीज अपने ऊपर लटकी हुई दिखाई पड़े और उसके गिरने का संदेह हो तो शत्रुओं द्वारा धोखा होता है। ऊपर गिर जाने से धन नाश होता है, यदि ऊपर न गिरकर पास में गिरती है तो धन हानि के साथ स्त्री-पत्र एवं अन्य कुटुम्बियों को कष्ट होता है। जी.एच. मिलर के मत से किसी भी वस्तु का ऊपर से गिरना धननाशकारक है। डॉ. सी.जे. हिटवे के मत से किसी वस्तु के ऊपर गिरने से तथा गिरकर चोट लगने से मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

मृत्यु : मृत्यु देखने से किसी आत्मीय की मृत्यु होती है किन्तु जिस व्यक्ति की मृत्यु देखी गई है उसका कल्याण होता है। मृत्यु का दृश्य देखना मरते हुए व्यक्ति की

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

छटपटाहट देखना अशुभ सूचक है। किसी सवारी से नीचे उतरते ही मृत्यु देखना राजनीति में पराजय सूचक है। सवारी के ऊपर चढ़कर ऊंचा उठना तथा किसी पहाड़ पर ऊंचा चढ़ना भी शुभफल सूचक होता है।

युद्ध : स्वप्न में युद्ध का दृश्य देखना, युद्ध से भयभीत होना, मारकाट में भाग लेना तथा अपने को युद्ध में मृत देखना जीवन में पराजय का सूचक है। उस प्रकार का स्वप्न देखने से सभी क्षेत्रों में असफलता मिलती है। जो व्यक्ति युद्ध में अपनी मृत्यु देखता है उसे कष्ट सहने पड़ते हैं तथा प्रेम में असफल होता है। जिससे वह प्रेम करता है उसकी ओर से ठुकराया जाता है। युद्ध में विजय देखना सफल प्रेम का सूचक है। जिस प्रेमिका या प्रेमी को व्यक्ति चाहता है वह सरलता पूर्व प्राप्त होता है। नग्न होकर युद्ध करते हुए देखने से नृत्य में सफलता मिलती है। अनेक स्थानों पर भोजन करने का निमंत्रण मिलता है। यदि कोई व्यक्ति इसी सवारी पर आरूढ़ होकर रणभूमि में जाता हुआ दृष्टिगोचर हो तो इस प्रकार के स्वप्न के देखने से जीवन में अनेक सफलता मिलती है।

पाश्चात्य ज्योतिषियों के मत से स्वप्न में किसी के हाथ से केला छीनकर खाना, कनेर के फूल तोड़ना, खिलाड़ियों के मल्लयुद्ध को देखना तथा उस युद्ध में किसी की मृत्यु का दर्शन करना, घड़ी के घण्टों की आवाज सुनना तथा किसी के हाथ से घड़ी को गिरते हुए देखना या अपने हाथ से घड़ी का गिरना देखना, स्वप्न में किसी भयंकर आवाज का सुनना, दक्षिण दिशा की ओर नग्न होकर गमन करते हुए देखना एक मास की आयु का कारण बताया है। डॉ. जी.एच. मिलर ने मरण सूचक स्वप्नों का निरूपण करते हुए बताया है कि जिन स्वप्नों में अबाधभावानानुसंग से व्यक्ति की शारीरिक शक्ति का ह्रास प्रगट हो और इन्द्रियां शक्तिहीन मालूम पड़े। वे स्वप्न स्वस्थ व्यक्ति को रोगसूचक और रोगी को मरणसूचक हैं।

डॉ. सी.जे. हिटवे ने मरण सूचक स्वप्नों का कथन करते हुए बताया है कि स्वप्न में ऊपर से नीचे गिरना, कनेर पुष्प का भक्षण करना, भयंकर आवाज सुनना या करना, किसी को रोते हुए देखना, कान, नाक और आंख-इन अंगों का विकृत होना, किसी प्रेमिका द्वारा तिरस्कृत होना, चाय पीते हुए अपने को देखना या अन्य पुरूषों को चाय गिराते हुए देखना एवं छछूंदर के साथ क्रीड़ा करते हुए देखना-ये स्वप्न एक मास के मरण के सूचक हैं। विवलोनियन और पृथग् गोरियन इन सिद्धांतों के अनुसार स्वप्न में भोजन करना, वमन और दस्त होना, मल-मूत्र और सोना-चांदी का वमन, रूधिर भक्षण करना या रूधिर वमन

करना, अन्धकारपूर्ण गर्त में गिरना, गर्त में गिर कर उठने का प्रयत्न करने पर भी उठने में असमर्थ होना, दीपक या बिजली को बुझते हुए देखना, घी, तेल और शराब की शरीर में मालिश करना एवं किसी वृक्ष या लता की लड़ से गिरना, देखने से कुछ ही महीनों में मरण होता है।

पाश्चात्य कविताओं में स्वप्न :

स्वप्न में हीरा देखना बहुत सौभाग्यसूचक माना जाता है। टॉलमी का कहना है-

"Dreaming of diamond oh Lover,
thy wife will be a diamond to thee. very precious right happy thou shall be.
Man of commerce, if thou dreamest of diamonds,
great quantities of gold will role into thy lap.
Seamen and sailors, dream away about diamonds,
For it be tokens to your great good.
Barrern women dream of diamonds, and children thou shalt have good ones too."

स्वप्न में प्रज्ज्वलित अग्नि देखना सौभाग्यसूचक माना जाता है। प्राचीन पाश्चात्य स्वप्नविशेषज्ञ का मानना है-

Thou hast dreamed of fire, hast you? why, thou had a lucky dream.
It betokens for thy health and great happiness,
kind relationsa and warm friends.
A nd if a young dame or hind, or lady should thus dreams.
Then that for which you sign for, crave and weep for,
marriage shall be yours.

स्वप्न में फकीरी अथवा प्रतिकूल परिस्थितियां देखने से समृद्धि में वृद्धि होती है। अंग्रेजी कविता में इसका उल्लेख इस प्रकार है।

"content and happy may they be,
who dream of cold adversity.
To married man and married wife
It promises a happy life.
With many children, many friends
While to others, it portends
Success in love, success in trade.
A husband to the blooming maid.
The farmer may expect each field

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

A full abundent crop to yield.
The hardy sailor is sure to find
On his next voyage a favourable wind,
And all will surely happy be
And dream of cold adversity."

स्वप्न में मेढ़क देखना प्रेमियों के लिए शुभ शकुन है।

He or she who dreams of frogs,
Most certainly shall find,
Miaden sweet or swain most dear,
Each suited to the mind
A wedding gay is coming soon
Then oh then! for honey moon!

स्वप्न में मधुमक्खियों को देखें तो वह अपने परिश्रम से जीवन में सफलता प्राप्त करेगा। धनवान व्यक्ति स्वप्न में मधुमक्खियां देखे तो उनकी समृद्धि और मान-सम्मान में और अधिक वृद्धि होती है-

To dream of bees is a rare, good sign.
For wealth and great pleasure shall be thine.
Free shalt thou be from poverty's pain.
All things tending to give the gain.
Look forward with joy to this blest state
of honour and peace, and riches great
Work on hope on tursting in heaven.
And all this good to thee shall be given.
Thy wife shall become a fruitful vine,
children around thee in virtue shall shipne,
The life shall pass unmingled with care,
Thy dreaming of bees denotes such fare."

स्वप्न में हाथी दांत देखने से समृद्धि में वृद्धि होती है। कुमारी कन्याओं के लिए उसका फल इस प्रकार है-

Delighted may the maiden be,
When even she dreams of ivory,
A rare good sign, it is sure to prove.
Of faithful and abiding love,
With one well-suited to her mind,
A husband tender, loving kind.
Rich in estate, they will be one
Loving at first they will be crowned with joys.
And round their table girls and boys

Yes, all this bliss will sure to be
To those who dream of ivory!"

स्वप्न में धूमकेतू (पुच्छल तारा) देखना संसार में उथल-पुथल, अराजकता, महायुद्ध आदि का परिचायक है। व्यक्तिगत रूप से इस स्वप्न को देखना जातक को अवनति की उपत्ययका में धकेल देता है, इस संबंध में टॉलमी का मानना है-

"I never dreamed of comet,
but it protended great calamity
among the nations as war,
famine and plague and even cold blooded murder.
All persons, after such a dream may look for misfortune.
It signifies descent from evey situation to a lower."

ड्रिम डिक्शनरी(Dream's dictionary) **में स्वप्न**

'Dream's dictionary'में विभिन्न स्वप्नों के विभिन्न अर्थ बताये गए हैं, वे निम्नांकित हैं-'

Actor	: Watch out, a surrounding enemy.
Agony (seeing oneself agonizing)	: Good health, this dream is interpreted by law of Opposites.
Airoplane	: Spiritual advance.
Airoplane that falls	: Spiritual fall, to lost the way
Ambush	: Treason.
Angel	: It represents prosperity.
Ant	: Patience, forecast.
Army, in favour of one's self	: Divine law in favour. see police.
Arrows	: Pains and misfortunes.
Attack, by an animal in general	: Enemies.
Axe	: Distruction.
Born	: Poverty. It is interpreted by law of opposites.
Bat	: Black magic.
Bee	: They represent the labour
Bees, working	: The person is being informed not to waste time in any important aspect of life. work on this aspect is a must.
Bicycle	: It represents spiritual balance

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

Bird, plying : It foretells a trip by water.
Boat : Somebody will leave, work in alchemy
Bear, wild : Low passions.
Body, to see it tangled : Calumnies, gadgets.
Book, given by Masters : Future wisdom will be received.
Broom : You must eliminate your defects. Internal cleaning.
Bull, attacking : Enemies.
Bull, white : venerable master.
Bullet : Bad thought
Baying, to see one's self : Gain
Cage with a bird in, : with a bird in it means freedom and without bird it mean prison
Camel : Trip by earth, wealth,
Candy, to see one's self eating Bitterness according to the amount of sweet eaten. Remember that a dreams that foretells some painful situation is a warning of what could of happen, but this can be changed by doing a cosmic business.
Cane, a broken one : Illusion or lost hope,
Car, driving one and sudden turned off; : spiritual danger.
Castle : spiritual ascents, symptom of spiritual work
Cat that attacks : treason of husband, wife or close person.
Celebration : It represents tragedies.
Chains (to drag them) : Melancholy.
chains (to break them) : Happy event.
Clock (or watch) : work with kabblah (this dream is due tointerpret with symbology of numbers) Also it can symbolize the time.
Cloud : Opaque mind.
Cockroaches : Head full of idiot ideas.
Coffin : family mourning also, this could be related to an immediate change concerning some stuff in life.
Colours : they must be applied in general to all the dreams
Yellow : work with the christ

Blue : Love white: purity
Purple : Maximum spirituality
Black : Maxim negativity
DarkMediocre state; Red : Passion
Green : Hope
Cold : Desperation, problems.
Cow, attacking : Enemies.
Cow, a tame one : Divine mother.
Cow, a black one that attacks : black magic
Criminals : Misfortune, pains.
Remember that a dream that foretells some painful situation is a warning of what could of her but this can be changed by doing a cosmic business
Crow : Death, deception and deceit.
Cyclone : Catastropne.
Dead, to see one's self : death of some,
Defect : Good in the psychological aspect.
Desert : Loss, initiation way.
Dog, wolf : karma or punishment that are going to be paid.
Dog, a friendly one : sincere. friendship.
Dog that attacks : : Dog, attacking a betrayal of a friend. If the dog is big it is a close friend. It is bites the traitor hurt.
Donkey : It represents the mint.
Dragged by water current : It foretells a spiritual failure.
Dress with rages, to see one's self : Spiritually bad.
Dung : Menetary aid. you will receive money, according to the amount of excrement that you I dreamed of.
Eagle : It represents the Holy Ghost.
Eagle (flying upward) : happy event
Eagle (Plunging) : unfortunate event.
Eagle, Wounded : Rain.
Eagle, dead : Total ruin
Eggs, to see one's self carrying or chickens hatching out : internal birth
Elderly man : It represents wisdom and comprehension

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

Elephant : conscience to wake up.
Excrement : monetary help You will receive money, according to the amount of excrement that you had dreamed of.
Eye : Divine monitoring
Flood plain : Accident, problems.
Flower, yellow : symbol of danger.
Flowers, to see one's self seeding conquest of virtues. Flying, to see one's self. Spiritual profits. Fire problems, ties, tangles, mess.
Fire, from a torch : conscience must wake up.
Fire, that falls from the sky : Punishment.
Fish, served on a plate : abundance of food.
Fishing : Ministry To dream of one's self Fishing is an order from the ral bing of gigging: God wisdom of others.
Fishing alive fish : physical vitality.
Fisherman : Symbol of ministry, preaching
Fleas that sting : Critics.
Garden : Spiritual happiness.
Garlic : Revelation of some secret.
Hair of a woman, pulling out : preoccupation.
Hat : immediate trip.
Hen : It represents the cowardice, the shyness.
Hen Laying eggs : Benefits.
Hen that clucks : misfortunes.
Horse : physical body
Horse, runway : walking badly in the spiritual way
The real one cannot dominate the horse, to fall from : to last the footpath
Hot, to feel/be much : Desperation. problems.
House in general : Physical body.
House with holes in the ceiling : Bad thoughts.
Island : A close person will leave you.
Jail : Karma or pushishment to pay
Killing people. : Elimination of defects.
Lamb : It symbolizes the internal christ.
Lamp : Wisdom, the way

Lamp, Culled : premature old age.
Lemon : Misfortunes, adversities
Leon that attacks : Karma to pay.
Leon, to play with : Not to have Karma at the moment.
Leon, to see it : to speak with a high personge.
Leopard : Joy and sadness in a row
Letters : Good news.
Light : It represents faithfull friendship
Locomotive, electric or steam : A great trip.
Mirror : Treason, deceit
Money, to find : sadness. It is interpreted by law of opposites.
Money, to lose : Happy business. It is interpreted by law of opposites
Moon : Selves, depects. The sun represents the conscience.
Mountain, steep : You must climb towards the goal.
Mountain in flames : enemies.
Mud, walking on : suffering, pain, bitterness, diseases
Mule : Involution, spiritually bad.
Naked, to see one's self : Economic misery, Omen of economical karma.
Naked among people, to see one's self: innocence. some painful situation
Owl : black magic, withcraft, spells.
Ox : Fight tenacity, it is necessary to work spiritually.
Ox, a fat one : Abundance, tranquillity.
Ox, a skinny one : Scareceness.
Ox, working with : Tranquillity.
Palm : Triumph. The palms that are used in easter.
Parrot : Gossips, Gadgests
Peacock : It symbolizes pride.
Pheasant : Signal that the internal God pronounces itself.
Pig. : It symbolized the fornication.
Plain, Flood Accident : Problems.

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

Police : If you dream of police (that represents the authority) and they are not in favour, this show that a karma or punishment is coming up, because of the bad deeds in this or previous live's Analogous, to dream of police of army defending to you or in favour during the dream, means God is taking care of you and that divine law is in favour of yours. See law of karma for more details.
Rain, bathing under : Tears, pain.
Rainbow : Alliance.
Rice : It represents abundance.
Rider : The intimate one, The real being within each one.
Ring : It represents a commitment.
Road with flowers, to wee one's self in : Good roads ahead.
Road, to see one's self in a bad one : Problems in the path.
Sandals : Humility
Scale : Scale represents the law of karma. Seepage related.
Scorpion that attacks : A stral larvae. You must clean your vital body.
Seagull : Long and safe trips Separation, distance
Seed : Birth.
Shoe, only one : Bad in the spiritual part.
Shoes, old : Spiritually bad.
Soap : Cleaning.
Stairs : Initiation way. It represents the way towards God.
Stairs, to get up : spiritual ascents
Stairs, to get down : loss, to fall in disease
Stars : Divine intelligence is working in favour.
Stars, black ones : Failure for the dreamer.
Star (If it falls over somebody or near a very important person : it is the omen that personage will die.
Stork : internal birth.
Sun : Intimate, the real being within each one.
Sunset at the east : something must be born spiritually.
Swimming, against water : There will be obstacles in everything you try to do.

Scissors, to see one's self with and old pair : Gadgets, calumnies.
Swan : holy Ghost.
Sweet, eating : Bitterness, Painful situaiton
Teeth, falling out : spiritual tragedy. diseases
Thorns : will of christ, pains and sufferings.
Tiger that attacks : treason.
Tiger, defending us : A friend stands up for us.
Tomatoes, eating : Physical pain.
Tooth, pain : Diseases.
Train : A great trip
Tree, pulled up by the root : somebody will fall spiritually but he/she will not be able to raise.
Tree, Pomegranate one : It represents friendship, predicts a happy agreement at home, etc.
Tree, a leafy one : Approach with the God or inner master, protection of God.
Tree, small : Not much life.
Turtle : spiritual slowness.
Wanderers : Divine aid conjugal happiness. If the wanderer leaves the house it is misfortune
Wasp, being pricked by one : Sorrow.
Watch (or clock) : Work with kabbalah (this dream is due to interpret with symbology of numbers).A lso it can symbolize the time.
Water, to drink hot weater : disease or accident.
water, crystalline : Good health, "To bath in a crystalline lake", for example, could mean good health.
Water, stagnant water : Accumulated energy.
Water, to drink fresh water : fortune.
Water, dirty : Diseases. To bath with dirty water means your getting sick.
Water, flood of : Accident.
Water , bathing in clean water : Health.
Water, black : Dangers.
Water currents, swimming against : There will be obstacles in everything you try to do. testing times.

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

Wedding party or ceremony	:	Death it is interpreted by law of opposites. See example above.
White sheet	:	divine protection see example naked,dreaming of being'.
Whip	:	God's will through us.
Vulture	:	Death
Viper that attacks us	:	If we killed it, it is a danger abolished in the Physical body. If she is tame there is no problem, because it symbolizes the divine mother.

Dream interpretation : Trees

Trees-To see lush green trees in your dream, symbolize new hopes, growth, desires, knowledge and life. It also implies strength, protection and stability. You are concentrating on your own self –development and individuation. To dream that you are climbing a tree, signifies that you are achieve your carrier goals and reach those high places in society. The degree of difficulty to which you climb the tree will measure the speed of your achievment of these goals. To dream that you cut down a tree, signifies that you are wasting your energy, time and money on foolish pursuits.Alternatively. To see a falling tree in your dream. indicate that you are off balance and out of sync. You are off track and headed in a wrong direction .

Adler tree-To see an adler tree in your dream, symbolizes joys and happiness.

Bay tree- To see a bay tree in your dream, symbolizes immortality, longevity, resurrection, success, and victory. If the bay tree is located in you garden, then it represents protection. You may be seeking refuge from your emotions.

Bayonet- To hear or play a bayonet in your dream, suggests that you need to stand up and fight for your beliefs. Do not give up!

Beach- To see the beach in your dream, symbolizes the meeting between your two states of mind. The stand is symbolic of the rational and mental process while the water signifies the irrational, unsteady and emotional aspects of your self. It is a place of transition between the physical/material and the spiritual.

Beech-To see a beach tree in your dream, symbolizes intellect, learning and wisdom. Pay attention to the message in your dream as you will learn something important from it. Alternatively, it represents death.

Birch- To see a birch tree in your dream, indicates self punishments or guilt issues.

Chestnut tree- To see a chestnut tree in your dream, represents strength and good health.

Eucalyptus- To see a eucalyptus in your dream, represents protection and the need to feel protected. It may also signify some sticky situation.

Evergreen-To see evergreen trees in your dream, signifies wealth, happiness. Immortality, high aspiration and knowledge. The dream represents the cycle of life and may be trying to offer you hope in the midst of despair. Alternatively the dream may be a metaphor to be{ever green} as in to be more enviromentally conscious.

Oak tree- To see an oak tree in your dream , symbolizes longevity, stability, strength . Tolerance, wisdom and prosperity .It may also mean that you have built a solid foundation for your success in some endeavor.

Palm tree- To see palm trees in your dream, represents tranquility, high aspiration, fame, victory hopes and longevity.

Pear tree-To see a pear tree in your dream, represents new oppportunities.

Pine tree-To see a pine cone in your dream, symbolizes wealth and good fortune. The dream could also be a pun on pining for something or someone.

Dream interpretation: Animals

Alligator-It is a dream of caution. Primordial fear. Be careful in making new speculations. It is a dream unfavourable to all persons connected to it.

Ants- Expect good business activity. Feelings of general satisfaction in all things. You must cooperate to achieve your desires.

Ape- Warns the dreamer to beware. Deceit goes with his dreams.

Ass- Simplicity and sturdiness. Success in your undertakings, whether of travel or love. Surrounded by loyal friends.

Bat- Nocturnal, Eerie, Qarrels, Sorrows and calamities from hosts of evil work against you.

Bear- Victory over enemies. Bear is significant of over whelming competition in pursuits of every kind.

Bees-Activity. Productivity. Social life. Happiness in life. Success in love. Good earnings. Bees signify pleasant and profitable engagements.

Birds- Flying birds are the prosperity to the dreamer. Feelings of freedom, liberations from weight of responsibilities.

Boa- It indicates stormy times and bad fortune. Will be wise not to listen and flaterry.

Buffalo-Augurs obstinate and powerful but stupid enemies. By diplomacy you will escape much misfortune.

Bull- Fertility and strength. To dream about bulls means having great success in love affairs but also business troubles or a big loss and good fortune. An absent friend will soon return.

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

Owl- Warning of the approach of a deceitful person. It denotes a narrow escape from desperate illness or death.

Oysters- You can be tender inside but hard outside. You need courage to succeed in life.

Panther- Wild beauty and grace. Enemies will fail in attempt to injure you .

Parrot- You have confidence of friends, but will received flattery from a deceitful person. There is a place in your life where you lack originality.

Peacock- You want to admired but will be disapointed. Maybe you are to ambitious.

Pig- Greedy but smart. Dreaming about them denotes reasonable success in affairs. Prosperity to come.

Pigeon- To dream of seeing piegon flying, denotes freedom from misunderstanding, and perhaps news from the absent.

Quail- To see them alive means a very favourable omen;if dead, you will under go serious ill luck.

Rabbit- To dream of rabbits denotes faithfulness in love and a great friendship. Very good business ventures.

Rat- Street smarts. Sneaky and untrustworthy. They foretell serious trouble to come but unfinished buisness will be successful.

Raven- Disaster and unhappiness to come. Injury caused through deceit.

Reptile- People are gossiping against you and beware of hidden enemies. Need to be cautious in business affairs.

Rhinoceros- To dream about them, foretells you will have a great loss threatning you and that you will have secret troubles.

Salmon- It could mean advancement with in own position approaching money but beware of a rival.

Sardines- Trouble are ahead for you, may be a disagreement among relative. you have a black mark of dishonour on you .

Scorpion- They are related with this destructive feelings thoughts or words against you.

Seal- You have many faithful friends and security in love. Secret enemies are working against you .

Shark- There is a powerful feelings threatening you, but you will overcome obstacle.

Butterflies- Everything related to beauty and grace. They are an indication of prosperity and fair attainments.

Camel- Portraits of an endurance. To see this beast signifies great financial gain, perhaps inheritance. First there will be hardship and obstacle to overcome.

Canary-A dream of having a canary at home translates into a happy and comfortable life full of exquisite refinement, wealth and satisfying friendship.

Cat-A feminine aspect. Cats attacking you represent the enemies,If you succeed banishing them you will over come great obstacles and rise in fortune and fame.

Chicken- Easy available. They represents fortune in love, joy and happiness in all aspects of your life.

Clams- Dealings with an obstinate but honest person.Will enjoy a comfortable life.

Cock-A dream about hearing a cockcrow means great prosperity and good news. Cocks fighting means family quarrels and unexpected sorrow.

Cow- Docile and productive. Great prosperity in all ventures but watch out your own affairs carefully. Cows promise abundant fulfilment of hopes and desires.

Coyote- Trickster. Rogue. Thief. This means doomed for disappointment or serious disaster ahead.

Crab- Crabs relate to love affairs. This means portends to lovers a long and difficults courtships. Also, avoid rivals.

Cricket- To see crickets in your dream indicates hard struggles with poverty. They also indicates famine and distress among the poor.

Crow- Seeing a crow in your dream means disappointment in everything. Grief and misfortune.

Deer- Everything related to a deer is favourable .A long lasting friendship, good business affairs and fortune in love.

Dog- To dream about a dog that fondles you indicates great gain and constant friends. To hear the barking of dogs foretells news of a depressioning nature. Difficulties are more likely to follow.

Donkey – See Ass.

Duck-It signifies fortunate journeys, also they could indicate thrift and a fine harvest . It also denotes marriage and children in a new home.

Eagle- They are associated with far-sighted vision and power. You will realize your ambitions and will gain your desires. Fame, wealth and a higher position are attainable.

Eel- Slipperiness.A dream about them is good only, if you can maintain a grip on it otherwise fortune will be fleeting.

Elephant- They are associated with terms like wisdom, memory and the power of persistence. Overall is a very positive dream that will bring you dignity and distinction.

Fish- To dream about fish or fishing denotes energy and economy.A fish in clear water expresses freedom related with your feelings.

Fleas- They denote sickness and minor irritations. You are feeling the need to deal with old troubles also.

Flies- You are feeling annoyed by friends and maybe thinking of doing something foolish. There is a postponement of success.

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

Fox- To dream about a fox means that an enemy or rival is among your acquaintances. If the dream involves the killing of a fox you will overcome a threat of trouble and will win in every engagement.
Frog– They are related with health problems and may cause no little distress among those of your family.
Gazelle- Grace and beauty. Dreaming about them brings joy, genuine love and affection.
Geese- They might bring an extensive journey surround by good fortune.
Goats- They are associated with lusty vigor and relentless energy.It denotes cautions dealings and a steady increase of wealth.
Goldfish- To dream of goldfish, is a prognostic of many successful and pleasant adventures.
Gorilla- You will regain your strength but there will be a postponement of success.
Hawk- Generally a dream of hawks means increase in your fortune but if the hawk is flying you could face losses caused through intrigue.
Hogs- If you dream about feeding hogs, denotes and increase in your personal belongings, but will have much rough work to perform.
Horse- To dream about horses generally is associated with big earning and will enjoy prosperous and happy life.
Insects- Overall a dream of insects denotes financial gains, abundant means, and also a mystery will be solved.
Jellyfish-A dream of jellyfish is associated with passive agression in you and the way you are looking to express yourself more forcefully. Donot give away your heart.
Kangaroo- Hostility of someone will cause great anxiety. You need exercise great care of reputation.
Lamb- It means that prosperity will be gained through the sacrifice of pleasure and contentment. Lasting friendship.
Leech- To dream of leeches, foretells that enemies will run over your interests. Doomed for disappointment.
Leopard- Enemies seek to cause injury but will fail. You will be embarrasded in business or love, but by persistent efforts you will overcome difficulties.
Lice-A dream of lice contains worries and distress.A warning to beware how you begin a new enterprise, as you will likely be overtaken by disappontment.
Lizard- Enemies will cause you injury, but if in the dream you are killing a lizard means you will have a good reputation and will regain lost fortune.
Lobster- To dream of seeing lobsters, denotes great favours and riches will endow you.

Mice- They foretell domestic troubles and business affairs will assume a discouraging tone.
Mollusk – Mysterious happinings will claim your attention, therefore do not believe too readily all you hear.
Monkey- To dream of monkey, denotes you have deceitful friends that will flatter you to advance their own interest.
Mosquito- If you killed mosquitoes in your dreams, you will eventually overcome obstacles and enjoy fortune and domestic bliss, otherwise you will strive in vain to the sly attacks of secret enemies.
Octopus- There are associated with shyness and grasping. You will be loved for your sweetness of disposition.
Orangutan- To dream of an orangutan, denotes that some person is falsely using your influence to further selfish schemes.
Otter- To see them diving and sporting will bring you happiness.
Sheep-A dream about sheep foretells coming success through well-conceived plans.
Snake-A snake ready to strike means treachery from one you least expected; killing it means victory over enemies.
Spider- To dream of a spider, denotes you being carefull and energetic in your labors and fortune will be amassed to pleasing proportions. Domestic happiness
Squirrel- To see squirrels in your dream foretell you will acquire a few new friends and there is happiness in the home.
Swan- To dream of seeing swans holds prosperous outlooks and delightful experiences. Also they ring good health and revelation of a mystery.
Tarantula- To dream you see a tarantula, denotes disagreeable prospect for good health or for pleasure. Will be dissapointed in a love affair.
Tiger- They are associated with power, wild beauty and intense sexual force. You will overcome opposition and rise to a high position in your way to enjoy luxuries with ease and pleasure.
Turtle- Opportunity for advancement is available to you. You have secret enemies around .
Vulture- To dream of vultures, signifies that you are unable to reconcile misunderstandings with a friend and may be a long illness that may bring death and misery.
Whale- They are related with power and strength. Good times are coming. There is a great truth and you are ready to accept.

The color in your dream

Beige- Everything related with this color denotes neutrality and detachment. There is absence of communication.
Black- Black signifies isolation and transition period. It shows up conflicts and frictions with relations and friends.

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

Blue- This dream denotes a great source of inner peace and a symbol of contentment.
Brown- This is an auspicious color to dream about :signifies freedom, success money and happy and long lasting union.
Gray- Related with a transitionperiod. If clear signifies peace but if dull signifies, fear.
Green- Growth and serenity. There are projects which you are enthusiastic about. Great pleasures from simple things.
Orange- The color orange in dreams indicates passion in every aspect of your life.
Pink- Associated with tenderness and love. You can expect interesting developments in relation with opposite sex.
Purple- Great aspirations and understandings of visible and invisible realms. Take advantage of your creativity.
Red- This is an indication of great passion and sensitivity in your emotional relationships.
Turquoise- Normally indicates new opportunities and the successful competition of projects. Sign of good and luck.
White- People feel they carle on you. You have an abundance of energy and vitality.
Yellow- This color is a sign of confidence in yourself and your abilities but will encounter opposition.

Body parts in your dreams and what do they mean

Ankle- Support and direction difficulties followed by success later.A friend is trying to help you secretly.
Anus- Elimination. It portends quarrels, dissapointments and disagreeble companions.
Arm- Strength . To dream of seeing an arm means victory over enemies but family quarrels.
Back- Unconscious. jealous people are against you.
Blood- Essense. Life energy. Unfortunate love affairs. Serve disappointment.
Bones- Structure. Evidence. Support. Poverty and death.
Brain- Intellect. Mind and reason. Great knowledge will bring good result in affairs.
Breast- Female sexuality and metarnal love. You will have true and loyal friendship and success in love.
Buttocks- Humility and stupidity. Also power. You need to forgive someone.
Cheeks– Long life. Good health.Will be love very much.
Chest- Fullness of life. Generosity. You are having a peaceful time and general prosperity.

Ear- Receptivity. Trouble from unexpected source but big success with an intimate friend.
Eye-Vision. Consciousness and clarity. You will have a pleasant and profitable business and a congenial.
Eyelashes- Protection of vision. Allure. You are being cheated by friends. Postponement of success.
Face- Identity. Ego. Self image This dream denotes displeasure with yourself and warnings of someone working secretly against you.
Finger- Senstivity and awareness. It denotes great spiritual research and restless efforts to reach the pinnacle of your ambitions.
Fingernails-Glamorous and functional. You feel ready to handle undesirable situations and to avoid ambitious plans beyond power to accomplish.
Foot- Basic beliefs. Direction in life. You should mend your ways in life otherwise you will suffer from your foolishness.
Hair- Attraction and sensuality. If you dream of hair means that you are careless in your personal affairs and will lose advancement by neglecting mental application.
Hand-Capacity and competence. Expect big work ahead, mean while must take better care of own affairs.
Head- Intellect. Understandings. It denotes threatened misery and loss that will be avoided by wise action.
Heart- Love and security. Happy love affairs and successful futures . Dignity and Distinction.
Hips- To dream about hips denotes pleasant work and good news. Hip being injured means misplace confidence in mate and large losses to the family.
Intestines- They signified unfavourable results in own affairs, probably loss with much displeasure and quarrels.
Jaw- Relentless anger. Willpower. You have conquered initial difficulties but you are having disagreement with lover.
Joint- Connection. Joints are associated with favourable things. Happiness and domestic joys. Change for better and plenty of money.
Knee- Flexibility. Humility. To dreams of knees denotes sickness and Humiliation. It also mean dissatisfaction and complaints of those in the home and separation of lovers.
Leg- Is associated with support and movement. Joy and happiness but an injured leg denotes unprofitable occupation.
Lips- Message. Communication. You have many advantages and will have mastery over many matters.
Liver- Sluggishness and bad feelings. This dream denotes unpleasant times and inability to attain comfort that are necessary to those looking to you subsistence .

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

Lungs- You need to find in what ways are you ready to expand outside your normal life because up to now there was only disapointment in desires.
Mouth- Nourishment. New attitudes. You will soon have news from intersts you are anxious over.
Muscles- Strength. You have the power to overcome emotional sorrow but beware of new friendship.
Neck- To dream about any neck denotes your presents feelings of jealously and resentment. It involves emotional problems involving a friend or relative.
Nose- Instinctive knowledge. It reflect great powers of imagination and creativity, but also difficult relations with a partner.
Penis- Male sexuality. Power. You have lots of energy to spare and now would be a good time to take action on a project you have been planning for sometime.
Shoulder- Strengths or burdens. Although you may be cheerful at the moment, there are problems and worries around the corner .Fortunatility they will resolve themselves.
Skelton- Internal structure. Support. You feel disconnected or falling aparts in your life. It can also suggest a lack of trust in someone close to you.
Skin– This dream is related with senstivity. Keep calm and think carefully before you make any major decision.
Stomach- Digestion of information understandings it indicates tendency to laziness. You need to keep a close check on your health.
Teeth- Normally an unfavourable sign in your dream. It signifies displeasure and also shows that you are afraid of losing someone dear to you.
Thigh-Associated with power of movement. You should watch out for malicious gossip and it also shows that your behaviour is being irrational.
Throat- It shows considerable powers of imagination and signifies a successful venture.
Tongue-A tongue is related with pleasure and new experiences. Is a sign of future professional success.
Vagina- A ssociated with female sexuality and receptivity. You are about to begin a period where fortune smiles on you in everything you do. You are enthusiastic about a new acquaintance or connection.

Dream interpretations : fruit

Apples :Wisdom . If you are eating an apple in dream, it is a reference for harmony, pleasure, as well as fertility.
Apricot:A pleasant outlook on life.
Bananas : Sexual urges and desires.

Cherry : Honesty, as well as good fortune.
Figs: Represents a change for the positive; also refers to sex and an erotic nature.
Grapefruit :Symbolizes well –being.
Grapes : Wealth.
Mango : Fertility, lust, as well as sexual desires.
Melon : Bad health and misfortune in regards to business ventures.
Oranges : Health and prosperity.
Peach: Pleasure and joy; sometimes lust and sensuality.
Pomegranate: Fertility, good health, as well as longevity.
Prunes: Signifies a blockage in emotion or creativity.

Dream interpretation : vegetables

Asparagus : Prosperous times
Carrot : Abundance
Corn : Growth and fertility
Mushroom : Unwise choices ,vanity ,as well as guilty pleasures
Radish : Good friends and successful business ventures
Turnips : Overcoming problems ,compassions, wealth
Yam : Remembrance of family get –togethers

Dream interpretation:Counting

Zero- Zero denotes timelessness, super conscious enternity, and absolute freedom. It also symbolizes God.
One- One stands for individuality, individuality solitude, the ego, leadership, originality, beginings, and a winner. It also stands for a higher spiritual force.
Two- Two stands for balance, diversity, partnership, soul or receptivity. It can also symbolize double weakness and double strength. There is a duality as in male and female, mother and father, yin and yang, etc.
Three- Three signifies life, vitality, inner strength, completion, imagination, creativity, energy and self-exploration. Three stands for trilogy as in the past, present and future or father, mother and child etc.
Four- Four denotes stability, physical limitation, hard labor and earthly things, as in the four corners of the earth. It also stands for materialistic matters. You get things done.
Five - Five represents your persuasiveness, spontaniety, daring/bold nature, action or the five human senses. This number may reflect a change in course. It is also the link between heaven and earth.
Six - Six is indicative of cooperation, balance, tranquility, perfection, warmth, union, marriage, family and love.Your mental, emotional and spritual states are in harmony. It is also indicative of domestic bliss.
Seven - Seven signifies mental perfection, healing, completion, music and attainment of high spirituality.A dditionally, you are unique and eccentric.

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

Eight - Eight stands for power of authority, success, karma, material gains, regeneration, and wealth. When the number eight appears in your dream, trust your instincts and intuition.

Nine - Nine denotes completion and that you are on a productive path. Rebirth, inspiration and reformation. You are seeking to improve the world.

Ten- Ten corresponds to closure, great strength, and gains. It also symbolizes the law and can refer to the ten -commandments.

Eleven- Eleven stands for intuition, mastery in a particulary domain, spirituality, enlightenment and capacity to achieve. It is symbolic of your creativity and visions. The number 11 is represented by two parallel lines and thus could represents two individuals or some partnership.

Twelve- Twelve denotes spiritual strength and divine perfection. It also represents cycles and repetition.

Thirteen- Thirteen is a paradoxical number which means death and birth, end and begining, and change and transition. It is a symbolic of obstacles that are standing on your way and must overcome. You must work hard and persevere in order to succeed and reach your goals.

Fourteen- The number fourteen signifies the unexpected and your need to adapt to ever-changing circumstances.It is also symbolic of overindulgence and giving into your desires. you need to be more commited and maintain focus on your goals.

Fifteen- Fifteen represents a dissolution of difficult conditions.

Sixteen- Sixteen, typically, symbolizes innocence, naïve, vulnerability, and tenderness. It also indicates some spiritual cleansing and destruction of the old and birth of the new.

Seventeen- Seventeen symbolizes soul.

Eighteen- Eighteen symbolizes the conflict between materialism and spirituality. It also warns of treachery, deception, lies and selfishness.

Nineteen- Nineteen indicates independence and the overcoming of personal struggles. You will find that you often have to stand up for yourself. This number also suggests your stubbornness and you hesitance in accepting help from others.

Twenty-One- The twenty-one number represents a turning point in your life and your transitional into adulthood. It is also associated with the responsibilities that you need to own up to.

Twenty-two- Twenty-two denotes mental powers and knowledge. It also indicates that you are goal-oriented and practical.

Twenty-Four- The number twenty-four symbolizes rewards, happiness, love, money, success and creativity. It also indicates your associations with people of high positions and power. You may also exhibit a certain arrogance in love and in your success.

Twenty-Six- Twenty-Six symbolizes the earth and karma.

Thirty-Three- Thirty-three represents high potential and mastery in your own spiritual consciousness.

Thirty-Nine- The number thirty-nine, symbolizes understanding, thoughtfulness, meditation, and mental superiority.

Forty- Forty denotes that time is on your side. It is a period of cleansing, prepration and growth.

Forty- Four - Forty- four refers to a sacred union or divine marriage.

Fifty- Fifty stands for all that is holy.

Sixty- This number is associated with time. It may refer to time running out or longevity.

911- The appearance of this number in your dream suggests that you need not be afraid to ask for help. There is an important lesson to be learned from in your dreams.

भारतीय दर्शन की तरह पाश्चात्यविचारधारा भी स्वप्नों के रंगों से काफी रंगी हुई दिखाई देती है क्योंकि यहां के प्रख्यात कवियों की कविताओं में भी सूक्ष्मता के साथ स्वप्न -विज्ञान मुखर हो उठा है, जो इनके प्रति प्रगाढ़ विश्वास प्रदर्शित करता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वप्न में विभिन्न रंगों, धातुओं, पशु-पक्षियों के दर्शनादि विविध स्वप्न एवं विविध फल

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

नौवां वरदान : स्वप्न में विभिन्न, रंगों, धातुओं, पशु-पक्षियों के दर्शन का फल

स्वप्नशास्त्र प्रतीक दर्शन का फल बताता है। निकटस्थ भविष्य के संकेत मानस-पटल पर अंकित रहते हैं। स्वप्न में अनेक प्रकार के दृश्य दिखाई देते हैं। कभी स्वप्न में कोई वस्तु विशेष दिखाई देती है तो कभी मिश्रित दृश्य दिखाई देते हैं। मिश्रित वस्तुओं में भी जो वस्तु विशेष उल्लेखनीय है। उसका प्रभाव इस प्रकार से है-

स्वप्न में विविध सवारी :

- ✡ स्वप्न में गजराज (हाथी) पर चढ़ने से प्रभुता प्राप्त होती है।
- ✡ स्वप्न में बैल (वृषभ) पर चढ़ने से राज्य की प्राप्ति होती है।
- ✡ स्वप्न में गिरि (पर्वत) पर चढ़ने से उन्नति होती है।
- ✡ स्वप्न में अश्व (घोड़ा) सवारी पर चढ़ने से यात्रा होती है।
- ✡ स्वप्न में हंस की सवारी करने से महाकीर्ति फैलती है।
- ✡ स्वप्न में शेर की सवारी करने से पराक्रमी बनता है।
- ✡ स्वप्न में पद्म (कमल) पर बैठने से लक्ष्मी प्राप्त होती है।
- ✡ स्वप्न में वाहन (विमानादि) पर चढ़ने से मंत्रीपद मिलता है।
- ✡ स्वप्न में पलंग, पालने, झूले एवं पेड़ पर चढ़ने से उच्चपद की प्राप्ति होती है।
- ✡ स्वप्न में लकड़ियों या बांस के ढांचे पर चढ़ने से आरोग्य की प्राप्ति होती है।
- ✡ स्वप्न में पुरुष के कंधों पर चढ़ने से धन एवं पद की प्राप्ति होती है।
- ✡ स्वप्न में स्त्री के कंधों पर चढ़ने से सेवा प्राप्त होती है।
- ✡ स्वप्न में कल्पवृक्ष पर चढ़ने से मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।
- ✡ स्वप्न में गधे, ऊंट, बिल्ली, सियार, कुत्ता, गीदड़, बंदर, उल्लू, चमगादड़ की सवारी अशुभ होती है।

- ✡ स्वप्न में किसी दीवार पर चढ़ने से सुख-समृद्धि प्राप्त होती है।
- ✡ स्वप्न में कबूतर, मोर, बुलबुल, सारस की सवारी करना अथवा इनका दर्शन करना सौभाग्य सूचक है।
- ✡ स्वप्न में कोई व्यक्ति अपने आपको सीढ़ी पर चढ़ता हुआ देखे तो उसकी उन्नति होती है।
- ✡ स्वप्न में किसी व्यक्ति को हरे-भरे मैदान, जहां सुंदर पुष्प खिल रहे हों, दिखाई दें तो यह समझना चाहिए कि उसका एक सुंदर, खुशमिजाज स्त्री से विवाह होगा और वह दूधों नहाएगा और पूतों फलेगा। यदि कोई स्त्री इस प्रकार का स्वप्न देखे तो उसे अच्छा वर मिलेगा या मनचाही संतान प्राप्त होगी। स्त्री यदि विवाहित होकर इस प्रकार का स्वप्न देखे तो उसे पूर्णरूप से परिवार का सुख प्राप्त होगा। यदि कोई निःसंतान व्यक्ति ऐसा स्वप्न देखे तो उसे संतान प्राप्त होगी।
- ✡ स्वप्न में सेब देखना जातक को दीर्घ जीवी और सफल बनाता है। यदि कोई गर्भवती स्त्री स्वप्न में सेब देखे तो उसे पुत्र प्राप्त होता है।
- ✡ कोई व्यक्ति स्वप्न में अपने को किसी मृत सम्बन्धी या मित्र की शवयात्रा में शामिल होता दिखाई दे तो समझना चाहिए कि किसी सम्बन्धी या मित्र के माध्यम से उसे सम्पत्ति प्राप्त होगी। यदि स्वप्न द्रष्टा अविवाहित है तो उसका विवाह होगा और उसको धन-सम्पत्ति का लाभ होगा।
- ✡ कोई स्वप्न देखे कि उसने लाल हिरन को मार डाला है। उसका सिर एवं खाल उसके पास है तो उसे किसी वृद्ध-व्यक्ति की सम्पत्ति विरासत में प्राप्त होगी। शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। स्वप्न में लाल हिरण को भागते-दौड़ते देखने से भी धन-लाभ होता है।
- ✡ स्वप्न में किसी को मृत्युदण्ड सुनाया गया और उसके बाद गले में फंदा डालकर फांसी भी दे दी गई है तो उसे बहुत आदर-सम्मान प्राप्त होगा। यदि वह रोगी है तो वह रोगमुक्त हो जायेगा।
- ✡ कोई व्यक्ति स्वप्न में देखे कि वह सोने के तारों से कढ़े हुए वस्त्र धारण किये हुए है तो उसे बहुत आदर-सम्मान प्राप्त होगा।
- ✡ स्वप्न में चूहा देखना शुभ-संकेत है।
- ✡ स्वप्न में अपने आपको किसी पत्थर पर बैठे देखने से सुख और समृद्धि प्राप्त होती है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

- स्वप्न में कोई व्यक्ति अपने आपको खम्भा पकड़कर या खम्भे के सहारे खड़ा हुआ देखे तो उसके ऊपर ईश्वर कृपा होने वाली है।
- स्वप्न में शांत समुद्र को देखना शुभ शकुन है। स्वप्न में सागर की लहरों की गड़गड़ाहट सुनाई दें तो जातक के व्यापार में उन्नति होगी।
- स्वप्न में किसी बाज पक्षी को पकड़ ले तो उसकी सारी अभिलाषायें पूर्ण हो जायेगी।
- स्वप्न में मछली देखना आने वाले शुभ समय का पूर्वाभास है।
- स्वप्न में नौकर मिलने से वेतन वृद्धि के संकेत हैं।
- स्वप्न में केतली देखे तो इनका घर स्वर्ग बन जायेगा।
- स्वप्न में कोई अपने कपड़ों में थिगलियां (पैबन्द) लगे देखे तो उसे विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त होती है।
- स्वप्न में कोई तगमा (मेडल) देखे तो उसे मान-सम्मान प्राप्त होगा।
- स्वप्न में कोई उस्तरा (रेजर) देखना निकट भविष्य में शुभ-समय आने का संकेत है।
- स्वप्न में कोई विमान या उसमें सवारी करना सौभाग्यवर्द्धक होता है। समुद्री जहाज देखना भी उत्तम होता है। जितने अधिक जहाज देखे उतना ही अधिक फायदेमंद होता है।
- स्वप्न में सड़क देखना सफलता प्राप्ति हेतु परिश्रम करवायेगा।
- स्वप्न में लिफाफा देखने से अप्रत्याशित शुभ समाचार प्राप्त होता है।
- स्वप्न में हरे मटर खाते देखे तो उसके सुख समृद्धि होती है।
- स्वप्न में कोई व्यक्ति बुलबुल या अन्य चहचहाने वाला या गायक पक्षी देखे तो उसे शुभ समाचार प्राप्त होंगे और उसके व्यवसाय में उन्नति। यदि स्वप्न देखने वाला किसान है, तो उसकी फसल बहुत अच्छी होगी। यदि कोई निःसंतान विवाहिता स्त्री ऐसा स्वप्न देखे तो उसे संतान प्राप्त होगी।
- कोई व्यक्ति स्वप्न में देखे कि उसकी नाक बहुत बड़ी है तो उसे आदर-सम्मान प्राप्त होगा।
- स्वप्न में कोई व्यक्ति अपने आपको प्याज खाता देखे तो उसको धन प्राप्त होता है।
- कोई व्यक्ति स्वप्न में साफ-सुथरे वस्त्रधारण किए हुए हो तो उसे कोई शुभ और सौभाग्य सूचक समाचार प्राप्त होगा।

- कोई व्यक्ति स्वप्न में शेर देखे तो उसे राजा या किसी उच्चराज्याधिकारी की कृपा प्राप्त होगी। यदि वह शेर से लड़ता दिखाई दे तो उसका कट्टर बैरी से मुकाबला होगा। यदि वह शेर पर विजय प्राप्त कर ले तो उसका बैरी पराजित होगा।
- कोई स्वप्न में देखे कि वह स्वर्ग की ओर जा रहा है तो उसे बहुत मान-सम्मान और यश गौरव प्राप्त होते हैं।
- कोई व्यक्ति स्वप्न में अपने आपको अत्यंत मूर्खतापूर्ण कार्य करते हुए देखे तो इसका फल अत्यंत शुभ होता है। जातक को राज-कृपा, सुख समृद्धि तथा लोकप्रियता प्राप्त होती है।
- स्वप्न में हंसी की खिलखिलाहट सुनना धन-लाभ का द्योतक है।
- स्वप्न में बकरियां दिखाई दें तो धन लाभ होता है।
- कोई स्वप्न में देखे कि वह दूसरों की भलाई कर रहा है तो उसे हर्षोल्लास और शांति प्राप्त होगी।
- कोई व्यक्ति स्वप्न में किसी हरे-भरे मैदान में पशुओं को चरते हुए देखे तो उसका भविष्य सौभाग्यपूर्ण होता है।
- कोई व्यक्ति स्वप्न में वस्त्रों में टंगे चमकते बटन देखे तो उसे अपने कैरियर में सफलता प्राप्त होती है।
- स्वप्न में कोई व्यक्ति बुल डॉग देखे तो निकट भविष्य में उसका भाग्योदय होगा और उसे आवश्यकता पड़ने पर आर्थिक सहायता प्राप्त होगी।
- स्वप्न में कोई साफ-सुथरी, सुंदर ऊंची बाग-बगीचों सहित अट्टालिकायें देखें तो अपने व्यवसाय में उच्चतम स्थान पर पहुंच जाता है।
- स्वप्न मे पीतल की वस्तुयें देखना व्यवसाय में लाभ का सूचक है।
- स्वप्न में स्वयं को संदूक या डिब्बा खोलते हुए देखे तो वह सुखी, निश्चिंत और धनी होता है।
- स्वप्न में किसी व्यक्ति को कोई फूलों का गुच्छा भेंट में दे तो विरासत में धन-सम्पत्ति प्राप्त होती है।
- स्वप्न में अपने आपको नये जूते पहने देखना व्यापार में लाभ होने के संकेत हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

- ✡ स्वप्न में पौधें, वृक्ष और खिले हुए फूलों से भरी झाड़ियां दिखाई दें तो व्यापार में अच्छे सौदे का शुभ समाचार प्राप्त होता है।
- ✡ स्वप्न में कोई कम्बल साफ करते हुए देखे तो समृद्धि बढ़ती है।
- ✡ स्वप्न में पक्षी उड़ते हुए दिखाई दें तो समृद्धि बढ़ती है।
- ✡ स्वप्न में कोई अपनी धन-सम्पत्ति की वसीयत लिखे तो उसे अप्रत्याशित धन प्राप्त होता है।
- ✡ स्वप्न में कोई देखें कि वह दानों को पिरोकर माला बना रहा है तो उसे निकट भविष्य में बहुत धन प्राप्त होता है।
- ✡ स्वप्न में कोई शानदार दावत में सम्मिलित हो तो उसे उच्चपदाधिकारी द्वारा एक धनदायक और सम्मान का पद प्राप्त होगा।
- ✡ स्वप्न में कोई अपने आपको मिर्च खाते हुए देखे तो उसकी संतान जिस व्यवसाय में भी प्रविष्ट हो सफलता प्राप्त होगी।
- ✡ स्वप्न में कोई मोतियों का संग्रह देखे तो उसकी व्यापार कुशलता से बहुत सफलता प्राप्त होगी।
- ✡ स्वप्न में कोई अपने आपको कविता लिखते देखे तो उसे शीघ्र ही कोई शुभ समाचार प्राप्त होगा।
- ✡ स्वप्न में कोई देखे कि उसका पर्स खाली नहीं है, तो उसका बैंक में पर्याप्त धन जमा होगा।
- ✡ कोई स्वप्न में अपने आपको किसी बंदरगाह या हवाई अड्डे पर खड़े देखे तो उसे शीघ्र ही विदेश-यात्रा का अवसर प्राप्त होगा।
- ✡ कोई व्यक्ति स्वप्न में आराम कुर्सी देखे या उस पर अपने आपको बैठे हुए देखे तो वह दीर्घजीवी होता है।
- ✡ स्वप्न में नाई दिखाई देना सौभाग्यसूचक होता है।
- ✡ स्वप्न में घंटी बजती सुनाई दे तो भविष्य में जीवन सुखी ओर हर्षोल्लास से परिपूर्ण होगा।
- ✡ स्वप्न में सरकस देखने से व्यक्ति चिंतामुक्त हो जाता है।
- ✡ स्वप्न में कोई व्यक्ति अपने आपको कोई गेट खोलते हुए देखे तो उसकी कठिनाइयां दूर हो जायेगी और उसे सफलता प्राप्त होगी।
- ✡ स्वप्न में कोई देखे कि डॉक्टर स्टेथोस्केप से उसकी छाति का निरीक्षण कर रहा है तो वह कोई ऐसा

प्रशंसा का काम करेगा कि उसके परिजन और मित्र उस पर गर्व करेंगे।

- ✡ कोई व्यक्ति स्वप्न में देखे कि वह अपना अवकाश का समय आनन्द पूर्वक बिता रहा है, तो उसको मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।
- ✡ स्वप्न में कोई अपने आपको रेल का इंजिन चलाते देखे तो उसकी मनोकामना पूर्ण होती है।
- ✡ स्वप्न में कोई अपने आपको मोटर, बोट चलाता देखे, किसी परेड का नेतृत्व करते देखे तो उसे शीघ्र ही कोई उच्च पद प्राप्त होता है।

स्वप्न में देखे रंगों का फल :

1.	लाल (red)	-	अच्छा स्वास्थ्य और दीर्घायु।
2.	हरा (green)	-	धन अर्जित करने की योग्यता। सुख-शांति एवं धन प्राप्ति।
3.	नीला (violet)	-	सुखी पारिवारिक जीवन। संघर्ष से लाभ
4.	सफेद (white)	-	अपने समाज में प्रतिष्ठित स्थान की प्राप्ति। सुख-शांति, समृद्धि प्राप्ति।
5.	नारंगी(Orange)	-	अपना मकान होना। लाभकारी भविष्य।
6.	पीला (Yellow)	-	दूसरों की ईर्ष्या का शिकार होना। ईर्ष्या से मुक्ति होगी।
7.	भूरा (Brown)	-	बेइमानी के आरोप लगना।
8.	काला (Black)	-	दुर्भाग्य सूचक। अशुभ समय।
9.	सिन्दूरी	-	संघर्ष से लाभ, साहस, सौभाग्य की प्राप्ति।
10.	हरा और काला रंग	-	धन का नाश
11.	काला और सफेद रंग	-	समस्याएं सूचक।
12.	लाल और नीला रंग	-	समस्याओं का समाधान सूचक।

स्वप्न में विविध प्रकार की धातुओं के दर्शन के फल :

स्वप्न में विविध प्रकार की धातुओं को देखने से निम्नलिखित फल प्राप्त होता है :

1.	सोना (Gold)	-	अनेक कठिनाइयां, रोग, धन सम्पत्ति की हानि।
2.	चांदी (Silver)	-	प्रेम में निराशा और विश्वासघात।
3.	तांबा (Copper)	-	यात्रा में दुर्घटना।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

4.	लोहा (Iron)	-	लोहा देखने से अपने परिश्रम से धनवान होना। सट्टेबाजी में सफलता।
5.	सीसा (Lead)	-	किसी सम्बन्धी या घनिष्ट मित्र की मृत्यु।
6.	हीरा (Diamond)	-	सौभाग्य सूचक।

स्वप्न में विभिन्न रत्नों को देखने का फल :

	स्वप्न में क्या देखा		फल
1.	माणिक्य	-	अधिकार में प्रगति।
2.	मोती	-	शांति की प्राप्ति।
3.	पन्ना	-	धन-लाभ।
4.	पुखराज	-	द्वेषकारक।
5.	हीरा	-	प्रेम एवं धनवृद्धि।
6.	मूंगा	-	रोग, शत्रुनाशक।
7.	नीलम	-	शीघ्र उन्नति।
8.	गोमेद	-	समस्या घटे या बढ़े।
9.	लहसुनिया	-	नाम की प्राप्ति।
10.	लाजवर्त्त	-	मान-प्राप्ति।
11.	फिरोजा	-	व्यापार में उन्नति।

स्वप्न में धार्मिक ग्रंथों को देखने का फल :

	धार्मिक ग्रंथ		फल
1.	वेद देखने से	-	वैराग्य उपजे।
2.	रामायण	-	संघर्ष के बाद लाभ।
3.	बाईबिल	-	ज्ञानोदय होगा।
4.	गुरुग्रंथ साहिब	-	धर्म-कर्म में रुचि बढ़ेगी।
5.	कुरान	-	सुख-शांति धर्म बढ़े।
6.	गीता (ग्रंथ)	-	पाप का नाश हो।
7.	महाभारत	-	कोई गलत होगा।
8.	उपनिषद्	-	तर्क, बुद्धि बढ़े।
9.	जैन आगम	-	आध्यात्मिक समृद्धि।

स्वप्न में धार्मिक स्थल देखने का फल :

धार्मिक स्थल		फल
चर्च देखने से	-	शांति प्रदान होगी

गुरुद्वारा देखने से	-	ज्ञान-प्राप्ति
मस्जिद देखने से	-	समस्याओं का समाधान
मंदिर देखने से	-	शुभ-कार्य

स्वप्न में विभिन्न देवी-देवताओं को देखने का फल :

	स्वप्न में देवी/देवता		फल
1.	भगवान विष्णु	-	सफलता प्राप्ति सूचक
2.	भगवान ब्रह्मा	-	प्रसन्नता मिलेगी
3.	भगवान कृष्ण	-	प्रेम, सौभाग्य प्राप्ति
4.	भगवान राम	-	सौभाग्य दायक
5.	भगवान हनुमान	-	रोग एवं शत्रुनाशक
6.	भगवान शिवजी	-	शांति एवं भक्ति लाभ
7.	भगवती दुर्गा	-	रोग-शत्रु नाशक
8.	भगवती काली	-	अध्यात्म की प्राप्ति
9.	भगवती सीता	-	कष्ट के बाद सफलता
10.	भगवती राधा	-	आनंद की प्राप्ति
11.	भगवती पार्वती	-	प्रसन्नता की प्राप्ति
12.	भगवती लक्ष्मी	-	धन की प्राप्ति
13.	भगवती सरस्वती	-	विद्या-प्राप्ति सूचक
14.	देवी	-	शांति मिलेगी

स्वप्न में विभिन्न पशु एवं पक्षियों के दर्शन के फल :

संसार में अनेक प्रकार के पशु पक्षी हैं। उनके गुण, स्वभाव आदि पृथक् होते हैं। यदि वे स्वप्न में परिलक्षित होते हैं तो उनकी मुद्रा, गति, उच्चारण, भाव भंगिमा आदि के भिन्न-भिन्न फल होते हैं।

अजा (Goat)बकरी आदि स्वप्न में दिखाई दे तो शुभ होती है। यदि बकरी स्वप्न में उछल-कूद करती हुई दिखाई दे तो आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव का प्रतीक मानी जाती है। यदि स्वप्न में बकरा दिखाई दे तो सामान्य फल देता है। यदि वह पत्ते आदि खाता हुआ दिखाई दे तो अन्नाभाव की ओर संकेत करता है।

यदि कोई स्वप्न में बकरी का बच्चा देखे तो उसे सुख मिलता है। बकरी का बच्चा मारने का स्वप्न पारिवारिक संकट का सूचक है। बहुत से बकरी के बच्चे दिखें तो उद्योग द्वारा धन मिलने की संभावना है। यदि कोई विवाहिता बकरी के बच्चे को गोद में ले तो उसके अनेक बच्चें होंगे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कीट पक्षी से सम्बन्धित विशेष स्वप्न :

कीट-पतंग, पशु-पक्षी आदि का स्वप्न में दिखाई देना शुभाशुभ का कारण होता है।

✡ अजगर और सर्प (Pythone, snake and cobra):स्वप्न में अजगर का दिखाई देना शुभ नहीं समझा जाता है। यह भय का आभास देता है। अजगर यदि किसी व्यापारी को स्वप्न में दिखाई दे तो उसका व्यापार ठप्प हो सकता है। यदि स्वप्न में देखने वाला कोई नेता या राज्यपद पर प्रतिष्ठित है तो उसके पद के प्रति आशंका उपस्थित हो सकती है।

यदि स्वप्न में सर्प दिखाई दे तो अजगर से भी अधिक अशुभ, रोग और आधि-व्याधि का सूचक है। विपत्ति या दुर्घटना का सूचक भी हो सकता है। यदि सर्प-सर्पिणी का जोड़ा स्वप्न में देखे तो गड़े हुए धनप्राप्ति का सूचक हो सकता है, दाम्पत्य जीवन में सुख प्राप्ति का द्योतक है। यदि सर्प के साथ मणि भी दिखाई दे तो स्वप्नदृष्टा को मणिरत्न आदि की प्राप्ति होती है। फन उठाये काला नाग देखना शुभ और धनप्राप्ति का संकेत है। नाग मारना या नाग पर प्रहार करना संतान पीड़ासूचक है। गले में नाग लटकाना या लटकना देखना अशुभ है। नाग का डंसना मान सम्मान की प्राप्ति, नाग जहर से मरी स्त्री या पुरुष को देखना दीर्घायु होने का संकेत है। यदि मनुष्य का अजगर से मुकाबला हो जाए और उससे बच निकले तो वह अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगा। सर्प देखना वासना, काम भोग एवं सैक्स का प्रतीक होता है।

अश्व (Horse): घोड़ा भी स्वप्न में देखने पर शुभफल प्रदान करने वाला है। यदि यह अकेला दिखाई दे तो निर्विघ्न यात्रा का संकेत देता है। यदि रथ, गाड़ी, तांगा आदि में जुड़ा हो तो दूर की यात्रा का संकेत देता है। यदि घोड़ा हिनहिनाता दिखे तो वह कष्ट का संकेत है। यदि स्वप्न में घोड़ी दिखाई दे तो वह विवाह आदि के शुभ अवसरों का संकेत हैं। घोड़ा-घोड़ी दोनों दिखाईदे तो दाम्पत्य जीवन में समृद्धि का प्रतीक है। यदि घोड़े पर सैनिक सवार हो तो सुरक्षा का प्रतीक माना जाता है। घोड़ें पर बैठना, रेस करना, किसी कार्य में विजय एवं सफलता का सूचक है, जबकि सजा-सजाया घोड़ा देखना अशुभ केवल घोड़ा देखना शुभ एवं धन लाभ का संकेत माना जाता है।

अश्वशाला घोड़ों से भरी हुई कोई स्वप्न में देखे तो वह बहुत धन कमाएगा। सपने में नई अश्वशाला बनाने का विचार व्यापार में लाभदायक है। श्वेत पंखों वाले घोड़े का सपना समृद्धि का सूचक है। काला अश्व धोखे की

स्थिति, दूर भागता अश्व देखें तो अपनी पूंजी के दुरुपयोग से बचें। बच्चों द्वारा स्वप्न में घुड़सवारी निस्सीम सपनों के संसार में रहने का संकेत तथा महिलाओं के लिए भय का सूचक, पुरुषों द्वारा खतरनाक घुड़सवारी निराशा का प्रतीक माना गया है। अश्व देखने से अर्थलाभ, चढ़ने से कुटुम्ब वृद्धि, प्रसव से संतान लाभ होता है।

उल्लू (Owl): भारतीय विद्वानों के मतानुसार उल्लू लक्ष्मीजी का वाहन है, इसलिए धनागम का सूचक कहा जाता है। परन्तु उल्लू दूर दिशा में जाता हुआ दिखाई दे तो शुभ नहीं होता। वह स्वप्नद्रष्टा के घर चोरी होने का संकेत माना जाता है। इसके फलस्वरूप घर में अग्नि, प्रलय, चोरी, धन-हानि, आर्थिक-हानि आदि हो सकते हैं। उल्लू आता हुआ दिखाई दे तो शुभ और जाता हुआ दिखाई दे तो अशुभ होता है। मुंह फेर कर खड़ा हुआ उल्लू अशुभ होता है। पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार उल्लू को स्वप्न में देखना अशुभ होता है। उल्लू का घोंसला स्वप्न में देखना अशुभ माना जाता है। इसके कारण धन-हानि, रोगों की उत्पत्ति, रोग वृद्धि एवं अन्य प्रकार के कष्टों की अनुभूति होती है।

ऊँट (Camel): यदि स्वप्न में चलता हुआ ऊँट दिखाई दे तो यह शुभ नहीं माना जाता है। इसके फलस्वरूप यात्रा में व्यवधान, किसी प्रकार की परेशानी अथवा दुर्घटना का आभास मिलता है। परन्तु खड़ा हुआ ऊँट अशुभ नहीं होगा। यह संभव है कि यात्रा में धन का अधिक व्यय होता हो। ऊँट का स्वप्न में देखना लम्बी और कठिन यात्रा को दर्शाता है लेकिन अंततः उससे आर्थिक लाभ होगा।

कबूतर या कपोत (Pigeon): स्वप्न में कबूतर दिखाई दे तो शुभ होता है। इसके कारण सुख, समृद्धि, आरोग्य की प्राप्ति होती है। रोगी इसे स्वप्न में देखे तो रोग-निवृत्ति का कारण होगा। स्वप्न में यदि श्वेतवर्ण का कबूतर दिखाई दे तो स्वप्न दृष्टा के मन में अध्यात्म विषयक जिज्ञासा जागृत होती है। वह धार्मिक कार्यों में रूचि लेने लगता है। इसे परोपकार भावना प्रकट होने का संकेत माना जाता है। वस्तुतः श्वेत कबूतर शांति का भी प्रतीक है। स्वप्न में कबूतर स्लेटी रंग का हो तो अशुभ नहीं होता है, वरन् आगामी समय के आशाप्रद होने का संदेश लाता है। यह धनागम का संकेत है। स्वप्न में कबूतर-कबूतरी का जोड़ा दिखाई दे तो आपस में प्रेम और दाम्पत्य जीवन में शांति का प्रतीक माना जाता है। यदि कोई पुरुष बैठा हुआ कबूतर स्वप्न में देखे तो उसे धन और ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी। यदि विवाहित स्त्री सपने में कबूतर देखती है तो वह शीघ्र गर्भवती होकर एक सुंदर बच्चे को जन्म देगी। सपने में जंगली कबूतर का दिखना उद्योग में अच्छी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आय का द्योतक है। पालतू कबूतरों का दिखना भी बढ़ी आय और परिवार में सदस्यों की वृद्धि होने का द्योतक है। उड़ता हुआ कबूतर सपने में दिखे तो दृष्टा पर मुसीबतें आने वाली हैं। पिजड़ें में बंद कबूतर का सपने में दिखना बताता है कि दृष्टा छिपा खजाना प्राप्त करेगा। सपने में कोई कबूतर को गोली से मारे तो दृष्टा चिंता-मुक्त होगा। सपने में कोई बिल्ली द्वारा मारा जाता हुआ कबूतर देखे तो उस पर विपत्ति आने वाली है। यदि मृतक कबूतर देखे तो व्यापार में हानि, कबूतरों का समूह देखे तो मुसीबत में साथ देने वाले मित्र बनेंगे। सपने में कोई कबूतर भेंट करे तो दृष्टा की ख्याति चतुर्दिग् में फैलेगी।

काक/कौवा (Crow) : स्वप्न में काक दिखाई देने पर किसी प्रकार के बुरे समाचार मिलने का प्रतीक कहा जाता है। यहधन-हानि, रोग और दुर्घटना का प्रतीक समझा जाता है। जिन्दा काक सपने में पकड़ना शत्रु पर विजय का सूचक है, लेकिन मात्र कौवे या उसके पंख देखना दुकानदार की हानि को प्रकट करता है। स्वप्न में यदि कौआ सिर के ऊपर से निकल जाए तो वह किसी शत्रु के साथ कठिन संघर्ष करेगा, सिर पर कौआ बैठ जाए तो वह सख्त बीमार पड़ेगा। यदि रोगी के सिर पर स्वप्न में कौआ बैठ जाए तो वह अचानक मृत्यु का सूचक है। स्वप्न में काक, गिद्ध, उल्लू और कुकर जिसे चारों ओर से घेरकर त्रास उत्पन्न करे तो मृत्यु और अन्य को त्रास उत्पन्न करते हुए देखे तो अन्य की मृत्यु होती है।

कीड़े और कीटाणु (Insects and Germs) :स्वप्न में कीड़ों का दीखना बीमारी का प्रतीक है। यदि दूध या रस में कीड़ा गिर पड़े तो जिस दृष्टा को पीना है तो किसी दुर्घटना में वह घायल होगा। यदि रोगी कीड़े मारने का स्वप्न देखे तो वह शीघ्र स्वस्थ हो जाएगा। सपने में मधुमक्खी, मक्खियां, कीड़े, खटमल आदि देखना मामूली परेशानी का सूचक हो सकता है।

सपने में मक्खियां दीखें तो शत्रु बढ़ेंगे, फलस्वरूप कष्ट भी बढ़ेंगे। यदि कोई सताती हुई मक्खियों से छुटकारे का सपना देखे तो उसे अपने उद्योग में निश्चय हो सके खाने पर बहुत-सी मक्खियां मंडराएं तो यह स्वप्न बीमारी का द्योतक है। सपने में मच्छरों का दीखना शत्रुओं की वृद्धि और निरंतर कष्ट का सूचक है। यदि कोई व्यक्ति किसी रोग या अन्य कारण से बीमार पड़ा हो और सपने में मच्छरों का झुंड देखे तो समझो वह अस्वस्थ रहेगा। मच्छरों को मारने का स्वप्न दृष्टा के अच्छे स्वास्थ्य का परिचायक है। यदि स्वप्न में शहद की मक्खी काट खाए तो शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के परिणाम व्यक्त करती है। यदि वह

अपने छत्ते पर बैठी हो तो पारिवारिक एकता का प्रतीक कहा जाता है। जातक को मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा किन्तु अकेली मक्खी ही दिखाई दे तो इसका अभिप्राय चोरी होना या घर परिवार वालों का सम्बन्ध विच्छेद होना हो सकता है। कीटाणु का दीखना बताता है कि दृष्टा का नगर किसी महामारी या बीमारी से पीड़ित होगा। किसी स्थान या वस्तु को कीटाणुरहित शुद्ध करने का स्वप्न अच्छा होता है। स्वास्थ्य एवं समृद्धि का सूचक होता है।

कुत्ता (Dog): स्वप्न में कुत्ता दिखाई दे तो यह शुभ नहीं होता। इससे किसी रोग की उत्पत्ति हो सकती है। यदि कुत्ता रोता हुआ दिखाई दे तो यह किसी बुरे समाचार का प्रतीक कहा जाता है। यदि कुत्ता-कुत्तियां का मिलन दिखाई दे तो प्रिय या प्रिया के मिलन का संकेत हैं। स्वप्न में कुत्ते का भौंकना सुनना शत्रु द्वारा आक्रमण करने का द्योतक है। यदि कुत्ता हमला करे और काट खाए तो समझो मित्रों से मतभेद और अलगाव अवश्य ही होगा।

कोयल (Cuckoo): इसे स्वप्न में देखना कुछ लोग शुभ और कुछ अशुभ मानते हैं। कुछ स्वप्न विशेषज्ञों के अनुसार स्वप्न में कोयल का दिखाई देना उत्तम स्वास्थ्य का प्रतीक है। इसके परिणामस्वरूप जातक का स्वर मीठा एवं कोयल के समान सुरीला हो जाता है। वे व्यक्ति जो अशुभ मानते हैं। उनके मत से स्वप्न में देखी जाने वाली कोयल स्वप्न-दृष्टा को धोखे में डाल देती है। उसकी पत्नी मृदुभाषिणी और कोकिलकण्ठी होते हुए भी उसके साथ विश्वासघात कर सकती है। स्वप्न में कोयल देखना या उसका गाना सुनना बताता है कि धनप्राप्ति में बड़ा कड़ा परिश्रम करना पड़ेगा और प्राप्त की हुई जायदाद शीघ्र ही हाथ से निकल जायेगी। यदि स्त्री ऐसा देखे तो वह अपने पति का प्रेम खो देगी।

खच्चर (Mule): खच्चर यदि स्वप्न में दिखाई दे तो सामान्य फल प्रदर्शित करने वाला होता है। यदि वह बोझ से लदा हुआ हो तो उपभोग्य वस्तुओं की प्राप्ति का सूचक माना जाता है। किन्तु खाली पीठ हो तो गांठ का धन व्यय हो जाता है। यदि गधे और खच्चर साथ-साथ दिखाई दें तो अधिक हानिकारक होगा।

खरगोश (Rabbit): स्वप्न में खरगोश दीखे तो संबंधियों से कुछ प्राप्ति होगी। यदि खरगोश पकड़ा जाता दीखे तो प्राप्ति अच्छी होगी। यदि वह तेजी से भागकर निकल जाए तो लाभ भी ऐसा ही होगा। यदि कोई खरगोश के साथ दृष्टा के पास आए तो उसे ठगों से सावधान रहना चाहिए। यदि कोई खरगोश के पीछे दौड़ने और शिकारी कुत्तों द्वारा उसका शिकार करने का सपना देखे तो वह धोखेबाज लोगों के चंगुल से बच जाएगा। खरगोश को गोली मारने का स्वप्न दृष्टा के सारे

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साधनों के समाप्त होने का सूचक है। यदि किसी स्त्री को सपने में यह मार्ग में मिल जाता है और वह उसे गोद में ले लेती है तो यह उसके पति के परिवार की समृद्धि का प्रतीक है।

गाय (Cow): दुहने वाले के साथ गाय को देखने से कीर्ति और पुण्य लाभ होता है। गणपति दैवज्ञ के मत से जल पीती गाय देखने से लक्ष्मी के तुल्य गुण वाली कन्या का जन्म और वराहमिहिर के मतानुसार स्वप्न में गाय का दर्शन मात्र ही संतानोत्पादक है। जी.एच. मिलर के अनुसार प्रेमी मिलन सूचक है। यदि चरागाह में आराम से घूमती हुई या घास चरती हुई गायों को देखें तो यह शांति और अमीरी का चिह्न है। बहुत-सी गौओं को पालना या कहीं ले जाना देखे तो समझो वह बहुत सा धन कमाएगा। किन्तु यदि देखें कि कोई दूसरा बहुत सी गायें ले जा रहा है तो दृष्टा की आर्थिक हानि होगी। स्वप्न में गोशाला देखना शुभ है, यह दृष्टा की समृद्धि का सूचक है। यदि कोई स्त्री दूध देने वाली गाय-भैंसों को उनके बछड़े सहित देखती है तो उसके नाति-पोतों का बड़ा परिवार होगा।

स्वप्न में गाय दिखाई दे तो बहुत शुभ-लक्षण है। गाय सभी कामनाओं की पूर्ति की संभावना व्यक्त करती है। यदि श्वेत गाय हो तो चांदी और चीनी के व्यापार में लाभ, कपिला गाय पीली वस्तुओं के व्यापार में लाभ, लाल गाय लाल वर्ण की चीजों के व्यापार में लाभ, चितकबरी गाय सौदागरी के कार्य में फायदेमंद होती है। गाय का दूध दुहा जा रहा हो तो यह सब प्रकार की कामनासिद्धि का लक्षण है। ग्वाला दूध दुह कर बर्तन को भरा हुआ रखता है तो सम्पत्ति प्राप्त होगी। किन्तु स्वप्न में बर्तन का खाली करके रखना धन हानि का सूचक होगा। गाय को देखना संतान वृद्धि का प्रतीक, रंभाती हुई गाय सामान्य फल प्रदर्शित करती है किन्तु बछड़े को प्यार कर रही है तो संतान सुख होता है। दूध दुहते वक्त लात चलाती है तो धनलाभ में बाधा का प्रतीक है। गौचर भूमि और ग्वाला देखना भी शुभ-संकेत है।

गरुड़ (Eagle): गरुड़ देखना दुर्लभ स्वप्न है। देखने पर धन संपदा में वृद्धि और सभी प्रकार के संकट से छुटकारा पाने का संकेत है।

गैंडा (Rhinoceros): यदि कोई पुरुष स्वप्न में गैंडा देखे तो समझो उसकी कष्टों से मुक्ति होगी। यदि स्वप्न में यदि कोई स्त्री देखे तो उसके पति के परिवार की खुशहाली-बढ़ेगी। यदि कोई व्यापारी यह स्वप्न देखता है तो उसे व्यवसाय में अच्छी आय होगी। यदि कोई पुरुष यह स्वप्न देखता है कि गैंडे ने उसके ऊपर आक्रमण कर दिया है तो समझो उसे कई साधनों से आय होगी पर यही स्वप्न

यदि कोई स्त्री देखे तो वह शीघ्र ही बीमार पड़ेगी। सपने में गैंडे को गोली मारना बताता है कि दृष्टा अपने शत्रुओं से हानि उठायेगा।

चक्रवाद (चकवा) : इसे चकवा कहते हैं, मादा चकवी कहलाती है। यदि वह स्वप्न में दिखाई दे तो शुभ समझी जाती है। यदि यह कोई संदेश का आभास देती हो और वह संदेश स्वप्न देखने वाले के समझ में आ रहा हो तो फल उसी के अनुसार होता है।

चिड़ियां (Bird): चिड़ियां अनेक प्रकार की होती हैं इसलिए उनको स्वप्न में देखने का फल भी उसी के समान होता है। सामान्यतः श्वेत या सलेटी रंग की चिड़िया शुभ मानी गई है। चितकबरे रंग की चिड़ियां भी सुख संदेश वाहिका ही समझिए। परन्तु काले रंग की चिड़िया शुभ नहीं समझी जाती।

यदि समान कद की छोटी चिड़िया दिखाई दे तो शुभ होती है। संतान पक्ष में इसे कन्या की प्राप्ति का संकेत माना जाता है। बड़े आकार की चिड़िया यदि हल्के-हल्के रंग की हो तो व्यापार में लाभ का होना व्यक्त करती है। नौकरी में पदोन्नति का संकेत माना जाता है। सपने में चिड़ियां बैठी देखना, अतिथि-आगमन का सूचक, उड़ती देखना यात्रा का संयोग, चहाहट सुनना परिवार में रोना-पीटना होने की संभावना, मरी हुई देखना मार्ग में अनायास धन-लाभ समझना चाहिए। सपने में चिड़ियाघर देखने जाना दृष्टा की ऊँची पदवी का संकेत है। यही स्वप्न कोई स्त्री देखे तो वह यात्रा पर जायेगी। यदि कोई रोगी देखे तो उसे दूसरे अस्पताल में जाना पड़ेगा। व्यापारी देखे तो वह दूर देश की लम्बी यात्रा पर जायेगा। व्यापार में बहुत धन एकत्रित करेगा। कोई सपने में किसी चिड़ियाघर का प्रबन्धक या निरीक्षक बने तो समझो उसके मित्र बड़े गंवार और असभ्य बनेंगे।

छिपकली (Lizard): किन्तु यदि यह स्वप्न में दिखाई दे तो अर्थ की दृष्टि से शुभ नहीं होता। मानो अपने धन को जीव जन्तुओं को खिला देना है। वह यदि मच्छर पर झपट रही हो तो खराब है इसका अभिप्राय स्वयं पर शस्त्रास्त्रघात या आक्रमण घर में चोरी, डकैती धनहानि से होता है। सपने में छिपकली दिखना अपमान की सूचक है। यदि दो छिपकलियों को लड़ते देखे तो समझो परिवार पर भारी आपत्ति पड़ने वाली हैं। यदि अपने शरीर पर छिपकली का गिरना देखें तो गम्भीर बीमारी होगी। स्वप्न में छिपकली काटे तो बच्चे बीमार पड़ेंगे।

तोता (Parrot): यह बहुत शुभ माना गया है। स्वप्न में इसे देखने पर सभी प्रकार के सौभाग्य की प्राप्ति होती है। धन, संतान, सुयश, धर्म, ज्ञान, अध्यात्म आदि सभी का लाभ होता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बाज (Eagle): **गरुड़** : स्वप्न में बाज दिखाई दे तो यह शरीर में स्फूर्ति आने का द्योतक है। यदि कोई रोगी या आलसी मनुष्य बाज को देखे तो उसके शरीर में ताकत आना एवं आलस्य का दूर होना समझना चाहिए। यदि कोई व्यापारी बाज को देखे तो उसके व्यापार में वृद्धि होती है। नौकर है तो पदोन्नति का प्रतीक माना जा सकता हैं। यह दूर देशों की यात्रा का संकेत है। स्वप्न देखने वाला शीघ्र ही विदेशों की यात्रा करेगा। बाज का जोड़ा दिखाई दे तो बहुत अच्छा स्वप्न कहा जाता है। इससे हवाई-यात्रा के अवसर बढ़ जाते हैं। द्विगुणित लाभ की संभावना होती है। 'सपनों का संसार' में बाज को स्वप्न में देखना अशुभ माना गया है।

बिच्छु या वृश्चिक (Scorpion): बिच्छु का स्वप्न में दिखाई देना शुभ तथा अशुभ दोनों प्रकार का फल देने वाला समझा जाता है। शुभ इन अर्थों में कि द्रष्टा कभी किसी बलवान व्यक्ति को दबाये देखने में पूर्ण सफल हो जाता है। स्वप्न देखने वाले के आतंक से कोई व्यक्ति उसके सामने सिर नहीं उठा सकता है। यदि स्वप्न देखने वाला व्यक्ति सेना में है तो वह सभी का अफसर बन सकता है। यदि कोई मोर्चे पर है तो वह स्वप्न देखता है शत्रु की हार निश्चित होती है। परन्तु यदि स्वप्न देखने वाले को स्वयं को काटे तो स्थिति हानिकारक होती है। इससे दुश्मन जातक पर हावी होने की कोशिश करते हैं।

मछली (Fish): जीवित मछली यदि दृष्टा देखे तो समुद्र यात्रा सम्पन्न होगी। मरी मछली देखना दरिद्रता का सूचक हैं। यदि मछली खरीदने का स्वप्न कोई देखे तो उसे अपने किसी सम्बन्धी से विरासत में मोटी सम्पत्ति मिलेगी। स्वप्न में कोई मछली भेंट दे तो उसे बारात का निमंत्रण मिलेगा। यदि स्त्री ऐसा देखे तो वह स्वयं अपने पति के साथ आनंद से जीवन व्यतीत करेंगी। यह लक्षण शुभ है। इसे राज्यलक्ष्मी का सूचक माना जाता है। यदि मछली जल में पड़ी हुई दिखाई दे तो सभी कामनाओं के फलीभूत होने का अवसर प्राप्त हो सकता है।

मुर्गा (Cock) :यदि स्वप्न में मुर्गा दिखाई दे तो अशुभ लक्षण। इसके बोलने का अभिप्राय यह है कि किसी रोग के आगमन की सूचना अथवा किसी प्रियजन की मृत्यु से लगाया जाता है। यह भी संभव है कि जातक स्वयं किसी दुर्घटना का शिकार हो जाये। मुर्गा-मुर्गी दोनों साथ दिखाई दें तो दाम्पत्य-जीवन में सुख-शांति का प्रतीक समझना चाहिए। यदि मुर्गी अण्डे देती दिखाई दे तो व्यापार में लाभ, नौकरी में अत्यधिक आय होती है। कुछ विद्वान स्वप्न में मुर्गा देखना या उसकी बांग सुनना अच्छा मानते है। यह अच्छे भाग्य का परिचायक है।

यदि कोई विवाहिता स्वप्न में बहुत से मुर्गी के बच्चे देखे तो समझो कि वह बहुत बड़े परिवार की प्रमुख होगी। ऐसे ही पुरूष देखे तो वह उच्च अधिकारी होगा। व्यापारी और दुकानदार देखें तो वे अपने व्यापार में बहुत लाभ प्राप्त करेंगे। कुमार और कुमारियों का प्रेम शीघ्र सगाई होकर दृढ़ होगा। वे आनंदमय विवाहित जीवन बिताएंगे। विद्यार्थी अपनी कक्षा के मॉनीटर बनेंगे। यदि चूजे तगड़े हैं तो ऊपर लिखी बातें सच्ची होगी और यदि वे बीमार से हैं या एक है तो मानो दृष्टा के बुरे दिन हैं। वह किसी बीमारी या आर्थिक हानि का संकेत है।

मैना : मैना का स्वप्न में दिखाई देना सामान्य फल व्यक्त करता है। यह शुभ और अशुभ दोनों प्रकार का परिणाम व्यक्त कर सकती है। यह उत्तम स्वास्थ्य का सूचक है।

मोर (Peacock): मोर का नाच देखना शुभ है। जंगल में देखना अति शुभ है। बिना नृत्य के मोर देखना अत्यंत अशुभ है।

सिंह या शेर (Lion) **:** यदि स्वप्न में शेर दिखाई दे जाए तो यह बल का प्रतीक माना जाता है। निकट भविष्य में जातक की शक्ति बढ़ेगी, सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सिंह-सिंहनी का जोड़ा भी दाम्पत्य जीवन में अनबन का प्रतीक है। स्वप्न में शेर का दिखना धन प्राप्ति का द्योतक है। शेर का मुकाबला हो तो दृष्टा की किसी शक्तिशाली व्यक्ति से शत्रुता होगी। शेर का शिकार खेलने का स्वप्न शत्रुओं पर विजय प्राप्ति सूचक है। यदि कोई शेर को सर्कस के लिए कला सिखाने का सपना देखे तो समझो शत्रु उससे दूर भागेंगे।

हिरण (Deer) **:** यदि स्वप्न में मृग या हिरण दिखाई दें तो सामान्य फल का सूचक होता है। यदि मृग छलांग लगाकर भागता दिखाई दे तो इसे यात्रा का प्रतीक माना जा सकता है। यदि खड़ा दिखाई दे तो सामान्य फल प्रदर्शित करता है। यदि मृग शावक दिखाई दे तो संतान पक्ष के लिए हितकर, यदि जोड़ा दिखाई दे तो वैवाहिक जीवन में सुख, आनंद एवं प्रसन्नता प्राप्त होती है। यदि स्वप्न में किसी को हिरण दिखता है तो यह अच्छा शकुन है। इससे धन की प्राप्ति होगी। यदि कोई कैदी हिरण को स्वप्न में मैदान में छलांगें मारता देखता है तो वह अपराध ा से बरी हो जाएगा।

व्यापार में सफलता सूचक स्वप्न :

1. यदि स्वप्न में उड़ता हुआ कबूतर दिखाई पड़े तो व्यवसाय में लाभ होता है।
2. यदि स्वप्न में कोई पार्सल प्राप्त करता है तो वह व्यापार में अवश्य सफलता प्राप्त करता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

3. स्वप्न में दस्तावेज देखना व्यावसायिक उन्नति का सूचक है।
4. स्वप्न में तिजोरी देखना व्यापार में उन्नति का शुभ लक्षण है।
5. सपने में कैंची देखने से व्यवसायिक उन्नति चरम सीमा पर पहुंच जाती है।
6. सपने में हस्ताक्षर देखने से व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ता है।
7. यदि सपने में साईन बोर्ड देखे तो व्यापारिक सफलता मिलती है।
8. सपने में नौकरी मिलना देखने से व्यवसाय प्रारंभ होता है।
9. सपने में मुर्गी काटना देखने से व्यवसाय में हानि होती है।
10. सपने में बही-खाता देखने से व्यापार विशाल हो जाता है।
11. सपने में बही-खाता किसी को देने से व्यापार समाप्त हो जाता है।
12. स्वप्न में तराजू देखने से तरक्की होती है।
13. स्वप्न में चूहा देखने से व्यापार में उन्नति होती है किन्तु स्त्री धोखा दे जाती है।
14. स्वप्न में रद्दी सामान देखने से कबाड़ के व्यवसाय में धन कमाता है।
15. स्वप्न में तैरती बत्तख देखना व्यवसायिक उन्नति की निशानी है।

विद्या बुद्धि एवं सम्मानदायक स्वप्न :

1. स्वप्न में कनेर का फूल देखने से मान-सम्मान में वृद्धि होती है।
2. स्वप्न में पुस्तक देखने से विद्या, बुद्धि एवं सम्मान की प्राप्ति होती है।
3. सपने में नाक लम्बा देखने से सम्मान मिलता है।
4. स्वप्न में पढ़ाई देखने से सम्मान मिलता है।
5. स्वप्न में अधिक बातें करना भी मान-प्रतिष्ठा पाने का लक्षण है।
6. स्वप्न में 'दरबार' देखने से उच्च स्थान की प्राप्ति होती है।
7. सपने में प्रज्ज्वलित दीपक देखने से प्रसिद्धि प्राप्त होती है।
8. स्वप्न में कलम देखने से अपार विद्या की प्राप्ति होती है।
9. स्वप्न में पत्र देखने वाले व्यक्ति की शान शौकत बढ़ती है मान-प्रतिष्ठामें वृद्धि होती है।
10. स्वप्न में इत्र-फुलेल लगाना, हंसना देखना, सम्मान सूचक निशानी है।
11. स्वप्न में पंचांग देखना ज्योतिषों एवं पंडित बनने का आभास देता है।
12. स्वप्न में गुम्बद देखना, चश्मा देखना, गुरुद्वारा जाना, बाइबिल देखना, अध्यापक या अध्यापिका देखना, शास्त्रों का पाठ करना, पक्षियों का जोड़ा देखना, पताका देखना, विद्या बुद्धि एवं मान-सम्मान पाने का विशिष्ट लक्षण मानागया है।

13. स्वप्न में गेहूं, जौ, सरसों देखना या छूना अथवा प्राप्त करना विद्या में सफलता पाने की निशानी है।
14. स्वप्न में जो लक्ष्मी, सरस्वती, सूर्यदेव या कुलदेवता को जल चढ़ाते हुए अपने आप को देखता है, वह उत्तम विद्या एवं यश पाता है।
15. धरती से ऊपर उछाल मारते अपने आपको सपने में देखना, देवताओं द्वारा प्राप्त अमृत स्वप्न में पान करना भी ज्ञानोन्नति सूचक है।

विदेश यात्रा सम्बन्धी स्वप्न :

1. जो व्यक्ति स्वप्न में शौचालय को देखता है, उसकी विदेश यात्रा संबंधी योजना सफल हो जाती है।
2. जो व्यक्ति स्वप्न में अपने आपको उड़ते हुए देखता है, उसकी यात्रा सफल हो जाती है।
3. जो स्वप्न में उड़ते हुए पक्षियों से आकाश को भरा हुआ देखता है, वह विदेश-यात्रा करता है।
4. जो व्यक्ति सपने में विमान देखता है, समझो उसकी विदेश यात्रा होने ही वाली है।
5. जो स्वप्न में जहाज को उड़ता देखता है, तो समझो कि विदेशों से धन आने ही वाला है।
6. स्वप्न में जूते का दर्शन विदेश-यात्रा की निशानी है।
7. स्वप्न में नाव पर चढ़ना देखने पर विदेश यात्रा होती है।
8. स्वप्न में अपने आपको भयातुर होते हुए देखे तो विदेशगमन होता है।
9. स्वप्न में किसी प्रकार की दुर्घटना होते देखे तो विदेश गमन नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे यात्रा में विघ्न उपस्थित होता है।

स्वास्थ्य प्राप्ति सूचक स्वप्न :

1. स्वप्न में किसी दुर्घटना से बचाव हो जाना रोगी को स्वास्थ्य होने की सूचना देती है।
2. सपने में नर्स को देखना बीमार व्यक्ति के लिए स्वास्थ्य लाभ की निशानी हैं।
3. स्वप्न में दांत देखना स्वास्थ्य वृद्धि सूचक माना गया हैं
4. स्वप्न में घना केश देखना स्वास्थ्य लाभ की निशानी है।
5. जो व्यक्ति स्वप्न में भोजन फेंकता है मानो वह अपने रोग को फेंक रहा है।
6. स्वप्न में साबुन देखना रोग-नाशक होता है।
7. स्वप्न में उड़द की दाल देखने से दुख का अंत हो जाता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

8. स्वप्न में अपने आपको रोगी देखना उत्तम समझा जाता हैं
9. स्वप्न में सुपारी देखना रोगनाशक समझा जाता है।
10. जो व्यक्ति अपने आपको स्वप्न में विषपान करते देखता है, वह समस्त रोगों से मुक्ति पाकर सुख भोगता है।
11. सपने में पुराने घर को गिराकर नये गृह का निर्माण करता है, मानो वह रोग मुक्त होकर नये जीवन का निर्माण कर रहा है।
12. यदि कुमकुम लगाकर अपने विवाह में स्वप्न में बैठे तो वह समस्त रोगों से छुटकारा पा लेता है।
13. जो व्यक्ति नदियों, कमलों, बगीचें या हरे-भरे पर्वत, शिखरों का स्वप्न में देखता है, वह रोग मुक्त हो जाता है।
14. जो व्यक्ति सपने में देवताओं, ऋषियों, मुनियों एवं अपने माता-पिता को सम्मानपूर्वक देखता है, उसके रोग नष्ट हो जाते है।

स्वप्न में विशिष्ट पदाधिकारियों को देखने का फल

पदाधिकारी		**फल**
राष्ट्रपति ऊंचे	-	पद की उन्नति
प्रधानमंत्री	-	सर्वोच्च अधिकार मिले
मंत्री	-	मान-सम्मान लाभ
सिपाही	-	अनधिकृत कार्य करे
राजा	-	अभिलाषा पूर्ति
उद्योगपति	-	सामाजिक उन्नति
चिकित्सक	-	पदोन्नति
अध्यापक	-	ज्ञान-प्राप्ति
न्यायाधीश	-	क्लेश समाप्ति
योगी	-	पूजा-पाठ में मन लगेगा
सैनिक	-	साहस में बढ़ोतरी
प्रसन्नमना नेता	-	क्लेश समाप्ति
मंदिर का पुजारी	-	क्लेश प्राप्ति
मृत दादा	-	प्रसन्नतादायक
मृत दादी	-	लाभ
नाना	-	सद्भाव बढ़े
पिता	-	सुरक्षात्मक समय

चाचा	-	क्लेश
चाची	-	प्रतिष्ठा बढ़े
माता	-	संकट कटे
भाई	-	पारिवारिक सुख-समृद्धि
भाभी	-	पारिवारिक वृद्धि
दोस्त	-	मिलन
दुश्मन	-	अशुभ
प्रेमी	-	शीघ्र मिलन
प्रेमिका	-	प्रेम-वृद्धि
शैतान से प्रेम	-	धन-मान हानि
शैतान से विरोध	-	सुख-प्राप्ति

स्वप्न में विभिन्न ताश के पत्तों को देखने का फलें

	ताश के पत्ते	**फल**
0	ताश देखने से	धन मिलेगा
1.	ताश का एक्का	अधिकार प्राप्ति
2	ताश का दुग्गी	असमंजस में पड़ना
3.	ताश का तिग्गी	व्यवसाय में सफल
4.	ताश का चौग्गा	कठिनाई से सफलता
5.	ताश का पंजा	सूझ-बूझ बढ़ेगी
6.	ताश का छक्का	प्रेम-प्यार बनेगा
7.	ताश का सत्ता	कार्यों में विघ्न
8.	ताश का अट्ठा	संघर्ष बढ़ेगा
9.	ताश का नहला	साहस में बढ़ोतरी
10.	ताश का दहला	अवश्य लाभ
11.	ताश का गुलाम	चमचागिरी
12.	ताश का बेगम	अधिकार की प्राप्ति
13.	ताश का बादशाह	मान-सम्मान की प्राप्ति

स्वप्नों का यह ज्ञान सबके लिए हितकर है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

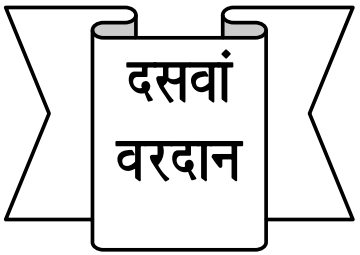

इस्लाम में ख्वाब और ताबीर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दसवां वरदान : इस्लाम में ख्वाब और ताबीर

इस्लाम धर्म में स्वप्न (ख्वाब) और उसका ताबीर (फल) माना है। उनका यह मन्तव्य है कि स्वप्न खुदा की रहमत (कृपा) है। इस्लाम के अनुसार मस्तक शक्ति की उपज ही स्वप्न है।

ईसामसीह के जन्म सूचक स्वप्न :जब यीशु की माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हुई तो उनके समागम से पूर्व ही वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई। उसके पति यूसुफ ने धर्मी होने के कारण उसे बदनाम न करने की इच्छा से चुपचाप उसे त्याग देने का विचार किया। जब वह यह सोच रहा था तो प्रभु का एक स्वर्गदूत उसे स्वप्न में यह कहता दिखाई पड़ा - हे यूसुफ! ओ डेविड तू मरियम को अपनी पत्नी बनाने से मत डर, क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्रात्मा की ओर से है। वह पुत्र को जन्म देगी और तूं उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा। यह सब इसलिए हुआ कि प्रभु ने जो वचन नबी के द्वारा कहा था, वह पूरा हो। "देखो! एक कुंवारी गर्भवती होगी, वह एक पुत्र को जन्म देगी और उसका नाम इस्मानुएल रखा जाएगा," जिसका अर्थ है, 'परमेश्वर हमारे साथ। ' तब यूसूफ नींद से जाग उठा और परमेश्वर के स्वर्गदूत की आज्ञा अनुसार अपनी पत्नी को ब्याह कर ले आया। मरियम के पास तब तक नहीं गया जब तक उसने पुत्र को नहीं जन्म दिया, यूसुफ ने उसका नाम यीशु रखा।

यूसूफ बड़ा सुन्दर था, साथ ही वह नवाब भी हुआ है। उसे एक बार यह स्वप्न आया कि चाँद, सूर्य तथा दस तारे उसके सामने झुक गए हैं। उनके पिता याकूब ने यह फल बताया कि दस भाई और माँ-बाप उसके पैरों में झुकेगें। अन्त में वह समय पाकर मिश्र का बादशाह बना और किसी प्रसंग में 12 विरोधी व्यक्ति उसके पैरों की ओर झुके थे और स्वप्न सच्चा हुआ था।

यीशु की सुरक्षा स्वप्न : राजा हेरोदेस के समय में जब यहूदियों के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ, पूर्व दिशा से ज्योतिषी यरुशलेम में पहुंचकर पूछने लगा - "यहूदियों का राजा जिसका जन्म हुआ, कहां हैं? क्योंकि हमने पूर्व में

उसका तारा देखा है और उसको दण्डवत् करने आए हैं।" जब राजा हेरोदेस ने यह सुना तो वह और उसके साथ सारा यरूशलेम घबरा गया। हेरोदेस ने ज्योतिषियों को चुपचाप बुलाकर उनसे इस बात का निश्चय किया कि तारा ठीक किस समय दिखाई दिया था तथा यह कहकर उन्हें बैतलहम भेजा, "जाओ, उस बालक का सावधानी से पता लगाओ, जब वह तुम्हें मिल जाए तो मुझे समाचार दो कि मैं भी जाकर उसे दण्डवत् करूं।"

राजा की बात सुनकर वे चल पड़े, जिस तारे को उन्होंने पूर्व में देखा था, वह उनके आगे-आगे तब तक चलता रहा जब तक कि वहां पहुंचकर उस स्थान के ऊपर ठहर न गया, जहां बालक था। वे उस तारे को देखकर अति आनन्दित हुए। उन्होंने घर में पहुंचकर उस बालक को उसकी माता मरियम के साथ देखा, भूमि पर गिरकर उसको दण्डवत् किया, अपना-अपना सन्दूक खोलकर उसे सोना, लोबान और गंधरस की भेंट चढ़ाई। तब स्वप्न में परमेश्वर से यह चेतावनी पाकर कि हेरोदेस के पास नहीं लौटना, वे दूसरे मार्ग से अपने देश को चले गए।

मिश्र में आश्रय पाना :जब वे चले गए तो, प्रभु के दूत ने स्वप्न में यूसुफ को दिखाई देकर कहा - "उठ! बालक तथा उसकी माता को लेकर मिश्र को भाग जा, जब तक मैं न कहूं वहीं रहना, क्योंकि इस बालक को खोजने पर हेरोदेस उसे मरवा डालेगा।" वह रात को ही उठकर बालक एवं उसकी माता को लेकर मिश्र चला गया। हेरोदेस की मृत्यु तक वहीं रहा।

इस्राएल में रहने का स्वप्न : जब हेरोदेस की मृत्यु हो गई तो, मिश्र के प्रभु के दूत ने यूसुफ को स्वप्न में दिखाई देकर कहा- "उठ! बालक तथा उसकी माता को लेकर इस्राएल के देश में चला जा, क्योंकि वे जो उसका प्राण लेना चाहते थे, मर चुके हैं।" वह (यूसुफ) उठा और बालक तथा उसकी माता को साथ लेकर इस्राएल के देश में आया, परन्तु यह सुनकर कि अरखिलाउस अपने पिता हेरोदेस के स्थान पर यहूदिया में राज्य कर रहा है, वहां जाने से डरा। फिर स्वप्न में परमेश्वर से चेतावनी पाकर वह गलील के प्रदेश में चला गया और नासरत नामक एक नगर में जाकर रहने लगा।

बाईबिल में सपने - जोसेफ (Joseph)जब छोटा था। उसने एक सुन्दर सपना देखा कि उसके भाइयों ने गेहूँ के दस बोरे बांधें और उस बौरे पर वे झुके हुए हैं, जो जोसेफ ने बांधा था। इस स्वप्न का मतलब यह था कि उसके भाई एक दिन उसके सामने झुक जायेंगे। जब जोसेफ बड़ा हुआ तो उसके भाइयों को उसके सामने झुकना पड़ा था।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मिश्र के रय्यान बादशाह ने स्वप्न देखा कि मकई के सिट्टे को कुछ पंछी नोच-नोच कर खा रहे हैं। इसका फल लोगों ने यह बताया कि सात वर्ष तक अकाल पड़ेगा। ऐसा ही हकीकत में हुआ। अभिप्राय यह है कि इस्लाम में भी स्वप्न का संबंध अच्छे और बुरे फल से जोड़ा गया है।

याकूब का स्वप्न : याकूब बेर्शेबा से निकलकर हारान की ओर चला। उसने किसी स्थान पर पहुंचकर रात वहीं बिताने का विचार किया, उसने उस स्थान के पत्थरों में से पत्थर ले अपना तकिया बनाकर रखा और उसी स्थान पर सो गया। उसने स्वप्न में देखा कि एक सीढ़ी पृथ्वी पर खड़ी है और उसका सिर स्वर्ग तक पहुंचा है और परमेश्वर के दूत उससे चढ़ते-उतरते हैं।

यहोवा उसके ऊपर खड़ा होकर कहता है कि 'मैं यहोवा, तेरे दादा इब्राहिम का परमेश्वर और इसहाक का भी परमेश्वर हूँ। जिस भूमि पर तू पड़ा है, उसे मैं तुझको और तेरे वंश को दूंगा। तेरा वंश भूमि की धूल के 'कणों' के समान बहुत होगा। पश्चिम, पूरब, उत्तर, दक्षिण चारों ओर फैलता जाएगा। तेरे और तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे कुल आशीष पाएंगे। सुन, मैं तेरे संग रहूंगा, जहां कहीं तू जाए वहां तेरी रक्षा करूंगा और तुझे इस देश में लौटा के ले आऊंगा। मैं अपने कहे हुए को जब तक पूरा न कर लूं तब तक तुझको नहीं छोडूगा। ' बाद में याकूब जाग उठा ओर कहने लगा, निश्चय ही इस स्थान में यहोवा है, मैं इस बात को नहीं जानता था। भय खाकर उसने कहा, यह स्थान कितना भयानक है। यह तो परमेश्वर के भवन को छोड़ और कुछ नहीं हो सकता, वरन् यह स्वर्ग का फाटक ही होगा। सुबह याकूब जल्दी उठा, अपने तकिए का पत्थर लेकर उसका खम्भा खड़ा किया, उसके सिरे पर तेल डाल दिया। उसने एक स्थान का नाम बेतेल अर्थात् ईश्वर का भवन रखा। याकूब ने यह मन्नत मानी, कि यदि परमेश्वर मेरे संग रहकर इस यात्रा में मेरी रक्षा करें, मुझे पिता के घर कुशल क्षेम लौटा देगा तो यहोवा मेरा परमेश्वर का भवन ठहरेगा और जो कुछ तू मुझे दे उसका दशमांश मैं तुझे अवश्य दिया करूंगा।

पिलानेहारा और पकानेहारा का स्वप्न :मिश्र के राजा का पिलानेहारा और रसोईयां जो बन्दीगृह में बन्द थे। उन दोनों ने एक ही रात में अपने-अपने होनहार के अनुसार स्वप्न देखा। प्रातः काल जब युसुफ उनके पास अन्दर गया, तब उसने देखा कि वे उदास हैं। पूछा, कि आज तुम्हारा मुंह क्यों उदास हैं? उन्होंने उससे कहा, हम दोनों ने स्वप्न देखा है और उनके फल को बतानेवाला कोई भी नहीं हैं। यूसुफ ने कहा - 'क्या स्वप्नों का फल बताना परमेश्वर का काम नहीं है? मुझे अपना-अपना स्वप्न बताओ।"

तब पिलानेहारों का प्रधान अपना स्वप्न यूसुफ को बताने लगा कि 'मैंने स्वप्न में देखा कि मेरे सामने एक दाख लता है, उस लता में तीन डालियां हैं और उसमें मानों कलियां लगीं हैं और वे फूली और उनके गुच्छों में दाख लगकर पक गई। फिरौन का कटोरा मेरे हाथ में था। मैंने उन दाखों को लेकर फिरौन के कटोरे में निचौड़ा और कटोरे को फ़िरौन के हाथ में दिया। '

यूसुफ ने उससे कहा - 'इसका फल यह है कि तीन डालियों का अर्थ तीन दिन है। अतः अब से तीन दिन के भीतर फ़िरौन तेरा सिर ऊँचा करेगा और फिर से तेरे पद पर तुझे नियुक्त करेगा और तू पहले की तरह फ़िरौन का पिलानेहारा होकर उसका कटोरा उसके हाथ में फिर दिया करेगा। जब तेरा भला हो जाए तब मुझे स्मरण करना। फ़िरौन में मेरी चर्चा चलाना और इस घर से मुझे छुड़वा देना। मैंने कोई ऐसा काम नहीं किया, जिसके कारण मैं इस कारागार में डाला जाऊं। '

रसोईयों के प्रधान ने यूसुफ से कहा - 'मैंने भी स्वप्न देखा हैं, वह यह है कि मेरे सिर पर सफेद रोटी की तीन टोकरियां हैं। ऊपर की टोकरी में फ़िरौन के लिए सब प्रकार की पकी पकाई वस्तुएं हैं, पक्षी मेरे सिर की टोकरी में से उन वस्तुओं को खा रहे हैं। यूसुफ ने कहा - "इसका फल यह है कि तीन टोकरियों का अर्थ तीन दिन है। अब से तीन दिन के भीतर फ़िरौन तेरा सिर कटवाकर तुझे एक वृक्ष पर टंगवा देगा और पक्षी तेरे मांस को नोच-नोच कर खाएंगे। '

तीसरे दिन फ़िरौन का जन्म दिन था। उसने अपने सब कर्मचारियों की जीमनवार की और उनमें से पिलानेहारों के प्रधान और रसोईयों के प्रधान दोनों को बन्दीगृह से निकलवाया। पिलानेहारों के प्रधान को तो पिलानेहारे के पद पर फिर से नियुक्त किया और वह फ़िरौन के हाथ में कटोरा देने लगा पर रसोईयों के प्रधान को उसने टंगवा दिया जैसा कि यूसुफ ने उनके स्वप्नों का फल उनसे कहा था।

फ़िरौन के स्वप्न : फ़िरौन ने स्वप्न देखा कि वह नील नदी (योर नदी) के किनारे पर खड़ा है। उस नदी में से सात सुन्दर और मोटी-मोटी गायें निकलकर कछार की घास चरने लगी। उनके पीछे अन्य सात गायें, जो कुरूप और दुर्बल हैं, नदी से निकलीं, दूसरी गायों के निकट नदी के तट पर जा खड़ी हुई। ये कुरूप और दुर्बल गायें उन सात सुन्दर और मोटी-मोटी गायों को खा गईं। फिरौन जाग उठा और वह फिर सो गया। दूसरा स्वप्न देखा कि एक डंठी में से सात मोटी और अच्छी-अच्छी बालें निकली। उनके पीछे सात बालें पतली और पुरवाई से

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मुरझाई हुई निकलीं। इन पतली बालों ने उन सातों मोटी और अन्न से भरी हुई बालों को निगल लिया। फ़िरौन जागा, उसे मालूम हुआ कि यह स्वप्न ही था।

सुबह फ़िरौन का मन व्याकुल हुआ। उसने मिश्र के सब ज्योतिषियों और पण्डितों को अपने स्वप्न बतायें, पर उनमें से कोई भी उनका फल फ़िरौन से न कह सका। तब फ़िरौन ने यूसुफ को बुलवाकर उसे झटपट बन्दीगृह से बाहर निकलवाया। वह फ़िरौन के सामने आया। फ़िरौन ने यूसुफ से कहा - मैंने स्वप्न देखा है, उसके फल का बताने वाला कोई भी नहीं हैं, मैंने तेरे विषय में सुना है कि तू स्वप्न सुनते ही उसका फल बता सकता है। यूसुफ ने फ़िरौन से कहा - 'मैं तो कुछ नहीं जानता। परमेश्वर ही फ़िरौन के लिए शुभ वचन देगा।' फ़िरौन यूसुफ से कहने लगा - मैंने अपने स्वप्न में देखा कि मैं नील नदी के किनारे पर खड़ा हूँ। नदी में से सात मोटी और सुन्दर-सुन्दर गायें निकलवाकर कछार की घास चरने लगीं। उनके पीछे सात गायें और निकलीं, जो दुबली और बहुत कुरूप थीं। उन्होंने पहली सातों मोटी-मोटी गायों को खा लिया। तब मैं जाग उठा। फिर मैंने दूसरा स्वप्न देखा, एक ही डंटी में सात अच्छी-अच्छी और अन्न से भरी हुई बालें निकलीं। उनके पीछे सात बालें पतली-पतली पुरवाई से मुरझाई हुई निकलीं। इन पतली बालों ने उन सातों अच्छी-अच्छी बालों को निगल लिया। यूसुफ ने फ़िरौन से कहा - 'परमेश्वर जो कुछ काम करना चाहता है, उसको उसने फ़िरौन को जताया है। वे सात अच्छी-अच्छी गायें सात वर्ष हैं, और सात अच्छी-अच्छी बालें भी सात वर्ष हैं, स्वप्न एक ही है।' सारे मिश्र देश में सात वर्ष तो बहुतायत की उपज के होंगे। उनके पश्चात् सात वर्ष अकाल के आयेंगे और सारे मिश्र देश में लोग इस सारी उपज को भूल जायेंगे। अकाल से देश का नाश होगा। अकाल अत्यन्त भयंकर होगा। फ़िरौन ने यह स्वप्न दो बार देखा है इसका भेद यहीं है कि यह बात परमेश्वर की ओर से नियुक्त हो चुकी है, वह इसे शीघ्र ही पूरा करेगा।

नृप नबूकदनेस्सर का स्वप्न : राजा नबूकदनेस्सर ने दानिय्येल से पूछा-क्या तुझमें इतनी शक्ति है कि जो स्वप्न मैंने देखा है उसे फलसहित मुझे बताये। दानिय्येल ने राजा को उत्तर दिया। जो भेद राजा पूछता है, वह न तो पण्डित, न तांत्रिक, न ज्योतिषी, न दूसरे भविष्य-वक्ता, राजा को बता सकते हैं। भेदों का प्रकटकर्त्ता परमेश्वर ने राजा को जताया है कि अन्त के दिनों में क्या-क्या होने वाला है। तेरा स्वप्न और जो कुछ तुमने पलंग पर सोये हुए देखा, वह यह है -

'हे राजा! जब तू देख रहा था, तब एक बड़ी मूर्त्ति दीख पड़ी। वह मूर्त्ति, जो तेरे सामने खड़ी थी, वह लम्बी चौड़ी थी, उसकी चमक अनुपम थी और

उसका रूप भंयकर था। उस मूर्त्ति का सिर तो असली सोने का था, उसकी छाती और भुजाएं चान्दी की, उसका पेट और जांघे पीतल की, उसकी टांगे लोहे की और उसके पांव कुछ तो लोहे के और कुछ मिट्टी के थे। एक पत्थर ने बिना किसी के खोदे, अपने आप उखड़कर उस मूर्त्ति के पांवों पर लगकर जो लोहे और मिट्टी के थे, उनको चूर-चूर कर डाला। लोहा, मिट्टी, पीतल, चान्दी और सोना भी चूर-चूर हो गए और धूपकाल में खलिहानों के भूसे की तरह हवा में ऐसे उड़ गए कि उनका कहीं पता न रहा, वह पत्थर जो मूर्त्ति पर लगा था, वह बड़ा पहाड़ बन सारी पृथ्वी में फैल गया।

यह सोने का सिर तू ही है। तेरे बाद एक राज्य का उदय होगा जो तुझ से छोटा होगा। फिर एक और तीसरा पीतल का सा राज्य होगा, फिर चौथा राज्य लोहे के तुल्य मजबूत होगा, लोहे से तो सब वस्तुएं चूर-चूर हो जाती हैं और पिस जाती है। वैसे ही उस चौथे राज्य से सब कुछ चूर-चूर होकर पिस जायेगा। तू ने जो मूर्ति के पांवों और उनकी अंगुलियां को देखा, जो कुछ मिट्टी की और कुछ लोहे की थी, इससे वह चौथा राज्य बंटा हुआ होगा, तो भी उसमें लोहे का सा कड़ापन रहेगा। जैसे कि तू ने कुम्हार की मिट्टी के संग लोहा भी मिला हुआ देखा था। पांवों की अंगुलियां कुछ तो लोहे की और कुछ मिट्टी की थी, इसका अर्थ यह है कि वह राज्य कुछ तो दृढ़ और कुछ निर्बल (कमजोर) होगा।

तू ने जो लोहे को कुम्हार की मिट्टी के संग मिला हुआ देखा, इसका अर्थ यह है कि उस राज्य के लोग एक दूसरे से मिले-जुले तो रहेंगे, परन्तु जैसे लोहा मिट्टी के साथ मेल नहीं खाता, वैसे ही वे भी एक न बने रहेंगे। परमेश्वर एक ऐसा राज्य उदय करेगा, जो अनन्तकाल तक न टूटेगा और न ही वह किसी दूसरी जाति के हाथ में जाएगा वरन् वह उन सब राज्यों को चूर-चूर करेगा और उनका अन्त कर डालेगा और वह सदा स्थिर रहेगा। जैसा तू ने देखा कि एक पत्थर किसी के हाथ के बिना खोदे पहाड़ में से उखड़ा, उसने लोहे, पीतल, मिट्टी, चान्दी और सोने को चूर-चूर किया, इसी रीति महान् परमेश्वर ने राजा को जताया है कि इसके बाद क्या-क्या होने वाला है। न स्वप्न में और न उसके फल में कुछ सन्देह है।

नबूकदनेस्सर का भविष्य सूचक स्वप्न : मैं (नबूकदनेस्सर) अपने भवन में चैन से प्रफुल्लित रहता था। मैंने ऐसा स्वप्न देखा जिसके कारण मैं डर गया। दानिय्यल मेरे सम्मुख आया और मैंने उसको अपना स्वप्न यह कहकर बता दिया कि हे, बेलतशस्सर तू तो सब ज्योतिषियों का प्रधान है, इसलिए जो स्वप्न आज रात मैंने देखा है उसे काल समेत मुझे बताकर समझा दे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मैंने देखा कि पृथ्वी के बीचों-बीच एक वृक्ष लगा है, उसकी ऊँचाई बहुत बड़ी है। वह वृक्ष बड़ा होकर दृढ़ हो गया और उसकी ऊँचाई स्वर्ग तक पहुंची, वह सारा पृथ्वी की छोर तक दीख पड़ता था। उसके पत्ते सुन्दर तथा उसमें बहुत फल थे। यहां तक कि उसमें सबके लिए भोजन था। उसके नीचे सब पशुओं को छाया मिलती थी, उसकी डालियों में आकाश की सब चिड़ियां बसेरा करती थी, सब प्राणी उससे आहार पाते थे।

मैंने पलंग पर देखा कि एक पवित्र पहरूआ स्वर्ग से उतर आया। उसने ऊँचे शब्द से पुकारकर यह कहा - वृक्ष को काट डालो, उसकी डालियों को छांट दो, उसके पत्ते झाड़ दो और उसके फल छितरा डालो, पशु उसके नीचे से हट जाएं और चिड़ियां उसकी डालियों पर से उड़ जाएं। उसके ठूंठ को जड़ सहित भूमि में छोड़ो, उसको लोहे और पीतल के बंधन से बांधकर मैदान की हरी घास के बीच रहने दो। वह आकाश की ओस से भीगा करे और भूमि की घास खाने में मैदान के पशुओं के संग भागी हो। उसका मन बदले और मनुष्य न रहे परन्तु पशु जैसा बन जाए, उस पर सात काल बीतें।

दानिय्येल (बेलतशस्सर) ने कहा - हे मेरे प्रभु! यह स्वप्न तेरे बैरियों पर और इसका अर्थ तेरे द्रोहियों पर फले। जिस वृक्ष को तू ने देखा, जिसके पत्ते सुन्दर और फल बहुत थे। जिसके नीचे मैदान के सब पशु रहते थे, जिसकी डालियों पर आकाश की चिड़ियां बसेरा करती थी। हे राजा! वह तू ही है। तू महान और सामर्थी हो गया, तेरी महिमा बढ़ी स्वर्ग तक पहुंच गई। तेरी प्रभुता पृथ्वी के छोर तक फैली है। हे राजा! तू मनुष्यों के बीच से निकाला जाएगा, मैदान के पशुओं के संग रहेगा, तू बैलों की तरह घास चरेगा, आकाश की ओस से भीगा करेगा, सात युग तुझ पर बीतेंगे, जब तक कि तू न जान ले कि मनुष्यों के राज्य में परमप्रधान ही प्रभुता करता है, जिसे चाहे वह उसे दे देता है उस वृक्ष के ठूंठ को जड़ समेत छोड़ने की आज्ञा जो हुई है, इसका अर्थ यह है कि तेरा राज्य तेरे लिए बना रहेगा, जब तू जान लेगा कि जगत का प्रभु स्वर्ग में ही है, तब तू फिर से राज्य करने पाएगा। इस कारण हे राजा! यदि तू पाप छोड़कर धर्म करने लगे, अधर्म छोड़कर दीन-हीनों पर दया करने लगे तो संभव है कि ऐसा करने में तेरा चैन बना रहे। यह सब कुछ नबूकदनेस्सर राजा पर घट गया।

राजकुमार तुत्मेस का स्वप्न : मिश्र के राजकुमार तुत्मेस ने स्वप्न देखा कि देवता उससे कह रहे हैं - मैं तुझे छोटे राज्य का न रहने दूंगा। बहुत बड़े क्षेत्र का शासन प्रबंधक बनाऊंगा। धन सम्पत्ति की कमी न रहने दूंगा। तू अपने

होरयाखू की शानदार स्मृति बनाना। राजकुमार ने स्वप्न स्मरण रखा और देखा कि राजगद्दी पर बैठते ही ठीक वैसी ही परिस्थितियां बनने लगी जैसा कि स्फिंक्स देवता ने उसे बताई थी। उसने अपने पिता की सामान्य सी कब्र को बहुमूल्य पत्थरों से इस प्रकार बनवाया जिससे उनकी स्मृति चिरकाल तक बनी रहे।

जौन वैसली का स्वप्न : एक बार जौन वैसली ने स्वप्न देखा कि उसकी मृत्यु हुई वह नरक गया। उसने वहां पहुंचकर पूछा - "क्या यहां पर मैथोडिस्ट के लोग हैं?" उत्तर मिला "हां है" फिर पूछा, "क्या यहां बैप्टिस्ट लोग है?" उत्तर मिला "हां है'। उसने फिर पूछा - "क्या यहां कैथोलिक लोग हैं? और फिर उत्तर हां हैं" इस चिन्ता में उसकी आंख खुल गई। शीघ्र ही वह फिर सो गया और उसने स्वप्न देखा कि वह स्वर्ग में है। उसने वही प्रश्न पूछे "क्या कोई" मैथोडिस्ट यहां पर है?"

उत्तर मिला - "नहीं"

"क्या कोई बैप्टिस्ट यहां है?

उत्तर मिला - "नहीं"

"क्या कोई कैथोलिक यहां पर है?"

उत्तर "नहीं" में मिला परन्तु जैसे ही उसने चारों ओर उन असंख्य प्रसन्नचित्त व्यक्तियों को देखा तो

पूछा - "ये सब लोग कौन हैं?"

उत्तर मिला - स्वर्ग में वही लोग हैं, जिन्होंने मेमने का लहू नहीं करने हेतु खुद को संकल्पित कर रखा है। अर्थात् जिसने हिंसा से छुटकारा पा लिया है। हिंसा एवं साम्प्रदायिक आग्रह मुक्त व्यक्ति ही स्वर्ग का अधिकारी है। संकीर्ण विचारधारा वाला नरकगामी एवं विशाल दृष्टिकोण वाला स्वर्गगामी बनता है।

स्वप्न नींद के साहचर्य से ही आताहै। इसलिए नींद की महत्ता स्वतः सिद्ध है। धर्म (शुभ कर्म) के प्रभाव से जो स्वप्न परिलक्षित होता है उसकी झलक और चमक दोनों ही हमारे निजी जीवन में आसानी से देखी जा सकती है। पाप (अशुभ-कर्म) के उदय से आने वाले स्वप्नों की भाषा का आभास स्वतः ही हो जाता है। धर्म-कर्म प्रभावज, पाप प्रभावज एवं प्रकृति विकारज स्वप्न-सिद्धान्तों को प्रायः सभी दर्शन मानते हैं। ज्योतिष तथा इस्लाम में भी दैविक स्वप्नों की मान्यता है क्योंकि इस्लाम की मान्यतानुसार स्वप्नों का कारण खुदा की रहमत यानी ईश्वर कृपा है। इस प्रकार विभिन्न विचारधाराओं में स्वप्न सिद्धान्त अलग-अलग जरूर है किन्तु उसके मूल-मंत्र भाविक स्वप्न (दैविक स्वप्न अथवा धर्म पाप प्रभावक स्वप्न) को सभी विचारधाराएं भिन्न-भिन्न नाम से मानती है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दुःस्वप्न निवारणार्थ मनोवैज्ञानिक उपाय

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ग्यारहवां वरदान : दुःस्वप्न निवारणार्थ मनोवैज्ञानिक उपाय

स्वप्न का सार्थक अर्थ समझना भी हंसी खेल नहीं है। भयंकर स्वप्न अन्तःकरण में अजीब हलचल मचा देते हैं। जिससे हमारा मन भूतों का डेरा बन जाता है। हमारे भावों तथा विचारों में अनेक विकृतियां आ जाती है। हर पल अनहोनी की आशंका मन में रहती है। स्वप्न सर्वथा अवस्तु नहीं है। नींद का सार है - स्वप्न। जो स्वप्न को समझ लेता है, वह अपने आपको भी समझ सकता है। स्वप्नों से मानव को लाभ अधिक है, हानियां कम है। इससे व्यक्ति का सर्वांगीण व्यक्तित्व प्रभावित होता है।

अयथार्थ स्वप्न क्यों आते हैं? इसके प्रत्युतर में कई मुख्य कारण बताए गए हैं :

--	अधिक स्वप्नों का दबाव।	--	अति बुढ़ापा।
--	अति बचपन।	--	अति कमजोरी।
--	अति भूख-प्यास।	--	मल-मूत्र की बाधा।
--	तीव्र क्रोध।	--	तीव्र लोभ।
--	देव माया।		

अशुभ स्वप्नों को शांत करने के उपाय :कभी-कभी किसी-किसी को रात्रि में अशुभ-स्वप्न दिखाई दे देते हैं। विभिन्न ग्रंथों में शांति के विभिन्न उपाय दर्शाये गये हैं। भद्रबाहुसंहितायाम् के अनुसार अशुभ स्वप्न के दिखलायी पड़ने पर जागकर णमोकार-मंत्र के पाठ का जप करना चाहिए। यदि अशुभ स्वप्न के पश्चात् शुभ स्वप्न आये तो दृष्ट स्वप्न की शांति का उपाय करने की आवश्यकता

नहीं। बुद्धिमान व्यक्ति को अपने गुरु के समक्ष शुभ और अशुभ स्वप्नों का कथन करना चाहिए किन्तु अशुभ स्वप्न को गुरू के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति के समक्ष कभी भी प्रकाशित नहीं करना चाहिए।

बुरे स्वप्नों को निष्प्रभाव कैसे करें?

बुरे स्वप्न आने पर चार लोगस्स का ध्यान करें ताकि चेतना पुनः निर्मलता की ओर गतिशील हो जाए अथवा महामंत्र का जाप करें। संकट टल जाएं। लोकधारणा कहती है कि बुरा स्वप्न आने पर पुनः सो जाए और अच्छा स्वप्न आने पर पुनः नहीं सोएं। शुभ स्वप्न की चर्चा भी नहीं करनी चाहिए अन्यथा उनका फल न्यून पड़ जाता है। यह अनुभवी लोगों का कहना है।

दुःस्वप्न निवारणार्थ मनोवैज्ञानिक उपाय

भयंकर स्वप्न देखना मन में स्थित कुविचारों का सूचक है। मन की शांति भंग न हो प्रत्युत सारे कार्य पूर्ण निर्भरता से चलते रहने चाहिए। जब-जब मन अशांत हो तब-तब बलपूर्वक इसे संसार के तनाव झंझट से खींचकर अपने विचारों में रूपान्तरण करो। सत्साहित्य का स्वाध्याय विचारों को बदल देता है। शयन करते समय तमाम अवयवों को एकदम ढीला छोड़ दो। आमाशय तथा अन्तड़ियों में भारीपन न हो और मस्तिष्क में कोई चिन्ता, भय, अशांति के विचार न हों। कायोत्सर्ग की मुद्रा में श्वांस-प्रेक्षा करते हुए अनुभव करें कि मेरे चारों ओर आनन्द की वर्षा हो रही है। मेरे भीतर अनन्त आनन्द का, अनन्त ज्ञान का, अनन्त दर्शन का सागर लहरा रहा है। उसका साक्षात्कार करना ही मेरे जीवन का लक्ष्य है। मैं शक्ति सम्पन्न हूँ। मैं शांति सम्पन्न हूँ। इस प्रकार शुभ संकल्प करने से मन शांत, एकाग्र एवं पवित्र हो जाता है, जिससे स्वप्नों की बहती धारा का प्रवाह शुभ दिशा में मुड़ जाता है।

स्वप्नों की दिशा का रूपांतरण -मानव अपने बहिर्मन को जैसा भावित, शिक्षित एवं प्रशिक्षित करता है, वैसा ही उसका अन्तःकरण बनता है, फिर वैसे ही उनके कार्य होते हैं। यहीं से स्वप्न-परिष्कार की प्रक्रिया शुरू होती है। नवीन स्वप्न रचना में हमारा चेतन मन सबसे बड़ा सहायक है। चेतन मन का चिन्तन मात्र ही पूर्ण निर्मल एवं पवित्र रहे। ऐसे उच्चतम विकास के प्रदेश में बहिर्मन को रखने का अभ्यास जरूरी है। उच्च विचारों के शिखर पर आरोहण करने वाले को कभी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अप्रिय स्वप्न नहीं दीखते। निद्रा से पूर्व शुभ विचारों के चिन्तन, रमण, मनन एवं शुभ संकल्प संजोने से ही शुभ तस्वीरें हमारे अन्तर्मन की चौखट में फिट (अंकित) हो जाती है। वे हमारे दैनिक-जीवन को अत्यधिक प्रभावित करते हैं। अन्तःकरण में शांति, शक्ति तथा समृद्धि के संकेत देने से जीवन के नव प्रभात का श्रीगणेश हो जाता है। निद्रावस्था में अन्तर्मन का सीधा प्रभाव पड़ता है। हिप्नोटिज्म का प्रभाव इसी महान तत्त्व पर निर्भर है। हिप्नोटिज्म निद्रावस्था में शुभ संकल्पों का प्रभाव रोगी के मन पर डाल सकता है। अथर्ववेद में दुःस्वप्नों का कारण बताते हुए कहा है कि हमारे अज्ञान और पाप-मन के कारण दुःस्वप्न आते हैं। उनके परिहार का कारण बताते हुए ऋषि लिखते हैं कि यदि स्वप्न में बुरे भाव आते हैं तो उन्हें अज्ञान, पाप और आपत्तिसूचक समझकर उनके परिष्कार के लिए ब्रह्म की उपासना करनी चाहिए। जिससे मन के अन्दर सतोगुण की वृद्धि होकर अच्छे स्वप्न दिखाई देने लगे और आत्मा की अनुभूति होने लगे। स्वप्न कम किये जा सकते हैं अथवा नहीं' इस विषय पर चिन्तन, मनन करने पर लगता है कि यदि उत्तेजनाओं में कमी हो जाए तो स्वप्नों में भी कमी हो सकती है। दुःखद स्वप्न की कमी हम प्रयत्न करने पर अवश्य कर सकते हैं। दुःखद स्वप्नों के बाहरी कारणों पर नियंत्रण करना सरल है। स्वच्छ स्थान में सोने तथा सोते समय मल-मूत्र का त्याग कर सोने से अप्रिय स्वप्नों में कमी हो सकती है। आन्तरिक उत्तेजनाएं धीरे-धीरे कम की जा सकती है। शत्रुओं द्वारा त्रस्त होने के स्वप्न तथा दूसरे प्रकार के दुःखदायी स्वप्न मैत्री भाव के अभ्यास से कम किए जा सकते हैं।

वैर का स्थायी भाव हमारी जागृतावस्था में हमें शत्रुओं के नाश के लिए अनेक योजनाएं बनने के लिए प्रेरित करता है। हम उसका विनाश चाहते हैं। हम अपने मन में किसी से वैर के कारण अपने विनाश की कल्पना नहीं करते, पर स्वप्न में हमारा मन शत्रुओं द्वारा त्रस्त होने का अनुभव हमें कराता है। अर्थात् स्वप्न में हमारी कल्पना कभी-कभी हमारे ही प्रतिकूल होती है। जागृतावस्था में हमे दूसरे की मृत्यु चाहते हैं, स्वप्नावस्था में अपनी ही मृत्यु देखते हैं। अतः सुखद एवं सुंदर स्वप्न देखने के लिए शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की आवश्यकता है। मैत्री भाव का अभ्यास सब प्राणियों के प्रति सद्भावना का अभ्यास है। सोते समय इस प्रकार का अभ्यास विशेषतः लाभकारी होता है। सोते समय यदि हम

अपने आप से यह कहकर सोएं कि 'हम सबके मित्र हैं और सभी हमारे मित्र हैं; सबका कल्याण हो; संसार के सभी प्राणी सुखी हों; तो यह भावना थोड़े ही दिनों में दुःखद स्वप्नों का आना बंद कर देगी। एक विशेष व्यक्ति के प्रति अपना विचार बदलकर अमैत्री भावना के बदले मैत्री भावना लाकर हम संसार के सभी प्राणियों के प्रति अपनी भावनाओं को उसी प्रकार बदल देते हैं; जिस प्रकार हम उस विशेष व्यक्ति के प्रति बदलते हैं। इस प्रकार की भावना का मनुष्य के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर भी अच्छा प्रभाव पड़ता है। प्रतिदिन सोते समय मैत्री भावना का अभ्यास करने से मनुष्य के आचरण में मौलिक परिवर्तन हो जाता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उपसंहार

भारतवर्ष ऋषि-मुनियों की जन्म-स्थली है। यहां पर धर्म-कर्म, पुण्य-पाप, शकुन और स्वप्नों की अवधारणा को लिए अध्यात्म की भागीरथी पूर्ण वेग के साथ बहती है। दर्शन में स्वप्नषविज्ञान आध्यात्मिक जगत् को अनुपम देन है। जब से सृष्टि की सरंचना हुई है, तब से मानव मानस पटल पर स्वप्नों के बीज अंकुरित होने लगे। संस्कारों से कल्पना, कल्पना से स्वप्नों का कालीन बुना जाता है। स्वप्नों के बीज कभी बाजार में नहीं बिकते बल्कि हमारे अव्यक्त मन में छिपे हैं। स्वप्नों में द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भाव का नियंत्रण नहीं होता। स्वप्नानुभव मानस-चित्रशाला के अनुरूप ही होते हैं। ऋजु आत्मा को गहन निद्रा का अनमोल वरदान प्राप्त है। जिससे वह सुखद स्वप्नों का सिनेमा बे-टिकट देखता है। स्वप्नों में दृष्टिगोचर होने वाली अनुकूलताएं हमें प्रोत्साहित करती हैं। स्वप्न के गूढ़ार्थ को समझे तो वे हमारे अच्छे मार्गदर्शक एवं मददगार हैं। स्वप्न से किसी को परेशान होने की जरूरत नहीं है। यह अचेतन द्वारा अपने दबावों को हल्का करने का एक उपक्रम है। स्वप्नों की विसंगतियां जीवन क्रम के ढ़ंग, तनावयुक्त जीवन-शैली को बदलने की चेतावनी देती है। ये निजी जीवन की जानकारियों को सचित्र प्रस्तुति देकर नये रहस्य उद्घाटित करते हैं। पुनः पुनः दिखने वाले स्वप्न एवं अंकों का बड़ा महत्त्व है। स्वप्न पर्यवेक्षण के आधार पर जीवन-विकास एवं जीवन परिष्कार के सूत्र मिलते हैं। जीवन में आकांक्षा के भाव चित्रों में स्वप्नों की तुलिकाएं यदि इन्द्रधनुषी रंग न भरे तो जीवन असह्य भार है। गेटे ने कहा है - हम अपने यथार्थ में नहीं, स्वप्न में जीते हैं। यदि स्वप्न-ज्योति बुझ जाएं तो हम जड़ हो जाएंगे। इसके गर्भ में जीवन-विकासार्थ अमिय-चषक भरे पड़े हैं। इससे हमारी इच्छा, आकांक्षा, अभिलाषा, उत्साह एवं रूचि को प्राणबल मिलता है। ये हमारे वास्तविक जगत् के भावात्मक अभावों की क्षतिपूर्ति करके हमारी अन्दरूनी कुरूपता को दूर करते हैं।

छोटे-छोटे स्वप्न इतिहास को नया मोड़ देते हैं, नवीन क्रान्तियों को जन्म देते हैं क्योंकि हर उपलब्धि पहले एक सपना होती है।

बहुत से अशुभ घटनाओं से परिपूर्ण स्वप्न शुभफल का पूर्वाभास देते है। जैसे स्वप्न में रोना, किसी की मृत्यु देखना। ये शुभफलप्रद माने गये हैं। कुछ स्वप्न अवश्य ऐसे होते है जो दुःखद घटनाओं के सर्जक होते है। उसकी चेतावनी समझकर पहले से सावधान होने जाने से अशुभ से रक्षा की जा सकती है। स्वप्नों का बहुत बड़ा विज्ञान है। कुछ स्वप्न शुभ होते हैं और कुछ स्वप्न अशुभ। शुभ स्वप्नों से समाधि मिलती है और अशुभ स्वप्नों से असमाधि-अशान्ति मिलती है। तीस उत्तम स्वप्न महाफल देने वाले हैं। सारे स्वप्न बहत्तर है। कुछ स्वप्न स्वविपाकी होते है अर्थात् उसका फल दृष्टा को ही मिलता है। कुछ स्वप्न परविपाकी होते है अर्थात् उनका फल दूसरों को मिलता है। कुछ स्वप्न न स्वविपाकी होते हैं और न ही परविपाकी होते हैं अर्थात् निरर्थक होते है। कुछ स्वप्न स्वविपाकी और परविपाकी दोनों होते हैं। कुछ-कुछ स्वप्न के फल व्यवहार में निश्चित फल की अवधारणा के विपरीत भी होते है जैसे कभी-कभी कुछ-कुछ स्वप्नों का फल निश्चित समय के विपरीत हजारों वर्षों के बाद भी मिलता है।

पुनः पुनः दिखाई देने वाले स्वप्न, दुर्घटना-सूचक स्वप्न, चमकदार अंकों वाले, चमकदार अक्षरों वाले स्वप्न में जरूर कुछ-कुछ रहस्य छिपा हुआ होता है। इस स्वप्न का शत-प्रतिशत यही फल होगा, यह भी नहीं कहा जा सकता। क्योंकि एक ही स्वप्न का फल एक व्यक्ति के लिए कुछ, दूसरे के लिए भिन्न भी हो सकता है। भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के स्वप्न का फल भिन्न-भिन्न भी हो सकता है।

स्वप्न में भस्म, रूई एवं हड्डी को छोड़कर शेष सभी श्वेत वस्तुएं प्रशंसित हैं। कृष्ण गौ, कृष्ण हाथी, कृष्ण अश्व, कृष्ण विप्र एवं देव को छोड़कर शेष सभी काली वस्तुएं निंदित हैं। जल, चन्द्रमा और भावनाओं का कारक माना गया है। जल स्वच्छता और भावनात्मक उथल-पुथल का संकेत देता है। साफ जल कार्यक्षेत्र में भाग्योदय एवं सुख समृद्धि का संकेत देता है। स्वच्छ पानी धनप्राप्ति का योग बताता है। धन चाहे भौतिक समृद्धि हो या आध्यात्मिक समृद्धि। विषभक्षण, रक्तसित देह वाले राक्षस, अपना मरण, उत्तर या पूर्व की यात्रा करना, घृत का शरीर में लेपन करना भी ऐश्वर्य सूचक माना गया है। स्वप्न में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सूअर और अष्टापद को देखना भी पुत्र प्राप्ति सूचक केवल स्वप्नसार समुच्चय में ही माना है अन्यत्र कहीं नहीं।

जिन दृश्यों या पदार्थों को हम जीवन में अति शुभ मानते हैं, वही दृश्य और वस्तु स्वप्न जगत में प्रायः अशुभ समझी गई हैं। जिस वस्तु से हम जीवन में घृणा करते हैं वही वस्तु स्वप्न संसार में शुभंकर अति शुभफलदायी मानी गई हैं। सुखद और दुःखद स्वप्नों का मन पर गहन प्रभाव पड़ता हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org